॥६०॥ ॐनमः सिद्धं ॥ श्रीगुरवेनमः ॥ श्रीसारदायनमः ॥ श्रीपरमधर्मेनमः ॥ श्रीग्यानानंदपूरितनिर्भर
निजरसनामएहशास्त्रनमः ॥ दोहा ॥ राजतकेवलज्ञानजुत्त ॥ परमऊदारिककाय ॥ निरषिछबी
नविछकनहै ॥ पीरसससहजसुभाइ ॥ १ ॥ अरिहंतहरिअरिनिकौ ॥ पायौसहिजनिवास ॥ ज्ञानजोति
परगटभई ॥ ज्ञेयकियौसवग्रास ॥ २ ॥ सकलसिद्धवंदौंसुविध ॥ समयसारअविकार ॥ सुद्धसुछंदउ
द्योतनित्त ॥ लयौज्ञानविस्तार ॥ ३ ॥ ज्ञानसुद्धजसुभावमैं ॥ लोकालोकसमाय ॥ ज्ञेयाकारनपरनमैं ॥
सहजज्ञानरसपाय ॥ ४ ॥ अंतआंचिकैंपांचिकैं ॥ सुद्धभयेसिवराय ॥ अभेदरूपजेपरनमैं ॥ सहजा
नंदसुषपाय ॥ ५ ॥ जिनमुषतैंउतपनिभई ॥ ज्ञानामृतरसधार ॥ सुत्तप्रवाहवहतल्लित ॥ जगप
वित्रकरतार ॥ ६ ॥ जिनमुषतैंउतपनिभई ॥ सुरतिसिंधुमयसोइ ॥ मैंनमतअघहरनतैं ॥ सवकारि
जसिद्धहोय ॥ ७ ॥ निरविकारनिरग्रंथजे ॥ ज्ञानधांनरसलीन ॥ नासाग्रजुदिष्टिधरि ॥ करेकर्ममल
छीन ॥ ८ ॥ इहविधिमगलकरनतैं ॥ सबविधिमंगलहोत ॥ होतउदंगलदूरिसब ॥ तमज्यौंभांन
उद्योत ॥ ९ ॥ इहिविधिमंगलाचरनपूर्वकअपनेंइष्टदेवकौंनमस्कारकरिग्यांनानंदपूरितनिर्भरनिजरस १

नामाशास्त्रताकाअनुभवनमैंकरौंगासोहेभव्यतसुंणि ॥ औरकैसाहैइष्टदेव ॥ अरुकैसाहै यहेशास्त्र ॥
अरकैसाहूंमैं ॥ सोहीकहिएहैं ॥ सोइष्टदेवतीनप्रकारहै ॥ देव ॥ गुरु ॥ धर्म ॥ सोदेवदोयप्रकारहै ॥ अरहंत
सिद्ध ॥ गुरुतीनप्रकारहै ॥ आचार्य ॥ उपाध्याय ॥ साधू ॥ धर्मएकहीप्रकारहै ॥ सोविशेषपनैंभिन्नभिन्ननि
रूपनकरिएहै ॥ सोकैसाहै ॥ अर्हंतदेव ॥ परमऔदारिकशरीरताविषैंपुरिषाकारआत्मद्रव्यहै ॥ ब
हुरिघातिकंकहिएघातकीयाहै ॥ घातियाकरममलजानैंसब ॥ अरुअनंतचतुष्टयकौंप्राप्तिभया
है ॥ अरुनिराकुलत्तअनोप्यमवाधाररहित ॥ ग्यानरसकरिपूरणभस्याहै ॥ अरुलोकालोककौंप्र
काशिज्ञेयरूपनांहीपरणवैहैं ॥ एकटंकोत्कीर्णज्ञायकस्वभावकौंधरैहै ॥ औरुशांतीकरसकरि
अत्यंततृप्तिहै ॥ क्षुधादिकअठारहदोषनसौंरहितहै ॥ निर्मलसुद्धग्यानकापिंडहै ॥ ताकानि
र्मलस्वभावकेविषै ॥ लोकालोककेचराचरपदार्थस्वयमेव ॥ आणिप्रतिबिंवित्वहुवाहै ॥ मांनूंभ
गवांनकास्वभावविषैपहलांहीपदार्थतिष्टैछा ॥ ताकानिर्मलस्वभावकीमहिमाबचनअगोच
रहै ॥ बहुरिकैसेहैं ॥ अरहंतदेव ॥ जैसेंसांचाविषैरूपाधातकापिंडनिर्मापियेंहैं ॥ तैसेंअरहंतदे

वचैतन्यधातकापिंडपरमऊदारिकशरीरविषैंतिष्टैहैं॥ शरीरन्यारोहै॥ अरअर्हंतआत्मद्रव्य
न्यारोहैं॥ ताकौंमैंअंजुलीजोडिनमस्कारकरूंहूं॥ बहुरिकैसेहैपरमवीतरागदेव॥ अतेंद्रीआ
नंदरसकोंपीवैहैं॥ वाआस्वादेहै॥ ताकीसुषकीमहिमाहमकहिवासमर्थनहीं॥ यणिछद्मस्त
काजांणवानैंअैसीउपमांसंभवैहैं॥ तीनकालसंबंधीवारहगुणस्थांनकेधारीशुद्धोपयोगीम
हामुनिताकाआतमीकसुषसैंअनंताअनंतगुणांकेवलीभगवांनकेएकसमैंविषैसुषउ
पजैहैं॥ परंतुकेवलीभगवांनकासुषकीजुदीहीजातिहै॥ सोएतोअतेंद्रीयत्तायकसंपू
र्णस्वाधीनसुषहै॥ अरुछद्मस्तकैइंद्रियनितपराधीनकिंचितसुषहै॥ अैसानिःसंदेहहै॥
बहुरिकैसेहैकेवलज्ञांन॥ केवलज्ञांन॥ केवलएकनिजछोछाज्ञांनकापुंजहैं॥ ताविषैंमे
रभीअनंतगुणभरेहैं॥ बहुरिकैसेहैंश्रीतीर्थंकरदेव॥ अपनांउपयोगकूं॥ अपनांस्वभाव
विषैहीगालिदीयाहै॥ जैसैंलूणकीडलीपानीविषैगलिजाय॥ त्यौंहीकेवलीभगवांनकाउपयो
गस्वभावविषैंहीगालिदीयाहै॥ फेरिवाहानिकसिवानैंअसमर्थहै॥ नियमकरि॥ बहुरिआत्त २

मीकसुषसूंअत्यंततृप्तभयाहै॥ ताकारसपीवाकरितृप्तिनाहीहोयहै॥ वाअत्यंततृप्तिहै॥ और
वाह्यशरीरकीअैसीसोमदृष्टिध्यांनमयअकंपआत्माकाप्रभावकरिसोभैहै॥ मांनूंभव्यजीवां
नैंउपदेसहीदेहै॥ कांईउपदेसदेहै॥ रेभव्यजीवआपनांस्वरूपविषैं॥ अैसेंलागौ॥ अैसेंभा
गौ॥ ढीलमतिकरो॥ अैसाशांतीकरसकूंपीवो॥ अैसैंसैंनकरिभव्यजीवनिकूंआपनांस्वरू
पविषैंलगावैहै॥ इहनिमितनैंपाय॥ अनेकजीवसंसारसमुद्रसूंतिरे॥ अनेकजीवआगैं
तिरैंगे॥ वर्तमांनविषैतिरैतेदेषिएहैं॥ सोअैसापरमऔदारिकशरीर॥ ताकौंहमाराऩमस्का
रहोऊ॥ जिनेंद्रदेवहै॥ सोतोआत्मद्रव्यहीहै॥ परंतुआत्मद्रव्यकीमूलकैशरीरकीस्तु
तिभीउचितहैं॥ अरभव्यजीवनैंमुष्यपनैं॥ शरीरकाहीउपगारहै॥ तातैंस्तुतिवानमस्का
रकरिवोउचितहैं॥ अरकुलाचलांकेमध्यजैसैंमेरुसोभैहै॥ तैसैंगणधरांकेविषैवाइंद्रां
केविषैश्रीभगवांनसोभैहैं॥ अैसाश्रीअरिहंतदेवाधिदेवईग्रंथकूंपूर्णकरो॥ आगैंश्रीसि
द्धपरमेष्टीताकीस्तुतिमहिमावर्णनकरिअष्टकर्मकूंहरूंहूं॥ सोकैसेहैंश्रीसिद्धपरमदेव॥

Digitized with financial assistance from the
Government of Maharashtra
on 11 June, 2017

मो॰चा॰ भयोहै॥घातियाअघातियाकर्ममल॥अरनिःष्पंनभयाहै॥जैसैंसोलावांनीकौसुद्धकं
3 चनआंचकरिपचायाहूवा॥निःपंनहोयहै॥तैसैंअपनीसुद्धशक्तिकरिदेदीप्यमांनप्रगट
भयाहैस्वरूपजाका॥सोप्रगटहोतेमांनूंसमस्तज्ञेयकूंउछालिकरिनिगलिगयाहै॥बहु
रिकैसेहैंसिद्ध॥एकसिद्धकीअवगाहनाविषै॥अनंतानंतसिद्धन्यारेभिन्नभिन्नतिष्टैहैं॥
कोईसिद्धमहाराजकाहूसिद्धसौंमिलैनांही॥बहुरिकैसेहैंसिद्ध परमपवित्रहै॥परमसुद्ध
है॥अरआत्मीकस्वभावविषैलीनहैं॥अरपरमअतेंद्रीअनौपम्यबाधारहितनिराकुल
सुरसरसकंनिरंतरअषंडपीवैहै॥तामैंअंतरनांहीपरैहै॥बहुरिकैसेहैंसिद्धभगवांन॥
असंख्यातप्रदेसचैतन्यधातकेपिंडनवडघनरूपहै॥अरअमर्तीकचरमशरीरतैंकिं
चितऊनहै॥सर्वज्ञदेवनैंप्रत्यक्षबिद्यमांनन्यारेन्यारेदीसैहैं॥बहुरिकैसेहैंसिद्धभगवांन॥
आपनेंज्ञायकस्वभावनैंप्रगटकीयाहै॥अरुसमैसमैषटप्रकारहाणिवृद्धिरूपअनंतअगुरु
लघुगुणरूपपरणवैहै॥अनंतानंतआत्मीकसुषकूंआचरैहै॥वाकौंस्वादैहै॥अरुतृ 3

पिनांहीहोयहै॥कुछचाहिरहीनांही॥कृतकृत्यहूवा॥कार्यकरणौछोसोकरिचुक्या॥बहुरिकै
सेहैपरमात्मादेव॥ज्ञानामृतकरिअवैहैसुभावजाका॥अरस्वसंवेदनकरिउछलीहै॥आनं
दरसकीधाराजाबिषै॥सोउछलिकरिअपनेंहीस्वभावबिषैगुडपहुईहै॥अथवाजैसैंस
करकीडलीजलबिषैगलिजाय॥जैसैंस्वभावबिषैंउपयोगगलिगयाहै॥फेरिनिकसनेकौं
असमर्थहै॥अरुनिजपरणतिअपनेंस्वभावबिषैरमैंहै॥एकसमयबिषैउपजैहै॥अरवि
नसैहै॥अरुध्रुवरहैहै॥हैपरणतितोग्यांनस्वभावविषैंप्रवेसकीयाहै॥अरज्ञापरणतिबिषैंप्र
वेसकीयाहै॥सोएकमेकहोइअभिन्नपरनवैहै॥ग्यांनमैंअरुपरणतिमैंदुजायगीरही
नांही॥ऐसोअद्भुतकौतूहलस्वभावबिषैहोयहै॥बहुरिकैसेहैंसिद्ध॥निराकुलतअ
नौपम्यबाधारहितस्वरसरसकरिपूरनभराहै॥वाज्ञानानंदकरिअहलादितहै॥वासुषस्व
भावविषैमगनहै॥बहुरिकैसेहैसिद्ध॥अषंडहै॥अजरहै॥अमरहै॥अबिनासीहै॥निर्मल
है॥अरुचैतन्यस्वरूपहै॥सुद्धग्यांनमूर्तिहै॥ज्ञायकहै॥अरुबीतरागहै॥सर्वज्ञहै॥त्रिका

लसंबंधीचराचरपदार्थ॥ द्रव्यगुणपर्यायसंयुक्तताकौंएकसमयविषैंयुगपत्जांनैंहै॥ अ
रुसहजानंदहै॥ सर्वकल्याणकेपुंजहै॥ त्रिलोककरिपूज्यहै॥ सेवतसर्वविघ्नविलैजायहै
श्रीतीर्थंकरदेवभीताकौंनमस्कारकरैहै॥ सोमैंभीबारंबारहस्तजुगलमस्तगकैलगाय
नमस्कारकरौंहौं॥ सोकांवास्तैनमस्कारकरूंहूं॥ वाहीकागुणकीप्राप्तिकैअर्थि॥ बहुरिकैसे
हैसिद्धभगवांनदेवाधिदेवहै॥ सोदेवसंज्ञासिद्धभगवांनविषैहीसोभैहै॥ अरुच्यारिपरमेष्ठीनैंगुरुसंज्ञा
है॥ बहुरिकैसेहैंसिद्ध॥ सर्वतत्वकौंप्रकास्या॥ ज्ञेयरूपनांहीपरनवैंहै॥ आपनास्वभावरूपहीरहैहै॥ अ
रज्ञेयकौंजांनैंहीहै॥ सोकैसाजाणैहै॥ सोसमस्तज्ञेयपदार्थमांनूंसुद्धज्ञानमैंडूबिगयाहै॥ मांनूंप्रतिबिं
तहुवाहै॥ मांनूंग्यांनमैंउकीरकाटैहै॥ बहुरिकैसाहैसिद्धमहाराज॥ सांतीकरसकरिअसंख्यातप्रदेस
भरेहै॥ अरग्यांनरसकरिआह्लादितहै॥ सुद्धामृतसोईभयापरमरसताकौंज्ञांनांजुलीकरिपीवैहै॥ ब
हुरिकैसेहैंसिद्ध॥ जैसेंचंद्रमांकेविमांनविषैअमृतस्रवैहै॥ अरऔरांकौंआह्लादआनंदउपजावैहै॥
अरआतापकौंदूरिकरैहै॥ त्यौंहीसिद्धमहाराज॥ आपतौग्यांनामृतकौंपीवैहै॥ वाआचरैहै॥ अरऔ ४

रांनैंआनंदकारीहै॥ ताकौनामस्तुतिवाध्यांनकरतभवआतापविलैजायहै॥ परणामसांतिहोयहै॥ अ
रआपापरकीसुद्धताहोयहै॥ अरुग्यांनामृतनैंपीवैहै॥ अरनिजस्वरूपकीप्रतीतिआवैहै॥ ऐसेसिद्ध
भगवांनकौफेरिभीनमस्कारहोऊ॥ ऐसेसिद्धभगवांनजैवंताप्रवर्त्तौ॥ अरमोनैंभवसमुद्रमांहीसौं
काढौ॥ अरसंसारविषैपडतानैंराखौ॥ म्हाराअष्टकर्मकौनासकरौ॥ अरमोनैंकल्यांणकेकर्ताहोऊ॥
मोक्षलक्ष्मीकीप्राप्तिकौंद्यो॥ अरम्हाराहृदैविषैनिरंतरवसौ॥ अरम्हानैंआपसारिषाकरौ॥ बहु
रिकैसेहैसिद्धभगवांन॥ जाकैंजामनमरणनहींहै॥ जाकैशरीरनहीं॥ जाकैविनासनांहीहै॥ सं
सारविषैगमननांहीहै॥ प्रदेसवाग्यांनअकंपहै॥ बहुरिकैसेहैसिद्धभगवांन॥ अनंतगुणांकीषा
नि॥ अनंतगुणांकरिपूर्णभर्याहै॥ तातैंऔगुणआंनैंकौंजायगानांही॥ ऐसेसिद्धपरमेष्ठीकामहिमांवा
वर्णनकरिवास्तुतिकरिआगैंसरस्वतीकहियजिनवाणीताकीमहिमांस्तुतिकरिएहैसोभव्यतुसुणि॥ सो
कैसीहैजिनवांनी॥ जिनेंद्रकौहृदोसोईभयाद्रह॥ तहांथकीउतपन्नभईहै॥ सोतहांसूंउतपंनहो
यउहांथकीआगैंचली॥ सोचालिकरिजिनेंद्रकामुषारविंदतैंनिकसीसोनिकसिकरि॥ गणधर

देवांकाकांनविषैंजायपडी॥अरपडिकरिबाथकीआगैंचली॥गणधरदेवांकामुषारबिंदतैंनि
कसी॥निकसिकरिपारथीसुंपडिकरिसुरतिसिंधुमैंजायप्राप्तिभई॥भावार्थ॥याजिनवांनीगंगा
नदीकीउपमांनैंधरयांहै॥बहुरिकैसीहै॥जिनेंद्रदेवकीवांणीस्यादवादलछिनअविच्छिन्नहै॥या
दयाअमृतकरिपूर्णभरीहै॥अरचंद्रमांसमांनउज्जलहै॥वानिर्मलहै॥अरजैसैंचंद्रमांकीचां
दनीचंद्रवतीकमलांनैंप्रफूलितकरैहै॥औरसर्वजीवांकाआतापनैंहरैहै॥तैसैंहीजिनवांनी
भव्यजीवसोईभयाकवलतांनैंप्रफुल्लितकरैहै॥वाआनंदउपजावैहै॥भवआतापसौंहरिक
रैहै॥बहुरिकैसीहैसरस्वती॥जगतकीमाताहै॥सर्बजीवांनैंहितकारीहै॥परमपवित्रहै॥पणिकुवा
दीरूपहस्तीताकाविदारवानैं॥वापरिहारकरिवानैं॥वादितरिहुकाधारी॥महामुंनिसोईभया
सारदूलसिंघताकीमाताहै॥बहुरिकैसीहैजिनप्रणीतवांणी॥अज्ञानअंधकारविध्वंसकरिवानैं
जिनेंद्रदेवसूर्यताकीकिरणिहीहै॥वाज्ञानामृतकीधारावरसावानैंमेघमालाहै॥इत्यादिअनेक
महिमांनैंधरयांहै॥ऐसीजिनवांणीताकैअर्थिम्हारानमस्कारहोऊ॥एकस्वरूपाअनुभवनका॥ ५

विचारमैंनैंकीमाहै॥मोइसकारिजकीसिद्धिताहै॥ऐसैंजिनवांणीकीस्तुतिकामहिमांवर्णनकरिआ
गैंनिरग्रंथगुरुताकीमहिमांवास्तुतिकरियेहै॥सोभव्यतुंसुणिसावधानहोयनीकै॥कैसेहैनिग्रंथगुरुदया
लहैंचित्तजाका॥अरवीतरागहैस्वभावजाका॥अरप्रभवत्वसक्तिकरिआभूषितहै॥अरहेयगेय
उपादेयऐसाविचारकरिसंयुक्तहै॥अरनिर्विकारमहिमांनैंप्राप्तिभएहै॥जैसैंराजपुत्रबालकनग
ननिर्विकारसोभैहै॥अरसर्बमनुष्यवास्त्रीकंप्रियलागैहै॥मनुष्यवास्त्रीवाकारूपकंदेष्यांहीचा
हैहै॥अरस्त्रीवाकाआलिंगनकरैहै॥परंतुस्त्रीकापरणामनिर्विकारहीहै॥सरागादिककौंनांहीप्रा
प्तिहोयहै॥जैसैंहीजैनलिंगकाधारकमहामुंनिबालकवतनिर्विकारसोभैहै॥सर्वजनकौंप्रियला
गैहै॥सर्वस्त्रीवापुरुषमुंन्याकारूपनैंदेषित्रप्तिनांहीहोयहै॥अथवामुंनिनिग्रंथनांहीकुवाहै॥
आपनानिर्बिकारादिगुणनैंप्रगटकीयाहै॥बहुरिकैसेहैंशुद्धोपयोगीमुंनिध्यानारूढहै॥अर
आत्मस्वभावविषैस्थिरहै॥ध्यांनविनांछिनमात्रगमावैनांहीहै॥कैसेहैस्थितहै॥नासाग्र
दृष्टिधरिआपनांस्वरूपनैंदेषैहै॥जैसैंगायवछानैदेषिदेषित्रप्तिनांहीहोयहै॥निरंतरगाय

काहू दयविषैवछावसैहै। तैसैंही सुद्धोपयोगी मुंनि आपनां स्वरूपनैं क्षणमात्र भी विसरै नां हीहै। गउवछावत निजस्वभावसुं वात्सिल्यि अंगकीयाहै। अथवा अनादिकालका आपनां स्वरूप गमिगया। ताकों हेरैहैं। अथवा ध्यांन अग्नि करिकर्म ईंधन अभिंतर गुपत होयहै। अथवा नगरादिकनैं छोडि वनकै बिषै जायनासाग्रदृष्टि धरि ग्यांनसरोवर बिषैपैठि सुधाम्रत नैंपीवैहैं। वासुधाम्रत बिषैकेलिकरैहै। वाग्यांनसमुद्र बिषै डूबिगयाहै। अथवा संसारके भयथकी डरपि अभ्यंतरके विषै अमूर्तीक पुरुषाकार ग्यानमय मूरत्ति ऐसा चैतन्य द्रव्यता कौं सवैहैं। वासवअसरणि जानि चैतन्यदेवकी सरणिकूं प्राप्ति हुवा है। या विचारैहै। भाई म्हांनैं तौ एक चैतन्यदेव ग्यानमय पुरुषाकार ज्ञायक महिमांनैं धरयां। ऐसे परमदेव सोई सरनहैं। अन्य सरनि नांही। ऐसा म्हाकै निःसंदेह अवगाढहै। बहुरि सुद्धाम्रत करि चैतन्यदेवका कर्मकलंकनैं धोय। सनपन कहिये प्रक्षालन करैहै। पाछैं मगन होय ताकै सनमुष ग्यांनधाराकौं क्षेपैहैं। पाछैं निजस्वभाव सोई भया चंदन ताकी अरचा कहिये ताकौं पूजैहैं। अर अनंतगुण सो

ई भया अक्षत ताकौं तिन विषै क्षेपैहै। ता बिषैं च्यौडैहै। अर ध्यान भया सोई भया नैवेद्य ताकौं ता विषै सनमुष करैहै। अर ग्यांन सोई भया दीप ता विषै प्रकासित करैहै। मांनूं ग्यांनदीप करि चैतन्यदेवका स्वरूप ही अवलोकन करैहै। पाछैं ध्यांनरूपी अग्नि बिषैं करम सोई भया धूप ताकूं उदार मन करि मोकला मोकला शीघ्र पनैं। शीघ्रपनैं। आछैं आछैं क्षेपैहैं। पाछैं निजानंद सोई भया फल ताकौं भली भांति। ता बिषैं प्राप्ति करैहैं। ऐसैं अष्ट द्रव्य करि पूजन। कं वास्तै पूजन करैहैं। मुक्तिका सुषकी प्राप्तिके अर्थि। बहुरि कैसे है सुद्धोपयोगी मुंनि। आप तो सुद्धस्वरूप बिषै लगि गयाहै। अर मारगकैं केई भोला जिनावर ठूंठि जांनि शरीरसूं षाजि षणैं है। परि मुन्यां का उपयोग ध्यांनसूं चलै नांहीहै। ऐसा निजस्वभावसौं रत हुवाहै। बहुरि हस्ती। सिंघ। सूर। व्याघ्र। म्रग। गाइ। इत्यादि वैरभाव छोडि सनमुष षडाहोइ नमस्कार करैहै। वे भी आपना अर्थके हेत मुंन्याका उपदेशनैं चाहैहैं। बहुरि ग्यांनाम्रतका आचरन करि नेत्रनि विषै अश्रुपात चलैहैं। चालि करि अंजुली विषै पडैहै। पडतां पडतां अंजुली भरि आवैहैं। सो चिडी कबूतर आदि ऐसा भोला पंषी जल जां ८

निनिसंकरुचिसौंपीवैहैं॥सोए अश्रुपातनांही चालैहै॥ मांनूंयह आत्मीकरसही अवैहै॥ सोआत्मीक
रसअभ्यंतरसमायगयानांहीतातैंबाह्यिनिकस्याहै॥ अथवामांनूंकर्मरूपीबैरीताकाग्यांनषडग
करिसंघारकीयाहै॥ ताकारूधिरउछलिकरिबाहिरनिकसैहै॥ बहुरिकैसेहैसुद्धोपयोगीमुंनि॥ अ
पनैंग्यांनरसकरिछकिरह्याहै॥ तातैंबाह्यनिकसिवानैंअसमर्थहै॥ कदाचिपूर्वलीवासनाकरि
निकसैहैं॥ तौवांनैंजगतइंद्रजालसौंप्रतिभासैहैं॥ फेरितत्तछिणहीस्वरूपमैंलागिजायहैं॥ फेरिस्वरू
पकालागिवाकरि॥ आनंदउपजैहैं॥ ताकरिशरीरकीअैसीदशाहोयहैं॥ रोमांचहोयहै॥ अरगदगदश
ब्दहोयहै॥ अरुकभीतौजगतकाजीवांनैंउदासीनमुद्राप्रतिभासैहै॥ अरकदेमुंन्यांरिद्धिपाई॥ अैसी
हस्तमुखमुद्राप्रतिभासैहै॥ पहोऊदसामुन्यांकीप्रतिभासैहैं॥ सोअत्यंतसोभैहै॥ बहुरिमुंनिध्यांनवि
षैगरकहूवासोमहष्टिनैंधस्यांहैं॥ अरुबाह्यनगरादिकसूंराजादिकबंदिबानैंआवैहैं॥ सोअबैं
वेमुंनिकहांतिष्टैहै॥ कैतौमसाणभूमिकाविषै॥ कनिरजनपुराणांवनविषै॥ औरकैपरबतांकीकं
दराकंदिरगुफांविषै॥ अरकैपरवतकीसिषरविषै॥ अरकैनदीकातीरांविषै॥ अरकैउजाडि

अटवीविषै॥ कैएकांतवृक्षतलै॥ अथवावस्तिकाविषै॥ अथवानगरबाह्यकाचैत्यालयविषै॥ इत्यादिकरमनीक
मनकालागिबानैंकारण॥ अरउदासीनतानैंकारणएसंस्थानकविषैतिष्टैहै॥ जैसैंकोईआपणीनिधिनैंछिपावता
फिरैहै॥ अरएकांतजायवाकाअनभवनकरै॥ तैसैंहीमहामुंनिआपनीग्यांनध्यांननिधिकौंछिपावताफिरैहै॥ अ
रएकांतहीवाकाअनभवनकीयाचाहैहै॥ अरअैसाबिचारैहै॥ किमतिम्हांकीग्यांनध्यांननिधिजातीरहै॥ आम
तिम्हांकाग्यानभोगमैंअंतरपरै॥ तिहवास्तैमहामुंनिकठिनिकठिनिस्थांनकविषैवसैहैं॥ जैठैमनुष्यकौसंचा
रनांहीतैठैवसैहै॥ अरमुन्यांनैंपर्वतगुफातहीमसानबनअैसालागैहै॥ मांनूंध्यांनध्यांनहीपुकारहै॥ कहै
आवौआवौइहांध्यांनकरौध्यांनकरौ॥ निजानंदस्वरूनैंविलसौबिलसौ॥ थांकौउपयोगस्वरूपबिषैबहुतलागै
है॥ तीसौंऔरमतिविचारौमतिविचारौअैसैंकहैहै॥ बहुरिसुद्धोपयोगीमुंनिघनैंपवनचालै॥ तैठैअरघणीगरमी
होयवाघामहोय॥ तैठैंवाघनांमनुष्यांकौसंचरहोयतैठैं॥ जोरावरीनहींवसैहै॥ क्यौंनांहीवसैहैं॥ मुन्यांकौअभिप्राय
एकध्यानाध्येनकरिबाहीकौहैं॥ जैठैध्यांनाधेनघणौंसधै॥ तैठैहीबसैहै॥ कोईयाजाणैंगाकिमुंनिसर्वप्रकारअैसाक
ठिनकठिनस्थानकविषैहीबसै॥ अरसासताचाहीपरीसहकौंहीसहै॥ अरसासत्ताध्यानमईहीरहै॥ सोहैन्यौंनां

BHAU DAJI MEMORIAL
BHAU DAJI MEMORIAL

आ०भा० ही॥ मुन्यांकैबाह्यक्रियासैंप्रयोजनहैनांहीं॥ अरअठाईसमूलगुणग्रहणकीयाहै॥ ताविषैतौअतीचारनांहील
८ गावैहैं॥ अरताउपरांतिक्रियाग्रहणकरैहै॥ सोउपयोगलागिबाकैअनुसारिकरैहै॥ सोईकहिएहै॥ जेभोजनक
रिशरीरनैंप्रबलहुवाजांनैंतौअसाबिचारै॥ इहशरीरप्रबलहोसीतौप्रमादनैंउपजासी॥ तासैंएकदोयदिनभोजन
कात्यागहीउचितहै॥ अरभोजनकात्यागकरिशरीरनैंछीनहुवाजांनैंतौअसाविचारै॥ जौशरीरछीनहोसीतौ
परनांमासिथलकरिसी॥ तौध्यांनध्येयनांहीसधिसी॥ अरकोईदुसरीरसंम्हांकैवैरनांहीहोइतौकछूजाकौं
छीनहींपाड़िए॥ अरईशरीरसंम्हांकैरागभीनांही॥ जोरागहोइतौयाकौंपोषिबोहीकीजे॥ तीसंमुन्यांकै
शरीरसैंरागदोषकैतौअभावहीहै॥ जीसैंमुन्यांकौध्यांनाध्येनसधैसोकरै॥ असैंहीमुंन्यमहाराजपवनग
रमीकोलाहलशब्दवामनुष्यादिककौंमगनतास्थांनकबिषैंउपायकरिबसैनहीं॥ अरजोऊठैबसैतौध्यां
नाध्येनसैंपरिणामच्युतहोइ॥ अरमुंन्यांकैएककार्यध्यांनाध्येयछै॥ याबिषैअंतरायपाड़िबानैंजेकारण
छै॥ ताकारणछै॥ ताकारणकौंटरिहीतैंतजैहै॥ अरआपतौध्यांनमैंतिष्टैहै॥ पाछैंकोईध्यांनकैअकारण
आंनिप्राप्तिहोयहै॥ तौध्यांनकौंछोडिनांहीउठिजायहै॥ अरस्पालैजलकैतीरध्यांनकौधरिबोवाचउ ८

न्हालैंसिलाऊपरिवापरबतकेसिषरविषैध्यांनकौधरिवौ॥ वाचौमासैरुखांकैतलैध्यांनकौधरिबौ॥ तौअपनां
परनांमांकीविशुद्धताकैअनुसारपरिणांमअत्यंतबिरक्तहोइतौअसीजायगाजायध्यांनधरै॥ नहींतौऔ
रठांमनैलागै॥ जैसैंध्यांनधरै॥ अरसामहोआयेउपसर्गकौंछोडिनांहीजायहै॥ सोमुन्यांकीसिंघवृत्तिहै
औरमुन्यांकापरिणांमध्यांनबिषैस्थिररहैहैं॥ तबतौध्यांनकौंछोडिऔरकार्यनौंबिचारैहैं॥ अनिध्यां हि
नसैंपरिणांमउतरैहै॥ तबशास्त्राभ्यासकरैहैं॥ वाऔरांकौंकरावैहैं॥ वाअपूर्वजिनवांनीकैअनुस्वा
३.४३६ रग्रंथजोड़ैहै॥ अरशास्त्राभ्यासकरतांपरिणांमलागिजायतौशास्त्राभ्यासकौंछोडिध्यांनबिषैला
गिजायहै॥ सोशास्त्राभ्यासवीचिध्यांनकाफलबहुतहैं॥ तातैतलैकेकार्यछोडिऊंचेकार्यकौंलगिबो
उचितहै॥ तीसैंध्यांनबिषैउपयोगकीथिरताथोड़ीरहैहै॥ औरशास्त्राभ्यासबिषैउपयोगकीथिरता
बहुतरहैहै॥ तीसैंमुनिराजध्यांनभीधरैहैं॥ अरशास्त्रभीबांचैहै॥ अरउपदेसभीदियैहैं॥ अरआपगु
रांकनैंपढैहैं॥ औरांनैंपढावैहैं॥ वाचरचाकरैहैं॥ मूलग्रंथांकैअनुस्वारिअपूर्वग्रंथजोड़ैहैं॥ वानगर
सौंनगरांतरदेशसौंदेशांतरबिषैबिहारकरैहैं॥ अरभोजनकैअर्थिनगरादिकविषैजायहैं॥ तबैंप

डिगाद्याकुवान्त्रविस्यव्राह्मणकुलविषै॥ नवधाभक्तिसंयुक्तक्रियाल्लीसदोषबतीसअंतरायटालि
षडाएकबारकरपात्रआहारलेहैं॥ इत्यादिकशुभकार्य्यबिषैप्रवर्तैहैं॥ औरमुंनिउत्सर्गमार्गनैंछोडि
तौपरणांमांकीनिर्मलताकैअर्थिअपबादमार्गआदरैहैं॥ अरअपबादमार्गनैंछोडिउत्सर्गमार्ग
आदरैहैं॥ सोउत्सर्गआदरैहैं॥ सोउत्सर्गमार्गतौकठिनहैं॥ अपबादमार्गसुगमहैं॥ मुंन्यांकैअैसाहठ
नांही॥ किम्हांनैंकठिनहीआचरणआचरणां॥ वासुगमहीआचरणकाआचरणकरणां॥ भावार्थ॥
मुंन्यांकैतौपरणांमांकौतौलहै॥ वाह्यक्रियाऊपरिमुदारनांही॥ जीप्रवर्त्तिबिषैपरणांमांकीबिशुद्ध
ताबधै॥ अरग्यानकाक्षयोपसमवधैसोईआचरणआचरै॥ ग्यांनबैराग्यआत्माकानिजलक्षण
है॥ ताहीकूंचाहैहैं॥ अबैंऔरमुंनिराजकैसैंध्यांनबिषैंस्थितहै॥ अरकैसैंबिहारकरैहैं॥ अरकैसैंरा
जादिकआयबंदेहैं॥ सोईकहिएहै॥ मुंनितौवनबिषैवामसाणबिषैवापर्बतकीगुफाबिषै॥ वापर्बत्तकै
सिषरविषै॥ वासिलाबिषैध्यांनदीयांहै॥ अरनगरादिकसौंराजावाविद्याधरवादेवबंदिबानैंआयाहैं॥
अरमुन्यांकीध्यांनअवस्थादेषिदूरिथकीनमस्कारकरिउहांहीषडारहैहैं॥ अरकेईपुरुषांकै॥ अ ९

भिलाषवर्तैहै॥ कदिमुंन्यांकाध्यांनषुलै॥ अरकदिम्हेनिकरजायप्रश्नकरां॥ अरगुरांकाउपदेसनैंसु
नां॥ अरप्रश्नकाउत्तरजांनां॥ अरअतीतअनागतकापर्यायनाकूंजांणां॥ इत्यादिअनेकप्रकार
कास्वरूपताकौंगुरांकामुषथकीजाणांचाहैथा॥ अरकोईपुरुषषडेषडेबिचारकरैहै॥ अरकेईपुरु
षनमस्कारकरिउठिजायहै॥ अैसैंकेईअैसाविचारैहै॥ सोम्हेमुंन्यांकाउपदेससुन्याबिनांघरिजाय
कांईकरां॥ म्हेतौमुंन्यांकाउपदेसबिनांअतित्रप्तिछां॥ अरम्हांकैनानांतरैंकासंदेहछै॥ अरनानांत
रैंकाप्रश्नछै॥ सोयांदयालगुरांबिनांऔरकौंणनिवारणकरै॥ तीसौंहेभाईम्हेतौजेतैंमुंन्यांकाध्यां
नषुलैतेतैंउभाईछां॥ अरमुंनिछैंसोपरमदयालछै॥ पणिआपणांहेतनैंछोडिआपांनैंउपदेसकै
सैंदे॥ तीसौंमुंन्यांनैंआपणौंआगमनजणावौमति॥ आपणांआगमनकरिकदाचिध्यांनसूंचलसी
तौआपांनैं॥ अप्राधलागिसी॥ तीसौंगोप्यहीरहो॥ अरकेईपरस्परअैसैंकहै॥ देषोभाईमुंन्यांकीकां
ईदशाछै॥ काष्टपाषाणकीमूर्तिवत्अचलहैं॥ अरनांसाअग्रदृष्टिधर्यांहैं॥ अत्यंतसंसारसौंउदासी
नहैं॥ आपणांस्वरूपसौंअत्यंतलीनहैं॥ ईहीआत्मीकसुषकेवास्तैंराजलक्ष्मीनैंवोदातिणांकीनांई

छोडीछै॥ तौ आपणी यांके कांई गिणती छै॥ केई कहता भया रे भाई॥ आपणी गिणती तौ नांही सो सत्य
परंतु ए हपरम दयालु छै॥ महा उपगारी छै॥ तीसूं ध्यांन षुल्यां आपणैं भी कार्य सिद्धि करिसी॥ बहुरि केई
असें कहता हुवा॥ देषो भाई मुंन्या की क्रांति॥ अर देषो भाई मुंन्यां का अतिसय॥ अर मुंन्यां का सांहस
सूं क्रोतिकरि तौ दसौं दिसा उद्योत कीन्ही है॥ अर अतिसय का प्रभाव करि मारग के॥ सिंघ॥ हस्ती॥ व्याघ्र॥
रीछ॥ चीता॥ म्रग॥ इत्यादि॥ क जिनावर बैरभाव छोडि॥ मुंन्यांनैं नमस्कार करि निकर बैठा छै॥ अर मुं
न्यां का साहस असो छै सो असा क्रूर प्राणि ता का भयथकी निरभय हुवा ई उद्यांन बन मैं तिष्टै छै॥ अ
रु ध्यांन सूं षिण मात्र भी नांही चलै है॥ अर क्रूर जिनावरां नैं अपूठा मोहिल्ली या है॥ सो यह वात न्याय
ही है॥ जैसा निमत्त मिलै॥ तैसो ई कार्य निपजै॥ सो मुंन्यां की शांति देषि क्रूर जिनावर भी शांतिता कूं
प्राप्ति हुवा है॥ अर केई जीव असें कहता हुवा रे भाई॥ यां मुंन्यां को सांहसपणौं अद्भुत है॥ कांई जाणां
ध्यांन षुलै कन भी षुलै॥ तीसौं अठासूं नमस्कार करि चलो॥ फेरि आवांला॥ अर केई असें कहता हु
वा रे भाई अब कांई आषता होऊ छो॥ श्रीगुरां की बांणी सो ही हुवो अमृत ती का पीयां बिनां घरि गयां १०

कांई सिद्धि छै॥ थांनैं घरि आछो लागै है॥ म्हानैं तौ मुंन्यां को दर्शन उत्कृष्ट प्रय लागै है॥ अर मुन्यां को ध्यां
न भी अब षुलसी॥ घणी वार हुई छै॥ तीसौं कोई तरै है को विकलप मति करौ॥ अर कोई असा कह
ता भया रे भाई मैं या आछी कही॥ यांकै अत्यंत अनुराग छैं सो ए धन्य छै॥ असैं परस्पर बतलावता हु
वा॥ अर मन मैं विचार करता हुवा॥ तेतैं ही मुन्यां को ध्यांन षुल्यो॥ अर बाह्य उपयोग करि॥ सिष्य
जन देषिवा लागा॥ तब सिष्य जन कहता भया॥ रे भाई मुंनि परम दयाल आपां दिसि दया करि सि
न मुष अवलोकन करै है॥ मांनूं आपां नैं बुलावै ही है॥ तीसूं अबैं सावधांन होऊ॥ अर सीना बीचा
लै॥ चालि करि आपणौं कार्य सिद्धि करौ॥ सो वे गुर की तीन प्रदक्षिणा देता हुवा॥ अर हस्त जु
गल मस्तग कै लगाय नमस्कार करता हुवा॥ सिष्य मुंन्यां कै निकट जाता हुवा॥ अर मुंन्यां का च
रणा कवलां विषै मस्तग धारता भया॥ अर चरणां की रज मस्तग कै लगावता हुवा॥ आपणैं धन्य
पणौं मांनता हुवा॥ अर घणां दूरा अर घणां नजीक॥ असा विनय संयुक्त षडा रहता हुवा॥ अर
हाथ जोडि स्तुति करता हुवा॥ कांई स्तुति करता हुवा॥ हे दयाल हे करुणानिधि हे परम उपगा

री॥ संसारसंमुद्रत्तारक भोगनसंपरान्मुष॥ अरसंसारसं उदासीन॥ अरसरीरसं निसप्रेय॥ अ
रसुपरकार्यबिषैतत्पर॥ अरआत्मीकरसबिषैलीन॥ ऐसागुणांनाम्रत्तकरितप्तिथेजयवंतावर्तो
अरम्हांऊपरिप्रश्नहोऊ॥ बकुरिहे भगवांनथांबिनांऔरकोई॥ म्हांकैरक्तकनांही॥ थेअबैम्हां
नैंसंसारमांहिसंकाढौ॥ अरसंसारबिषैपडताजीवांनैंथेईआधारछो॥ अरथेईसरणिछो॥ तौ
सोंजीवातमैंम्हारोकल्याणहोइ॥ सोईकरौ॥ अरम्हांकैआपकीआग्याप्रमांणछै॥ अरम्हेनि
बुद्धीछां॥ अरववेककरिरहितछां॥ तीसूंविनयअविनयम्हेसमझांनही॥ एकआपणाहेतही
नैंचाहांछां॥ जैसैंबालकमातापितानैंलाडकरिचाहै ज्यौंबोलै॥ अरखाइआदिबस्तुमांगै॥ सो
मातापितावालकजांणिवासंप्रीतिकरै॥ अरथैबानैंमिष्टादिकचोषीबस्तुकाढिहीदे॥ तैसैंहेप्रभूजीम्हेबा
लकछां॥ अरआपमातापिताछौ॥ सोबालकजांणिम्हांकेऊपरिछिमांकरौ॥ अरम्हांकाप्रश्नकाउत्तरक
रौ॥ अरसंदेहकानिवारणकरौ॥ ज्यौंम्हांकोअग्यानअंधकारबिलैजाय॥ अरतत्वकोस्वरूपप्रतिभासै
आपापरकीपिछांणिहोइ॥ सोउपदेशम्हांनैंद्यौ॥ ऐसैंसिष्यजनषडाषडावचनालापकरताऊवा॥ ११

पाछैंचुपकाहोयरह्या॥ पाछैंमुन्यमहाराजसिष्यजनांकेअभिप्रायकेअनुसारिमिष्टमधुरआत्महितका
रीकोमलऐसाअम्रतमईबचनांकीपंकतिताकरिमेघकीसीनांईसिष्यजनांनैंपोषताऊवा॥ कैसैंपो
षताऊवा॥ राजाकौं हेराजान् देवकौं हेदेव सामांन्यपुरुषकौं॥ हेपुत्र॥ हेभव्य॥ हेवत्स॥ थेनिकटभव्यछौ॥
अबैथांकेसंसारपोतैथोडोछै॥ तीसौंथांकेयाधर्मरुचिउपजीछै॥ अबैंराम्हाकाबचनअंगीकारकरौ॥ सो
म्हेथांनैंजिणवांणीकेअनुसारकहांछांसोथेचितदेसुणौं॥ योसंसारमहाभयानकछै॥ सोधर्मबिनांई
संसारकानांसहोइनांही॥ तीसौंएकधर्मनैंसेवौ॥ पाछैंऐसौमुन्यांकोउपदेसपायजथायोग्यजिनधर्म
ग्रहणकरताऊवा॥ अरमुनिवाश्रावकव्रतग्रहणकरताऊवा॥ औरकेईकप्रश्नांनांकाउत्तरसुनता
ऊवा॥ केईआपणांआपणांसंदेहकानिवारणकरताऊवा॥ ऐसैंनानाप्रकारकौपुन्यउपार्ज्यगणनकौं
वधाय॥ मुंन्यांनैंफिरिनमस्कारकरिमुंन्यांकागुणांनैंसुमरताआपनैंआपनैंठिकाणैंजाताऊवा॥ अ
ठआगैंमुंन्यांकाबिहारस्वरूपकहिएहैं॥ जैसैंनिरबंधस्वइछाचारीबनबिषैहस्तीगमनकरैहै॥ तैसैंहीमु
निमहाराजगमनकरैहैं॥ सोहस्तीधीरांधीरांसूंडिगचालाणांकरतो॥ अरसूंडिनैंभूमिसंस्पर्शकर

आ० चा० १२

ताथका॥ अरसूंडिनैंऔंढीनैंठीफलावताथका॥ अरधरतीनैंसूंडिसौंसूंघताथका॥ निरभयगमनक अं
रैहैं॥ त्यौंहीमुनिमहाराजधीरांधीरांग्यांनदृष्टिधरताथापरजंतफलीहै॥ सोयाहीसूंडिछै॥ तीसूंमुन्यां
नैहाथीकीउपमासंभवैहै॥ अरगमनकरतांजीवांकौंबिरोधमानहींचाहैहैं॥ अथवामुनिगमन
नहींकरैहैं॥ भलीनिधिनैहेरताजायहैं॥ अरगमनकरताहीस्वरूपमैंलागिजायहैं॥ तबषडारहि
जायहै॥ फेरउपयोगतलैऊतरैहै॥ तबफेरिगमनकरैहै॥ पाछैंएकांततिष्ट॥ फेरिआत्मीकध्यांनकरैहै
अरआत्मीकरसपीवैहैं॥ जैसैंकोईपुरुषक्षुधाकरिपीडततृषावानग्रीषमसमैंहीमाल्लाकाजल
करिगाल्यामिश्रीवोलाअत्यंतरुचिसूंगडलवाबसउपीवैहै॥ अरअत्यंततृप्तिहोयहैं॥ तैसैंसुद्धोप
योगीमहामुनिसरूपाचरणकरिअत्यंततृप्तिहै॥ बारंबारएहीरसनैंचाषैहैं॥ वाकूंछोडिकोईकाल
पूर्वलीवासनांकरिसुभोपयोगबिषैलागैहै॥ तबयाजानैहैं॥ म्हांऊपरिआफतिआई॥ याहलाहल
बिषसारिषीआकुलताम्हांसूंकैसैंभोगीजाय॥ अबम्हांकोआनंदरसकठैंगयो॥ फेरिभीम्हांकैग्यांना
नंदरसकीप्राप्तिहोसीकनांही॥ हायहायहम्हेकांईकरांयोम्हांकौसुभावछै॥ म्हांकोसुभावतो॥ एक १२

निराकुलतवाधारहितअतेंद्रीअनोपम्यसुरसपीवाकौहैं॥ सोईमोनैंप्राप्तिहोऊ॥ कैसैंप्राप्तिहोऊ
जैसैंसमुद्रविषैंगमनकुवामछैवाह्यनिकस्यानचाहै॥ अरबाह्यनिकसवानैंअसमर्थहोई॥ त्यौंही
म्हेग्यांनसमुद्रबिषैडूबिफेरिनहींनिकस्या॥ एकज्ञांनरसकौंहीपीवोकरां॥ आत्मीकरसबिनांऔ
रक्यांहीमैंरसनांही॥ सर्बजगतकीसामग्रीचैतन्यरसबिनांजडत्वस्वभावनैंधरयांफीकी॥ जैसैंलूण
बिनांरोटीफीकी॥ तीस्यौंऔसोअग्यानपुरुषकौंनहै॥ सोग्यांनरसनैंछोडिउपाधिकआकुलतासहि
तदुषनैंआचरैहैं॥ कदाचिनंआचरै॥ औसोसुद्धोपयोगीमहामुनिग्यांनकेलोभी॥ अरआत्मीकर
सकेस्वादीनिजस्वभावतैंछूटैहैं॥ तवऔसैंझूरैहै॥ बहुरिआगेंऔरभीकहैहैं॥ मुन्यध्यांननहींधरैहै
मांनूंकेवल्यांकीवाप्रतिमांजीकीहोडहीकरैहै॥ कैसैंहोडकरैहै॥ भगवांनजीथांकाप्रसादकरिम्हे
भीनिजस्वरूपनैंपायोहैं॥ सोअबैंम्हेनिजस्वरूपहीकोध्यांनकरिस्यां॥ थांकौध्यांननांहींकरांनांही
करां॥ थाकाध्यांनबीचिम्हांकेनिजस्वरूपकोध्यांनकरतांआनंदविशेषहोयहैं॥ याम्हांकैअनभ
वकरिप्रतीतिछै॥ अरआगमविषैआपभीऔसोहीउपदेसदीयो॥ सोकांईउपदेसदीयोरेभव्यजीवो

MEMORIAL

कुदेवानैंपूजोल्यातोस्वर्गादिककामंदकलेशकूंराहोला॥अरथांकानिजस्वरूपनैंध्यावोल्यातोनिय
मकरिमोक्षसुषनैंपावोल्या॥तीसूंभगवांनजीम्हेथानैंश्रैसाउपदेशकरिसर्बज्ञबीतरागजांन्यां
अरजेसर्बज्ञबीतरागहैतेहीसर्बप्रकार॥जगतविषैपूज्यहैं॥श्रैसासर्बज्ञबीतरागजाणिभगवांन
जीथांनैंनमस्कारकरांछां॥सर्बज्ञबिनांतोसर्बपदार्थांकोसरूपजाण्योंजायनहीं॥अरबीतराग
बिनांरागद्वेशकावशिकरिपदार्थकाउपदेसदीयोजायनांही॥कैतोआपणीसर्बप्रकारनिंदा
काहीउपदेसहै॥कैसर्बप्रकारआपणीवडाईमहंतताकाहीउपदेशदे॥एरुक्षणभलीभांति
कुदेवादिकबिषैसंभवैहैं॥तीसौंभगवांनजीम्हेभीबीतरागछां॥यासौंम्हांकास्वरूपकीबडाईकरां
छां॥सोम्हांमैंदोसनांही॥एकरागद्वेषहीकादोसहैं॥सोम्हांकैरागद्वेषआपकाप्रशादकरिबिलयगया
हैं॥बक्करिकैसाहैसुद्धोपयोगीमहामुंनि॥जाकैरागद्वेससमांनहै॥अरजाकैनिंदाअरस्तुतिसमां
नहैं॥अरजाकैसत्कारपुरसकारसमांनहैं॥अरजाकैरत्नकोडीसमांनहैं॥जाकैसुषदुषसमां
नहैं॥अरजाकैउपसर्गअनुउपसर्गसमांनहैं॥अरजाकैमित्रअरसत्रुसमांनहैं॥कैसेंसमांनहैं॥

सोईकहियहैं॥पूर्वैतोतीर्थंकरवाचक्रवर्तिवाबलभद्रवाकांमदेववाविद्याधरवावडामंडलेस्व
रमुकटबंधराजा॥इत्यादिबडामहंतपुरषमोक्षलक्ष्मीकेअर्थि॥संसारदेहभोगसूंविरक्तहोइ
राजलक्ष्मीनैंबोदातिणंकीनांईछांडि॥संसारबंधननैंहस्तीकीनांईतोडि॥बनकेबिषेजायद
क्षाधरैहैं॥निग्रंथदिगंबरमुद्रआदरैहैं॥पाछैंविषुरूपरिणांमांकामहातमकरिनांनाप्रकार
कीरिद्धिफुरैहै॥कैसीहैरिद्धि॥कायवलरिद्धिकरितोत्रैलोकनैंचटीआगलीसूंउचायले॥वासा
रिषीसामर्थताहोइहै॥अरबचनवलरिद्धिकरिद्वादशांगशास्त्रअंतरमहूर्त्तमैंपढिजायहै॥अ
रमनबलऋद्धिकरिद्वादशांगशास्त्रकाअंतरमहूर्तमैंचिंतवनकरिलेहै॥औरआकासविषैग
मनकरैहै॥औरजलऊपरिगमनकरैहै॥पणिजलकाजीवकौंबिरोधैनांहीहैं॥अरधरतीबि
षैंडूबिजायहै॥पणिपृथ्वीकाजीवांकौंबिरोधैनहींहैं॥अरकहीनैंबिषबेरायाहै॥अरसुदृष्टि
करिवोधैतोअमृतहोयजाय॥पणिश्रैसंमुनिमहाराजकरैनांही॥औरकहीअमृतबहरायाहै;
अरमुंनिमहाराजक्रूरदृष्टिकरिचोधैतोविषहोयजाय॥पणिश्रैसंभीकरैनांही॥औरदयाशांतह

ष्टिकरिचौधैतौकेतायकयोजनपर्यंतकाजीवसुषीहोयजाय॥अरदुरभक्षआदिईतिभीतिभी
दुषमिटिजाय॥सोऐसीसुभरिद्धिभीदयालबुद्धिकरिहोयतौदोसनांही॥अरक्रूरदृष्टिकरिचौधै
तौकेतायकजोजनकाजीवभस्महोइजाय॥पणिऐसैंकरैनांही॥अरवांकाशरीरकागंधो
दिकअरचरणातलीधूलिअरशरीरकरिसपर्शपवनशरीरकैलगाइएतौगलतकोढआदिसर्बप्रका
रकेरोगनांशकौंप्राप्तिहोयनियमकरि॥औरमुनिमहाराजजीग्रहस्तकैआहारकीयोछै॥तीकीभोजनसाला
विषैनानाप्रकारकीअटूटरसोईहोइजाइ॥तिंहिंदिनसर्बचक्रवर्तिकाकटकजीमैंतौभीटूटैनही॥अरच्यार
हाथकीरसोईकाक्षेत्रमैंऐसीअवगाहनशक्तिहोयजाय॥सोचक्रवर्तिकाकटकसर्बसमायजाय॥अरबैठि
कैजुदाजुदाभोजनकरैतौभीसकडाईहोयनही॥अरजैठैमुंनिआहारकरैतीकैवारणैंपंचाश्चर्यहोइ॥रतनवृष्टि
पुष्पवृष्टि॥गंधोदवृष्टि॥अरजयजयकारशब्द॥अरदेवदुंदुभीशब्द॥एपंचाश्चर्यजांननां॥औरसम्यकदृष्टीएक
वारमुंन्यांनैंभोजनदेयतौकल्पवासीदेवहोइ॥अरसम्यग्दृष्टीश्रावकमुंन्यांनैंएकवारभोजनदेयतौउत्त
मभोगभूमियांमुनश्चहोयपाछैंपरमपरायमुक्तिजाय॥ऐसेसुद्धोपयोगीमुंन्यानैंएकबारभोजनदेवाकाफ

लनिपजै॥औरमुंनिअवधिग्यांनमनपर्ययग्यांनकाधारीहोइ॥इत्यादिकअनेकप्रकारकेगुंनसंयुक्तहो
तसंतैंभीकोईरंकपुरुषआपमहामुंनिकौंगालीदेवाउपसर्गकरैतौवासौंकदाचिभीक्रोधनकरै॥परमद
यालबुधिकरिवाकाभलाहीवांछै॥औरऐसाबिचारै॥एभोलाजीवछै॥याकौंआपणाहितअहितकीखबरि
नांही॥यहजीवयांपरणांमाकरिअतिदुषपावसी॥म्हांकौतौकछूबिगाडहैनांही॥परंतुएजीवसंसारसमुद्र
माहीडूवसी॥तीसैंजोहोइतौयाकौंसमझाइये॥ऐसाविचारिकरिहितमितबचनदयाअमृतकरिझरताभ
व्यजीवांनैं॥आनंदकारीऐसावचनप्रकासताहुवा॥कांईप्रकासताहुवा॥हेभव्यहेपुत्रतूआपणांआपा
नैं॥संसारसमुद्रविषैमतिडूबोवै॥अरतूनिकटभव्यछै॥अरथाराआयभीतुछैरह्याहै॥तीसंतूअवैंजिनप्र
णीतधर्मअंगीकारकरि॥एधर्मबिनांअनादिकालकौसंसारविंरुल्यौ॥अरनरकनिगोदआदिनानाप्र पै
कारकादुषसह्या॥सोतूभूलिगयौ॥ऐसैंश्रीगुरांकादयालबचनसुनिवहपुरुषसंसारकाभयथकीकंपा
यमानहोतौभयौ॥अरसीघ्रहीगुरांकाचरणांकूंनमस्कारकरतौहुवौ॥हेनाथहेप्रभूहेदयासागर॥मोऊ
परिक्षमांकरौक्षमांकरौ॥हायहायअबरूंकांईकरूंकांईकरूं॥योम्हारौपापनिर्वृत्तकैसैंहोय॥म्हारैकौंनपा

आ०चा० पडैहैआयोसोम्हारैयाबुद्धिउपजी॥बिनांअपराधमुंन्यांनमैंउपसर्गकीयो॥अरज्यांकाचरणांकीसेवाइंद्रा
१५ दिकदेवांनैंभीदुर्लभअरमैंरांक॥एहपरमउपगारीत्रिलोककरिपूजित्यांनैंमैंकांईजाणिउपसर्गकी
योहायहायअबम्हारोकांईहोसी॥अरहूंकिसीगतिजास्यौं॥इत्यादिअैसैंवहपुरुषबहोतविलापक
रतोहुवौ॥अरहातमसलतोहुवौ॥अरबारंवारमुंन्यांकाचरणांनैंनमस्कारकरतोहुवौ॥अरमुंन्यां
काचरणांकेलपटतोहुवौ॥जैसेंकोईपुरुषदरियावबिषैडूबतोहुवौ॥जिहाजकौंबिलंषै॥तैसेंगुरांकाच
रणांबिषैबिलंबतोहुवौ॥ओरयानिश्चयजानतोहुवौ॥अबतौमनैंएहीचरणसरणछै॥अन्यसरण
नांही॥जेईअपराधसौंबचूंतौयांहीकाचरणांकोसेवनकरिबचूं॥ओरतौउपायनांही॥म्हांराडुषकाटिवा
नैंएहीसमर्थछै॥पाछैंईपुरुषकीधर्मबुद्धिदेषिश्रीगुरफेरिबोल्या॥हेपुत्रहेबछतूमतिडरै॥जरामरणदुष
कानासकरि॥अैसाअमृतमईबचनांकरिवैंपुरुषनैंपोषताहुवा॥जैसेंग्रीषमसमैंकरिमुरझाईबनसप
तीताकौंमेघपोषैतैसेंपोषताहुवा॥सोमहंतपुरुषांकोयहस्वभावहीहै॥सोऔगुणऊपरिगुणहीकरै॥
अरदुर्जनपुरुषांकोएहस्वभावहीहै॥सोगुणऊपरिभीऔगुणहीकरै॥अैसैंगुरुतारिवासमर्थक्यों १५

नहीहोइ॥नाहोयहीहोय॥बहुरिसुद्धोपयोगीवीतरागसंसारभोगसामग्रीसूंउदासीन॥शरीरसूंनिस
प्रेहसुद्धोपयोगीथिरताकेअर्थिशरीरनैंआहारकेसैंहै॥ताकूंकहिएहैं॥सोमुंन्यांकाआहारकेपांचअ
र्थहै॥प्रथमतौगोचरीकहिएहै॥जैसेंगऊनैंरंकपुन्यवांनकोईघासादिकचरावैसोईप्रयोजनहै॥औ
रकोईपुरुषसौंप्रयोजननांही॥त्यौंहीमुन्यांनैंभावतौरंकपडिगाहिआहारद्यौ॥भावैराजादिकपडिगा
हिआहारद्यौ॥लेबासूंतौप्रयोजनहैं॥रंकवापुन्यवानपुरुषसौंप्रयोजननांही॥बहुरिदूसराअर्थभाम
रीकहिए॥जैसैंभौंराफुलकीबासनालेय॥फूलनैंविरोधैनांही॥त्यौंहीमुनिराजग्रहस्तीकैआहारलें॥
पणिग्रहस्तीनैंअंसमात्रषेदउपजैनांही॥बहुरितीसराअर्थअग्निसमणकहिये॥जैसैंलायलागीहोयतौ
नैं॥जींतीवस्तुसूंवाजींतींप्रकारवाकूंबुझायदेनो॥त्यौंहीमुंन्यांकेउदराग्निसोईभईलाय॥तीनैंजि
सौतिसौआहारमिलैताहिकरिबुझावैहै॥आछ्याबुरास्वादकाप्रयोजननांही॥बहुरिचौथाअक्षम्रक्ष
णकहिएहै॥जैसेंगाडीविनांवांगणचालैनांही॥त्यौंहीमुंनियाजांनैंएशरीरआहारदीयांबिनांसिथल
होसी॥अरम्हांनैंयासूंमोक्षस्थानबिषैपोहोचांजे॥यासौंकांमहै॥तातैंयाकौंआहारदें॥याकैआसरैं

संजमादिगुणएकठाकरिमोक्षस्थांनविषैपहौंचनौं॥ बहुरिपांचवां॥ गरतपूर्णकहिये॥ जैसैंकोईपु
रुषकैषाईघासआदिकाषाडाषालीहोयगयाहोय॥ तीनैंवापुरुषभाठाइंटमाटीकाजोडकरिपुरिदि
यावाहै॥ त्यौंहीमुंन्यांकैआहारादिककरिषाडाकहिए॥ उदरषालीहोयगयाहोयतौ॥ जींतीआहार
करिवाकौंनरिहैं॥ ऐसापंचप्रकारकाअभिप्रायजानिवीतरागीमुंनिशरीरकीथिरताकैअर्थिआहा
रलेयहै॥ शरीरकीथिरताकरिपरिणांमांकीथिरताहोहै॥ अरमुंन्यांकैपरणांमांकाविगडवासुंध्यांनध
रबाकोईनिरंतरउपायरहैहै॥ नीवातमैंरागद्वेषनउपजे॥ तिहक्रियारूपप्रवर्तै॥ औरप्रयोजननांही॥
सोऐसासुद्धोपयोगीमुन्यांनैंग्रहस्तदातारकासातगुणांसंयुक्तनवधाभक्तिकरिअहारदेहै॥ सोईक
हिएहै॥ प्रतिग्रहणाकहिएमुंन्यांकापदकमलप्रक्षालनकरिसोईजयागंधोदिक॥ सोआपणांमस्तग
आदिउतमअंगकैकर्म्मांकानाशकैअर्थलगावै॥ आपनैंधन्यमांनैं॥ पाछैंअरचनकहिये॥ मुंन्यां
कीपूजाकरै॥ पाछैंपरणामनकहिये॥ मीठामीठाबचनबोलै॥ बहुरिकायसुधिकहिये॥ बिनयवांनहो
यशरीरकेअंगोपांगकूंनम्रीभूतकरै॥ बहुरिएषणसुद्धिकहिए॥ दोषरहितसुद्धआहारदेहै॥ ऐसा १६

नवधाभक्तिकास्वरूपजांणना॥ आगैंदाताकेसातगुणकहिएहै॥ मुन्यांनैंआहारदेये॥ ईलोककाफलकीबां
छानकरै॥ क्षमांवांनहोइ॥ ऐसैंसातगुणजांननां॥ सोईदातारस्वर्गादिककासुषभोगिपरंपरायमोक्षस्थां
नकपहौंचैहै॥ ऐसासुद्धोपयोगीमुंनितरणंतारणहै॥ आचार्य्यउपाध्यायसाधु॥ ताकेचरणजुगलकूंम्हा
रानमस्कारहोऊ॥ अरमंनैंकल्यांणकेकर्त्ताहोऊ॥ अरभवसागरविषैपडतानैंराषौ॥ ऐसामुंन्याका
स्वरूपबर्ननकीया॥ सोहेभव्यतअपनांहितनैंवांछैछैतौ॥ सदैवऐसागुरांकाचरणारबिंदसेय॥ अन्यका
सेवनांदूरिहीतैंतजि॥ इतिगुरुवर्ननसंपूर्ण॥ ऐसैंआचार्य्यउपाध्यायसाधुयांतीनप्रकारकेगुरांकौभेलाहीवर्नन
कीयाहैतीनौंहीसुद्धोपयोगहि॥ तातैंसमानहै॥ विशेषतानांही॥ ऐसैंश्रीगुरांकीस्तुतिकरिवानमस्कारकरि
वानांकेगुणवर्ननकरिऐठाआगैंज्ञानानंदपूरितनिरभरनिजरसश्रावगाचारनामसारूजिनवांणीकैअनुस
रमेरीबुधिमाफिकनिपनकरूंगा॥ सोकैसाहैयहशास्त्र॥ क्षीरसमुद्रकीसोभानैंधरैहै॥ सोकैसाहैसमुद्रअतं
तगंभीरहै॥ अरनिर्मलजलकरिपूर्णभस्याहै॥ अरअनेकतरंगांकासमूहताकरिव्याप्तिहै॥ ताकाजलकूं
श्रीतीर्थंकरदेवभीअंगीकारकरैहैं॥ त्यौंहीयोशास्त्रअर्थकरिअत्यंतगंभीरहै॥ अरसुरसरसकरिपूर्णभ

स्याहै सोई जलहै॥ अरसर्बदोषकरहितहै॥ अत्यंतनिर्मलहैं॥ अरग्यांनलक्ष्मीकरिव्याप्तहै॥ ताकूं श्रीती
र्थंकरदेवसेवैहै॥ ऐसाशास्त्रकौंम्हारानमस्कारहोऊ॥ श्रावासेंनमस्कारहोऊ॥ ज्ञानानंदकीप्राप्तिके
अर्थि॥ और प्रयोजननांही॥ आगैंकरताअपणांस्वरूपकौंप्रगटकरैहै वा अपणा अभिप्रायजणावैहै॥ सोए
कैसाहूंमैं॥ ग्यांनजोतिकरिप्रगटभयाहूं॥ तातैंज्ञानहीनैंचाहूंहूं॥ ज्ञांनछैसोम्हारोनिजस्वरूपछै॥ सो
ईग्यांनअनुभवनकरिमेरैग्यानहीकीप्राप्तिहोऊ॥ मैंतौएकचेतन्यस्वरूपताकरिउतपन्नभया॥ ऐसा
जोशांतीकरसताकेपीवाकूंउद्यमीभयाहूं॥ ग्रंथबणाबाकोअभिप्रायनांही॥ ग्रंथतौबडाबडापंडितांघ
णांहीबणायाहै॥ मेरीबुद्धिकांई॥ पणिउसबिषैबुद्धिकीमंदताकरिअर्थविशेषभासतानांही॥ अर्थभा
स्याबिनांचितएकाग्रहोतानांही॥ अरचितकीएकाग्रताबिनाकषायगलैनांही॥ अरकषायगल्याबि
नांआत्मीकरसउपजैनांही॥ आत्मीकरसउपज्यांविनांनिराकुलतसुषताकाभोगकैसैंहोइ॥ तातैंग्रं
थकामिसकरिचितएकाग्रकरिबाकाउद्यमकिया॥ सोइहकार्यतौबडाहै॥ अरहमजोग्यनांही॥ ऐसा
हमभीजांनैहैं॥ परंतुअर्थीदोषानपश्यति॥ अर्थीपुरुषछैसोशुभाशुभकार्यकौंविचारैनांही॥ आपनां १७

देतनैंहीचाहै॥ तातैंमैंस्वरूपाअनभवनकाअत्यंतलोभी॥ तातैंमेरैतांईऔरकछूसूझतानांही॥ मेरैतां
ईएकग्यांनहीग्यांनसूझताहै॥ ग्यांनभोगविनांऔरकांई॥ तातैंमैंऔरसर्वकार्यकौंछोडिग्यांनहीकूं
आराधूंछूं॥ अरग्यांनहीकीसरणौंरह्याचाहूंछूं॥ वकुरिकैसाहूंमैं॥ सुरूपरणतिकरिप्राप्तिभयाहौं
अरग्यांनअनभूतिकरिसंयुक्तहौं॥ अरज्ञायकस्वभावनैंधस्यांहूं॥ अरज्ञांनानंदसहजरसताकाअ
भिलाषीहूं॥ वा भोगताहूं॥ ऐसामेरानिजस्वभावछैताकेअनुभवनमेरामेरैंताईभयानांही॥ आपनी
निजस्त्रीकाभोगतापुरुषनैंभयनांही॥ त्यौंहीमेरैकर्मरूपवैरीताकाभयनांही॥ तासूंऐसाजांनि
अपनेंइष्टदेवताकूंबिनयपूर्बकनमस्कारकरिआगैंग्यानानंदपूरितनिरभरनिजरसश्रावकाचारनां
मांसास्त्रताकाप्रारंभनकरियेहै॥ इतिस्वयअनुभूतिलक्ष्मीकरिआभूषितऐसामैंशुद्धोंसम्यक्तआत्मासोईभ
याज्ञायकपरमपुरुषताकरिरचितग्यानानंदपूरितनरभरनिजरसनामांशास्त्रताबिषैबंदनऐसाजोनांमांअ
धिकारताबिषैअनुभवनपूर्ववर्णनभया॥ १॥ ॐनमः सिद्धेभ्यः॥ दोहा॥ जिनराजदेववंदितपदकऊं श्रावका
चार पापारंभअनितिहीमिटै॥ कटैकर्मअघजाल॥ अथअपनेंइष्टदेवकौंनमस्कारकरिसामान्यपनैंश्रावका

DR. BHAU DAJI MEMORIAL

चारवर्णनकरिएहै॥ सोसिष्यतसुंणि॥ श्रावकतीनप्रकारहै॥ एकतौपाक्षक॥ एकनैष्टिक॥ एकअधक॥ सो
पाक्षिककेदेवगुरुधर्मकीप्रतीतितौयथार्थहोइ॥ अरआठमूलगुणताबिषै॥ अरसातबिसनताबिषै॥ अती
चारलागै॥ अरनैष्टिककेमूलगुणांबिषैवीसताविषैअतीचारलागैनांहीं॥ ताकाग्यारमांभेदहै॥ ताकाव
र्णनआगेंहोयगा॥ अरसाधिकअंतसमैंबिषैसंन्यासमरणकरै॥ ऐसैंएतीनौंश्रावकदेवगुरुधर्मकीप्र
तीतिसहितहै॥ अरआठसम्यक्तकेअंगसहितहै॥ ताकेनांमकहियेहैं॥ निसंकित्त॥१॥ निकांक्षत॥२॥
निर्बिकित्तस॥३॥ अमूढदिष्टि॥४॥ अपगूहणि॥५॥ स्थितीकरण॥६॥ वात्तसल्लिअंग॥७॥ प्रभावना॥८॥ अर
एआठ॥ अरआठसम्यक्तकेगुणसहितहै॥ ताकेनांमकहिएहै॥ करुणा॥१॥ वात्सलि॥२॥ सौजनता॥३॥ आप
निंदा॥४॥ समता॥५॥ भगत्ति॥६॥ विरागता॥७॥ धर्मानुराग॥८॥ एआठ॥ अरपचीसदोषताकेनांमकहिएहै॥
जाति॥ लाभ॥ कुल॥ रूप॥ तप॥ बल॥ विद्या॥ सिरदार॥ इनआठौंकागर्वतेआठमदजांननें॥ संका॥१॥ कांक्षा॥
२॥ दुर्गंछा॥३॥ मूढदष्टि॥४॥ परदोषभावन॥५॥ अस्थिरता॥६॥ वात्सल्लिरहित्त॥७॥ प्रभावनांरहित्त॥८॥ एआ
ठमलसम्यक्तका॥ आठअंगसौंउलटाजानना॥ कुदेव॥१॥ कुगुरु॥२॥ कुधर्म॥३॥ अरकुगुरु॥१॥ कुदेव॥१॥ १८

कुधर्म॥१॥ एतीन्यांकेधारकयांछक्कांकीसराहनांनकरणी॥ एषटअनायतन॥ अरदेव॥ धर्म॥ गुरु॥ विषैम
ढदृष्टि॥ ऐसैंपचीसदोषत्तिनकरिरहितहै॥ ऐसैंनिर्मलदर्शनकरिसंयुक्त तीनप्रकारके॥ जघन्य॥
मध्य॥ उत्कृष्ट॥ संयमीजाननें॥ सोपक्षकबिषै॥ अरसाधिकबिषैग्यारभेदनांहीहै॥ सुपाक्षिकके
तौपांचउदंबर॥ पीपल॥१॥ बड॥२॥ उमर॥३॥ कठूंबर॥४॥ पाकर॥५॥ इनपांचनकाफल॥ अरमद॥१॥ मांस॥२॥
सहित॥३॥ एतीनमकार॥ याकाप्रत्यक्षतौत्यागहै॥ अरयांआठमूलगुणांबिषैअतीचार॥ सोकहिएहै:
मांसविषैतौचांमकेसंजोगकाघृतवातेलहींगजलअरात्रिकाभोजन॥ अरबिदल॥ अरदोयघडीका
छांणएपाछपरांतिजल॥ अरबीधाअन्न॥ इत्यादिमरजादाकरिरहितबस्तुताबिषैत्रसजीवांकीवानिगो
दकीउत्पत्तिहै॥ ताकाभक्षणकादोषलागैहै॥ अरप्रत्यक्षपांचउदंबर॥ अरतीनमकारभक्षणनांही
करैहै॥ अरसात्तबिसनभीनांहीसेवैहै॥ अरअनेकप्रकारकीआखडीसंयमपालैहै॥ अरधर्मकीजा
केबिशेषपक्षहै॥ ऐसापाक्षिकजघन्यसंजमीजाननां॥ सोप्रथमप्रतिमांकाधारकभीनांहीहै॥ अरप्रथ
मप्रतिमांआदिसंयमकाधारककाउद्यमीकुवाहै॥ तातैंयाकादूजानांमप्रारब्धहै॥ नैष्टिककाग्याराभेद॥

दर्शन१व्रत२सामायक३प्रोषध४सचित्तत्याग५रात्रिभुक्तिवादिनविषैकुसीलत्याग६ब्रह्मच
र्य७आरंभत्याग८परिग्रहत्याग९अनुमतित्याग१०उदिष्टत्याग११ऐसैंईग्याराभेदविषै॥
असंयमकाहीनपनांजांननां॥तातैंयाकूंइन्हानांमघरिमानैहै॥अरतिन्हांसाधकताकादूसरानांम
निपुनहै॥भावार्थ॥पाषिकतौसंयमविषैउद्यमीभयाहै॥कडवानहींलागैहै॥अरनैष्टिककडवानहींला
गैहै॥अरसाधकसंपूर्णएकरिचुक्या॥ऐसाप्रयोजनजांननां॥अबपाषिकवासाधिकनैंछोडिनैष्टकति
नकासामान्यपणैंवर्णनकरिएहै॥प्रथमदर्शनप्रतिमांकौधारकवोसातविसनअतीचारसहितछोडै
अरआठमूलगुंणअतीचाररहितग्रहनकरै॥अरदूसरौव्रतप्रतिमांकौधारकपांचअनुव्रततीनगुंणव्रत
च्यारिसिक्षाव्रतइनबाराव्रतकाग्रहणकरै॥अरतीसरोसामायकव्रतकौधारकआंथणसंवारैवामध्यां
नविषैसामायककरै॥अरचौथोप्रोषधोव्रतकौधारक॥आठैंचौदसजेपरवीतिनविषैआरंभछोडिधर्म
स्थांनविषैबसै॥अरपांचमौंसचित्तत्यागव्रतकौधारकसचित्तत्यागकरै॥रात्रिभुक्तिव्रतकौधारकरा
त्रिभोजनछोडै॥अरदिनविषैकुसीलछोडै॥अरसातमौंब्रह्मचर्यव्रतकौधारकरात्रिवादिनविषैमैथु १९

नसेवनतजै॥अरआठमौंआरंभव्रतकौधारकआरंभतजै॥अरनवमौंपरिग्रहव्रतकौधारक॥
परिग्रहतजै॥अरदसमौंअनमतव्रतकौधारकै॥पापकार्यकाउपदेसवाअनुमोदनातजै॥अर
ग्यारमौंउदिष्टव्रतकौधारकउपदेशासौंभोजनतजै॥ऐसासामांन्यलक्षणजाननां॥आगैंइन
काविशेषवर्णनकरिएहै॥सोदर्शनप्रतिमाकाधारकआठतौमूलगुंणपूर्वकहैसोग्रहणकरै॥
अरसातविसनतजै॥अरइनकाअतीचारतजै॥अथवाकेईआचार्यआठमूलगुंणऐसैंकह्या
है॥पांचउदंबरकाएकअरतीनमकारकातीन॥सोच्यारतौपूर्वआठकह्यातेईभया॥अरच्यारऔ
रजाननां॥सोईकहिएहै॥नवकारमंत्रधारण॥अरदयाचित्तअररात्रिभोजनत्याग॥अरदोयघडीउपरांतिकाअ
णछांण्याजलकात्याग॥आठमूलगुंणकह्या॥अरसातविसनजांननें॥जुवां१मांस२दारू३वेस्या४परस्त्री॥
५सिकार६चोरी७एसात॥ज्यांसेयाराजदंडदे॥अरलौकिकविषैमहानिंदापावै॥ऐसाजांननां॥मूलगुंणसात
विसनताकाअतिचारकहैहै॥प्रथमदारूकाअतीचार॥आठपहरउपरांतिअथाणां॥अरचलतरसअरजावस्तु
काभक्षणकरैइत्यादि॥अरमांसकाअतीचार॥चांमकैसंगहींगघृततेलजल॥इत्यादि॥सहतकाअतीचार॥फूलका

भक्षणकरै॥ अरसहतका अंजन औषधि अर्थि लैना॥ इत्यादि॥ अरपांच उदंबरका अतीचार॥ अजांन फलका
भक्षणकरै॥ अर बिनां सोधें फलका भक्षनकरवा॥ इत्यादि जानना॥ आठ मूलगुणके अतीचार जाननां॥ आगें स
तबिसनके अतीचार कहियेहैं॥ प्रथमतो जुवांके अतीचार होड आदि॥ अर मांस मदिराके पूर्वैं कहि आये॥ अ
रपरस्त्रीके अतीचार॥ कुवारी लडकीसौं क्रीडाकरिवो॥ अर एकली स्त्रीसौं एकांत बतलावो॥ इत्यादि॥ अर वे
स्यांके अतीचार॥ नृत्य वादित्र गांनता बिषै आसक्त होय देखै॥ अर सुनै॥ अर वेस्यां बिषैरमैं त्यां पुरुषांसौं गोष्टि
राषै॥ अर वेस्यांका घर बिषै जाय॥ इत्यादि॥ अर सिकारके अतीचार काष्ट पाषाण मृतका धात चित्राम लेप इन
के घोडा हाथी मनुष्य आदि जीवनिके आकार बणायाकूं वा ताका घतकरनां॥ इत्यादि॥ अर चोरीके अतीचा
र॥ परायाधनकौं लेनां॥ वा जोरावरीसौं लेनां॥ वा घोडा मौंदि षणां मोलकी बस्तु लेंनी॥ तौल मैं घाटि देना॥ लु
वा धिलेंनां॥ धरोहडि राषि मेल्हणी॥ भोले मारणां॥ रकम चुरावणां॥ इत्यादि॥ ऐसें सात बिसनांका अतीचा
र जांननां॥ ए अतीचार छोडैसो तौ प्रथम प्रतिमाका धारक श्रावक॥ अर अतीचार नांही पालै सो पक्षक श्रा
वक॥ ऐसा जांननां॥ और भी कितीक बातें नीत पूर्वक प्रथम प्रतिमांके धारक पालै सो कहियेहै॥ अनारंभ बिषै २०

जीवका घात करै॥ भावार्थ॥ हवेली महल आदिका करिबा बिषै हिंसा होइछै सो तौ होइ हीछै॥ परंतु बिना
आरंभ जीवनैं मारै नांही॥ अर उत्कृष्ट आरंभ न करै॥ भावार्थ॥ मोटा व्योपार जिंह मैं घणी हिंसा होइ॥ घ
णो भूठ होइ॥ वा जगत बिषै निंदा होइ॥ हाड चाम आदि॥ अथवा ता बिषै घणी तृष्णा वधै॥ इत्यादि उदिष्टि
का स्वरूप जांननां॥ अर निज स्त्रीकौं जिहिं तिह प्रकार धर्म बिषैं लगावै॥ स्त्रीका धर्मबुद्धि सौं धर्म साधन
भला सधै है॥ अर अपनैं धर्मका अनुराग बहुत सर्वैहैं॥ अर धर्म चार सहित लोकाचार लंघै नांही॥ भा
वार्थ॥ जा बिषैं लोक निंदा करै ऐसे कार्य कौं न करै॥ परंतु जा बिषै अपनां धर्म जाय॥ अर लोक भला कहैहै
तौ ऐसा नांही कै धर्म छोडि लोक कह्या कार्य कौं न करै॥ तातैं अपनौं धर्म कौं राषि लोकाचार उलंघै नांही॥ अ
र स्त्रीनैं पुरुषकी आग्यामाफिक करवो उचित है॥ पतिव्रता स्त्रीकी यहरीतिछै॥ अर यह धर्मात्मा पुरुषछैं॥
सो षट आवस्यक रि भोजन करै सो कहिए है॥ सो प्रभात ही तौ देव अर्हंतताकी पूजा करै॥ पाछैं निर्ग्रंथ गुरु
की सेवा करै॥ सक्ति अनुसारि तप अर संजम करै॥ पाछैं शास्त्र श्रवण वा पठन करै॥ पाछैं पात्रकै तांई॥
वा दुषित भूषित जीवांकै तांई च्यार प्रकार दांन दे॥ अर स्यारि भावनां भावता निरंतर बिषै सो सर्व जीवां

श्रा०चा० २१

मूं मैत्री भावना राखै॥ भावार्थ॥ सर्बजीवांनैं आपणां मित्रजांनैं॥ आपसारिखा स्वरूपवांको भी जांनैं॥ तीसों
कहीनैं विरोधै नांही॥ सर्वजीवांको रक्षपालही होय॥ अर दूसरी प्रमोद भावनां॥ सो आपसूं अधिकगु
णवांन पुरुषतासूं नौ विनयवांन प्रवर्त्तै॥ अर तीसरी कारुन्य भावनां॥ सो दुषित जीवांकौ देषिवाकी क
रुणां करै॥ जी प्रकार वाकै दुष दूर होय त्या दुषनै मेटै॥ अर जो आपनी सामर्थि नांही होय तौ दयारूप परिणाम
ही करै॥ वानैं दुषी देषि निर्दई रूप कठोर परणांम न ही राषै॥ कठोर प्रणांम छै सो महाकषाय छै॥ अर
कोमल परणांम छै सो निकषाय छै॥ सोई धर्म छै॥ अथवा सप्तविसनी पुरुष छै॥ अर चौथी मध्यस्त भाव
नांसूं विपरीत्त पुरुषतासौं मध्यस्तरूप रहै॥ न ही वासौं राग करै॥ न ही वासौं दोष करै॥ भावार्थ॥ कोई
हिंसक पुरुष छै॥ अथवा मिथ्याती पुरुष छै॥ अथवा सप्तविसनी पुरुष छै॥ सो वांनैं धर्मोपदेश द्यो है॥ सम
झै तौ समझाय पापकर्म छुडाय ही दीजे॥ न ही समझै तौ आप मध्यस्तरूप रहिजे॥ ऐसा च्यार भावनां
का स्वरूप जांननां॥ अर और भी केतीक बस्तौका त्याग करै सो ई कहिए है॥ और बीधा अन्न आ
थ कहिए नूणयां अर विडल कहिए दुफ ला नाजका संजोग सहित॥ अथवा काष्ट चिरौंजी दल्त॥ २१

काफलवा दही छाछि का षाणां॥ अर चौमासै तीन दिन॥ सियालै सात दिन॥ उन्हालै पांच दिन ही॰
षाणां॥ भावार्थ॥ आजिका जमाया का लिहि षाणां॥ भावण हीयां पाछैं अष्टपहर की मरजादा है॥ औ
र विधविदलका भक्षण है॥ अर दही गुड मिलायवांनैं कावा जलेबी इत्यादि बिषै मांषन मैं त्रस॰
जीव वा निगोद उपजै है॥ परंतु यह अभक्ष है॥ तातैं तुरतका विलोया भी षांनां उचित नांही॥ याका
षांनां विषै महादोष छै॥ या विषै राग भाव वहोत आवै है॥ अर बैगन अर साधारण वनासपती॥ अ
र घोलका वडा अर पाला अर गडा॥ अर मृतका अर विषै अर रात्रि भोजन का भक्षन तजै॥ अर स
का पांच उदंबर॥ अर बैंगनभाका भी भक्षन नांही करै॥ यांका षायांसौं राग भाव वहोत उपजै है॥
अर चलतरसताकौ व्यौरो वासी रसोई मर्यादा उपरान्त॥ आटा घी व तेल मिठाई का भक्षन तजै॥ अ
थांव आदि मेवा ताका रस चलत होय गया होय ताका भक्षण नांही करै॥ अर बडबेर ऊडबेर हा
थसौं फोडे बिनां॥ अर नेत्रसूं देष्यां विनां॥ आषा ही मुषमैं नांही दे॥ एकानां वकृत होइ है॥ ताबिषै
लट होय है॥ अर सब्ज का सालागमा आंवविषै भी सतकातार सरीषा लट होइ है॥ सो बिनां देष्यां

चूंसैनांही॥ औरकानांसांठावाकानीकाकडी॥ इत्यादिकांनांफलतांविषैलटांउपजैछै॥ ताका
नषनतजै॥ औरसियालै साग आदिहरितकाय॥ ताविषैबादलाकानिमत्तकरिलटांबहुतउप
जैहैं॥ ताकाभक्षनतजै॥ अरकोल्हा आदितरबूजवडाफलयांकाल्यावाविषैअरयांकाषावावि
षैनिर्दईपणंविशेषउपजैछै॥ तातैंबडाफलकादोषबिशेषहैं॥ अरकेला॥ ताकाभक्षनतजै॥ यांषा
यांरोगबहोतउपजै॥ अरतेरमहरितकायवाजाकाछालिकहिए॥ छोडाजाडाहोइवावटकेदूदेवा॥
सांठा आदिकीपेली॥ वाकाकडीआदिताकीचकीर॥ अरनीबूआदिताकीजाली॥ एगूदहोईतोका
च्चकपणांनांही॥ तासैंतीकाभक्षनंतजै॥ भावार्थ॥ असीवनासपतीविषैनिगोदहोयहै॥ इत्यादि
जेहरितकायविषैनिगोदहोइ॥ बीजांविषैत्रसजीवहोइ॥ तेबनास्पतीसर्वहीतजनीउचितहै॥॥
और आगैंअैसाव्योपारादिनांहीकरैसोताकावौरा॥ लोह॥१॥ लकडा॥१॥ हाड॥१॥ चाम॥१॥ केस॥१॥ हीं
ग॥१॥ सीधडाकाघृत॥१॥ तेल॥१॥ तिल॥१॥ लूंणताका॥१॥ अरहलद॥१॥ साजी॥१॥ रांग॥१॥ फिटकडी॥१॥ कसूंभो॥
१॥ नील॥१॥ साबन॥१॥ लाष॥१॥ विष॥१॥ सहत॥१॥ पसारीयणांकासर्बहीब्योपारनिषद्धहै॥ अरहरितका २२

यकाव्यारताका॥ अरबीधाअन्नआदिताविषैत्रसजीवांकाघातबहुतहोइ॥ अैसासर्बहीव्यो॥
पारतजै॥ औरचांडाल॥१॥ कसाई॥१॥ धोबी॥१॥ लुहार॥१॥ ढेढ॥१॥ डूंम॥१॥ भील॥१॥ थोरी॥१॥ बागरी॥१॥ सदन॥
१॥ कांजर॥१॥ लीलगर॥१॥ ठिग॥१॥ चौर॥१॥ पासीगर॥१॥ इत्यादियांकाबणिजकहिएवाकूंबस्तमोलबेच
नी॥ वावाकीवस्तमोलिलेनी॥ ताकात्यागकरै॥ वाहलवाईगरकीवस्तुतजै॥ वाधोबीपासिधुवाई॥ वा
छीपालीलगरपासिंगायकपडाकाबेचनांताकौंतजै॥ वाषेतीकरावैनहीं॥ औरभाडबिषबस्तुसि
कावैनहीं॥ वाभडभूंज्यावालुहारताकूंद्रव्यउधारादेनहीं॥ वाकोईलाकीभठीकरावैनांही॥ वादा
रूकीभठीकरावैनहीं॥ वासुराकहिएदारूकौंमयकरावैनहीं॥ वाकोयलावामदिरावासुराकेक
रनैवालेकूंबिणजैनांही॥ वादरियावकाकामकरावैनहीं॥ बकरि॥ ऊंट॥ घोडा॥ भैंसा॥ बलध॥ गधा॥
गाडी॥ बहल॥ हल॥ कुसी॥ वडस॥ नाव॥ भाडैदेनहीं॥ वाआपभाडैदे॥ बहावैनहीं॥ वाताकेवहावनेंवा
लेपुरुषकूंउधाराद्रव्यंदेनहीं॥ याविषैमहत्तपापहै॥ जाकारिजकरिप्राणीदुषीहोयवाबिरोध्याजा
य॥ अैसाकार्यकौंधर्मात्मांपुरुषकैसेंकरै॥ जीवहिंसाउपरांत्तिऔरसंसारविषैपापनांही॥ ता

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL
डाक्टर भाऊदाजीइत्यस्य स्मारकम्

तैंसर्बप्रकारत्याजनेंजोग्यहैं॥ अरताकूंद्रव्य भीउधारादेइनहीं॥ औरसस्त्रकाव्योपारतजै॥
अरयाकिसूववालाताकौंदेनालैंनांतजै॥ औरषापणकीवस्तुमैं लिउइनहीं॥ अरविरानैंडील
कापहस्याबस्त्रमोल्लिअापपहरैनहीं॥ अरअपनेंडीलकाबस्त्र औरकूंबेचैनहीं॥ अरमुगताआदि
भिन्तुकदुषितजीवनजआदि भिन्तुकवस्तुमांगिल्यायोहोइ॥ ताकौंभीमोलदेनीलैंनीनहीं॥ अरदेवअरहं
त॥ गुरुनिर्ग्रंथ॥ धर्मजिनप्रणीतताकैअर्थिद्रव्यचढ्याताकौंनिर्मायल्लकहिएताकाअंसमात्रभीग्रहण
करैनहीं॥ याकाफलनर्कनिगोदहैं॥ इहांप्रश्नजोऐसानिर्मायल्लकादोषकैसेंकह्या॥ भगवांनकौंचढ्याद्र
व्यऐसानिद्यकैसैंभया॥ ताकासमाधान॥ रेभाईएसर्वोत्कृष्टदेवहैं॥ ताकीपूजाकरिवेसमर्थईन्द्रादिकदे
वभीनांही॥ अरताकेअर्थिकोईभक्तपुरुषअनुरागकरिद्रव्यचढायांपाछैं॥ अपूठोचहोडिवाकीजाय
गावाकेद्रव्यकौंविनादियांग्रहणकरैतौवोपुरषदेवगुरुधर्मकामहाअबिनयकीयाविनांदीयांकाअर्थ
यह॥ जोअरहंतदेवतौबीतरागहैं॥ तातैंआपकरिएतौकाहूनैंदेयनांही॥ तातैंबिनांदीयांहीकहिए॥ जै
सैंराजादिकबडेपुरुषकोईबस्तुनिजरिकरिपाछैंवाकेविनांदियांहीमांगिलेहैतो॥ वाकोंराजामहादंड २३

देहै॥ ऐसैंईनिर्मायल्लकादोसजांननां॥ औरभगवांनकेअर्थिचढ्यौसर्बद्रव्यपरमपवित्रहैं॥ महाविनयकर
णेंजोग्यहैं॥ परंतुलैंनांमहाअजोग्यहैं॥ यासमांनऔरअयोग्यनांहीं॥ तातैंनिर्मायल्लकौंतजनां॥ वानिर्माय
ल्लबस्तुमोललेइनहीं॥ वानिर्मायल्लबस्तुकालेवावालाताकौंउधारोदेइनहीं॥ ब्रह्मणिपुत्रीआदिसवासनी
ताकोद्रव्यउधारोतनकभीग्रहणकरैनहीं॥ इत्यादिअन्यायकपूर्वकसबहीकार्यकौंधर्मात्माछोडै॥ जाक
र्मबिषैअपजसहोय॥ आपणांप्रणांमसंक्लेसरूपरहै॥ वासोकभयरूपरहै॥ ताकार्यकौंछोडै॥ तबधर्मात्मा
सहजहीहोइ॥ ऐसाभावार्थजांननां॥ ऐसैंप्रथमप्रतिमाकाधारकसंयमीनीतिमार्गचालै॥ पाछैंघरकाभार
पुत्रनैंसौंपिदूजीप्रतिमांग्रहणकरै॥ सोकहैहैं॥ पाचअनुव्रत॥ ५॥ तीनगुणव्रत॥ ३॥ च्यारिसिष्याव्रत॥ ४॥ एबा
रव्रतअतीचाररहितपालै॥ ताकौंदूसरीव्रतमांकाधारककहिए॥ प्रतिमांनांमप्रत्यज्ञाकाहै॥ अथयाका॥
विशेषकहिएहैं॥ दोसबुद्धिकरिच्यारप्रकारत्रसजीवघात॥ अरविनांप्रयोजनपाचप्रकारथावरजी
वांकाघातनांहीकरै॥ ताकेरक्षकहोइ॥ भावार्थ॥ कोईयाकहैतोनैंप्रथ्वीकौराजद्यौं॥ तथाराहाथसौं
कीडीनैंमारि॥ अरनहीमारिसीतौथाराप्राणकोनासकरिस्यौं॥ अथवाथारोघरलूटिलेस्यौं॥ ऐसारा

श्रा॰ चा॰
२४

नादिक काहू जांणि सो हूं यां कों कद्यों न करिस्यौं तौ यां बिचारि छै सो ई करसी। ऐसा जांनि धर्मा
त्मां पुरुष ऐसा बिचार करै सु मेरै ब तैं त्रसजीव उपरि शस्त्र कैसैं चलाया जाय। तीसौं सरीर धनादिक
जाय छै तौ जावो। या की तिथि एती ही छै। म्हारो कांई सारो। म्हारा राख्या एकै सैं रहिसी। अर यां की थिति
वधती छै तौ राजा वा देव करि हणएं कैसैं जासी। यह निःसंदेह है। तीसूं मो नैं सर्वथा भयादिक करि जी
वघान करिवो उचित नांही। अर या कहै कोई अवार तौ यह कहै है छै सो ही करो। पाछैं थे दोरि रस्ता
करि लीज्यो। तौ वे धर्मात्मा पुरुष ई भैं या कहै है रे मूढ जिनधर्म की आषडी ऐसैं नांही। जो सरीर वाध
नादिक के वास्तै भानि नाषिजै। अर पीछैं फेरि पालिजै। सो यो उपदेश आंन मत मैं छै। जिनमत मैं नां
ही। सो ऐसी जांनि वे धर्मा पुरुष जीव को मारिवो तौ दूरि ही रह्यो। पणि अंस मात्र भी परिणांम चलावै
नही। अर कायरपणां का वचन भी उचारै नही। अर चलन हलनादिक क्रिया विषै अर भोगसंयो
गादि क्रिया विषै संष्यात असंष्यात त्रसजीव अर अनंत निगोद जीव की हिंसा होय है। परंतु या के
जीव मारिवा को अभिप्राय नांही। हलन चलनादि या का अभिप्राय है। अर वो क्रिया त्रसजीव॰ २४

की हिंसा विनां बनैं नांही। तातैं या कौं त्रसजीव का रक्षक ही कहिये। अर पांच थावर ता की हिंसा का क
ताकै त्याग है नांही। तौ भी बिनां प्रयोजन थावर जीवां का स्थूलपनै रक्षक ही है। ता सौं ता कौं अहि
सा व्रत का धारक कहिये। ऐसा जांननां। आगैं सत्यव्रत का कहिए है। झूठ बोल्या राजदंड है वा ज
गत विषै अपजस होय। ऐसा स्थूल झूठ बोलै नांही। वा बिना प्रयोजन झूठ बोलै नही। अर ऐसा सत्य
बचन भी बोलै नांही। जी सत्य बचन बोल्यां पर जीव का बुरा होइ। अर कठोरता नैं लीयां ऐसा भी सत्य व
चन बोलै नांही। कठोर बचन करि पैला का प्राण पीड्या जाय है। अर आपणां भी प्राण पीड्या जाय है। ऐसा
सत्यव्रत का स्वरूप जांननां। आगैं अचौर्य व्रत कहै है। ऐंढा की चौरी तो सर्वप्रकार तजै। अर चोरी की बस्तु
मोल ले नांही। परपडी पाई बस्तु का ग्रहण करै नांही। अर भोलै मारै नांही। अर बस्तु अदला बदली करै नांही।
रकम चुरावै नहीं। राजादिक का हासिल चुरावै नहीं। चौरां नैं विणजै नहीं। तोल विषै घाटि दि नांही। बाधि
लै नांही। बस्तु विषै भेला करै नांही। अर गुमास्तगीरी विषैं वा घर का व्यौपार विषै किसब की चोरी भी नां
ही करै है। इत्यादि। सर्व चौरी का त्याग करै है। भावार्थ। भोगरा की माटी वा दरियाव का जल आदिकां तौ

याकेबिनांदियांग्रहणहैएमालराजादिककाहै॥याकानांहीं॥एतीचोरतीयाकौंलागैहैं॥अरवि
शेषचोरीनांहीलागैहैं॥तिहवास्तेयाकौंस्थूलपणैअचौर्यव्रतकाधारककहिऐ॥आगैंब्रह्मचर्यव्र
तकहिएहै॥सोपरस्त्रीकातौसर्वप्रकारत्यागकरै॥अरस्वस्त्रीबिषैंअाठैंचौदसिअठांई॥सोलाका
रण॥दशलाषन॥रत्नत्रयअदिजेधर्मपर्वी॥ताविषैशीलपालै॥अरकामविकारकूंघटावै॥अरशी
लकीनववाडिताकौंपालै॥ताकोब्यौरो॥कांमउतपादनभोजनकरैनहीं॥१॥उदरभरिभोजनषा
यनहीं॥१॥सिंगारकरैनहीं॥१॥परस्त्रीकीसेज्याऊपरबैसैनहीं॥१॥एकलीस्त्रीसंगतिरहैनहीं॥१॥
रागभावकरिस्त्रीकाबचनसुनैंनहीं॥१॥रागभावांकरिस्त्रीकारूपलावण्यनिरषकरैनहीं॥१॥म
नमथकथाकरैनहीं॥१॥ऐसैंब्रह्मचर्यव्रतजांनना॥आगैंपरिग्रहत्यागव्रतकहैहैं॥सोअापनेंपुन्यके
अनुसारिदसप्रकारकेसचितअचितबाह्यपरिग्रहताकाप्रमाणकरैहै॥ऐसानांहींकैसुंन्य
तौथोडाअरप्रमाणबहुतराषेताकौंभीपरिग्रहत्यागव्रतकहिए॥सोयोंनहीहैं॥याबिषैतौअपूर
लोभतीव्रहोइहै॥इहांलोभहीकात्यागकरणांहै॥अबदसप्रकारकापरिग्रहकास्वरूपकहियेहैं॥ध २५

रती॥मानकहियेपल्लिकीआदि॥१॥द्रव्यकहिएधन॥१॥धान्यकहियेनाज॥१॥हवेली॥१॥हडवाई॥१॥ब
स्त्र॥१॥सज्यासन॥१॥चौपद॥१॥दुपद॥१॥ऐसैंदसपरकारकापरिग्रहकापरिमांनराषि॥अवशेषका
त्यागकरनां॥ताकौंपरिग्रहत्यागव्रतकहियेहैं॥ऐसैंपांचअणुव्रतकास्वरूपजांनना॥आगैंदिगव्र
तकहियेहैं॥सोदिगनांमदिसाकाहै॥सोदसौंदिसाबिषैसावद्ययोगअर्थगमनकरवाकौप्रमा
णराषिजावो॥जैंमिंवीमरिजादकरिलेई॥उपरांतिकात्यागकरै॥हजारपांचसैकोशआदिषेत्र
पर्यंतगमनकरनां॥आगैंनांहीकरनां॥अरमरजादउपरांतषेत्रसौंबस्तुमगावैनहीं॥वाभेजै
नहीं॥चीठीपत्रीभेजेनांही॥अरजैंठाकीचीठीआईबांचैभीनांही॥ऐसाजांनना॥आगैंदेसव्रत
कहियेहैं॥देसनांमएकदेसकाहै॥दिनप्रतिदिसाकाप्रमाणकरिले॥आजिमोनैंदोयकोसच्यारि
कोसबादसवाबीसकोसमोकलाहैं॥अरविशेषषेत्रबिषैगमनकरनेंआदिकार्यकात्यागहै॥ताबि
षैकरनांपरहै॥नातैमाफिकगमनकरै॥भावार्थ॥दिगविरतविषैएताविशेषहै॥सोदिगविरत
विषैंदिशाकाजावोजीवप्रमांणराषित्यागकरै॥अरदेशबिरतबिषैमरजादामैंमरजाद॥तामैंभी

अरुपराषिघटाईत्यागकरै॥ जैसैंवरसदिनकाछेदमहीनांकापखकावादिनकावापहरकावा
दोयघडीकापर्यंतषेत्रकाप्रमांण॥ सावदियोगकेअर्थिकरै॥ धर्मकेअर्थिनहींकरै॥ धर्मकेअर्थिको
ईप्रकारकात्यागहैहीनांही॥ आगेंअनर्थदंडत्यागव्रतकहिएहै॥ बिनांप्रयोजनपापलागै॥ अथवा
प्रयोजनबिषैंमहापापलागै॥ ताकानांमअनर्थदंडहै॥ ताकापांचभेदहै॥ अपधान १ हिंसादांन १ प्र
मादचर्या १ पापोपदेस १ दुस्रुतश्रवण १॥ याकाविसेषकहैहै॥ अपधानकहिएजाबातकरि अन्यजी
वकाबुराहोइ॥ वारागद्वेषउपायकाचिंतवनकरै॥ मवामनुस्तिकूं वाकेइष्टकूंसुनायदेनां॥ मर्म्मछेदकाब
चनकहनां॥ ताकाध्यांनरहै॥ इत्यादि॥ अपध्यांनकासरूपजांननां॥ आगेंहिंसादांनकहिएहै॥ छुरीक
टारीतरवारिबरछीआदिशस्त्रकामांगपादेनां॥ कडावाकडाहीचरीचरवाआदिकामांगपादेनां॥ इधनअ
ग्निदीपगकामांगपादेनां॥ कुसीकुदालफावडेकौंमांगपादेनां॥ गाडीवलधघोडाऊंटकौंमांगपादेनां॥
जावचडसहलऊलीकामांगपादेनां॥ अरचुल्हामूसलघरटीकामांगपादेनां॥ काकसीबुहारीकामांग्या
देनां॥ इत्यादिहिंसानैंकारण॥ जोवस्तुसोधर्मात्मापुरुषपलाकानलामनावावास्तेमांगपादेनहीं॥ २६

असैंहीहिंसानैंकारणजेबस्तुताकाव्यौपारनीकरैनांही॥ औरबैठबैठाहीभूमिनैंबिनाप्रयोज
नषोदिनांषै॥ अरपानीढोलिदे॥ अरअग्निनैंप्रजालिदे॥ अरबीजनीसूंपवनकरिबोकरै॥ बनास्प
तीनैंशस्त्रकरिछेदनांषै॥ वाहाथसूंतोडिनांषै॥ असैंहिंसादांनकास्वरूपजांननां॥ आगैंप्रमाद
चर्याकास्वरूपकहिएहैं॥ प्रमादलीयि॥ १॥ अरधरतीऊपरिबिनांप्रयोजनआम्हांसाम्हांफिरबोक
रैवाहालैकठनैंही॥ वाबिनांदेष्यांवैठिजायविनांदेष्यांबस्तुउठायलेवामेल्हिदे॥ इत्यादिप्र
मादचर्याकासरूपजांननां॥ आगैंपापोपदेसकास्वरूपकहिएहैं॥ असाउपदेसदेइनहीं॥ फला
णांतहवेलीकराय॥ वाकुवाबावडीतलावषिणाय॥ वाषेत॥ वाहि॥ वाथारौषेतनिंदानीआयौहैताकूंनिं
दांणि॥ वाथारौषेतसूकैछै॥ जीकूंजलकरिसींचि॥ वाथारीबेटीकवारीछैताकौब्याहकरि॥ वाथारौबेटौ
कवारौछैतीहकौब्याहकरि॥ वाबाजारबिषैंनींबूआंबकाकडीषरबूजाआदिजेफलबिकैछै॥ सोतूमो
लल्याव॥ औरगाजरकंदमूलसकरकंदआवीजारमैंविकैछै॥ सोतूमोलिल्याव॥ वांमेथीबथुवो॥
गांदलबाजारविषैबिकैछैं सोमोलिल्याव॥ तोरईकरेलाटींडसाआदिहरितकायमोलिमगावाक

उपदेसदे॥अरअग्निइंधनजलघृततेललूणमगावाकौउपदेसदे॥वाबूल्हावालिबाकाअग्नि
गणलीपवाका॥गारौगोबरकरवाकौउपदेसदे॥कपडाधुवावाकास्नांनकरवाकास्त्रीकामस
गकाकेससवारवाका॥षारत्तावडैनांषिवाका॥कपडामांहींसूंजूंवांकाठिआंगणैंनांषिवाका
दीवौजोवाकाउपदेसदे॥वीधौसुल्यौनाजमगावाका॥वाघृततेलगुडषांडनाजआदिवस्तुमैं
उसालराषिवाकाउपदेसदे॥वैलनैसाऊं[illegible]पादिवाकादेशांतरसूंमालमगावा॥षिनांवा
काउपदेसदे॥वादांनतपसीलसंयमपोसोआषडी॥आदिधर्मकार्यविषैकोईपुरुषलागैताकौंमनकरैः
ऐसाउपदेसदे॥अथवापूर्वैकहीजेवस्तु॥सर्बकासोदाकरायदे॥अरनानाप्रकारकीषोटीचतुराईवा
अकलिआरांनैंसिषावै॥अथवाराजकथाचोरकथास्त्रीकथादेशकथा॥इत्यादिनानाप्रकारकीकथा
ताकाउपदेशदे॥ऐसैंपापोपदेसकास्वरूपजांननां॥आगैंदुःश्रुतकास्वरूपकहिएहै॥दुःश्रुतकहिए
षोटीकथाकासुननां॥कद्रपउत्पादनकथा॥भोजन॥चोरी॥देसराज॥स्त्रीविरूपानृत्यकारणीकथा॥वाग॥ की
डिसंग्रांमयुद्ध॥भोगकीकथा॥स्त्रीकारूपहावभावकटाक्षकीकथा॥योतिस॥वैद्यिक॥मंत्र॥यंत्र॥तंत्र॥ २७

सरोदय॥रसायणकीकथा॥इत्यादि॥ब्यालतमासा॥इत्यादिपापनकारणताकीकथाकासुंननां॥ताकूंदुःश्र
तश्रवणकहिएहैं॥इत्यादिविनांप्रयोजनमहापापताकौंदुःश्रुतअर्थदंडकहिएहैं॥ताकात्यागकरै
न ताकौंअर्थदंडउत्यागव्रतकहिए॥ऐसैंतीनगुणव्रतकास्वरूपजांननां॥आगैंसामायकव्रतकौंक
हिएहैं॥सोआंथणौंसवारैमध्यांनसमैंबिषै॥त्रिकालतीनसामायककरै॥आठैचौदसिप्रोषदउपवा
सकरै॥ताकास्वरूपआगैंकहैंगे॥आगैंभोगव्रतताकास्वरूपकहिएहैं॥सोएकबारकाभोगबामैं
आवैसोभोग॥ऐसैंभोजनादि॥अरवेहीवस्तुकौंबारंवारभोगिए॥जैसैंस्त्रीवावस्त्रवागहणांआ
दिताकौंउपभोगकहिए॥नित्यच्यारिच्यारिपहरकाप्रमांणकरिलिय॥प्रभातिप्रमांणकरै॥सोतैआं
थणनैंयादिकरिलेइ॥अरआंथणकौप्रमांणकीनौंप्रभातयादिकरिलेइ॥यांहांका विशेषभेदता
कानांमनेमकहिये॥ताकौंच्यौरो॥भोजन॥१॥षटरस॥२॥जलपान॥३॥कुंकुमादि॥४॥बिलेपन॥५॥पुष्प
६॥तांबोल॥७॥गीत॥८॥नृत्य॥९॥ब्रह्मचर्य॥१०॥स्नांन॥११॥भूषण॥१२॥वस्त्रादि॥१३॥वाहण॥१४॥सैं
न॥१५॥आसन॥१६॥सचित्त॥आदिवस्तुसंष्या॥१७॥ऐसाजांननां॥आगैंअतिथसंविभागकास्वरूपक

DR. BHAU DAJI MEMORIAL
डाक्टरभाऊदाजीइत्यस्यस्मारकम्

श्रा०चा० दिएहै॥विनांबुलायांतीनप्रकारकेपात्रवादुषितआपनैंवारनैंआवै॥त्यांनैंअनुरागकरिदांनदे
२८ इ॥सुपात्रनैंतौभक्तिकरिदेइ॥अरदुषितजीवांनैंअनुकंपायकरिदेइ॥सोदातारकागुणजांननां
१ऊचौस्थांन॥२पादोदिकप्रक्षालन॥३अरचन॥४प्रणांम॥५मनशुद्धि॥६कायसुद्धि॥७एषणा
सुद्धि॥८ऐसैंजांननां॥औरभीदांनदेइ॥मुन्यांनैंकमंडलपींछीपुस्तगवाऊषधिवसतिकादेइ
अरअर्जिकाश्रावकनैंपांचतौवेही॥अरवस्त्रदेइ॥अरदुषितजीवांनैंवस्त्रवाऔषधिवाआहा
रअनैदांनभीदेइ॥औरजिनमंदिरविषैंनानाप्रकारकेउपकरणचढावै॥पूजाकरवावै॥वाता
कीमरमतकरावै॥वाप्रतिष्ठाकरावै॥तीर्थजात्राविषैद्रव्यषरचकरै॥न्यायपूर्वककरिद्रव्यपैदाकरै
वाकातीनभागकरै॥तामैंएकभागतौधर्मनिमित्तषरचै॥अरएकभागभोजनकैअर्थिकुटंबपर
वारनैंसोंपै॥अरएकभागसंचैकरै॥सोतौउत्कृष्टदाताजांननां॥अरएकभागतौदांनअर्थि॥अ
रतीनभागभोजनअर्थि॥शेषभागसंचैकरै॥तौमध्यदाता॥छठभागभोजनअर्थि॥अरतीनभाग
संचैकरै॥सोजघन्यत्यागीहै॥अरदशमांभागधर्मअर्थिनषरचैतौवाकाघरमसांनसमांनहै॥ २८

मसांनविषैभीअनेकप्रकारकेजीवदहोमैंजायहैं॥अरग्रहस्तकैचूल्हाविषैनानांप्रकारकेजीव
दग्धहोयहै॥अथवाकैसाहैंवहपुरुष॥सोसबसूंहलकीतौरूईहै॥अरतासौंभीहलकाआक
केफूलहैं॥तासूंभीहलकीपरमांनूहैं॥तासौंभीहलकोजाचगहैं॥तासूंभीहलकोकृपणदांनर
हितपुरुषहैं॥सोवानैंतौआपनौसर्बसषोयहाथमांड्यो॥अरजाचनपणांकोदीनवचनमुषसे
तीभाष्यो॥ ॥अरचलायआपणांघरआयो॥तौभीवाकूंदांननहींदी
नों॥तासूंजाचकपुरुषसौंभीहीनदांनकरिरहितपुरुषहैं॥अरधर्मात्मापुरुषकैमुष्यधर्मपूजाअर
दांनछै॥अरषटआवस्यकविषैभीदोयमुष्यछै॥वाकीच्यारिगौणछैं॥गुरुभक्ति॥तप॥संयम॥स्वाध्या
य॥तातैंसातठिकानांविषैंदानद्रव्यषरचिवौउचितहैं॥मुंनिअर्जिका॥श्रावक॥जिनमंदिर॥प्रतिष्ठा
तीर्थयात्रा॥शास्त्रलिषावौ॥एसातस्थानकजांननां॥सोदांनदेनैंकाच्यारिभेदहैं॥प्रथमतौदुषित
भूषितजीवंकेसवपरिवारपालिवाकेघरदेवाजोग्यवस्तुपहुचावै॥सोतौउत्कृष्टदांनहै॥बहुरि
वाकूंबुलायअपनैंघरिदांनदेनां॥सोमध्यमदांनहैं॥बहुरिआपनाकामचाकरीकरायदांनदैनां

आ०चा० सोएअधमहांनदेनांहैं॥ अरकोईप्रकारधर्मविषैंद्रव्यनांहीषरचैहैं॥ अरत्रष्णाकेबसीभूतहुवा
२९ द्रव्यकमायकमायएकठाहीकियाचाहेहैं॥ तौवहपुरुषमरिकरिसर्प्पहोहैं॥ पाछैपरंपरायनर्क
निगोदजायहैं॥ ताविषैंनानाप्रकारकेछेदनभेदनतारनमारनसूलारोपणआदितौनर्ककेदु
ष॥ अरमनकांनआंषिनांकजिह्वाकातौअभावहैं॥ अरस्पर्शइंद्रीकेद्वारएकअक्षरकेअनंतवैं
भागग्यांनवाकैरहैहैं॥ ताविषैंभीमहाआकुलतापावजेहैं॥ ऐसाएकेंद्रीपर्यायविषैंअनंतका
लपर्यंतमरणाकरैहैं॥ अरवासौंवेंद्रीआदिपर्यायपावनांमहादुर्ल्लभहोयहैं॥ तातैंलोभपरणतिकूं
अवस्यतजनांजोग्यहैं॥ जेजीवनर्कतिर्यंचपर्यायनैंछोडिमनुष्यभवविषैंप्राप्तहोयहैं॥ अरनर्कति
र्यंचगतिहीकूंपाछैंजानेंजोग्यहैं॥ ताकातौयहसुभावहोयहैं॥ ताकोद्रव्यबहोतप्रियलागै॥ अरध
नवांनपुरुषबहोतप्रियलागै॥ धनकेवास्तैंनिजप्रांणाकात्यागकरै॥ पणिद्रव्यकीवस्तुछांडेनांही
तौवहरंकवापुराग़रीबकृपणहीणबुद्धीमहामोहीपरमार्थकेअर्थिदांनकैसैंकरै॥ वाकेबत्तें
रूपेकारुपैयाकैसैंदीयाजाय॥ बहुरिकैसाहैवहकृपण॥ मोहकीमषिकासमांनहैस्वभावजा २९

का॥ वाकीडीसमांणपरणत्तिजाकी॥ बहुरिदातारपुरुषहैं॥ तेदेवगतिमांहीसुंआयेहैं॥ अरदेवगति
कावामोक्षगतिजांनेंयोग्यहैं॥ सोन्यायहीहैं॥ तिर्यंचगतिकेआयेजीवकेउदारचित्तकैसैंहोय॥ ज्यांवा
पुराअसंष्यातअनंतकालपर्यंतकौंभीभोगसामग्रीदेषीनांही॥ अरअबमिलनेंकीआसानांही
तौवाकैतृष्णारूपीअग्निकिंचितविषयसुषयकरिकैसैंबुझै॥ अरअसंष्यातबर्षपर्यंतअहमिंद्रआ
दिदेवपुनीतआनंदसुषकेभोगीऐसाजीवमनुष्यपर्यायहाडमांसचामकेपिंड॥ मलमूत्रकरिपूरित
ऐसासरीर॥ ताकेपोषणैंविषैंआसक्तकैसैंहोय॥ अरकंकरपथरादिकद्रव्यविषैअनुरागीकैसैंहो
य॥ अरभेदविज्ञानकरिसुपरविचारभयाहै जाकैं॥ अरआपणैंतौपरद्रव्यसंंभिन्नसासत्ताअवि
नासीसिद्धसाहरूपलोकालोककेदेषनहारेआनंदमयजान्याहैं॥ ताहीकेप्रसादकरिसर्वहीप्र
कारद्रव्यसौंनिर्वृतिहुवाचाहेहैं॥ ताकासहजहीत्यागबैरागभाववर्तैहै॥ एकमोक्षहीनैंचाहेहै॥ ताकैपरद्र
व्यसंममत्वकैसैंहोइ॥ एधनमहापापक्लेसकरितौउत्तपन्नहोहैं॥ अरअनेकउपायकष्टकरियाकौंअपनें
आधीनराषियेहैं॥ ताविषैंभीमहापापउपजैहैं॥ अरयाकौंमानबडाईकेअर्थिवाविषैंयभोगसेवनेंअर्थि॥

अपनेंहाथांकरिघरचियेहैं। ताविषैंव्याहादिकीहिंसाकरिवाद्रव्यकेंछीजनेंकरिमहापापकष्टउपजैहैं।
अरविनांदियांराजचोरदौडाघोसिलटिलेहैं। वाअग्निसंजलिजायहैं। वाविंतरादिहरिलेहैं। वास्वयमेव
गमिजायहै। वाविनस्यजायहै। ताकेदुषकीवापापबंधकीकहापूछणी। सोएपरद्रव्यकाममत्वकरिनासत
पुरुषनैंनेंदेयकह्याहै। कोईप्रकारउपादेयनांहीं। परंतुआपणीइछाकरिपरमार्थकेअर्थिद्रव्यघरचैतौ। ईलो
कविषैवापरलोकविषैंमहासुषभोगनैंपावै। अरदेवादिककरिपूज्यहोइ। ताकेदांनदेनकाप्रभावकरित्रि
लोककरिपूज्यहैंचरणकमलजाका। ऐसाजोमुनिराजताकावृंदकहिएसमूह। सोदांनकेप्रभावकापे
स्याकवाबिनाबुलायादातारकेघरचल्याआवैहै। पाछेदांनकेसमैंवेदातारऐसाफलसुषकौंप्राप्तहोयहैं
अरऐसासोभैहै। सोकहिएहैं। मांनंआजिमेरेआंगणकल्पतरुआयो। केकामधेनआई। केमांनंचिं
तामणिआई। मांनूंघरमाहिनवनिधिपाईकिइत्यादिसुषफलउपजैहैं। अरत्रिलोक्यकरिपूज्यहैंचरण
कमलजाके। ऐसामहामुंनिताकाहस्तकमलतौतलै। अरदातारकाहस्तउपरि। सोभादातारकीउत्क
ष्टपात्रकेदांनबिनांओरकौनकार्यबिषैंहोइ। अरजोवेमुंनिऋधिधारीहोयतौपंचाचर्यहोइ। ताकोव्यौरो ३०

रत्नवृष्टि १ पौहोपवृष्टि २ गंधोदकवृष्टि ३ देवदुंदुभीआदिवाजित्र ४ अरदेवांकेजयकारसबदहोय।
एपांचवातआश्चर्यकारीहोय। तातैंयाकानांमपंचाचर्यहै। बहुरितिहिदिनवाक्याहाथकीरसोई
बिषैनानाप्रकारकीतरकारीपकवांनसहितअम्रतमईअटूटहोयजाय। अरवारसोईसाल्बि
षैंसर्बचक्रवर्तिकाकटकजुदाजुदावैठिजीमैंतौभीसकडाईहोयनांही। अररसोईटूटैनांहीं ऐ
साअतिसैवर्तै। पाछैंबडाबडाराजानगरकालोकसहित। अरइंद्रादिकदेवत्यांकरिवहदातार
पूज्यहोई। अरबडाईजोग्यहोय। अरवाकादियादांनकीअनमोदनांकरिघणांजीवमहापुन्यकौं
उपार्जैं। परंपरायमोक्षनैंपावै। तौयहदातारकांईस्वर्गमोक्षनैंनांहीपावै। नांपावैहीपावै। सोसम्य
कद्रष्टीदातारतीनप्रकारकेपात्रनैंदांनदेतौस्वर्गहीजाय। ऐसापात्रदांनकांई। लोकवापरलोक
बिषैफलैछै। अरदुषितभुक्षतजीवांनैंकरुणाकरिदांनदीजेतौवाकौंमहापुन्यहोयहै। सर्बसौं
बडासुमेरहै। तासौंबडाजंबुद्वीपहै। तासौंभीवडातीनलोकहै। अरतासौंभीबडालोकालोकआ
कासद्रव्यहै। पणिएतौकछूदेइनांही। तातैंयाकीसोभानहीं। तासौंभीबडादातारहै। तासौंभीबडा

अजाचीत्यागीपुरुषहै॥ तासौंकोईअगंनीमूरिषकुबुद्धीआपघातीअैसाफलजांनिकरिभीदांन
नांहीकरैहै॥ तौवाकाल्लोभकीअरवाकाअगंनकीवाअपजसकीकांईपूछणी॥ अरकदाचितदां
नकरैहै॥ तौअपात्रनैंपोषेहै॥ अरपुन्यचाहैहै॥ जलविलोयघृतकाग्रह्याचाहैहै॥ पथ्थरकीनावबैठि
स्वयंभूरमणसमुद्रकौंतिस्याचाहैहै॥ बज्राग्निविषैंकमलकाबीजबाहिवाकेकमलनीकेपत्रकी
छायाविषैंबिश्रामलैनेंकाहौंसकरैहै॥ वाकल्पवृक्षकाढिधतूरावाहैहै॥ वाअमृतकूंतजिहलाह
लविषकाप्यालापीयअमरहुवाचाहैहै॥ तौकांईवहपुरुषकामनबंछितकार्यसिद्धिहुवा॥ कार्य
सिद्धतौकार्यकैगैलैहीहोसी॥ अरऊंधांहीभरमबुद्धिकरिमांन्यातौकांईगरजका॥ काचकाषंडनैं
चिंतामणिरत्नजांनैं॥ घणांअनुरागसूंपहुचैबाधिराष्यातौकांईवहचिंतामणिरत्नहुवा॥ जैसैंबाल
कगारिपाषाणकेआकारकौंहाथीघोडामांनिसंतुष्टहोयहै॥ तौंहीअपात्रकादांनदेनां॥ घणीक
हांकहिए॥ जिनबाणीविषैंतौअैसाउपदेशहैरे भाई॥ धनधानादिकसामग्रीअनिष्टहीलागैहैतौ
अंधकूवामैंनांषिदे॥ सोयारोश्यहीजायलो॥ औरअपराधतौनांहीहोयलो॥ अरकुपात्रनैंदांनदि ३१

यांधननीजाय॥ अरपरलोकविषैंनर्कादिकका भवविषैदुषसहनापडैगा॥ तीसूंप्राणजावौतोजावौ
पणिअपात्रनैंदांनदेनाउचित्तनांही॥ सोएबातन्यायहीहै॥ पात्रतौअहारादिकलेमोक्षकासाध
नकरैहै॥ अरअपात्रअहारादिकलेइअनेकअनंतसंसारकाबधावनेंकाकार्यकरै॥ सोकार्यके
अनुसारिकारणकेकरतादातारकूंफललागैहै॥ सोवैंपात्रनैंदांनदीयाअपूठामोक्षकादांनदीया
अरवैअपात्रनैंदांनदीयाअनंतसंसारविषैंवानैंअन्यजीवांनैंवोया॥ अैसाजांणिबुद्धिवांनपु
रुषनिकूंसर्बप्रकारअपात्रदांनतजनां॥ सुपात्रदांनकरणांउचित्तहै॥ ग्रहस्तकीघरकीसोभा
तौधनसौंहै॥ अरधनकीसोभादांनसौंहै॥ अरधनपाइयेहै॥ सोदांनहीसौंपाइएहै॥ धर्मबिनां
एककौडीभीपाईबौदुर्लभहै॥ जौआपनांपुरुषार्थहीकरिधनकीप्राप्तिहोइतौपुरुषार्थतौसर्व
हीजीवनकरिहोइहै॥ एकएकजीवकेतृष्णारूपीषाडाअैसादीर्घऔंडाहै॥ ताकेबिषैंतीनलोककीसं
पदाषेईकुई॥ परमांणमात्रसीदिषाईदेहै॥ सोअैसीतृष्णारूपीषाडाकौंसर्वजीवपूर्स्याचाहैं॥ परंतुआ
जिपर्हलीकहीएकजीवकानहींपूर्स्यागया॥ तातैंसंतपुरुषतिनौंनैंतृष्णाछोडिसंतोषनैंप्राप्तभयाहै॥

अरत्यागवैरागनैंभजेहैं॥ ताहीकाप्रशादकरिग्यानानंदमयनिराकुलतशांतरसकरिपूर्ण
सूक्ष्मनिर्मलकेवलग्यांनलक्ष्मीनैंपावैहैं॥ अबिनासीअबिकारसर्बजीवनिलोभताकोंसर्ब
प्रकारउपादेयजांनिभजौ॥ रूपरगतानैंदूरितैंतजौ॥ आगैंदुषितभुक्तकेदांनकाविशेषकहिएहैं:
आंधा॥ बेहरा॥ गूंगा॥ लूला॥ पांगुला॥ बालक॥ वृद्धि॥ स्त्री॥ रोगी॥ घायल॥ क्षुधाकरिपीडित॥ सीतकी
बाधाकरिपीडित॥ औरबंदीवांन॥ औरक्षुधात्रषासीतकरिपीडिततिर्यंच॥ वाव्याईस्त्री॥ कूकरीबि
लाई॥ गाय॥ भैस्य॥ घोडी॥ आदिजाकाकोईरक्षकसहायकनांहीबांधवकोईनांही॥ एपूर्बैकहेम
नुक्षतिर्यंच॥ तेअनाथसर्बपराधीनहैं॥ अरगरीबहैं॥ दुषितहैं॥ दुषकरिमहाकष्टनैंसहैहैं॥ अरवि
लविलापकरैहैं॥ अरदीनपनांकाबचनउच्चरैहैं॥ दुषसहनैंकूंअसमर्थहैं॥ ताकेदुषकरिबिल
षायागयाहैमुषजाका॥ अरशरीरकरिछीनहैं॥ बलकरिरहितहैं॥ सोऐसेदुषीप्रानीनिकूंदेषि
दयालपुरुषहैंतेभयभीतहोयहैं॥ अरवाकासादुषआपकोंहोयहैं॥ अरघबरायगयाहैचितजा
का॥ ऐसाहोतसंतावहदयालपुरुषजिहितिहिप्रकारकरिअपनीशक्तिकेअनुसारिवाकेदु ३२

षकोंनिर्व्रतकरैहैं॥ अरप्राणीजीवकूंमारताहोइ॥ बंदिकरताहोइ॥ ताकूंजिहितिहिप्रकारकरि
छुडावैहै॥ दुषीजीवकाअवलोकनिकरिनिर्दईऊवा॥ आगैंनांहीचल्याजायहै॥ अरबज्रसमांन
हैहृदयजाका॥ ऐसानर्दईपुरुषऐसेप्रानीकूंभीअवलोकिजाकेदयाभावनांहीउपजैहैं॥ अ
रयाबिचारैहै॥ एपापीहैं॥ पूर्वैपापकीयाताकाफलकूंभोगवैहीभोगवे॥ ऐसानांहीजांनैहैंकिमैं
भीपूर्बैंऐसादुषपायाहोयगा॥ अरफेरिपांऊंगा॥ तातैंआचार्यकहैहैं॥ धिक्कारहोऊ॥ ऐसेनिर्दईप्र
णांमकूं॥ जिनधर्मकोमूलतौएकदयाहीहैं॥ जाकेघरदयानांही॥ तेजैंनीनांही॥ जैनीबिनांदयानांही॥
यहनियमहैं॥ आगैंदांनदेनैंकास्वरूपकहिएहैं:॥ रोगीपुरुषनकूंऔषधिदांनदीजे॥ सोनांनांप्रकार
कीऔषधिकरायराषिये॥ पाछैंकोईरोगीआयमागैंताकौंदीजिए॥ अथवाबैद्यचाकरराषिवाकाईला
जकरवाइये॥ ताकाफलदेवादिककासरीरीरनिरोगपाइये॥ आयुपर्यंतताकैरोगकीउत्पतिनां
ही॥ अथवामनुष्यकासरीरपावैतौऐसापावै॥ अपनेंशरीरमैंतौरोगकोईप्रकारउपजैनांही:
अरअपनेंशरीरकास्पर्शकरिवानहावनकाजलकरिअन्यजीवनकाअनेकप्रकारछिनमात्रमैं

MEMORIAL

श्रा० स०
३३

रोगरहितहोहैं॥ बहुरिक्षुधातृषाकरिपीडितप्राणीकूंसुद्धअन्नजलदीजे॥ भावार्थ॥ अन्नतौअै
सात्रसजीवअरहरितकायकरिरहितहोयथाजोगअन्नरोटी॥ अरछांन्यांजलकरिपोषिये॥ ता
काफलछुधाकरिरहतदेवपदपावै॥ अरमनुष्यहोयतौयुगल्यायातीर्थंकरचक्रवर्तिआदिपदवी
धारकमहाभोगसामग्रीसहितहोइ॥ बहुरिमारतैंजीवकौंछुडाइये वाआपमारनांछोडिए॥ ताका
फलकरिमहापराक्रमीवीर्यकेधारीदेववामनुष्यहोइ॥ ताकौंकोईआसंगिसकैनांही॥ अैसानि
र्भयपदपावै॥ बहुरिआपपढ्याहोयतौऔरांनैंसिषाइये॥ तत्वोपदेशदेजिनमार्गबिषैंलगाइये॥
आपशास्त्रलिषवासोधिये॥ वागूढकाव्यशास्त्रकीकाव्यवनायअर्थप्रगटकरिटीकावनाईये॥ अ
थवाधनादिषरचिकरिनानाप्रकारकेनैंवैसासास्त्रलिषाइये॥ अरधर्मात्मापुरुषनिकौंबांचनें
कौंदीजिये॥ यहग्यांनदांनसर्वोत्कृष्टहै॥ याकाफलभीग्यांनहै॥ सोग्यांनदांनकाप्रभावकरिमति
ग्यांनश्रुतग्यांनअवधिग्यांनमनपर्यैतविज्ञांनबिनाअभ्यासकीयेहीफुरिजायहैं॥ पाछैंसीघ्रहीके
वलग्यांनउपजैहै॥ बहुरिपरनैंसुषीकीयांआपनैंजगसुषदाईकरियरिणवे॥ बहुरिगुरादिककावि ३३

नयकीयां॥ आपजगतकरिविनयकरियोगहोयहैं॥ अरभगवांनकेचवरछत्रसिंघासनवादित्र
चंदवाझालरीरकेबीआदिउपकरणचढावैहै॥ तौवेभीअैसापदपावैहैं॥ सो॥ आपकेमस्तगऊप
रिचवरदुरै॥ वासिंघासनऊपरिबैठिदेवविद्याधरांकाअधिपतिहोय॥ बहुरिजिनमंदिरकाकरावा
करिभगवांनकीपूजाकरिआपभीत्रिलोक्यपूज्यपदपावैहैं॥ भावार्थ॥ तीर्थंकरवासिद्धपदपावैहैं॥
सोयहन्यायहीहै॥ जैसाबीजवोवैतैसातैसाफललागै॥ अैसानांहीजोबीजतौऔरहीबस्तुका॥ अ
रफलऔरहीबस्तुलागै॥ सोएत्रिकालत्रिलोकबिषैहोयनांही॥ एनियमहै॥ सोईजगतबिषैंप्रवर्त्त
देषिएहै॥ जैसाजैसानाजबोइयेहै॥ तैसातैसाहीनिपजैहै॥ सोजैसाजैसाहीवृक्षकाबीजबोवै॥ तै
सातैसाहीवृक्षकेफलनिपजै॥ जैसाजैसाहीपुरुषस्त्रीवातीर्यंचतिरयंनीकासंयोगहोइ॥ जाकेजै
साजैसाहीपुत्रादिकउपजै॥ अैसैंबीजकेअनुसारिफलकीउत्पतिजांननी॥ तीसंश्रीगुरुकहैहै
हेपुत्रहेभव्यतूअपात्रनैंछोडिपात्रअर्थदांनकरहु॥ अथवाअनुकंपायकरिछुधितभुषितजी
वांनैंपोषि॥ ज्योंवाकीबाधानिर्बितहोइ॥ धायाधीयाभ्रष्टपुष्टवागुरुकीटसकधरावै॥ ताकौंदमडी

मात्र भी दिनां उचितनांही॥ बहुरि कैसा है अपात्रका दांन॥ जैसैं मुरदाका चकडोल काढिये है॥
अर चंडालादिक चुनि चुनि लै है तैसैं ही अपात्रनैं दांन दीयां लोभी पुरुष जस गांवे है॥ परंतु दांन
के देनावाराकूं तौ नरकां ही जांनां होसी॥ सम्यक सहित होय तौ पात्र जांननां॥ अर सम्यक्त तौ नां
हीं॥ अर चारित्र है ते कुपात्र जांननां॥ अर सम्यक्त वा चारित्र दोनों ही नांही ते अपात्र का फल नर
कादि अनंत संसार है॥ अर सर्व ही प्रकार दांन नांही करै सो कैसा है॥ मसाण के स्थूल मुरदा समां
न है॥ अर धन है सो याका मांस है॥ अर कुटंब परिवार कै है सो गृध्रु पंष है॥ सो याका धन आमिष कूं षा
य है॥ अर विषय कषाय रूपी अर्थ है ताविषैं एजल है॥ तातें मसाण के मुरदा की भली भांति उपमां सं
भवे है॥ तातैं असी सर्व प्रकार निंदि अवस्था जाणि कृपणता भांनि॥ परलोक का भय ठांनि परद्रव्य
का ममत्व न करनां॥ संसार ममत्व ही का बीज है॥ असी हेय उपादेय बुद्धि विचारि सीघ्र ही दांन कर
नां॥ अर परलोक का फल लैनां॥ नही तौ यह सर्व सामग्री काल रूपी दावाग्नि विषैं भस्म होयगी॥
पाछैं तुम बहुत पछितावोगे॥ सो कैसा है वह पछितावा॥ जैसैं कोई आप समुद्र की तीर वैठि कागउडा ३४

वने अर्थ चिंतामनि रत्न समुद्र विषै बहावै है॥ पाछैं रत्नकूं झूरि झूरि मरै है॥ परंतु सुपनमात्र भी चिं
तामनि रत्न पावै नांही॥ सो असा जांननां॥ घणी कहा कहिये॥ उदार पुरुष ही सराय वा योग्य है॥ अर
वे पुरुष देव समान है॥ ताकी कीर्ति देव गावै है॥ इति अतिथिसंबिभागवारह्वा व्रत संपूर्ण॥ असैं वारा
प्रकार स्वरूप जांननां॥ आगैं श्रावक के वारा व्रत तथा सम्यक्त वा अंत समाधिमरण के सत्तरि अतीचार
ताका स्वरूप कहिये है॥ प्रथम सम्यक्त के अतीचार पांच ५ ताविषै संका कहिये जिनबचन विषै सं
देह १ कांक्षा कहिये भोग अभिलाष २ बिचिकित्सा कहिये धुरिगंछा ३ अन्यदृष्टि कहिए मिथ्या
दृष्टी की ४ परोक्ष प्रसंसा ५ अन्यदृष्टि कहिये संस्तव मिथ्या दृष्टी कै समीप जाय स्तुति करनां॥ अ
हिंसा अनुव्रत के अतीचार पांच॥ ५॥ ताविषै बंध कहिए बांधनां॥ १ बध कहिये मारनां॥ २ छेद कहिए छेद
नां॥ ३ अति भारारोपण कहिए बहौत बोझ लादनां॥ ४ अंनपांन निरोध न कहिए षांनपांनादिक
का रोकनां॥ ५॥ सत्य अनुव्रत के अतीचार पांच॥ ५॥ मिथ्या उपदेश कहिए झूठ का उपदेस दैंनां॥ १ रहोभ्या
ष्यांन कहिए काहू काहू की गुह्य बात प्रकासि दैंनां॥ २ कूटलेष क्रिया कहिए झूठा षातादिक लिष

नां ३ ॥ न्यासापहारकहियेकाहूकीबस्तुअस्तबिस्तकरनी ॥ ४ ॥ साकारमंत्रभेदकहियेअन्य
पुरुषकामुषादिककाचिह्नदेषिताकाअभिप्रायजांनिप्रकासिदैनां ॥ ५ ॥ अचौर्यअनुव्रतकेअ
तीचारपांचः ॥ ५ ॥ स्तेनप्रयोगकहियेचोरीकाउपायबतावनां ॥ १ ॥ तदाहृतादांनकहिएचोरनिका
हस्यामालमोलिलेनो ॥ २ ॥ अरविरुद्धराज्यातिक्रमकहियेहांसिलकाचुरावनां ॥ ३ ॥ हीनादिक
मानोनमानकहियेघाटिदैनांबाधिलेनां ॥ ४ ॥ प्रतिरूपकव्यवहारकहियेवढिमोलीबस्तुमेंघाट
मोलीबस्तुमिलावनां ॥ ५ ॥ ब्रह्मचर्यअनुव्रतकेअतीचार ॥ ५ ॥ परिविवाहकरणकहियेपरायाबिबा
हकौंकरावनां ॥ १ ॥ इत्वरिकापरिग्रहीतागमनकहियेविभिचारणीपराईस्त्रीसुहागनिताकेबिषैं
गमनकरनां ॥ १ ॥ वापत्तिरहतस्त्रीताबिषैगमनकरनां ॥ १ ॥ अनंगक्रीडाकहियेशरीरस्यअंगादिकक्री
करनी ॥ १ ॥ कामतीव्राभिनिवेसाकहिएकामकातीव्रपरिणांमकरणं ॥ १ ॥ परिग्रहप्रमाणअनुव्रत
अतीचार ॥ पांचइंद्रीनकेमनोज्ञतथाअमनोज्ञजेबिषयतिनबिषैंहरषबिषादकरनां ॥ तथा
औरप्रकारभीकहियेहैं ॥ अतिवाहनकहियेमनुष्यतथापसुकौंअतिगमनकरावनां ॥ १ ॥ अति ३५

संग्रहकहिएबस्तुनिकाबहुतसंग्रहकरनां ॥ १ ॥ अतिभारारोपणकहिएलालचकरिअतिबोझलादनां
१ ॥ अतिलोभकहिए ॥ अतिलोभकाकरनां ॥ औरप्रकारभीकहैहैं ॥ क्षेत्रवाबस्तुकहिएगावषेटहाटिह
वेलीआदि हिरण्यस्वबर्णकहिए ॥ रोकडितथागहणौं ॥ १ ॥ धनधांनिकहिए ॥ चोपदवाधान्यादिक ॥ १ ॥
दासीदासकहिएदासीदास ॥ १ ॥ कुपभांडकहिएबस्त्रतथासुगंधभोजनादि ॥ १ ॥ इनकाअतिक्रमण
कहिएप्रमांणकीयाथा ताकौंउलंघनां ॥ १ ॥ दिगव्रतकेअतीचारपांच ॥ ऊर्द्धव्यतिक्रमकहिए ॥ ऊर्द्धदि
साकाप्रमांणउलंघनां ॥ १ ॥ अधोवितिक्रमकहिएअधोदिशाकाप्रमांणउलंघनां ॥ १ ॥ तिर्यगव्यतिक्रम
कहिए ॥ च्यारिदिशाच्यारिबिदिशाकाप्रमांणउलंघनां ॥ १ ॥ क्षेत्रवृधिकहिएं ॥ क्षेत्रकाजोप्रमांणकीया
था ताहिभूलिजानां ॥ १ ॥ देसव्रतकेअतीचार ॥ ५ ॥ आनायतनकहिएमर्यादाउपरांतक्षेत्रतैंबस्तुकामंगा
वनां ॥ १ ॥ प्रेक्षप्रयोगकहिएमर्यादाउपरांतक्षेत्रविषैबस्तुभेजनी ॥ १ ॥ सब्दानुपातकहिएप्रमांणउपरां
तिक्षेत्रतैंशब्दकरिकाहूकौंबुलावनां ॥ १ ॥ रूपानुपातकहिएप्रमांणउपरांतक्षेत्रविषैकांकरीइत्यादिभः
गावनां ॥ १ ॥ अनर्थदंडकेअतीचारपांचः ॥ ५ ॥ कंदर्पकहिएकांमोद्दीपनआहारादिककाकरनां १ कौत्कु

च्यकहियेमुषमोडनां ऋांषिचलावनी भौंहचावनी १ मौषर्यकहिए वृथाबकना १ अरसमीक्षा
दिकरणकहियेविनादेषेंवस्तुनिकाउठावनांमेल्हनां १ भोगनर्थकाकहिये निषद्धिभोगोपभो
गनकासेवनां १ सामायकव्रतकेअतीचारपांच ॥ ५ ॥ मनोयोगदुःप्रणधानाकहिएमनकीदुष्टता १ वचन
योगदुःप्रणिधानाकहिएवचनकीदुष्टता १ काययोगदुःप्रनधानकहियेशरीरकीदुष्टता १ अनादरकहिए
सामायककानिरादर १ स्मृतिअनुपस्थांनकहियेपाठकाभूलिजांनां १ प्रोषधोपवासकेअतीचारपांच ॥
अप्रतिवेक्षितअप्रमार्जितउपसर्गकहिए विनांदेषेंबिनांपूछेंवस्तुकाधरनां १ अप्रमार्जितआदांनक
हिएवस्तुकाउठांवनां १ अप्रतिवेक्षतअप्रमार्जितसंस्तरकहिये बिनांदेषैबिनापूछेसांथराबिछाव
नां १ अनादरकहियेनिरादरसौंपोसाकरनां १ स्मृतअनुपस्थानकहिएपोसाकादिनआठैंचौदसिजेप
रवीदिनतिनकौंभूलिजांनां १ भोगोपभोगपरिमांणकेअतीचारपांच ॥ ५ ॥ सचित्तआहारकहियेहरित
कायादिककाआहारकरनां १ सचित्तसंबंधआहारकहियेपातलिदौंनांआदिसचितवस्तुतिनबिषैमो
ल्हिवादकिएइत्यादिसचितसंबंधकाआहारकरनां १ सचितमिश्राहारकहिये उष्णजलमैंसीतलजल

नाष्याहोइताकाअंगीकारकरनां १ अभिषवआहारकहियेसीला बिदुल इत्यादिअयोग्यआहारताका
लैनां १ अतिथसंबिभागव्रतकेअतीचारपांच ॥ ५ ॥ सचित निषेपकहिये सचितजेपातलिदौंनांताबिषैमेल्यौ
जोआहारताकादैनां १ सचित प्रथांनकहियेसचितकरिढांक्यौजोपात्रकौंदौनां १ परव्यपदेसकहिये
पात्रदांनऔरनिकौंबतायआपअन्यकार्यकौंजाये १ मात्सर्यकहियेऔरनिकादांनदीयादेषिनस
कै १ कालातिक्रमाकहिएहीनअधिककालगमावनां १ अंतिसंलेषणाअतीचारपांच ॥ ५ ॥ जीवि
तआसंसाकहिएजीवनेंकोअभिलाष १ मरणआसंसाकहिएमरणैकाअभिलाष १ मित्रानुरागक
हिए मित्रानिविषैंअनुराग १ सुषानुबंधकहिये ईभवकासुषनिकाचिंतवन १ निदांनकहियेप
रभवकहिये परभवकेभोगनकीअभिलाष १ ऐसैंसर्बमिलिसतरिअतीचारभये ॥ तिनिकात्यागकर
णां ॥ आगैंसामायककाबतीसदोषकहैहैं ॥ अनातकहिये निरादरसौंसामायककरै १ स्तब्धकहिये गर्बसौं
सामायककरै २ प्रतिष्टाकहिए मांनबडाईवामहिमांकेवास्तैसामायककरै ३ परपीडितकहिये परजीवनैं
पीडाउपजावै ४ दोलायतकहिये हीदवालाकीसीनांईसामायकविषैहालै ५ अंकुसकहिये अंकु

सकीसीनांईसामायकचक्रत्ताक्रियाकरै ८ कछपरिंगकहिये काछवाकीसीनांईसरीरसंकोचिकरि
सामायककरै ९ मत्स्योद्वर्त्तनकहिए मांछलाकीसीनांईनीचोउंचोहोय ७ मनोदुष्टकहिये मन
दुष्टताराषै ९ वेदकावधकहिये भयकहिये भयसंयुक्तसामायककरै १० विभितकहियेऋद्धिगो
रवकहिये रिद्धिगौरवमनमैंराषै ११ गोरवकहिये जातिकुलकोगर्वराषै १२ स्तेनतकहिए चोरकी
सीनांईछांनैंसामायिककरै १३ व्यतीतकहिए ——— १४ प्रदुष्टकहिये अत्यंतदुष्टता
सौंकरै १५ तर्जितकहिये पैलानैंभयउपजावै १६ शब्दकहिये सामायकमैंसावद्यकार्यलियांबो
लै १७ हीनतिकहिए परकीनिंदाकरै १८ त्रवलितकहिए मस्तगकीभौंहचटायेंसामायककरै
१९ संकुचितकहिये मनकेविषैसुकचौथकोसामायककरै २० दिगविलोचनकहिये दसौं
दिसामाहुं अवलोकनकरै २३ आदिष्टकहिये जायगाविनांदेष्याविनापूछ्यांकरै २४ संयमकर
मोचनकहिये जैसेंकहीकोलहनोहोयसोजिंहितिहिंप्रकारदेंनां पूरोपड्योचाहै त्यौंहीदेणांकी
सीनांई जिहितिंहिंप्रकारैसामायककोकालपूरोकीयोचाहैं २५ लब्धकहिये सामायककीसाम

ग्रीलंगोटपीछीवाछित्रजोगाईमिल्लैतोकरैनांहीआघोकाढिजाइ २६ अलब्धकहिये २७ हीनकहि
ये सामायककोपाठहैसोहीनपढै अथवासामायककोकालपूरोहुवांबिनांहीउठिबठहोइ २८ उत्त
चूलिकाकहिये ——— २९ मूककहिए गूंगाकीसीनांईबोलै ३० दुर्दुरकहिए मिंडककी
सीनांहीऊंडासुरनैंलीयांदरडटरडवोलै ३१ चलुनित्तकहिये
३२ ऐसासामायककाबत्तीसदोषजांननां आगैंसामायिकविषैंसामायसुद्धिराषिसामायक
रैताकोव्यौरोकहैहै क्षेत्रसुद्धकहियेहैं जैठे मनुष्यांकोकल्लकल्लाटशब्दनहोयघणांलोगनहोय डां
सरमांछरनहोय अरघणोपौनवाघणीगरमीवाघणौंसीतनहोय १ कालसुद्धिकहिये प्रातवामध्या
नवासांझसामायककौकालछैसोउलंघनहीं जघन्यदोयघडीमधमच्यारिघडीउत्कष्टछहघडीसाम
यककोकालछै सोदोयघडीकरणीहोयतो घडीकातडकातडकासंलगायघडीदिनचढ्यांपर्यंत छहघ
डीकीकरणीहोयतौ तीनघडीकातडकासौंलगायतीनघडीदिनचढ्यांपर्यंत ईकालआदिविषैसा
मायककीप्रतिज्ञाकरै प्रतिग्या सिवायकालल्लगावै पणिंहीनकालल्लगावैनांही ऐसेंहीमध्यानस

Dr BHAU DAJI MEMORIAL
डॉक्टर भाऊदाजी स्मारक

श्रा० चा० मैंवासांऊसमैंजांननां।१।आसनशुद्धिकहियेपद्मासनवाषडगासनसामायककरनां।विनयशुद्धि
३८ कहिये।देवगुरुधर्मकौंवादर्शनग्यानचारित्रताकौंविनयलीयांकरै।मनशुद्धिकहिए।रागद्वेषरहि
तमनराषै।१।बचनशुद्धिकहिए।सावद्यवचनवोलैंनांही।कायशुद्धिकहिए।बिनांदेष्यांबिनापूंछ्या
हाथपगउठावैवाधरैनांही।ऐसासातशुद्धिकास्वरूपजांननां।आगैंकायोतसर्गाकेबाईसदोषकहि
एहैं।ऊंड्डाश्रितकहिए।भींतिकौआसरोलेवौ।१।लतावककहिए।वेलकीसीनांईहालतारहनां।१।स्तंभो
वष्टंनकहिये।स्तंभकाआसरालैंनां।१।कुंचितकहिए।सरीरकासंकोचनां।१।स्तनपेक्षाकहिए।कुचकादे
षनां।१।काकदृष्टकाकहिये।कागकीसीनांईदेषनां।१।शीर्षकंपितकहिए।मस्तगकाकंपावनां।१।धुराकंधर
कहिये।कांधानीचाकरनां।१।उनमत्तकहिये।मत्तवालाकीसीनांईचेष्टाकरणी।१।पिसाचकहिये।भूतकी
सीनांईचेष्टाकरणी।१।अष्टादिशेषणंकहिये।आठौंदिशाकीतरफचोषनां।१।ग्रीवामनकहिये।नाडि
कोनवावौ।मुकसंज्ञाकहिए।गूंगाकीनांईसैंनकरणां।आंगुलिचालनांकहिए।आंगुलीकाचलावनां
१।कपिथनुष्टकहिये।काथोडीकीसीनांईमूठीवाधनां।१।शीर्षोन्नमनंकहिये।कोईपीठमायाउपरिती ३८

कौआश्रयलैनां।१।स्वांगस्पर्शनकहिए।अपनांअंगस्पर्शना।घोटकंकहिये।घोडाकीसीनां
ईपावकाकरणां।१।आगैंश्रावककेच्यारिप्रकारअंतरायकहियेहैं।मदिरा।१।मांस।१।हाड।१।काचाच
र्म।१।च्यारिआंगललोहीकीधार।१।वडापंचेंद्रीमूवाजिनावर।१।विष्टामुत्र।१।चूहडा।इनआठनि
कौंतौप्रत्यक्षनेत्रांकरिदेषनेंहीका।भोजनविषैअंतरायहैं।बहुरिआठतौपूर्वीदेषनैंबिषैकह्या
सोई।८।अरसूकाचर्म।१।नष।१।केस।१।ऊंन।१।पांष।१।असंयमीस्त्रीवापुरुषवडापंचेंद्रीतिरयंच
१।रितवंतीस्त्री।१।आषडीकाभंग।१।मलमूत्रकरिसंका।१।मुरदाकास्पर्शन।१।कांसाबिषैकीयोत्र
समूर्छनजीवनिकसै।वावालनिकसैकांसाविषै।वाहस्तादिकनिजअंगसौंवेइंद्रीआदिछोटाव
डात्रसजीवकाघात।इत्यादिकभोजनसमयस्पर्शहोयतौभोजनबिषैअंतराय।बहुरिमरण
आदिककडुषताकाबिरहकरिरोवताहोय।ताकासुंणनों।१।लायलागिहोयताकेसुंनिबा।
का।१।नगरादिककामारबाका।१।धर्मात्मापुरुषकौंउपसर्गहुयेंका।१।मृतकमनुष्यका।१।कोई
कानांककांनछेदनेंका।१।अस्वोरादिकनैंमारिबालेगयाहोयताका।चिंडालकेबोलनेंका।१।

श्रा०चा० जिनबिंबवाजिनधर्मकेअविनयका १ धर्मात्मापुरुषकेअविनयका १ इत्यादिमहापापके
३९ वचनसत्यरूपआपनैंभासैतौऐसैंशब्दसुननैंविषैभोजनकाअंतरायहैं बहुरिभोजनक
रतीबारऐसीसंकाउपजैकैयातरकारीतौमांससारिषीहैं वालोहूसारिषीहैं १ वाहाडसारिषीहैं॥
वाचरमसारिषीहै वाविष्टावासहित १ इत्यादिनिंदकवस्तसारिषीभोजनसमैंकल्पनाउपजै॥ अरम
नमैंग्लानिहोइआवै अरमनवाकेचाषनैंविषैंऔहठाहोइतौ॥ भोजनविषैंमनकाअंतरा
यहैं॥ अरभोजनविषैंनिंदकवस्तुकीकल्पनांहीउपजै॥ अरमनविषैवाकाजांनपनांहोइ॥
तौअंतरायनहीं॥ ऐसैंदेषिवाकाआठ ८ सपर्शकाबीस २० सुननैंकादस १० मनकाछह ६॥
सबमिलिच्यारिप्रकारकेचवालीस ४४ अंतरायजांननां॥ अरकेईअन्यराग भावधरनैंकाकार
ण॥ अरअन्यजीवकीदयाहैतेतौअंतरायपालैनांहीं॥ अरहूं मिरचिविष्टाकेनांममात्रसुनैंना
प्रकारकीगरिष्टगरिष्टमेवापकवांनदहीदुग्धघृततरकारीषादिअषादिकेबिचारबिनांत्रस
थावरजीवकीहिंसाअहिंसाकेबिचारबिनांकामोत्पादनवस्तुहैं॥ जगविषैंहोम्यांप्राणीबैकुंठ ३९

जायहैं॥ आगैंसातजायगांमौन्यकरनीता कास्वरूपकहियेहैं॥ देवपूजाबिषैं १ सामायकबिषैं १ स्नान
बिषैं १ भोजनबिषैं १ कुशीलबिषैं १ लघुदीर्घनिहारबिषैं १ इनसप्तमौंनकेधारकपुरुषहाथसौं
वामुषसौंसैंनकरैंनहीं॥ वाहूंकारककरैंनांहीं॥ आगैंग्यारास्थानकाबिषैंश्रावगकेजीवनंकाद
यांअर्थचंदवाचाहिएसोकहियेहैं॥ पूजाकास्थानऊपरि १ सामायककास्थानऊपरि १ चूल्है १॥
परंडै १ ऊषली १ चाकी १ भोजनस्थानक १ सज्यास्थानक १ आटोचालैंतैंठै १ व्यापारादिककरै
नैंठै १ अरधर्मचरचाकेस्थानकबिषैं १ ऐसाजांननां॥ आगैंसामायकप्रतिमाकास्वरूपकहिएहैं॥
१॥ दूसरीप्रतिमाकाबिषैंआठैंचौदसिवाऔरपरव्यांबिषैंतौसामायकअवस्यकरैंहीकरै॥ अपिसर्ब
प्रकारनियमनांहीकरै॥ अरतीसरीप्रतिमाकेधारीकै॥ सर्बप्रकारनियमहै॥ ऐसाबिषैंजांननां॥
॥ आगैंप्रोषधप्रतिमांकोस्वरूपकहिएहै॥ ऐसैंहीदूजीतीजीप्रतिमांकेधारीकैप्रोषधउपवासकानि
यमनांहीहैं॥ मुष्यपणैंतौकरैहै॥ गौनपनैंनांहीभीकरैहैं॥ अरचौथीप्रतिमाकेधारीकेनियमहैं॥ जा
वतजीवकरैंहीकरै॥ आगैंसचितत्यागप्रतिमांकास्वरूपकहैहैं॥ दोइघडीउपरांतिकाअनछांणपां

श्रा॰चा॰ पांनीअरहरितकायमुक्तकरिनांहीबिराधैहै॥अरमुष्यपणैंहस्तादिककरिभीपांचौंस्थावरांकूं
४० नांहीबिराधैहै॥याकेसचित्तभषनेंकात्यागहै॥पांचस्थावरांकायादिकरित्यागनांही॥मुन्यकैहै॥
हस्तादिकअंगकरिहिंस्याकापापअल्पहै॥अरमुषमेंभषनैंकामहापापहै॥मुषकात्यागपांच
मीप्रतिमांकेधारीकैहै॥अरसरीरादिककात्यागमुंनिकैरै॥मुनिबिशेषसंयमकूंप्राप्तभयाहै॥
आगैंरात्रिभुक्तित्यागदिनबिषैकुशीलत्यागप्रतिमांकास्वरूपकहियेहै॥रात्रिभोजनकात्यागतौप
हलीदूसरीप्रतिमांहीसूंमुष्यपणैंहोयआयाहै॥परंतुक्षत्रीबैश्यब्राह्मणसूद्रआदिजीवनानांप्र
कारकैहै॥स्पर्शसूद्रपर्यंतश्रावकव्रतहोइहै॥सोजाकेकुलक्रमबिषैहीरात्रिभोजनकात्याग
चल्याआयाताकैतौरात्रिभोजनकात्यागसुगमहै॥परंतुअन्यमतीसूद्रजैनीहोय॥अरश्रावकव्र
तधारैताकौंकठिनहै॥तातैंसर्वप्रकारकीछठीप्रतिमांबिषैहीयाकात्यागसंभवैहै॥अथवाअपनैं
षावाकोत्यागतौपूर्वैहीकीयाथा॥इहांऔरांकूंभोजनकरावनैंआदिकात्यागकीया॥आगैंब्रह्मच
र्यप्रतिमांकास्वरूपकहैहै॥इहांघरकीस्त्रीकाभीत्यागकीयानांहीवासहितब्रह्मचर्यव्रतअंगीकार ४०

कीया॥आगैंआरंभत्यागप्रतिमांकहैहै॥इहांव्यापाररसोईआदिआरंभकरनैंकात्यागकीया॥पैलाकैघरिवाअ
पनाघरिभीत्याबुलायाजीमैहै॥परिग्रहप्रतिमांकास्वरूपकहियेहै॥इहांजोवाकैतुछआपनैंपहरवाकाधोव
तीपछेवडीपोत्याआदिराषैहै॥अवशेषपरिग्रहकात्यागकरै॥आगैंअनुमतत्यागप्रतिमांकास्वरूपकहियेहै॥
इहांसावद्यकार्यकाउपदेशदेनाभीतज्याहैसावद्यक्रीयाकारिज्कीअनुमोदनाभीनांहीकरैहै॥उद्दिष्ट
त्यागप्रतिमांकास्वरूपकहियेहै॥इहांबुलायानांहीजीमैहै॥उदंडहीउतरैहै॥ताकादोयभेदहै॥एकतौक्षुल्ल
क॥अरएकऐलक॥क्षुल्लकतौकमंडलपींछीआधापछेवडालंगोटराषैहै॥स्पर्शसूद्रलोहकापात्रराषैहै॥कं
चकुलीपीतलआदिधातुकौराषै॥अरपांचघरांसूंभोजनले॥अंतिकेघरिपाणीले॥वहांहीवठिपात्रमैंभोजनकरै
अरकातस्याभीकरावैहै॥अरऐलककैपछेवडाबिनांएककमंडलपींछीलंगोटहीराषैहै॥अरकरपात्रआहा
रकरैहै॥अरलोंचकरैहै॥अरलंगोटराषै॥अरलंगोटचाहियेतौलेइ॥अरआहारकौंजायजबश्रावककेघरिकैद्वारै
ऐसासब्दकहैअक्षयदांन॥अरनगरवामंडपमठवाग्रहबिषैबसैहै॥वामुन्याकीसमीपवनादिकबिषैंबसैहै॥अ
रमुंन्याकाचरनारविंदनैंसेवैहै॥अरमुन्याकीसाथिहीबिचरैहै॥अरतुच्छकभीमुंन्याकीसाथिहीबिचरैहै॥

आ॰चा॰ अरसंसारीकसूंमहाउदासीनहैं। अरअनेकशास्त्रांकापारगामीहैं। अरसुपरबिचारकावेताहै। तातैंआ
४१ पचिन्मूर्तकुवाशरीरसूंभिन्नस्वभावबिषैंतिष्टैहैं। अरअैलकवहित्रअर्जिकाजीतौक्षत्रीवैश्यब्राह्मणउच्च
कुलकेहीनियमकरिउत्कृष्टश्रावककेव्रतधारैहैं। अरक्षुल्लककेव्रतस्पर्शसूद्रभीग्रहणकरैहैं। अरअस्पर्श
सूद्रनैंप्रथमप्रतिमांकाधारकजघन्यश्रावकताकाव्रतभीनांहीसंभवहै। अरसौंसआषडीपालैहैं। अरब
डासैनीपंचेंद्रीतिर्यंचबिषैंपानकाधारकतानैंभीमध्यश्रावकव्रतहोइहैं। सोदेषोश्रावककीतौयहवृतिहै।
अरमहापापीमहाकषाईमहामिथ्यातीमहापरिग्रहीमहाबिषईदेवगुरुधर्मकेअविनईमहात्रष्णावा
नमहालोभीस्त्रीकेरागीमहामांनीग्रहस्तांकेसैंवैंगडिभावमहाविकलसप्तविसनकरिपूर्ण। अरव
हकायरहैं। वावापुराभोल्याजीवांनैं। औरज्यांकेकोईप्रकारकौसंवरनांहीं। तृष्णाअग्निकरिदग्ध
होयगयाहैआत्माजाका। सोअपनैंलोभकरित्रिलोक्यकरिपूज्यश्रीतीर्थंकरदेवकाधर्म। वाशांति
मूर्तिजिनप्रतिबिंबताकीतौनिंदाकरै। अरअपनीबिपरीतकौंपोषै। कदाचियाकेग्यांनहोईजासी
तौम्हांकौऔगण्यांनैंप्रतिभासिसीतौपाछैंम्हाकीआजीवकामनैंहोसी। अैसानिर्दईआपणामु ४१

तलबकेवास्तेजगतनैंडुबौवैहैं। अरधर्मपंचमांकालकेअंततांईरहनांहैं। वकुरिताकेलएवदेंयाही
वासनासदैववसैहैं। अरजिनधर्मकेआश्रयआजीवकापूरीकरैहैं। जैसैंकोईपुरुषकोईप्रकारआ
जीवकापूरिकरिवानैंअसमर्थहैं। पाछैंवहआपणीमातानैंपीढिबैठाणेंआजीवकापूरीकरैहैं। त्यों
हीजिनधर्मनैंसेयसतपुरुषतौएकमोक्षहीनैंचाहैहैं। स्वर्गादिकभीनांहीचाहैहैं। तौआजीवकाकी
कहावातहैं। सोहायहायहुंडासर्पणीकादोषकरिइंपंचमकालबिषैंकेसीबिपरीततापैलीहैं। का
लडुकालबिषैंगरीबकाछोर[illegible]मरतांहोयज्यांरिरूपैयाविषैचाकरगुलांमकीनांईमोलिविक्यांपा
छैंनिर्मायलषायबडाहुवाअरजिनमंदिरनैंआपनारहिवाकाघरकीया। अरसुदेवगुरुधर्मकेवि
नयताकातौअभावकीया। अरकुगुरादिककेसेवनैंकाअधिकारीहुवा। अैसाहीऔरांनैंउपदेशदी
या। जैसैंअमृतनैंछाडिहलाहलबिषनैंसेवै। वा चिंतामणिरत्नछांडिकाचषंडकीचाहिकरै। वाकाम
देवसाभर्तारछोडि। अपरसमुद्रऔंधाबहिरागूंगालूल्यापांगुल्याकोढीतासूंबिषयसेयआपनैंअ
न्यमांनैं। अरयाकहैं। मैंशीलवंतपतिव्रतास्त्रीहैं। सोअैसीरीतिकुभेष्यांबिषैपाइयेहैं। अरताहि

अंधजीवआसिराल्येयधर्मरसायणवाहैहैं। अरआपकूं पुजायपुजायमहंतत्मांननेंलागा। अरआ
पनैंमुषसूंकहै म्हे भट्टारकदिगंबरगुरछांम्हांनैंपूजो। औरनैंपूजिसीतौदंडदेस्यां। वाथांकेमांथै
भषारहिस्यां। वानिंदाकरस्यां। अरस्त्रीसाथिलीयांफिरै। सोभट्टारकनांवतौतीर्थंकरकेवलीकाहै
अरदिगंवरकहिए निर्ग्रंथसोनामपरिग्रहरहितकाहै। ताकैतिल्तुसमात्रपरिग्रहतौवाघि। अरचौ
दहप्रकारकाअभ्यंतरतासूंरहित। तासूं निर्ग्रंथकहिए। सोबस्तुकास्वभावतौअनादिनिधनअैसै
सारमांनैंकस। सोयहकहावतिकैसी। म्हारीमाअरवाझ। सोजगत्तविषैपरिग्रहहीसूंनकींजाय
हैं। अरपरिग्रहहीजगत्तविषैंनिंदहैं। ज्यौंज्यौंपरिग्रहछोडै त्यौंत्यौंसंयमपावै। सोयावाततौअैसैंत्या
ज्यकरणी। अरहजारांल्याषांरूपयांकीदौलति। अरघोडावहलरथपालिकीचढनेंकौं। अरचाकर
कूकर। अरकडामोतीपहरैं। थुरमांपामडीबांढैं। नरकैंलछमीकेपानग्रहणकरनेंबीदज्ञाहरूप
वकूरिंचेलाचांटीसोईफुईफौज। अरचेल्यांसोईकुईस्त्री। अैसीविभूतिसहितराजाज्ञाहरूप
होतसंताभीआपकूंदिगंवरकेसाहमनजांनैं। मांनूं एदिगंवरनांहीं। हूंडासर्पिणीकेपंचमकलि ४२

कालकीबिधातानैंएमूर्त्तिहीघडीहैं। किमांनूंसातबिष्यकीमूरतिहीहैं। किमांनूंपापकापहारहीहैं।
किमांनूंजगतकेडबोवनेंकूंपथरकीनावहीहैं। बकूरिकैसाहैंकलिकालकागुरू। सौअहारकेअर्थ
दिनप्रतिनग्नहतआदरै। अरभक्तबुलावै। स्त्रीनरवैल्यिवांछनालिवावैं। इंद्रसिस्याकास्पर्शकरैस्त्रीं
कामुषकमलनैं। भ्रमरसाहोईवाकाअवलोकनकरै। पाछैंअत्यंतमग्नहोइ। आपनैंकृतकृत्यमांनैं
सोबात्तन्यायहीहैं। सोअैसात्तौनानाप्रकारकागरिष्टनित्यनवाभोजनमिल्या। अरनित्यनईनौ
तनस्त्रीमिल्लीतौयाकासुषकीकांईपुछणीहै। अैसासुषराजानैंभीदुर्लभ। सोअैसासुषनैंपा
य। कौंनपुरुषमग्ननांहींहोय। नांहोइहीहोय। सोकैसीहैवैस्त्री। अरकैसाहैवाकाषांवद। सो
स्त्रीकातौअंतकरणप्रणांमकैसीबनी। अरपुरुषमोहमुद्राकरिमुर्छितभया। तातैंईअन्या
यकामेटिवानैंकौंनसमर्थहै। तीसूंआचार्यकहैहैं। मेहैंईबिषयईनैंदेषिमौनकरितिष्टांहां। या
कान्यावविधात्ताहीकरनेंकूंसमर्थहैं। अरवेहीदंडदेनैंकूंसमर्थहैं। हमनांहीं। सोअैसागुरांनैंस
इपरलोकबिषैंभलाफलनैंवांछैहै। सोवेकांईकरैहैं। जैसैंकोईपुरुषवांजाकेपुत्रआकासकेफू

ल्ह संसेहरागुंथिआपमुंवांपाछैं वाकाअवलोकनकीयाचाहैहैं वाजसकीर्तिकानांसुन्यांचाहैहैं म
तिहिंसादृस्यवाकास्वरूपजांननां बहुरिपरस्परप्रसंसाकरैहैं वेतोकहैथेम्हांकेसतगुरुहो वेकहै
थेम्हाकेपुन्यात्माश्रावकहो कोनादृष्टांत जैसैंऊंटकातौव्याहै अरगर्दभगीतगावनेंवारे वेतो
कहैंवीदकारूपकामदेवसादृस्यकेसावरणांहै अरकैसासोभैहैं अरवेकहैकैसाकिंन्नरजा
तिकेदेवकेकंठसादृस्यकंठसूंरागगावै यासादृस्यश्रावगगुरांकीसोभाजांननी इहांकोईक
हैं घरकेगुरांकीदसावरनई अरस्वेतांबरआदिअन्यमतीनिकीदसाक्योंनवरनई इहांको
ईप्रश्नकरै ऐसैंनांनाप्रकारकेभेषकैसैंभए ताकूंकहियेहैं जैसैंएराजाकेसुभटवैरीकीफोज
उपरलडनेंकूंचढे पाछैंवैस्यांकेशस्त्रकाप्रहारकरिकायरहोइभागे पाछैंराजायाकोंभागेजांनि
नगरमैंआवनांमनैंकीया अरनगरवाहिरहीरहे सोकहींकातौमांथामूंडनकीया कहींकौंगधव
ढायनगरदोल्योंफेरया कहींकूंलाललकपडापहरायें कहींकौंकाथ्याकपडापहरायें कहींकूंचूडीप
हराई कहींकारांडवैयरिकासांगकीया कहींकासुहागणिस्त्रीकासांगकीया कहींकनैंभीषम ४३

गाई इत्यादिनानांप्रकारकेसागकरायनगरवारैंकाढिदीया अरजेरणकेबिषैंवैरीकूंजीतिआय
मुजराकीया ताकूंराजानानांप्रकारकेपटदीया अरमुषसुंबहोतवडाईकीनी त्योंहीदृष्टांतकेअ
नुसारिदृष्टांतजांननां तीर्थंकरदेवत्रैलोक्यनाथ सोईभयासर्वोत्कृष्टराजा ताकेभक्तपुरुषभ
गवांनकेमस्तगऊपरिआग्याधरिमोहकर्मसूंलडवानैंग्यानबैरागकीफौजकरिग्यानबैराग्यश
फौजकौंलडवाई आपकायरहोयभागया ताकूंभगवांनकीआग्याअनुसारिविधाता कर्मग्रस्त
स्तापनानगरमैंतौआवानदीयावाह्यहीराष्या अररक्तावर पीतांवर स्वेतांवर जटाधारी कनफ
डा आदिनानाप्रकारकेसांगवनाये अरजेभक्तपुरुषमोहकर्मकीजयनैंप्राप्तभया ताकौंअ
र्हंतदेवसोराज्यनगरदीया ताकीआपनैंमुषकरिवहुतबडाईकीनी अरअनागतकालबि
षैतीर्थंकरहोइसी तेभीबडाईकरिसी जैसाजाकास्वरूपजांननां ऐसैंग्याराप्रतिमांकास्वरूप
विशेषपणैंकह्या आगैंरात्रिभोजनकास्वरूपकादोषवाफलकहियेहैं प्रथमतौरात्रिबिषैंत्रसजीवां
कीउत्पत्तिबहुतहै सोवडात्रसजीवतौ डांस मांछर पतंग आदिआंष्यांदेषियेहै सोहीमहाछोटा

DR. BHAU DAJI MEMORIAL

जीवहिनबिषैभीनिजरिनांहीआवैहै॥ ऐसीसंष्यातअसंष्यातउपजैहै॥ अरवासणजावऐसा
होइ॥ सोअग्निविषैतौ हूरिसैतीआइऊकैहै॥ ऐसीहीकोईवाकेनेत्रइंद्रीकाबिषयपीडैहै॥ बहु
रिसरदीचिगटासरसनात्तिबिषैवैठाऊवाचिपिटिहीजायहै॥ अरकीडीमकोडीकूंथिवाकसाडी
मांकडीछोटाविसमराआदित्रसजीवांकासमूहतूथाकरिपीडाऊवा॥ वानासिकानेत्रइंद्रीका
पीडाऊवाभोजनसामग्रीबिषैंआयप्राप्तहोयहै॥ अथवाभोजनसामिग्रीकीयांपाछैंघणीबारहु
ईहोइतौ॥ वाहीबिषैमरजादाउलंघेंपाछैंघणांत्रसजीवांकासमूहउपजैहैं॥ पाछैंवैंहीभोजनकौं
रात्रीबिषैकांसामैंधरै॥ पाछैंऊपरिसूंमांषीमांछरटांट्याकीडीजाल्याविसमराकाबच्चाआदिआयप
रैहैं॥ वाकनसल्यासर्पकाबच्चाआयपडैहैं॥ अथवाएसाराकांसाबिषैंतल्यांसूंचढिआवैहैं॥ अथवा
जवीतवीउडिकांसाबिषैंआयवैठैहै॥ औरनिसाचरजीवनिकौंरात्रीनैंबिशेषसूझैहै॥ तातैंरात्रीनैंगम
नघणांकरैहैं॥ सोगमनकरतैंभोजनसामग्रीबिषैंभीआयजायहैं॥ पाछैंऐसाजीवांकेसमूहनैंकोई
पसहराहरूपमनुष्यनिर्दैऊवाषायहै॥ तौवहमनुष्यनमैंअघोरीहै॥ पाछैंनानाप्रकारकेजीवनिकेभ ४४

क्षवाकरिनानाप्रकारकारोगउपजैहैं॥ वाईछ्याछीनपरैहैं॥ ऐसाजीवनिकेमासकाजैसाजैसाविपा
कहोइ॥ तैसातैसाहीरोगउतपन्नहोइ॥ कोढउपजिआवै॥ फोडाहोइ॥ सूलरोगहोइ॥ सफोदरहोइ॥ अ
तीसारहोइ॥ पेटमैंगंडारपडिचालै॥ बालानीसरै॥ वायपितकफउपजै॥ इत्यादिअन्यकरोगनिकीउत्पतिहोइ
अथवाआंधोहोइ॥ वहराहोइ॥ वायल्याहोइ॥ बुद्धिकरिरहितहोइ॥ सोऐसाउषतौ॥ ईहीपर्यायबिषैंउप
जै॥ पाछैंयाकेफलकरिपरलोकविषैंअनंतसर्पादिकषोटीपर्यायपावैहै॥ परंपराय नर्कादिकजायहैं॥
फेरिवहांसूंनिकसिसिंघव्याघ्रहोयहै॥ फेरिनर्कजायहै॥ ऐसैंहीनर्कसूंतिर्यंचतिर्यंचसूंनर्ककेताईक
पर्यायनिकूंधारिपाछैंनिगोदमैंजायपरैहै॥ वाउंहासूंदीर्घकालपर्यंतभीनीसरिवौदुर्लभहोइहै॥
औरभीदोषकहियैहै॥ कीडीभक्षनतैंबुधिकौनासहोइ॥१॥ अरजल्लंधररोगउपजै॥१॥ मांषीभक्षनतैं
ववनहोइ॥ मांकडीतैंकोढहोइ॥१॥ वाल्हतैंसुरभंगहोइ॥१॥ अभक्षवस्तुभोल्लैजीभिजाय॥१॥ भमरीतैं
सुन्नहोइ॥१॥ कसारीतैंकफवायहोइ॥१॥ आषडीभंगहोइहै॥ त्रसजीवकाभक्षनतैं मांसकादोष
लागैमहाहिंसाहोइ॥१॥ अपच्चहोइ॥१॥ अपच्चतैंअजीरणहोइ॥१॥ अजीरनतैंरोगहोइ॥१॥ त्रषाला

गैअरका मवधै॥ जहरतैंमरनहोइ॥ डाकिणीभूतपिसाचविंतरादिकआदि भोजन झूंठोकरिजाय॥
ऐसेपापकरिनरकबिषैंपतनहोइ॥ ऐसादोषनैंधर्मात्मापूरुषसर्वप्रकार॥ जन्मपर्यंतरात्रिकाखांन
पांननैंतजैं॥ एकमांसरात्रिभोजनकात्यागकाफलपंद्रहउपवासकाफलहोइ॥ ऐसारात्रिभोजन
कास्वरूपजांननां॥ औरदिनबिषैंऔबरीतहषांनांगुफाबिषैं॥ बावादलाआंधीवभूलाकेनिमतका
स्वैंडैअंधेराहोइ॥ तासमयभोजनकरियेतौरात्रिसाहरूपदोषजांननां॥ भावार्थ॥ जीवजंतनिजरिआ
वै॥ ऐसादिनकेप्रकासबिषैं भोजनकरनांउचितहै॥ निजरिनआवैतौदिनबिषैभीकरणंउचितनां
हीं॥ इतिरात्रिदोष॥ आगैंरात्रिनैंचूल्हाबालियेहैताकादोषकहियेहैं॥ प्रथमतौरात्रिनैंकोईजंतुसूझैनांहीं॥
छाणंमैंतौत्रसजीवांकासमूहहै॥ अरआलासूकांकीषबरिपडैनांहीं॥ ममजकासाआलाहोईताबि
षैपईसापईसाभरमा गिंडोलानैंआदिदेवालकाअत्रनागसंष्यातभागपर्यंतसैकडांहजारांलाषां॥
संषिअसंषिजीवांकासमूहपायजेहैं॥ सोसर्वचूल्हाबिषैभस्महोयजायहै॥ अरलाकडीबालियेतौ॥
वाबिषैभीअनेकप्रकारकीलरवाकीडीवाकनसलावासपलीयाआदिवकत्रसजीवांकासमू ४५

हहोयहैं॥ भावार्थ॥ घणींतरहैकील्याकडीतौबीधीहोयहैं॥ ताबिषैंकीडामकोडाउदेईकामलासयलीयाये॥
सिजायहै॥ अरजेचातुरमांसकेनिमतषादिकरिसरदीहोयतौ॥ कुंथियानिगोदिआदिजीवांकीउत्पत्ति
होय॥ पाछैंवैसाहीबलीतानैंबालियेतौवांकाजीवदग्धहोइ॥ तीपापकाकांईपूछना॥ बहुरिचूल्हाबि
षैउष्नताकानिमितपायकीडीमकोडीआदित्रसजीवउलझिरहेहैं॥ सोभीचूल्हाबिषैंहोमाजा
यहैं॥ बहुरिमांषीमाकडीआदिजीवतौरात्रिनैंऊपरिछातिबिषैंविश्रांमलेय॥ पाछैंरात्रिनैंचूल्हाका
धूंवांधकारौलिहोयसाराघरमैंआतापफलै॥ ताकेनिमितकरिसाराजीवदडकदडकचूल्हाविषैं
वाहांडीविषैंवाआटाविषैंवापांनीविषैंआयपडैहैं॥ सोसर्वहीप्राणांतहोयहैं॥ अरअग्निकीऊपटै
हरिहीषकीदेषिपतंगाडांसमाछरआपचूल्हामैंबकतहोयहैं॥ औररात्रिनैंआटासीधाबिषैंइली
सुलसुलीकुंथवाहोयअरकीडीमकोडीईलीयांनैंआदिऊपरिचढिआवैहैं॥ अरघीवतेलदूध
मीठाविषैंजीवआनिपडैहैं॥ सोवैछोटाजीवदिनबिषैभीदीसैनांहीं॥ तौरात्रिनैंवांजीवांकीकांई
गम्य॥ तातैंआचार्यकहेहैं॥ ऐसेदोषसंयुक्तआहारकैसैंकीयाजाय॥ तातैंरात्रिकूंचूल्हाबाल

णांमसाणकीप्रथ्वीसंभीअधिककह्यादैं। मसाणविषैंतौदिनमैंएकहीमुरदाहोमियैहैं। अरचूल्हाविषैंअ
गिणतिजीवताप्राणीहोमियैहैं। तातैंरात्रिचूल्हावालिवाकामहापापहैं। त्यांवालेहैतौवापापकीमर्या
दहमनांहीजोनैंकेवलज्ञांनगम्यहैं। अरकेईधर्मात्मापुरुषतौअैसाहैरात्रिनैंदीयाभीजोवैनांही। अै
सैंरात्रिकेचूल्हावालनैंकादोषकह्या। आगैंअणछांनैंपांणीकादोषकहियैहैं। लाषकोडिबिरडातुरतकाछांणया
पांणीकाढोल्यिये ताविचिणकबेंद्रीजीवमारिवाकापापघणांहै। तासूंअसंष्यातगुणातेंद्रीमारिवाका। ता
सूंअसंष्यातगुणांचौंइद्रीका। तासूंअसंष्यतगुणापंचेंद्रीमारिवाकापापहै। सोअणछांण्यांपांणीकाएक
चलूविषैबेंद्री तेंद्री चौंद्री पंचेंद्री सैनी लाषांकोड्यांतौ आकासकाचिन्हकाविषैंषेहराकीरिणांआम्ही
साम्हीगमनकरैहैं। तासाहरूपपांचप्रकारकेत्रसजीवपायजेहैं सोनीकासाउजलाविषैंदृष्टिकरि
देषियेतौ ज्योकात्योंनिजरिआवै वकूरितासूंछोटाजीवताहीकेअसंष्यातवेंभागसूक्ष्मअव
गाहनाकेधारक। असंष्यातपांचप्रकारकेत्रसअौरभीपावेजेहैं। एककंनातणांकाछिद्रमैंअसं
ष्यातत्रसजीवयुगपत्पांणीछांणतांपरैनीसरिजायहैं इंद्रीयगोचरनांहीआवैहैं अवधिग्यांनवा

केवलज्ञांनगम्यहैं। बकूरिकेईपाणीछांनैंभीहैं। अरजिवाणीजहांकाजहांनांहीपहोचैहैं। तोवहपांनी
अणछांण्यांहीपीयाकहिए। तीसूंभावैएकचलूवाअणछांण्यापानीकाआपनेंहाथसौंढोल्यौवावरत्तो
वापीवौअौरांनैंप्यावोताकापापएकगांवमास्यांकासाहैं। अैसैंहैभव्यतअणछांण्यांपाणीपीवौ। भावैलो
हूपीवौ। अणछांण्यांपाणीसूंसांपडौभावैलोहूसूंसांपडौ। लोहू। बीचिभीअणछांण्यांपांणी विषैबडापा
पकहैहै। लोहूतौनिंदनीकहैही। अणछांण्यांपाणीकावरतिवाविषैं। असंष्यातत्रसजीवांकौघातहोय
हैं। अरजगविषैंनिंदहैं। महानिर्दईपुरुषयाकेपापकरिभवभवमैंरुलैहैं। नर्कत्तिर्यंचकेक्लेसनैपावै
हैं। संसारसमुद्रमांहीसुंनिकसनांदुर्लभहोयहैं। यासमांनपापअौरनांही। घणीकहाकहिये। जैनीपु
रषनिकातीनचिंहनहै। एकतौप्रतिमांकादर्सनकीयांबिनांभोजननकरै। अररात्रिभोजननकरै
अरअणछांण्याजलनपीवै। यामैंसूंएकमैंभीकसरहोइतौजैनीनांही। आनमतीसूद्रसादृसहैं। तातैं
आपणांहेतकावांछीकपुरुषसीघ्रहीअगाल्यापाणीकूंतजौ। इतिअगाल्यापांणीदोष। आगैंसातबिसनां
बिषैछहविसनांनैंछोडिभुवाकोदोषवर्ननकरियेहैं। छहविसनांकोदोषतौप्रगटहीदीसैहैं। जूवांकोदोष

गूढहै॥ ताकूं छह विसनांसूं अधिक प्रगट दिषाइयेहैं॥ जुवां मैं हारि होइ॥ तव चोरी करणी पडै॥ चोरीका
धन आयें तैं परस्त्रीकी चाह होइ॥ परस्त्रीका संजोग न मिलै॥ जब वेश्यादिककै आवै वेश्यांके घर गयें
सुरापान करै॥ याके अमलमें मांसकी चाहि होइ॥ मांसकी चाह जयें सिकार षेल्या चाहै॥ तातैं सात बि
सनांको मूल जूवां है॥ और जीघणां दोष उपजै है॥ जुवारी पुरुषांकी घरकी जायगां आकास रहि जाय
है॥ ईलोक बिषै अपजस होइ है॥ पैठि बिगडै है॥ बिसवास मिटै है॥ राजादिक करि दंडकौं पावै है॥ अनेक
प्रकारके कलेस वधै है॥ अरु कोधलो जअत्यंत वधै है॥ जणजण आगैं दीनपणो भाषै है॥ इत्यादि अने
क दोष जांननें॥ पाछैं ताके पाप करि नर्क जाय है॥ जहां सागरांपर्यंत तीव्र वेदनां उपजै है॥ तातैं भव्यजीव हैं तेह
तकर्म सीघ्र ही छोडौ॥ पांचपांडव आदि इतकर्मके बसी भृत होय सर्वस विभूति अरराज षोया॥ आगैं षेती
का दोष कहिए है॥ आगैं षेतीका असाढके महीनैं प्रथम बर्षा होय॥ ताके निमित करि प्रथ्वी सर्व जीवमई हो
य जाय॥ सो जीव विनां आंगल भूमिका न पाईये॥ ता भूमिकाकूं हल करि फाडियेहै॥ सो भूमिका षुदबाकरि
सर्व त्रसथावर जीवनासतैं प्राप्त होय॥ फेरि पूर्ववत वा जीव उपजै॥ पाछैं इ जीव वर्षा करि वै जो सर्व मरण ४१

कूं प्राप्त होय॥ फेरि जीवांकी उत्पत होइ॥ फेरि हल करि हणपां जाय॥ ता भूमिका बिषैं वीज वावै है॥ पाछैं सर्व जा
यगां अन्नके अंकूर अनंत निगोदरासि सहित उत्पन्न होइ॥ फेरि वर्षा होइ॥ ताकरि अगिणत त्रस
नि थावर जीव उपजै॥ फेरि न्याणवा करि सर्व जीव हणपां जाय॥ फेरि बर्षा करि अैसैं अैसैं ही और उपजै॥
फेरि धूप वा निनाणी करि मरै॥ अैसैं ही चानुर्मास पूर्ण होय॥ पाछैं सर्व षेती त्रसथावर जीवांकरि आ
श्रित तो कुंथांत लांदे करि काटियै॥ सो काटिवा करि सर्व जीव दलमल्या जाय॥ अैसैं तो वतुर्मासकी
षेतीका स्वरूप जांननां॥ आगैं उन्हालूकी षेतीका स्वरूप कहिए है॥ सो प्रथम सावणका महीनांसूं लगा
य कातीका जीव उपजै॥ सो कातीका महीनां पर्यंत॥ पांच सात वार हलकूं सीफावडां करि भूमिकानैं आं
म्हीसांम्हीचूर्ण करै॥ पाछैं वाके अर्थि दोन्यारि वरस पहिली रोडीका संचय कीया था॥ अथवा दोइ च्या
रि वरसकी एकठी कुडई मोलि लेषेत बिषैं नांषै॥ सो वै रोडीका पापकी कांई पूछनी॥ जेती वह रोडीकोवा
ऊंहोड॥ तेता ही लटादिक त्रसजीव जांननां॥ एक दोइ दिनका विष्टा गोबर चौडै पड्या रहि जाय है॥
ताबिषैं लाषांकोड्यां आदि अगिणति लटादिक त्रसजीव किलकिल बिलिकिल बिलकरतैं

आंष्यांदेषियेहैं॥दोइच्यारबरसकासंचयकीयासैंकडांनरगोबरमिष्टाआदिअसुचबस्तुऊपरां
ऊपरीएकठीऊंडेसासतीसरदीसहित॥ताबिषैंजीवांकीउत्पतिकाकौंनवर्ननकरै॥अरुवैसे
हीजीवांकीरासिकूंफावडासूंकारिकारिमहानिर्दईऊवालानैंअर्थिषेतादिककैविषैजाय
षेपैतौवाकानिर्दईपणांकीकहाबात॥पाछैवाषेतकूंसाराषेतबिषैंबषेरिताऊपरिसोस्यावरिफेरे
तापाछैंबीजबोवै॥पाछैंमगअरुकामहीनांसूंलगायफागुणपर्यंतअरहटढाणांकूवाबावडीतलाव
काजलकरिदिनप्रतिसासतीसींच्याकरै॥सोपूर्ववाजलमांहिलात्रसथावरजीवतौप्रलयनैंप्राप्त
होय॥नवासरदीकानिमतकरित्रसथावरजीवफेरिनिपजे॥ऐसैंहीदिनप्रतिच्यारिपांचमहीनां
तांईपूर्वपूर्वमरतेजाय॥अपूर्वअपूर्वजीवउपजतेजाय॥ऐसैंहोतसंतैंअनेकउपद्रवकरिनिर्वि
तिच्यारिपांचमहीनांतांईपूर्वपूर्वजीवमरतैंजाउ॥अपूर्वअपूर्वजीवउपजतेजाय॥ऐसैंहोतसंतैं
अनेकउपद्रवकरिनिर्बिघ्नपणैषेतीघरमैंआवैवानआवै॥कदाचिआवैतौराजबीजबीजकादे
णिचुकैवानचुकै॥सोफलतौजाकाऐसा॥अरुयापापपूर्वैंकह्यातैसा॥असंख्यातत्रस।जीवअनंतानंत ४८

निगोदरासिअरथावरत्रसजीवकाघातकरिएकनाजकाकनकैवादैंआवैहै॥भावार्थ॥एतीएतीहिंसाक
रिएकएकनाजकाकनकापैदाहोयहै॥वहुरिकोईयाजांनैंगाषेतीकरतीकरतीबारतौमुषीहोयगा:
ताकूंकहियेहै॥जहांपर्यंतषेतीकाअनेंकासंसर्गहोयहै॥तहांपर्यंतरान्तसदैत्यदलद्रीकलंदरव
५ तताकास्वरूजांननां॥सोप्रतिक्षचौडैदीसैहै॥ताकौकहालिषिये॥अरुकूवाबावडीतलाववनां
वेकाषेतीहवेलीकेपापकूं॥असंख्यातअनंतगुणांवाकापापजांननां॥इतिषेतीदोष॥आगैंरसोईक
र्मकीविधिकहिएहै॥सोरसोईकरिबाविषैतीनबातकरिविशेषपापउपजैहै॥विनांसोध्याअन्न॥बिनां
गाल्याजल॥बिनांदेष्यावलीता॥एतीनिपापकरिरसोईउपजैसोरसोईमांससादृश्यजांननां॥अरत
नरहितरसोईनिपजैसोशुद्धरसोईकहिये॥ताकास्वरूपकहियेहै॥प्रथमतौनाजकाअगाऊसं
ग्रहनकरै॥दसदिनवापंद्रदिनकापांचदसजायगांअबीधदेषिमोलल्यावै॥पीछैंदिनबिषैंनी
कांसोधिबीणदिनहीकैविषैघरटीमांहींसौंकपडासूंपुंछिनाजपिसावै॥पाछैलोहपीतलवांस
आदिवांमबिनांचालनीसूंचालिलीजे॥ऐसैंतौआटाकीकिरयाजांननी॥वहुरिनाछणांनैंछो

आ०चा० ४९ डिकडफाडजीवांरहितप्रासुकलकडीवाकोयलासोवलीतासुध्रतांहैं॥अरछांणांगोवरसूंरसो
ईविषैंअलीणाहै॥ताविषैंजीवांकीउत्पतिविशेषहै॥अंतर्मुहूर्तसूंलगायजहांपर्यंतविषैंसरही
रहै॥तहांपर्यंतअनेकत्रसजीवउपजे॥पछिगोवरकासूकिवाकरिनांसनैंप्राप्तहोयहै॥सूषांपी
छैंवडाबडाताकाकलेवरपईसाजरिगिडोलाआदिआषेंदेषियेहै॥पीछैंफेरिचतुरमासादिविषै
सरदीकानिमितकरिअसंष्यातकुंथवालटआदित्रसजीवउपजैहै॥तातैंछांणांकावालिवातौहिं
साकादोषकरिसर्वप्रकारहीतजनां॥अरलकडीकोयलाग्रहणैंजोग्यहै॥सोकोइलातौसर्वप्र
कारत्रसथावरजीवरहितप्रासुकहै॥तातैंमुष्यपनैंवालनाउचितहै॥अरलकडीघणीषरीतौवीधी
होयहै॥तातेबुधिवांनपुरुषविशेषपणैंवीधीसुलीपोलीकाठीकपाडिअवीधनिर्घोटकाग्रहणकरै
याविषैंआलसप्रमादराषैंनहीं॥याविषैंपापअगिणतअपारहै॥सोवाकरितुछैलागैहै॥तातैंधर्मा
त्मापुरुषनैंवलीताकीसावधानीविशेषराषणी॥पोलीलकडीविषैंकीडीमकोडीउदेहीकानिषिज्ज
यासर्पआदिअनेकत्रसजीवपैसिजायहै॥सोविनांदेष्यांवालियेतौवहसर्वभस्महोय॥सोपा ४९

र्श्वनाथतीर्थंकरकेसमयकमठनिर्दईहुवा॥पंचाग्नितापैथातहांअधजल्यालकडीपोलीविषैं
सर्पसर्पणीअर्धदग्धहुवाताकूं॥पार्श्वनाथस्वामीअवधिकरिवलितादेष्या॥ताकूंनवकारमंत्रसु
णायादेवलोकनैंप्राप्तकीया॥ऐसैंबिनांदेष्यांवलीताविषैंजीवांकादग्धजांननां॥घणीकहा
कहिए॥वहुरितलावकुंडतुछजलकरिवहतीनदी॥अरुकटकूवाबावडीकापांनीतौछाणपा
हुवानीअजोग्यहै॥याजलविषैंत्रसजीवांकीरासिइंद्रीयांगोचरआवेअसीहै॥तातैंजाकूवाका
पाणीचडसकरिवापनघटकरिछरताहोय॥ताकाजलविषैंनजस्यांनहीआवैहै॥सोवाजलकुं
कुवाऊपरिआपआपकेप्रतीतिकाआदमीदोवडतासपीठगाढागुठलीकरिरहित॥जाविषैंपा
णीआधाहुवाएकचोटथमिरहै॥ततकालएकहीसाथिछणिनजाय॥अनुक्रमतैंथिरिंछणैं॥ऐ
सानांतणांसूंजलछांणिये॥ताकाप्रमाणजिमाणीविषैंछांणिये॥ताकामूंढासूंतिगुणांलंवाअरु
चौडासोदोवडाकीहोसमचौकोरहोयजायऐसाजांननां॥अथवाविनांछांणांकूवासूंनरि
डैलेजायजलपूर्वकनीकाछांणनां॥छांणतीवारअणछांणांपांनीकीबुंदआगणमैंगिरैनहीं॥वा

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL
डाक्टर भाऊदाजी इत्यस्य स्मारकम्

अणछांण्यां पांनीकी बूंद छो णपांणीमैं अंसमात्र भी आवै नांही॥ ऐसैं पाणी छांणिये॥ अणछां
णंपांनीकूं हाथकूं छाणंपांणीकरि अनछाणंपांणीका बासणमैं षोलिये॥ पाछैं छाणंपांणीके
वासनकूं पकडिये॥ दोइ च्यारि वा तीन वार छाणंपांनी करि पीछैं॥ वाकैमंडै नातणाली जिये॥ वा हा
थ विषै पालस्या कचैला तव ला राषिजी मणां हाथमैं करवाले मालस्था ऊपरि लीयां लीयां॥ आपनां
तिणऊपरि कूढिये॥ सो अनुक्रमसूं थोडा थोडा छांणिये॥ अरु घणां छांणिये तौ वासन उठाइ नाति
णां ऊपरि धीरैं धीरै कूढिये॥ पाछैं अनछाणंपांणीका हाथकूं षोलि अगल बगलसूं कानातणाती
कूंपकरि उलटा करिये॥ पीछैं छाणंपांणी करि अवशेष अणछो णपांनी रह्या ता विषै जीवाणी करिये॥
अथवा तावासण विषै जीवांणी करिये बीचसूं जिवानी की तरफ चिमटी करि नातणा पकडिये नांही
पीछै च्यारि पहर दिनका जल आया होय॥ तीही कवै पौहचायदे॥ वाकापासानैं उलटो बांधि पीछो डारि
अपूठी ल्याव पोंच सात आंगुल कील कडी बाधल्लो टाकेमौंढै नीतर आडी लगाय॥ पाछैं लकडीकै सहा
रैलोट्यासुधां चल्याजाय॥ कूवा पीढै जलऊपरि लोट्या पौहौंचै॥ जब ऊपरिसूं डोरि हलाय दीजै॥ पाछैं ५०

वैह लोट्या कीलाकडी निकसि जाय औंधा कूवा ऊपरि नैं षैंच्या कूवा चल्या आवै॥ ऐसैं पौहौंचा
वणा॥ अथवा ईं भांति भी न पौहौंचाया जाय तौ॥ सारा प्रभात पांणी छांणि सर्वदिनका जिवानी एक
ठाकरि॥ पाणी भरिवाका उरासणका बिलीइए॥ अरु पनिहारी कूं सौंपिये॥ पनिहारीनैं पांणी भरि
वाका महीनां सिवाइ टकौ दोटकाओरबढाइये॥ अरु वाकूं ऐसैं कहिये॥ ए जिवाणी सुधां कू
वामैं उरासदेनां॥ गैल्यामैं वा ऊपरांसूं कूवा विषैं जिवाणी न नोषणी॥ कदाचि नाष्या तौ तौनैं पांनी
भरिवा सूं दूरि करांगा॥ एता कह्यां पीछैं भी॥ दोय च्यारि वार गुपतजाय वाका पीछैं जाय कूवा पर्यंत ठीक पा
डिये॥ जैसैं पूर्वैं कह्या माफिक जिवांणी सुधां उरासणी॥ ऐसैं ही कूवामैं उरासैं हैं तौ॥ ताकूं विशेष वडा
ई दीजै॥ टका दोय का कीगम षाइये॥ पापका भय दिषाइये॥ या भांति जिवांणी पहौंचावै॥ तिनकूं छां
णंपानी पीया कहिये॥ अर पूर्ववत् जिवांणी न पहौंचै॥ ताकूं अणछांणंपांनी पीया कहिये॥ वो
मद्य मांड रूप कहिये॥ जिनधर्म विषैं तौ दया ही का नांम क्रिया है॥ दया बिना धर्म नांम पावै नांही॥ जा
कै यह दया है॥ तेई पुरुष भवसमुद्रकूं तिरै है॥ ऐसैं पांणी की शुद्धता का स्वरूप जांनना॥ बहुरि मर्या

दउपरांतआटाविषैं॥कुंथवासुलसुलीआदिअनेकजीवांकीरासिवासरहीविषैंनिगोदरासि।
सहितत्रसरासिउपजैहैं॥ज्यौंज्यौंमर्यादउलंघिआटारहै॥त्यौंत्यौंअधिककवडीबडीअवगाह
नाकाधारकधारकआटाकाकनिकासारिषात्रसजीवउपजैहैं॥तातैंमर्यादाउलंघिआटाअर
बाजारकातुरतपिसायानीअवस्यतजनां॥जेताआटाकाकणिकांतेताहीत्रसजीवजांननां॥
तातैंधर्मात्मापुरुषअैसादोषीकआटानत्तणकसैंकरै॥बहुरिचांमकासंजोगकरिघि
रतविषैंअंतरमहूर्त्तसैंलगाय॥जहांपर्यंतचांमकासीधडाघृतरहै॥तहांपर्यंतअधिकअ
धिकअसंख्याततत्रसजीवउपजै॥अरचर्मकउपर्शकरिमहानिंद्यअभिक्तहोयहैं॥ताकाउ
दाहरनकहियेहैं॥काहूएकसरावगीरसोईकरिवाकेसमैंकोईसर्धनीपुरुषहाथिप
ईसारकाकाघृतवाजारमैंसंमगाया॥तववासीधडाकाघृतछुडायवाकेअर्थि॥एकबुधिउपजाव
ताकूवा॥सोवाजारमैंसंनवाजुतामोलिलेवामैंघृतयालिवाकीरसोईविषैंजायधस्या॥तववहरसो
ईछोडिउठवालागेपे॥तबयानैंकहीरसोईक्यौंछोडैछे॥थेपूर्वैयाकहीथीम्हांकेतौचर्मकाघृतकौ ५१

अरकावनांही॥तातैंबाजारकाम्हाजननकैतौकावाषालकेविषैघृतथा॥मैंअटकावनजानिपाका
षालकाजुताविषैघृतलाया॥अरथांनैंसौंप्याथेमोनैंकाहेकादोषैं॥मैंयानजाणीयांकेपुरुषांवाली दो
क्रियाहै॥पुरुषमोकलाअणछाण्यांपाणीसौंतोसांपडै॥अरआरसीशाहरूपउज्जलवासनरापै॥
वडाबडावोकांहे॥कोईब्राम्हणआदिउत्तिमपुरुषकास्पर्शहोइतो॥रसोईउतारिनांषे॥पाछैंकांसा
मैंमांसलैराजीहोयहोयषाय॥तातैंत्यौंचांमकाघृतमहाअनंतजांननां॥अैसासुनतप्रमांणचांम
काघृततेलहींगजलआदिदोषीकवस्तुकात्यागवैंपुरुषकीया॥अैसाजांणिऔरभीजव्यजीवत्या
गकरै॥आगैंरसोईकरणेकीविधिकहियेहै॥जहांजीवकीउत्पन्नहोय॥अैसास्थानकविषै॥षाडाषोन्वरा
सहितचूनांकीवामांटीकीस्वाफजायगादेषिऊपरिचंदवावांधिगारिकावालोहकाचूल्हाधरिये॥चू
नांकीजायगांनैंतोजीवजंतुदेषिकोमलबुहारीबुहारितुछपाणीकरिजायगांनैंआलावीरडास्तं
पूंछिपाछैंपावधोयनांषियैं॥अरगारिकीजायगानैं॥तुछमाटीसेतीदयापूर्वककलीपियै॥ताविषैउज्जा
लकपडापहरितुछपानीसौंहाथपांवधोय॥सर्बवासणांकूंमांजिरसोईविषैंधरियै॥पूर्वैकसानेसा

श्रा०चा० ५२ आटाचावलदालिघृतबूरीतासौंधिरसोईबिषैंलेबैठियै। रसोईबिषैंलागैजेतापाणीछाणिलैनैं ग
डोडामिरचिकायफलकसेलालूणषटाईआदियामांहिसूंयेकदोयबस्तुतैंप्रासुककीजियै। प्रासुक
पांणीकीमर्यादादोयपहरकीहैं। रसोईकरनैंबिषैंदोयच्यारिघडीलागैहै। अरछांनैंपांनीकीमर्याददो
इघडीकीहैं। तातैंप्रासुकपाणीतैंरसोईकरणाउचितहै। प्रासुकपांणीकौंदोयपहरपहलैंबरतायदेनां
आगैराष्यांयामैंजीवउपजैहैं। जिवाणीयाकौहोयनांही। ऐसैंदयापूर्बकक्रियासहितरसोईनिप
जै। ताकूंउज्जलकपडापहरिहाथपावधोयपात्रांकूंवाडुषितजीवांकूंदांनदेरागभावछांडि। चौकीपा
टाविछायपाटाऊपरिबैठिचौकीऊपरिभोजनकीथालीधरि। थालीऊपरिद्रष्टिराषिजीवजंतुदेषिमौ
नसंजमसहितभोजनकरै। ऐसानांहींकेदानदीयाविनांहीअघोरीकीनांई। आपतौषायलेयपा
त्रदुषितवारनैंउठिजाय। ऐसीक्रपणमहारागीमहाबिषईदंडदेनैंयोगहै। तातैंधर्मात्मापुरुषहै
तौविधिपूर्बकदांनदेपीछैंभोजनकरै। ऐसैंदयासहितरागभावरहितभोजनकीविधिकही। बहुरि
रसोईजीमेंपीछैंवारसोईजीमेंपीछैं। वारसोईबिषैंकूकराबिलाईहाडचांममलमूत्रकेलिपतबस्त ५२

सूइआइजायवाबिषैंऔंठिपडीहोयतौअभातऊपसैंनितिप्रतिरसोईकरवाकेसमय। पहलांचूल्हा
कीराषसर्वकाढिनाषियै। निजस्थांसूंजीवजंतुदेषि कोमलबुहारीसितीबुहारीदेयपाछैंचौकादी
जै। अरहाडचांमआदिपूर्वकहै। ताकासंसर्गहोइनांहींतौनित्यचौकानदीजियै। चौकादीयैंवि
नांहींएराषपैंकरिबुहारीदेइरसोईकरियै। विनांप्रयोजनचौकादेनांउचितनांहीं। चौकादेनैं
तौजीवांकीहिंसाविशेषहोहैं। अरअसुचिजायगांबिषैंहीरसोईकरियैंतौचौकाकीहिंसाबी
चितौ। अक्रियाकेनिमित्तकरिरागभावांकापापविशेषहोयहैं। तातैंजामैंथोडापापलागैसोक
रनां। धर्मदयामईजांननां। धर्मविनांक्रियाकार्यकारीनांहीं। अरकेईउबुरुहीनाजलकडीकौंधो
वैहैं। तौला। चरी। तवा। आदि। वासणताकापींदाधोय। आरसीसमांनउज्जलराषैहैं। मोकला
पाणीसौंसांपडिवाचौकादेहैं। स्त्रीकाहाथकीरसोईनषाय। नांनांतरहकीतरकारीमेवामिष्टा
नदहीदूधघृतहरितकायसहितसवारिसवारिभोजनबनावैहैं। पछैंराजीहोयहोयदोयदोयच्या
रिबारहूंसिठूमितिर्यंचकीनांईपेटभरैहैं। अरयाकहैहैं। म्हेबडाक्रियापात्रहां। बडेसंजमीहां। ऐ

साऊठाडि मथारिधर्मका आसिरालेतापर भोलाजीवांनैं ठगैहैं ॥ जिनधर्म बिषैंतौ जहांतहां निश्चय एक
रागादिकभावनैं छुडाया है ॥ अरयाहीकेवास्तै अन्यजीवांकी हिंसा छुडाई है ॥ सोई निःपापी रागभा
वांकैं हिंसाकी उत्तपत्ति सोई रसोई पवित्र है ॥ जाविषैं रागद्वेष बिधै सोई रसोई अपवित्र है ॥ ऐसा जांननां
बहुरि आपणां बिषय पोषिवाकै अर्थि धर्मका आसिरा लेय अष्टान्हिका सोलाकारन दशलाक्षन
रत्नत्रय आदि पर्व दिनां बिनां बिषैं आछा आछा मनमांन्या नानाप्रकारका महागरिष्ट और दिनां
बिषैं कबहूं मिलै नांही ॥ ऐसा तौ भोजन षांनां अर चोषा चोषा बस्त्र आभूषण पहरनां ॥ डीलनैं सवा
रनां ॥ सो सावण भादवा आदि और पर्व दिनां बिषैं बिषयकषायकौं छोडनां ॥ संजमकौं आदरनां ॥
जिनपूजन शास्त्राभ्यास जागरनं का करनां ॥ दांनदेनां ॥ वैरागकाबधावनां ॥ संसारका स्वरूप अनित्य जांननां ॥
ताकानांम धर्म है ॥ बिषयकषाय पोषनैंकानांम धर्म कदाचि नांही ॥ झूठांही मांन्यां तो गर्जे कांई ॥ वाका फल षो
टाही लागैहैगा ॥ आगैं रसोईकी वस्तु षानैंका दोष दिषाये है ॥ प्रथम तौ कंदोईका स्वभाव निर्दई होय है ॥ पीछैं भो
जनका प्रयोजन रहै है ॥ ताकरि विशेष दयारहित होय है ॥ जाका किसव ही महाहिंसाका कारन है ॥

सोई विशेषपनैं कहिये है ॥ नाज सौं घां होइ सो मोल ल्यावै ॥ सो सौं घां तौ ॥ वीध्या सुल्या पुराणां ही आवै है ॥ नाज
नैं रात्रिनैं बिनां देष्यां पीसै पाछैं वह आटा बेसण मैं दोमहीनां पंद्रहदिन पड्यार हि जाइ ॥ ताबिषैं अगणि
तत्रसजीव उपजैहैं पीछैं वैसा तौ आटा अणछांण्यां मसकका पांणी ताकरि औसणै ॥ वीधासुधा आललागी क
ठी बिषैं रात्रिनैं बलीतावहि ॥ अर चांमका घणा दिनका वासिला घृत विषैं विनैं तलैं ॥ अर रात्रिनैं अग्नि
का निमित करि हरि हरि सौंडांस मांछर पतंग मांषी भठीमैं वा कडीमांषी बिसमराका नषिजरा भरी कडा
ही मैं पडै ॥ पीछैं वह मिठाई पकवांन तुरत हीतौ सर्व विक्या जाय नांही ॥ अनुक्रमसौं विकै सो विकतां वि
कतां ॥ पंदरा दिन महीनां दो महीनां पर्यंत पडि रहि जाय ॥ ताबिषैं अनेक लट ईली आदि पडि वालैं ॥ अर
अपरस सरूं कूं वह मिठाई वेचै ॥ वाकी भीटी चूंटी मिठाई पाछी आपणां वासणमैं उरी लै ॥ अर घणां कंदोई
कलाल स्त्री आदि अन्यजाति होय है ॥ ताकै दयाकहां पाईये ॥ अर केई वैस्य कुलके भी कंदोई होय है ॥
सो भीवासा द्रव्य जांननां ॥ अरजल अन्न लूण मिलाय घृतमैं तलिये ॥ सो वार सोई समान ही है ॥ संसारी जी
वांनैं थोडा बहुत अटकमैं राषनैं अर्थि सषरी निषरीका प्रमांन बांधै है ॥ वस्तबिचार तां दोन्यूं एक ही है ॥

MEMORIAL

ऐसैंकोईजैनीकुलविषैंरात्रिनैंअन्नकाभक्षणछोड्या॥दूधपेडाआदिराख्यातौकांईवहरात्रिभो
जनकात्यागीकुवा।पैंयजैएतीपरवांनगीनहीदेतातौ॥अन्नादिकसर्वहीवस्तुकाभक्षणकरत्ता॥या
केषायेंबिनांतौरह्याजायनांही॥तातैंअन्नकीवस्तुछुडायमर्यादामैंराष्यो॥अन्नकानिमत्ततौरंकादि
कनी॥सासताषाईये॥दूधपेडादिकनिमितकोईपुन्यवांनकैकोईकालविषैंपाईये॥तातैंघणीबात
घणीवस्तकारात्रिनैंसंवरहोय॥ऐसाप्रयोजनजांननां॥तातैंग्यांनीबुधिवांनपुरुषछैंतेअसं
ष्यातजीवांकीहिंसाकरिनिपजीअनेकत्रसजीवांकीरासिमहाअक्रियासहित्तमाससादृस्यअ
भक्षऐसीकंदोईकीवस्तुताकौंकेसैंषाय॥अरठगीगईहैबुधिजाकी॥आचारकरिरहितहै
स्वभावजाका॥परलोककाभयनांहीहैंजाकै॥ऐसापुरुषकंदोईकीवस्तुषायहैं॥ताकाफल
परलोकविषैकडुवाहैं॥तातैंजानैंआपनाहित्तचाहियतेपुरुषहलवाईगरकीवस्तुसर्वथात
जो॥बहुरिकेईअग्यांनीरसनांइंद्रीकेलोलुपीऐसैंकहैहै॥कंदोईकीवस्तुवाजाकावासणां
विषैमदमांसवापरै॥ऐसाजाटगूजररजपूतकलालआदिसूद्रकेघरकादहीदूधरोटीआदि ५५

प्रासुकहैं॥तातैंयानिर्दोषकुईतौ॥औरईउपरांतदोषीकबस्तकैसीहोसी॥हाडचांमकेदेषनैंकाभक्तकै व
सुननेंकाहीभोजनबिषैंअंतरायहैतौप्रत्तिक्षषायवाकाकैसादोषनगणियै॥तातैंजेबस्तुहिंसाकरि
निपजी॥वाअक्रियाकरिनिपजी॥धर्मात्मापुरुषकोईप्रकारआचरैनांही॥प्राणजावौतौजावौपणिअभ
क्षवस्तुषांनीउचित्तनांही॥औरकोईप्रकारदीनपनांकावचनकहनांउचित्तनांही॥जिनधर्मबिषैंदी
नपनांसिवायऔरपापनांही॥तात्तैंजिनधर्मबिषैंअजाचीवस्तुवृत्तिकहीहै॥आगैंसहत्तकादोषदिषा
ईएहैं॥मांषीटांट्यावनस्पतीकारसजलओंठिविष्टाआदिमुषमैंलेय॥आवैवैठैवाकेमुषबिषैं॥वह
बस्तुरालैरूपपरणवै॥पाछैंभोजनकेअर्थि॥जैसैंकीडीनाजल्याईविलमैंइकेठाकरै॥पीछैंभीलादिक
सकसपहौचैसोवाकेकुटंवपरिवारसहित्तनैंसोरिल्यावै॥पीछैंसर्वकीडीकानौसंघारहोइ॥नाजभील
षायजाय॥तैसैंहीमक्षकात्रिह्माकेवछीभूतकुवावाकूंएकस्थानकविषैचौयचौयएकठाकरै॥पीछैंऐ
सैंहोतैंहोत्तैंघणीरालरालएकठीहोइ॥घणांकालकेरहनेंकरिमिष्टस्वादरूपपरणवै॥ताविषैसम
यसमयलाषांकोड्यांवडावडाआष्यादेषियै॥तात्तैंआदिदेऔरअसंष्यात्तसूक्ष्मत्रसजीवउपजैहैं॥

श्रा०चा० औरनिगोदरासिउपजैहैं। अरवाहीविषैंमाख्यांनिहारकरैहैं। ताकाजीष्टा जीवाहीबिषैंएकठाहोय
५५ हैं। पीछैंभील्यादिकमहानिर्दईवाकूंपथरादिकरिपाडैहैं। पीछैंवाकेकखावखासुरूं। अरमाहिल्या
अंडासुरूंमसलिनिचोयनिचोयरसकाढैहैं। पाछैंपसारीआदिनिर्दईअक्रियावांननैंवेचै। ताबि
षैंमांखीकीडीमकोडीआदिअनेकत्रसजीवआयउलझिरहैहैं वाचिपटिजायहै। अरदोयच्यारि
वर्षपर्यंतलोभीपुरुषसंचयकरैहैं। ताविषैंपूर्ववत्जासमैंमुहालकीउत्पत्तिहोयतासमयसंल
गायजहांताईसहतरहै। तहांपर्यंतअसंख्याततत्रसजीवसासताउपजैहैं। सोअैसासहतपंचाम्र
तकैसैंहुवा। पणिआपणांलोभकैअर्थिएजीवकांईकांईअनर्थनकरै। अरकांईकांईअषादि
वस्तुनषाय। तातैंएसहितमांससाहश्यहैं। मदमांससहितएकसाहैं। सोयाकाषावातौदूरिही
रहौ। औषधिमात्रभीयाकास्पर्शकरनांउचितनांही। जैसैंमदिरामांसकीऔषधिउचितनां
ही। तैसैंजांननां। याकौंऔषधिमात्रभीग्रहणकीयांदीर्घकालकासंच्यापुन्यनासनैंप्राप्तिहो
यहै। आगैंकांजीकादोषकहियेहैं। छाछिकीमर्यादबिलोयांपाछैंआंथणतांईकीहै। पाछैंरहांपा ५५

छैंअनेकत्रसजीवउपजैहैं। ज्योंज्यौंघणांकालतांईरहै। त्यौंत्यौंघणांत्रसजीवउपजैहैं। जैसैंरात्रि
वसाकाअणछांण्यांजलअभिक्षहैं। तैसैंरात्तिवासीछाछिअभिक्षहैं। सोएकतौयादोष। औ
रछाछिविषैंराईपडैहै। राईकानिमित्तकरितत्कालछाछिविषैंत्रसजीवांकीउत्पत्तिहोयहैं।
ताहीवास्तैंछाछिराईकारायताअभक्षहैं। एकयादोष। अरछाछिविषैंभुजियापडैहैं। सोएवि
दलहैं। काचीछाछिदुफाडानाजमूंठाकील्याल। तीनांकासंजोगभयेंमुखविषैंतत्कालबहु
तत्रसजीवउपजैहैं। सोएकएविदुलकादोष। बहुरिछाछिविषैंमोकलापाणीअरलूणपरैहैं
सोइनकानिमित्तपायसीघ्रहीघणांत्रसजीवांकीउत्पत्तिहोयहैं। एकयादोष। पाछैंदसपंद्र
दिनतांईयाकांजीवरांरहै। जैसैंधोबीछीपाभीलगरकेकूंडीकाजीवरहै। तैसैंकांजीकाजीवजां
ननां। ज्योंज्यौंघणांदिनकांजीरहै। त्यौंत्यौंवाकास्वादघणांअधिकअधिकहोइ। सोअगणां
नीजीवइंद्रियाकालोलुपीराजीहोयखाय। याजांणौंनांहीकरस्वादघणांत्रसजीवांकेमांसकाक
लेवरकाहैं। सोधिक्कारहैं। असारागभावांकैतांई। असीअषादिवस्तुकौंआचरै। असाही

श्रा०चा० दोषजोन्हाकीरावकाजांननां॥ याविषैंभीत्रसजीवघणांउपजैहैं॥ आगैंअथाणांसंधाणांभैजी
५६ कादोषकहियेहैं॥ सोलूणघृततेलकानिमित्तपाइनींबूकरीआदिकाअथांणाविषैं दोयच्या
रिबरसपर्यंत्तसरदीमिटैनांही॥ सोलूणघृततेल।कानिमित्तपाइअनेकत्रसजीवांकीरासि
उत्पन्नहोयहैवहविषैंमरैहैं॥ असाजन्ममरणजहांतांईवाकीस्थितिरहै॥ तहांतांईहोवो
करै॥ असैंहीभौंजीमंधाणांमुरबाविषैंजीवांकीरासिकासमूहजांननां॥ सोनष्टहुईहैबुधि
अरनष्टहुवाहैआचारजाका॥ असादोषीकजांणिअवस्यतजनांजोगहै॥ अरसर्वथानहीर
ह्याजायतौआठपहरकोषानौनिर्दोषहैं॥ अथवासूकीआंवेलीवाआंवलाकीबनायल्यौ॥ वृथा
हीआपानेंसंसारसमुद्रविषैंमतिबोडौ॥ आगैंजलेबीकादोषकहैहैं॥ प्रथमतौरात्रिविषैंमैदानैंष
टाइयेहै॥ सोषटायवाकानिमित्तप्रतित्तनिजस्यांआवे॥ असाहजारांलाषांजटांसमूहउपजै
है॥ वीषटायामैदानैंभिंहीकपडाविषैंअधरअधरलेजलऊपरिकूठिकूठिछांणिये॥ सोमैदा
तौपांणीकीसाथिछणिजाये॥ लटांकासमूहकपडाऊपरिरहिजाय॥ असीलटांसहितमै ५६

दानैंस्वादकेअर्थिघृतकाकडाहमैंतलीतलिये॥ पाछैंषांडकीचासणीलगायरात्रिनैंवादि
ननैंअघोरीहुवाथकाअघोरीकीसीनांईरात्तिवादिनविषैंभोजनकरै॥ सोयाभोजनकैसा
अरईकापापकैसा॥ सोहमनजांनैंसर्वज्ञजांनैंहैं॥ आगैंभेलाजीमवाकौदोषकहियेहै॥ सोजग
तविषैंऔंठिअसीनिंद्यहै॥ सोमनदोमनमिठाईकीछावभरितामांहीसौं एककणिकाउठायमुषमैंदी
जियेतौ॥ वामिठाईनैंकोईभीटैनहीं॥ अरयाकहेणतौऔंठीहोइगई॥ सोतिजनैंयोग्यहै॥ अरयेमूढ
सरावगीअसापांचसातजणां॥ एकैंकांसामैंभेलैवैठिभोजनप्रसादकरै॥ सोमोहडामांहिसौंसारां
कीऔंठिथालीमांहिपडै॥ वामुषकीलारथारीमांहिपरै॥ अथवाग्रासकीसाथिपांचौंआंगुलीमुषमैं
जाय॥ सौमुषविषैंआंगल्यांलारसंलिप्तहोयजाय॥ फेरिवैंहीहाथसंग्रासउठायमुषमैंदेहैं॥ असैंही
सारांकीऔंठिकांसाविषैंघिलिमिलियेकंकारहोइजाय॥ सोपरस्परसारांवेतौवाकीऔंठिषाय॥ वेवा
कीऔंठिषाये॥ परस्परसाराहासिकौतहलअत्यंतस्नेहवधाय॥ वामनुहारिकरिकरिपूर्णाइंद्रीपोषे॥
ताकेपोषनेंकरिकामविकारतीव्रहोइ॥ मानअत्यंतवधै॥ सोभेलैंजीमबाविषैं॥ असाअनेकतरह

कापापउपजै। तातैं सगा भाई पुत्र इष्टमित्र वा धर्मात्मा साधर्मी ताकै भी नेत्रनैं जीमनां उचित नांही। ञ्रा॥
गैं रजस्वला स्त्रीका दोषक हियेहैं। सामांनि पणैं मही नांके ञ्रासि पास वाके योनिस्थांन मांहि सं ञैसा
निंद रूधिर विकार का समूह निकसै है। ताके निमित्त करि मनुष्य तिर्यंचके ई ञांधे होय जाय। वा ञै
षिमें फूला पडि जाय। पापड मूंगौडी लाल होय जाय। इत्यादि वाकी छाया। वा देषवाका वा कपडा स्पर्श
वाकरि तीन दिन पर्यंत ञनेक ञौगुण उपजै है। याके नासमैं महापाप का उदय है। चूहडी समान है॥
याका हाथकी स्पर्श वस्तु सर्व ञलीण है। पीछैं चौथे दिन वा किइ ञाचार्य छठे दिन कहै है। ना[redacted]थं॥
छठे दिन वा पांचवैं दिन वा चौथे दिन। स्नान करि उज्जल कपडा पहरि। भगवांन का दर्शन करि पवित्र हो
इहै। मुष्य पणैं चौथा स्नान करि भरतार समीप जाय है। कोई पससूद्र समांन याकी छोति वा भिंन्न नांही॥
गिणै है। तौ वह नीच चांडाल शाहूरप है। घणां कहा लिषिये। ञागैं दूधदही छाछि घृतकी क्रिया लिषिये है॥
गारडी ऊरडी ञादिका दूधतौ ञलेण ही है। या विषैं दोहतां दोहतां त्रसजीव उपजै है। ञर गाय भैंसिका दूधलेण
है। सो छाणपां पांणी सूं दोहनेंवारे के हाथ धुवाय। गाय भैंसिका ञांचल धुवाय। चौषा मांज्या चरी तो ला

ताकूं जलकरि धोय। वा विषैं दुहाईये। पाछैं जवासणमैं कपडासूं छांनिये। पीछैं दोघापाछैं। दोय घडी पह
लीपी जाईये। ञथवा दोय घडी पहली उष्ण करिये। दोय घडी उपरांति का चारह्विजाय तौ वा विषैं नानां प्र
कारके त्रसजीव उपजै है। तातैं दोय घडी पहली उष्ण करनां उचित है। सो प्रथम ञांवहलि ञादि वा ष
टाई वा रूपा रूधबिषैं डारि जमाइये। वाकी मर्याद ञाठ पहरकी है। ञाजि का जमाया प्रभात दहीकूं कप
डा विषैं बांधि वाकी मुगौडी तौडि सुकाइये। पीछैं ञौर दही वडी वा मुगौडी का जावण सूं दूध जमाईये ञैसा
दूध दही ञाचरनें योग्य है। सूंठि वा उरषटाई वा जस्त रूपाका भाजन करि जमि जाइ है। केई दुराचारी जा
टगूजर ञादि ञन्य जाति का दूधदही छाछि षाय है। ते धर्म बिषैं वा जगत विषैं महा निंद है। ञौर ञैसा
सुधदहीकूं विलोयां पीछैं। लूंण्यां तौ तुरत ञग्नि ऊपरि ताता करि ताईयें। छाछि ञांथणतांई उठाय दीजे
रात्रि विषैं राषिये नांही। रात्ति की राषी सवांरा ञणछानें पांणी समांन है। ञैसैं दूधदही घृत छाछि की क्रि
याजांननी। ञर केई विषय केलोलपी क्रियाका ञासरा लेय गाय भैंसि मोलिल्यै। निजघर बिषैं ञारंभ
वधावै है। सो ञारं भैण थिदया। ज्यौं ज्यौं ञारंभ वधै त्यौं त्यौं हिंसा प्रचुर वधै। चौपद राषिवाका विशेष पाप है

आ० चा० सोकहियेहैं॥ सोवहुत्तिर्यंचहरित[illegible]यषायेंबिनां॥ अराछाणपांयांनीपीयांबिनांनरहैं॥ अरसूकातिणां
५८ छाणयांपांणीकामिलणांकठिन॥ अरतेकठिनियणैंवाकासाधनराषिये॥ तौ बिशेषआकुलताऊपजै॥
आकुलताहैसोकषायकावीजहै॥ कषायहैंसोहीमहापापहैं॥ बहुरिकदाचिवाकूंक्षुधातिसायाराषियेतौ
सीतउष्णडंसमसादिकेदुषकाजतननकरियेतौ॥ वाकेप्राणपीडिजाय म्होटैवासंवोल्याजायनांहीं॥ अर
याकूंसासतीकैसैंषवरिहै॥ अरसीतउष्णादिवाधाकेमेटवाकाउपायकठिन॥ तातेंवाकेसासतीवेदनां
होय॥ तौवाकासहायनवनैंतौ॥ पापराषनेंवारेकूंलगै॥ बहुरिवाकेगोवरमूत्रविषैंबिशेषत्रसजीवांकी
रासिउत्पत्तिहोय॥ अरदूधकानिमतकरिसासतारात्तिदिनचूल्हाबाल्याकरै॥ चूल्हाकेनिमत्तकरिछ
हकायकाकूटाहोय॥ लोभतेघणांअनंतबधै॥ तातेंऐसापापजानि॥ चौपदकोईप्रकारराषनांउचित्त
नांहीं॥ बहुरिबल्दीघानेंकाविशेषपापहैं॥ घणांदिनकोऊभल्यौदूधगायभैंसिकापेटबिषैंरहैहैं॥ पीछैं
वैकेप्रसूतिहोय॥ अरतासमयवाकेआंचलांमांहिसौंरक्तसाद्दृशनिवोयकाढिए॥ वाकूंउष्णाकरि
जमाइयेताकाआकारओरहीतरहैकाहोयजाय॥ ताकूंदेषिग्लानिउपजै॥ पाछैंऐसीनिंद्यवस्तुकौं ५८

आचरियेंतौ॥ वाकेरागभावकीकांईपूछनी॥ तातेंअवश्ययाकाआचरननकरणां॥ औरछेलीकीपर
सूतिभयांपीछैंआठदिवसका॥ अरगायकादसदिवसपीछैं॥ अरभैंसिकापंदरैहदिनपीछैं॥ दुग्धलेनां
जोग्यहैं॥ पहलीअभक्ष्यहैं॥ अरआधौदुग्धवाकेवछांकौंछोडिये॥ आगैंकपडाधुवावनेंवारंगावनेंकादो
षकहिएहैं॥ प्रथमतौवककपडाबिषैंमैलकेनिमतकरिलीषजूंआदिअनेकत्रसजीवउपजैहैं॥ सोवै
जीवयोंमर्मैं॥ वातेजीकैपांनीमैंनासनेंप्राप्तहोय॥ पीछैंवेकपडाइस्यावैंसिलाऊपरियछारियछारिधो
वै॥ सोपछारिवाकरि॥ मीडकामाछलापर्यंतअनिगिणितछोटावावडात्रसजीवकपडाकेपुडतमैंआवै
ताकाकपडाकीसाथिशिलाःऊपरिपछाड्याजाय॥ सोपछाडिवाकरिजीवांकोषंडषंडहोयजाय॥ बहु
रिवेतेजीवकाषारापांनीदरियावबिषै॥ घणीदूरिफैलैं॥ वाबहतीनदीहोइतौ॥ घणीदूरिवहताचल्या
जाय॥ सोतहांपर्यंततेजीकाषाररसपहौंचै॥ तहांपर्यंतसर्वजीवमृत्युकौंप्राप्तहोइ॥ बहुरिकपडा
कूंसावणसेतीवहुरिदरियावमैंधोवैं॥ सोवैसैंहीजहांतांईसावणकाअंसपहौंचै॥ तहांतांईदरि
यावकादरियावहीप्रासुकहोयजाय॥ जैसैंएकपांनीकेमटकाबिषैं॥ चिमटीभरिलोंगडोडाइ

DR. BHAU DAJI MEMORIAL
[illegible]

ल्यायचीकानांषिवाकरि प्रासुकहोयहैं ॥ तैसैं एकदोयकपडाकेधोयबेकरि ॥ सर्वदरियावकाजल
प्रासुकहोयहैं ॥ अरकेई महंतपापकेधारकसैंकडांहजारांथानछदामअधेलाकेल्यालचकेवा
स्तेंधुवायवेछेहैं ॥ तोवाकेपापकीवारत्ताकौंनकहै ॥ तातैंधर्मात्मापुरुषधोवीकिकपडाधुवायबौत्त
जै ॥ याकेपापअगणित्तहैं ॥ अरकदाचिपहरिवाकाधोयांबिनां नरहैं जायत्तो ॥ गाढानांत्तिणांसंद
रियाववारैंकूंडीकुकड्यामटकाबिषैंपांणीछांणिजीवांणपायहौंचायापाछैं ॥ दरियाववाकूवामैविलो
किकपडाकीजूंलीषसौंधिकरिधोईये ॥ भावार्थ ॥ मैलाकपडानैंडीलसौंउनास्यापाछैं ॥ दसपंद्रदिन
तौकपडानैंराषिये ॥ पीछैंवाबिषैंफेरिनीकोईजूंलीषरहीहोइत्ताकूंनेत्रकरिदेषियेअरकोईनिजरि
आवेताकूंलेयआैरडीलकेबिशेषमैलकाजस्यापुराणावस्त्रत्ताबिषैमेलिये ॥ आंगनमैंनांषियेनां
हीं ॥ कपडाबिषैवेजमैलकेनिमत्तिकरिघणांदिनतांईमरैंहनांहीं ॥ आयुपूरीऊवांहीमरैंहैं ॥ बऊ
रिअैसीजायगाधोइयेसोवेपांणीदरियावकेवारैंसकीजायगाबिषैं ॥ प्रासुकस्थानबिषैंजलवहां
कावहांईसकिजायवानूंमिबिषैंसूकिजाय ॥ अरजैकदाचिवहैपांणीदरियावमैंअपूठाजायतौ ॥ ५९

वि

अणछांणयंपांणीसादृश्यपहीधोयाकहिये ॥ तातैंवंवेकपूर्वकछांणेंपांणीसंधोवणांउचित्तहैं ॥ वे
विवेकीकोईप्रकारधोवनांउचित्तनांहीं ॥ आगैरंगावस्त्रकादोषकहियेहैं ॥ नीलगरकैछीपारंगरेज
आदिके ॥ दोयच्यारिवापांचरंगपर्यंत्तरंगकेपांनीकानांडारहैहैं ॥ पीछैंवाबिषैंकपडाकासमूह
डुवोयमसलिरंगेहैं ॥ सोमलबाकरिसारीकुंडीकाजीवमल्याजायहैं ॥ पीछैंदरियावमैंजायधोवैहैं ॥
फेरिरंगैहैं ॥ फेरिधावैहैं ॥ अैसैंहीपांचसातवारधोवनांरंगनांकरैहैं ॥ धोबाबिषैवैसैंहीरंगकापांनी ज
हांपर्यंत्तदरियावमैंफैलैहै ॥ तहांपर्यंतकाजीवबारबारहन्याजाय ॥ तातैंअैसारंगावनेंमैंहापापजा
निसत्तपुरुषनिकूंरंगावनांत्याज्यहै ॥ आगैसेतषांनाकापापदिषाइयेहै ॥ एकबारमधांनसमयचौडेर
मनाबिषैंनिहारकरियेहै ॥ सोततकालहीअसंख्यात्तसन्मूर्छनमनुष्यऔरअसंख्यातत्रसजीवसू
क्ष्मअवगाहनाकेधारकजीवउत्पनहोयहैं ॥ पीछैंदोयच्यारिपहरकेआंतरैनिजस्यांआवे ॥ अैसा
लयांदिककेसमूहजेतावहमलहोउ ॥ तेताहीजीवांकीरासिउत्पन्नहोताआंष्यांदेषियेहै ॥ तोजहां
सासतीगडसरहीरहै ॥ अरऊपरांऊपरीदसवीसपुरुषस्त्रीमलमूत्रछेपै ॥ वासीलाउन्हांपांनीकहै

सो ऐसे अशुचिस्थान विषैं जीव उत्पतिका कहा कहनां॥ अर हिंसाका दोषकी कहा पूछनी॥ अ
रवाके पापका कहा पूछनां तातें ऐसा महंत पाप जानि सुपनां मात्र भी सेतषांनें जानाउ चितनां नांही
आ नि ट दि चे व को वां प्र ए षा ये ॥एक षानांकी मांटीकी डली बिषैं
असंष्यात पृथ्वीकायके जीव पाइये हैं सो ति जाराका दाएणां दाएणां के मनि देह धरैं तो जंबूद्वीपमैं मावै
नांही॥ वा संष्यात असंष्यात द्वीप समुद्रमैं मावै नांही एताही एक पांनीकी बूंदमैं असंष्यात दीप स
मुद्रमैं मावै नांही॥ एताही एक पांनीकी बूंदमैं वा अग्निका तिनगामैं वा तुछ पवनमैं वा प्रत्येक बना
स्पतीका सूईका अग्र भाग मात्रमैं॥ गाजर कांदा मूला सकरकंद आदा सुवारा कूंपल आदि बनास्प
ती बिषैं तासं अनंतगुणां जीव पाइये॥ सो ऐसा जांणि पांच थावरांकी भी बिशेषपणैं दया पालनी
बिनां प्रयोजन थावर भी नहीं बिराधनां॥ अर त्रस सर्व प्रकार नहीं बिराधनां॥ थावरकी हिंसा बी
चि त्रसकी हिंसाका बडा दोष है सो भी आरंभकी हिंसा वीच॥ निरापराध जीव हतनका महा तीव्र
पाप है॥ आ ड ति दो कूं षा ये ॥सो द्वाति बिषैं दोय च्यारि वरस पर्यंत जीव रहै है॥ ६०

तां असंष्यात त्रस जीव अनंत निगोद रासि सासता उपजै है॥ सो एहली लगरके कूंडि होय है॥ ताके हजा
रपां वसैवैं भाग समांन एक छोटी कूंडि है॥ या बिषै जीवकी हिंसा होय है बिशेषही॥ तातैं उष्ण पांनी सूं स्याही
गालिवामैं का पानी जो प्रभात करि राषिये॥ पीछें आथणनैं वैं को पानी सुकाय दीजिये॥ प्रभात फेरि भिजो
इए॥ ऐसैं ही नित्य स्याही करि लैनां॥ एसदा प्रासुक है॥ यामैं कोई प्रकार दोष नांही॥ थोडा प्रमादछोडिवा
करि अपरंपार नफा होय है॥ आगे धर्मात्मा पुरुष क्षेत्र सेने का हेतु कहिये हैं ॥जहां न्यायवांन जैनी रा
जा होइ॥ ना जबली ता सो थ्या होइ॥ पांनी छाएणां होइ॥ बिकलत्रय जीव थोडा होइ॥ घरकी वा बारली फौ
जका उपद्रव न होइ॥ सहर दोल्यू गढ होइ॥ जिनमंदिर होइ॥ साधर्मी होइ॥ कोई जीवकी हिंसा न होइ॥ बा
लकराजा न होइ॥ अनवेसी बुधिके धारक राजा न होइ॥ औरांकी बुध्दिके अनुसारि राजा कार्य न करै॥ राज
बिषै बहु नायक न होइ॥ स्त्रीका राज न होय॥ पंचका स्थाप्या राज न होइ॥ नगर दोल्यों विरांनी फौज का
घेरा न होइ॥ मिथ्याती लोगाका प्रबल जोर न होइ॥ इत्यादि दुषनैं कारण वा पापनैं कारण॥ ऐसे स्थान
कनानैं दूरिहीतैं तजनां जोग्य है॥ आगैं जिनमंदिर बिषैं अगानी वा कषाई करि चौरासी आछादन दोष

श्रा०चा० ६१

लागै अरबिनचुराधर्मबुद्धिकरिनहींलागै ताकास्वरूपकहियेहैं श्लेषमादिनांषैनहीं १ हास्यकोतूहल
करैनांहीं २ कलहकरैनांहीं ३ कोईकलाचतुराईसीषैनांहीं ४ कुरलाउगालनाषैनांहीं ५ मलमूत्रछेपै
नांहीं ६ स्नानकरैनांहीं ७ गालिबोलैनांहीं ८ केसमुचावैनांहीं ९ नौंहनिवावैनांहीं ११ गुमडाआदि
पांवकरेचकनांषैनांहीं १२ नीलापीलापित्तनांषैनांहीं १३ वमनकरैनांहीं १४ भोजनपानकरैनांहीं १५
औषधिचूर्णषायनांहीं १६ पांनतांबोलचाबनांहीं १७ दांतमलआंषिमलनषमलनांकमलकांनमलइत्या
दिकाढैनांहीं १८ गलाकामैलमस्तगकामैलशरीरकामैलपगांकामैलउतारैनांहीं १९ ग्रहस्थपणांकीबा
तांकरैनांहीं २० मातापिताकुटंबभ्राताव्याहीव्यारुणिआदिलोककीजनताकीसम्भषाकरैनांहीं २१
सासूजिठांनीननदआदिकापगांलागैनांहीं २२ धर्मशास्त्रउपरांतिलेषकविद्याकरैनांहीं २३ वाबांधै
नांहीं २४ कोईवस्तुकाबटवाराकरैनांहीं २५ आंगुलीचटकावैनांहीं २६ आलसमोडैनांहीं २७ मू
छांऊपरिहाथफेरैनांहीं २८ भीतिकाआश्रालेबैठैनांहीं २९ गादीतकियालगावैनांहीं ३० पांवपसा
रिवापगऊपरिपगधरिबैठैनांहीं ३१ छांणांथापैनांहीं ३२ कपडाधोवैनांहीं ३३ दालिदलैनांहीं ३४ ६१

आ सालिदिकषांटैनांहीं ३५ पापडैमूंगौडीआदिसुकावैनांहीं ३६ गायभैंसिआदितिर्यंचबांधैनांहीं ३७ रा
जादिककेभयकरिभाजिदेहरैजायनांहीं ३८ वालुकैनांहीं ३९ रूदनकरैनांहीं ४० राजचोरस्त्रीभो
जनदेशआदिविकथाकरैनांहीं ४१ भाजनगहणांसस्त्रादिघडावैनांहीं ४२ सिघरीबालितापैनांहीं
४३ रूपैयामहोरपरषैनांहीं ४४ प्रतिमांजीकीप्रतिष्ठाऊवांपाछैं प्रतिमांजीकेढांकीलगावैनांहीं ४५
पागबांधैनांहीं ४६ काचमैंमुषदेषैनांहीं ४७ नकचूंटाआदिसंकेसउपाडैनांहीं ४८ घरसंसरूवबांधा
देऊरैआवैनांहीं ४९ निर्मायलषावैनांहीं ५० वामोलिलैनांहीं ५१ वाबैचैनांहीं ५२ चमरआप
ऊपरढुरावैनांहीं ५३ पवनकरावैनांहीं ५४ वाआपकरैनांहीं ५४ तैलादिविलेपनवामर्दनकरैनां
हीं ५५ वाकरावैनांहीं ५६ कामबिकाररूपपरणावैनांहीं ५७ वास्त्रांकेरूपलावण्यबिकारभावक
रिदेषैनांहीं ५८ देहराकीबिछायतनगारानिसानजावतवस्तबिबाहादिककेअर्थिबर्तैनांहीं ५९
देहरेकाद्रव्यउधारभीनलेइवापईसादिमोलिनलेवाआपमनमैंऐसाबिचारकीयाएबस्तएद्रव्यदेवगु
रधर्मकेअर्थिहैं याछैंवहबस्तद्रव्यसंकल्पकीयासोफिरिकरिनहींचहोडै तौयात्राअंसमात्रभीवि

स्वासअपनैंघरविषैंल्याऊवानिर्माल्यकादोषसादृश्यजांननां ॥ निर्माल्यकेग्रहणकापापसादृश्य
औरपापनांहीं ॥ ६० देवगुरुशास्त्रनैंदेषितत्कालऊठिबैठाहोइहाथजोडिनमस्कारकरनां ॥ ६१ स्त्रीज
ननैंएकसाडीओढिदेहरैंनआवै ॥ ऊपरिऊढणीआदिकओढिआवै ॥ ६२ पाघबांधांपूजानकरनां
६३ स्नांनवाचंदनकातिलकऔरआभूषणादिश्रृंगारविनांसरागीपुरुषतिनकूंपूजानकरनीं ॥
६४ त्यागीपुरुषनैंआदरकावनांहीं ॥ ६५ अरपूजाबिनांदेहराकीकेसरिचंदनआदिकातिलककर
नोंनांहीं ॥ ६६ प्रतिमांजीआगैंचढ्योड्याफूलटांकवाआदिकैअंगीकारनूकरनां ॥ ६७ याकाग्रहण
विषैंनिर्माल्यकादोषलागैं ॥ देहरामैंवैसिरिवाआदिअसुचिक्रियानकरै ॥ गेडी ॥ गेंद ॥ दडी ॥ चौपडि ॥
सतरंज ॥ गंजफा ॥ आदिकोईप्रकारकाख्यालनषेलै ॥ ६८ बाहरनहींपाडै ॥ ६९ देहरामैंभांडक्रियानक
रै ॥ ७० रकारैंतूकारेवाकठोरबचनवातर्कलीयांबचनमर्मछेदवचनमस्करीझूठबिबादईर्षा ॥ असत्या
मृषा ॥ कोईनैंरोकिबोबांधिबोपकडिबोलडिबोइत्यादिबचननबोलै ॥ ७१ कुलांटनषाय ॥ ७२ पगांकैद
रबडीपावचपावैनहीं ॥ ७३ हाडचांमऊंनकेसआदिमंदिरविषैंलेजायनांहीं ॥ ७४ मंदिरविषैंबिनाप्रयो ।

जनआम्हासाम्हाफिरैनांहीं ॥ ७५ आम्हीसाम्हीसौंकालेइदेनहीं ॥ ७६ अपरससइवाकलाला ॥ कपडां ।
ऊईस्त्रीतीनदिनवाप्रसूतऊईस्त्रीडेढमहीनांपर्यंतदेहराविषैंजायनहीं ॥ ७७ गुह्यअंगदिषावैन ।
हीं ॥ ७८ षारआदिबछावैनांहीं ॥ ७९ ज्योतिषबैदिकमंत्रजंत्रकरैनांहीं ॥ ८० जलक्रीडाआदिकोई
प्रकारक्रीडाकरैनांहीं ॥ ८१ लूलापांगुलाविकलअंगी ॥ अधिकअंगी ॥ बांवनां ॥ आंधा ॥ वहरा ॥ गूंगा ॥
कांणां ॥ मांजरा ॥ सूद्रवर्ण ॥ संकरबर्ण ॥ पुरुष ॥ एस्नांनकरिउजलकपडापहरिनैंश्रीजीकापषालना
दिअभिषेककरिअष्टद्रव्यसंपूजननकरै ॥ औरअपनैंघरसूंविनयपूर्वकचोषाद्रव्यल्यायकप
डापहर्यांहींश्रीजीकैसन्मुषधरिषडोयआगैं ॥ पीछैंनानांप्रकारकीस्तुतिपाठपढिनमस्कारादि
करिउठिजाय ॥ ऐसैंद्रव्यपूजावास्तुतिपूजाकरै ॥ ८२ रात्रिपूजननकरै ॥ ८३ मंदिरसूंअडताव्यासूं
तरफग्रहस्तीकाहवेलीघरनहोइ ॥ बीचमैंगलीहोइ ॥ सोसर्वत्रमलमूत्रआदिअसुचिबस्तरहि
तपवित्रहोइ ॥ ८४ अणछाण्यांजलकरिजिनमंदिरकाकामकरावैनहीं ॥ औरजिनपूजनआ
दिसर्वधर्मकार्यविषैंवकुत्रसजीवांकाघातहोइ ॥ सोसर्वकारिजतजनांजोग्यहैं ॥ ऐसैंचौरासी ॥

आछदनदोषकास्वरूपजांननां॥ भावार्थ॥ जिनमंदिरविषैंसर्वसावद्ययोगपतैंलीयांएकार्यहोइः
तेसर्वतजनां॥ औरस्थांनविषैंपापकीयावाउपार्ज्या॥ ताकेउपशांतिकरिवानैंजिनकूंजिनमंदिरका
रनैंहैं॥ अरजिनमंदिरविषैंउपार्ज्यापापताकें॥ उपशंतिकरनेंकूं औरकोंईसामर्थनांहीं॥ भुगत्यां
हीछूटैहैं॥ जैसैंकोईपुरुषरैयतिजनसूंलडग्रांताकीतकसीरतौराजापासिमाफकरावैहैं॥ औररा
जाहीसौंलडग्रांताकीतकसीरकरिवानैंठिकांनौंकौण॥ वाकाफलबंदीषांनांहीहैं॥ ऐसाजांनिनि
जहितमांनिजिंहितिंहिप्रकारबिनैंस्मरहनां॥ बिनयगुणहैंसोधर्मकामूलहैं॥ मूलबिनांधर्मरू
पीवृक्षकेस्वर्गमोक्षरूपीफलकदाचिलागैनांहीं॥ तीसूंहेभाईआलस्यछोडिप्रमादतजिषो
टाउपदेशकावचनकरिभगवांनकीआगयाताकीआगयाहीमाफिकप्रवर्तौ॥ घणीकहिवाक
रिकांई॥ एतोआपणांहितकीवातहै॥ जामैंआपणांभलाहोय॥ सोकांनहीकरनां॥ सोदेषोअर्हं
तदेवकाउपदेशतौऐसा॥ याचौरासीदोषमांहिसूंकोईएकदोइभीलागैतोमहापापहोइ॥
आगैंचौथाकालविषैंजिनमंदिरकराए॥ अरपांचवांकालविषैंकरावैहैंताकास्वरूपवाफलबर्न ६३

नकरियेहैं॥ चौथाकालविषैंबडेधन्याढ्यकैएअभिलाषाहोतीसोमेरेद्रव्यबहोतताकूंधर्मकेअर्थि
षरचिये॥ ऐसाविचारिकरिधर्मबुधीपात्तिकश्रावगशाहरूपमहंतबुध्दिकेधारकअन्येकजैनशास्त्रां
केपारगामी॥ बडेबडेराजांनिकरिमांननीकऐसाग्रहस्ताचार्यहुते॥ तासमीपजायप्रार्थनांकरे॥ हेप्रभो
मेराजिनमंदिरकरायवेकामनोर्थहै॥ आपकीआग्याहोइतौमेराकार्यकरूं॥ पीछैंवेधर्मबुधीग्रहस्था
चार्यरात्रिनैंमंत्रकौं॥ आराधिकरिसैंनकरैं॥ पीछैंरात्रिनैंसुपनादेषै॥ सोभलासुभसुपनांआयाहोइतौया
जांनैंएकार्यनिर्बांणपौहौंचिसी॥ असुभआयाहोयतौयाजांनैंएकार्यनिर्विघ्नपनैंपूर्णहोनेंकानां
हीं॥ पीछैंवेग्रहस्तीफेरिआवैंताकूंसुभसुपनाआयाहोयतौयाकहै॥ बिचास्यौसोकरौसिद्धिहोसी॥
असुभआयौहोयतौयाकहै॥ थांकैधनहैंसोतीर्थयात्रादिआदिऔरहूसुभकार्यताविषैंद्रव्यकासं
कल्पकरै॥ एताद्रव्यमूंनैंयाकैअर्थिषरचनौं॥ पीछैंजैसापरिणांमहोयतैसाकार्यविचारैंगे॥ याद्रव्य
विषैंमेराममतनांहीं॥ ताकूंअन्नाथाएकजायगाधरै॥ ऐसानांहींकपरमांनकीयांबिनांदेहराकैअर्थि
अनुक्रमसूंषरचैंजाय॥ सौयाकाप्रमांणकांई॥ पहलीतौपरमांनसांम्हांहोय॥ ताविषैंवहोतद्रव्यषर

MEMORIAL

चनांविचारस्यां। पीछैंपरिणामघटिजाय वापुन्यघटिजायतौपूर्वविचारमांफिकद्रव्यकाघरचनांकैसैंवनैं
अपूठानिर्मायलकादोषलागै। तातैंपूर्ववतद्रव्यकापरिमांणकरिलेतामांहिंसूंहीघरच्याकरै। पीछैंराजाकी
आगयासूंवडानगरजहांजैनीलोगघणांवसताहोइ। ताकेवीचिआसपासग्रहस्थ्याकाघरछाडिपवित्रऊंची
भूमिकाहांमदेराजीदावैमोलिलेय बरजोरीनांहींलिय पीछैंभलामहूर्तदेषिग्रहस्ताचार्यवाकेऊपरमंड
त्रमांडै। पीछैंजंत्रकाकोठाविषैंसुपारीअक्षतआदिद्रव्यधरैताकेधरनेंकरिऐसागंमनहोय। फलाणीजायगांएता
हाथतलैंमसाणकीराषैहैं। एताहाथतलैंहाडचांमहैं। पीछैंवाकंषुदायराषहाडचामआदिअसुचिवस्तुपरीकाढै
पीछैंश्रेष्टनक्षत्रजोगलग्नदेषिनीवविषैंपाषाणधरै। जीदिननीवलागीतीदिनहीसूंकरावनेंहाराग्रहस्ती:
ब्रह्मचर्यस्त्रीसहितअंगीकारकरैसोप्रतिष्टाकीयापाछैं। श्रीजिनमंदिरविषैविराजै। तहांपर्यंतप्रतंज्ञापाल्है॥
औरछाणेंपाणीसूंकामकरावै। चूनांकीभठीघरिकरावेनांहीं। प्रसुकहीमोलिलेइ। औरकारीगरमजुरांसूंका
मकीघणीताकीदनकरै। वाकारोजगारविषैंकसरनांहींकरै। वाकैसदैवनिराकुलतारहैं। ऐसाद्रव्यदेमंदिरका
कामकरावैं। ईतोधर्मकार्यविचास्याहैं। सोमैंघाकामपंचोषाकामहोयहैं। मैंघीवस्तुमोलिआईचोषीहोयहैं ६४

अरकृपणतातजिउषतभूषितनैंसदैवहानहै। औरकारीगरमजूरवाचाकरआदिजेप्राणीजनताऊप
रिकोईप्रकारकषाइनांहींकरैं। सदाप्रसन्नचितहीरहै। सारांकूंविशेषहेतनजनावै। सौजन्यतागुणपालै
मनमैंएवछचर्तेहैं। कवजिनमंदिरकीपूर्णताहोइ। श्रीजीविनयपूर्वकविराजै। औरजिनबांणीकाव्या
ष्यानहोइ। ताकेनिमत्तकरिघनांजीवांकाकल्यांणहोइ। जिनधर्मकाउद्योतहोई। घणाजीवईस्थांन
कविषैंधर्मसाधनकरिस्वर्गमोक्षविषैंगमनकरै। औरमैंभीसंसारबंधनतोडिमोक्षजाऊं। संसारकास्व
रूपमहादुषरूपहैं। सोफेरिजिनधर्मकेप्रतापकरिनपाऊं। एवीतरागदेवहै। सोस्वर्गमोक्षकेफलनैंसी
घ्रदेहै। तातैंजिनदेवकीभक्तिपरमआनंदकारीहैं। आत्मीकसुषकीप्राप्तियाहीतैंहोयहैं। तातैंमैं
स्वर्गादिककेलोकीकसुषनैंछोडिअलोकीकसुषनैंवांछूंहूं। औरम्हारैकोईवातकाप्रयोजननांहीं:
संसारीकसुषसंपूरणपरो। धर्मात्मापुरुषकैतौएकमोक्षहीउपादेयहै। मैंहूंसोएकमोक्षकाअर्थिहूं
सोयाकाफलमैंरैंएनिपणेंधर्मात्मापुरुषधर्मएकमोक्षनैंचाहैहैं। मानबडाईजसकीर्तिनांवगरवनां
हींचाहैस्वर्गमोक्षहीचाहैहैं। आगैंप्रतिमांजीकानिर्मापणकेअर्थिषांनिजायपाषांनल्यावैताकास्व

रूपकदेहैं। सोवह ग्रहस्तीमहाउछवसंषांनिजाय। षांनिकीपूजाकरै। पीछैंषांनिकूंनोतिआवै। अरका
रीगरनैंमेल्हिआवै। सोवहकारीगरब्रह्मचर्यअंगीकारकरै। अल्पभोजनलेऊंजलवस्त्रपहरै। सि
ल्पशास्त्रकाजांनपणां बिनैंसूंराजीपाषांणधीरैंधीरैंफोडिकाढै। पीछैंवहग्रहस्ताचार्यसहित। औरघणां
जैंनीलोगवाकुटंवपरिवारकेलोग। औरगाजाबाजाबजावतामंगलगावता जिनगुंणकास्तोत्रपढ
तामहाउछवसूंषांनिजायजाय। पीछैंफेरिवापूजनकरि। विनचांमकेसंयोगकरि। महामनोग्यसो
नांरूपाकेकाममहापवित्रमनकूंरजायमांनकरनैंवारारथता विषैंमोकलारूईकापहलुमैंलपेटिपाषां
णकूंधरै। पीछैंपूर्ववतमहाउछवसूंजिनमंदिरल्यावै। पीछैंएकांतपवित्रस्थानकविषैंघणांविनय
सहित सिल्पिकारशास्त्रअनुसारप्रतिमांजीकानिर्मापणकरै। ताविषैंअनेकप्रकारगुणदो
षलिष्याहै। सोसर्वदोषांनैंछोडि संपूर्णगुणांसहितयथाजातस्वरूपकी नियत्रतादोयच्यारि
पांचसातवरसमैंहोय। एकतरफनैंतौजिनमंदिरकीपूर्णताहोय। एकतरफप्रतिमांजीत्र
वतारधरै। पीछैंघणांग्रहस्तांतांआचार्यपंडितऔरदेशदेशकासाधर्मीनाकूंप्रतिष्टाकामुहूर्तऊपरि ६५

कागददेघणांहेतसूंबुलावै। वासंगकौं निति प्रतिको भोजनरसोईहोइ। अरसर्वदुषितभुषितनैं
जिमावै। निति औरकोईजीवविमुषनरहै। अतिवहाप्रसंनरहै। औरकुत्ताविलाईआदिसर्वति
र्यंचभीपोष्याजायतेवेमुषीनरहै। पीछैंभलादिनभलामहूर्त विषैंशास्त्रअनुसारप्रतिष्टाहोय।
घणैंदांनवटै। इत्यादिघणींमहिमांहोय। ऐसाप्रतिष्ट्याप्रतिमांजीपूजनेंजोग्यहै। विनांप्रतिष्टापूजनें
जोग्यनाहीं। अरजानैंभोल्लैसौवरसपूजतांऊवाहोइतौवहप्रत्समांपूज्यहै। अंगहीनपूज्यनांही
उपंगहीनपूज्यहै। अंगहीनहोयताकूंजाकापांनीकदेहूदैनांही। ताजलविषैपधरायदेनां। याका
विशेषस्वरूपजांन्यांचाहौतौप्रतिष्टापाठविषैंवाधर्मसंग्रहश्रावगाचारआदिऔरशास्त्राविषैं
जांनिलैनां। इहांसंक्षेपमात्रस्वरूपदिषायाहै। ऐसैंधर्मबुद्धिनैंलीयांविनयसेतीपरमार्थकेअ
र्थिजिनमंदिरबनवावैहैं। वानानांप्रकारकेचमरछत्रसिंघासनकलसआदिउपकर्नचढाडै
है। सोवहपुरुषथोडासादिनांमैंत्रिलोक्यपूज्यपदपावैहै। वाकामस्तगऊपरिभीतीनछत्रफि
रैअनेकचमरढुलै। औरइंद्रादिकसंसारीकसुषकीकहावात। ऐसैंचौथाकालकाभक्तपुरु

षजिनमंदिरनिर्मापै॥ ताकास्वरूप वाफलकह्या॥ अरपंचमांकालविषैंवनैंताकास्वरूपकहियेहैं॥
मांनकाआश्रयनैंलीयांगोरवसहित महंतपुरुषांनैंबूझ्यांविनांअपनीइछाअनुसारि जिनमंदिरकी
रचनांजिंहजिंहस्थांनविषैंवनावैहैं॥ देहराकेअर्थिद्रव्यकासंकल्पकीयांबिनांद्रव्यलगावैहैं॥
वासंकल्पकीयाद्रव्यनैंआपनांग्रहस्तपणेंकाकार्यविषैंलगावैहैं॥ अथवानारेलआदिनिर्मा
यलवस्तुभंडारविषैं एकठाकरिवाकाद्रव्यलगावैहैं॥ वापंचायतिमैंनांवांमांडिवरजोरीग्रह
स्तांकनैंपईसामगायलगावैहैं॥ पीछैंभाडेदेनेंकेअर्थिमंदिरकैतलैंमोकलीहाटिवणांवै॥
वांहाट्यांविषैंकंदोईछीपादरजीहटवांणपंपसारीग्रहस्तीआदिवाविषैंरांषैहैं॥ वानाजसूंहाट्यांभ
रिदेइ॥ सोग्रहस्तीतौवहांकुसीलआदिकसेवै॥ कंदोईरातिदिनभठीवालै॥ नाजकीहाटिमैंजेतानां
जकणकांतेताहीजीवपरै॥ सोअैसापापजहांपर्यंतमंदिररहैतहांपर्यंतहूवाकरै॥ वाकेभाडेका
द्रव्यजिनमंदिरकेकार्यविषैंलगावै॥ वापूजनकरनेंवाकरदे॥ बहुरिजिनमंदिरविषैंकुल्हिं
गांनैंराषिघोरानघोरआजीकाअविनकरावै॥ वहांईयाइवहांईपीवै वहांहीसोवै॥ वामंत्रजंत्र

ज्योतिकवैद्यककावाषैल्लै॥ स्त्रीकीहांसीमस्करीकरै देहराकीवस्तमनमांनीवर्त्तैवावैचिषाय॥
आपकंपुजावै॥ अरलुगांयांदेहरैआवैसोमहाविकथाकरिपापउपार्ज्यैं॥ प्रतिमांजीकूंतोपीठदे॥
परसपरपगांलगावैलागैं॥ औरपंडितजतीजेताप्रतिऔरजैनीग्रहस्तांनषै करावैताको
नेगमांगिलै॥ औरपुरुषजेताआवैतेताकीवातकरैवारंवारपरस्परसिष्टाचारकरै॥ प्रतिमांजीका
वाग्गाल्लजीकाअविनयहोयताकीषवरिनांही॥ अरजाजमनगाराआदिदेहरकीनिर्मायल
वस्तग्रहस्तीआपनांविवाहादिककार्यबिषैंलेजायवर्त्तै॥ अैसाबिचारैनांहीयामैंनिर्मायलका
दोषलागैहै॥ इत्यादिजहांपर्यंतमंदिररहै॥ तहांपर्यंतमंदिरविषैंअजोग्यकार्यहोय॥ धर्मोपदेश
काकार्यनाममात्रभीनांही॥ श्रेणिकमहाराजचेलनांरांणीकीहासिकरनेंअर्थिकोतूहलमा
त्रमुन्यांकागलामैंम्रतगसर्पनाष्योहो॥ सोनांषतैंप्रमांनहीसातवैंनर्कआयबांधकीया॥ पाछैं
मुन्यांकाशांतभावकरिपरिणांमसुलट्या॥ महादरेगउपज्यो॥ सम्यक्तकीप्राप्तिभई॥ वर्धमांन
अंतमतीर्थंकरकेनिकट॥ क्षायकसमक्तकौंपायतीर्थंकरगोत्रबांध्यो॥ सभानायकभयातो

श्रा०चा० नीकर्मीसौंछांडैनांही॥ नरकलैंहीगया॥ ऐसापरमधर्मात्मासौंकर्मीगमनयाई॥ तौत्तीर्थंकर
६७ महाराजकेप्रतिबिंवकाअविनयतीत्तासौंगमकैसेंषासी॥ सोधर्मात्मापुरुषऐसाअविधिका
र्यसीघ्रहीछोडै॥ अरकेईविरलैसत्पुरुषपंचमांकालविषैंभीपूर्वैंअवधिकही॥ त्यांविनांआ
पणीसक्तिअनुसारिमहाविनयसहित॥ धर्मार्थीहोइजिनमंदिरमांपैहैं॥ नानांप्रकारकेउ
पकर्णचढाईतौवहपुरुषस्वर्गादिककेसुषनैंपायमोक्षकासुषकाभोगताहोहै॥ वऊरिआ
नमतीराजाजिनधर्मकाप्रतपक्षीताकादरवारसूंसायरकाचौंतरासुंपांचसात्तरुपयांकोमहां
नांजिनमंदिरकेअर्थिवांकनैंजाचनांकरिपूजादिककेअर्थिराजीनांवांधैहैंसोएमहापाप
है॥ श्रीजीकेमंदिरद्रव्यअपनैंपरमसेवगांविनां॥ इनिकाद्रव्यलगांवनांउचितनांही॥ वैरीकाय
ईसाकैसैंलगाइये॥ तात्तैंधर्मविषैंविवेकपूर्वकार्यकरनां॥ छ॥ आगैंछहकालकावर्ननकरियेहै॥ दस
कोडाकोडिसागरप्रमांण॥ आयतीनपल्यका॥ कायतीनकोसका॥ पाछैंदूसरासुषमांकालतीनकोडाकोडीका
जमैंअवसर्पणीकाल॥ एताहीउत्सर्पिणीकाल॥ ताकानामकालचक्रहै॥ एकएकउत्सर्पणीउत्सर्पि ६७

णीविषैंछहकालपाइये॥ प्रथमसुषमांसुषमांच्यारिकोडाकोडीसागरप्रमांण॥ ताविषैंऔवेंआयदोयप
ल्यकायदोयकोस॥ तीसरासुषमांदुषमांदोयकोडाकोडीसागरप्रमांण॥ ताविषैंआयएकपल्य॥ काय
एककोस॥ चोथादुषमांसुषमांवियालीसहजारवीसघाटिएककोडीसागरप्रमांण॥ ताविषैंकोडिपूर्व
आयु॥ सवापांचसैधनुषकाय॥ सोप्रथमचौदहानामिराजाकुलकरभये॥ तहांपर्यंतनौकोडाकोडी
सागरतांईजुगलीयाधर्मरह्या॥ संयमकाअभाव॥ अरदशप्रकारकेकल्पवृक्षताकरिदीयाभोगत्ता
कीअधिकता॥ पीछैंअंतकाकुलकरकैंआदिनाथतीर्थंकरभये॥ ज्यांदिनादिक्षाधरीतांकीसा॥
थिच्यारिहजारराजादिक्षाधरी॥ सोवहमुंनिवृत्तकेपरीसहसहवांनैंअसमर्थभये॥ नगरअजो
ध्यामैंतोभरथचक्रवर्तिभयकरिगयेनांही॥ वारैंवनफलअरछांणेंपांनीभक्षनकरनैंलागे
तववनकीदेवीवोलीरिपापीयोंईनगनमुद्राधारिकैअभक्षकाभक्षनकरोहो॥ सोथांनसेज्यादेस्यौं
थांकेवतैंईजिनधर्मविषैंक्षुध्यादिकपरीसहनहीसहीजायतौऔरलिंगधरौ॥ पाछैंवांभिष्टां॥
ऐसैंहीकीया॥ केईत्तौजटावधाई॥ केईनषवधाया॥ केईकविभूतिलगाई॥ केईजोगी॥ केईसं

आ०चा०
६८

डासीकनफडा। एकदंडीत्रिदंडीतापसीभरा। केईयांलंगोटराषी। इत्यादिनानाप्रकारकेमन
मांन्यांभेषधरे। पीछैंहजारांवरसपीछैंभगवांननैंकेवलज्ञानउपज्या। सोकेतांइकतौसुबुधि
दिखाधरी। केतावैसाहीरह्या। ताकेनानाप्रकारकेभेषभये। वहुरिभरथचक्रवर्त्तिदांनदे
नोंविचार्‌यासोइव्रतीवोहोत्तलेनैंवारेकोईपात्रनांही। तवसर्वनगरकेलोगवुलाये। अ
रमार्गविषेंहरित्तकायउगाई। केऊंमार्गप्रासुकराषे। औरसर्वपुरुषनिकौंआज्ञादीनी। इस
अप्रासुकमार्गआवौ। तवनिर्दयहेरुदयजाका। तेतौवहुलोगउसहीहरित्तकायऊपरिए
गदेआय। अरदयासलिकरिभीनाहे चित्तजिनकाऊंकुछाहीषडेरहे। आगेंनांहीआये।
तवचक्रीकहीइसमार्गआवौ। तववांफेरिकहीम्हेंतौसर्वप्रकारहरित्तकायकौंविरोधआ
वांनांही। तवभरथजीवनपुरुषांनैंदयावांनजांनिप्रासुकहीकीतरफवुलाया। अरवांनैंक
हीथेधन्यहो। सोतुम्हारैंदयाभावपाइयेहैं। सोअवदमहैं। सोतुमकरौ। सम्यकदर्शनज्ञांनचा
रित्रकीतौतीनतारकीकंठसतरकहियेजनेऊकंठविषेंधारौ। अरपाक्षिकश्रावगकेव्रतधारौ ६८

चा

परग्रहस्तकार्यकीप्रवृत्तिचलावौ। अरदांनल्यौअरदांनद्यौ। यामैंकोईप्रकारदोषनांही। थेम्हां
करिमांननीकहोस्यौ। सोवेअैसेंहीकरताऊवा। सोहीग्रहस्ताआर्यकहाये। पीछैंएव्रह्मस्था
पिकेताकालपाछैं। श्रीआदिनाथभगवांनकौंपूछी। याकार्यमैंउचित्तकीयाकेअनुचितकीया
तवभगवांनकीदिव्यधुनिविषैंअैसाउपदेसऊवा। सोथेकार्यविरुधकीया। आगेंशीतलनाथती
र्थंकरकेसमयसर्वभ्रिष्टहोसी। आनमतीहोइजिनधर्मकाविरुधीहोसी। पीछैंभरथभवकेविषें
वऊतषेदपाइकोपकारियांकानिराकरणकरताऊवा। सोहोतव्यकेवसकरिप्रचुरफैलें। चि
तनांहीभई। फेरिभगवांनकीदिव्यध्वंनिविषैंऊपदेसऊवाएतौअैसीहीहोणहारहैतषेदमतिकरै
अैसेंव्राम्हणाकाऊलकीउत्पत्तिजांननी। सोईअवेंविपर्येरूपदेषियेहैं। वहुरिअंनमतीर्थंकरकेसम
यभगवांनकामोसीआयाभाईग्याराअंगकेपाठीमसकपूर्णनांमभया। ताकेमहाप्रज्वलकषायऊप
जी। तानैंमलेछभाषारची। अरम्लेछतुरकांकौमतचलायौ। ग्रान्थकानामकुरानठहरायाजाकाती
सअधायताकानामतीससिपाराठहराया। अैसाघोराघोरहिंसाहीमेंप्ररूप्या। सोकालदोसकरिप्रचु

MEMORIAL

रफैलै जैसैंप्रलयकालकीपवनकरिप्रलयकालकीअग्निफलै ऐसैंतुरकांकेमतकीउत्पतिजांननी
वकुरिवर्द्धमांनस्वांमीनैंमुक्तिगयापाछैं ईकईसहजारवरसप्रमांणपंचमांकालनौकेताईककां
लवरस अढाईसैवैंकाउनमांनगयातवभद्रवाहुस्वांमीआचार्यभए तासमैंकेवलीश्रुतकेव
लीअवधिग्यांनीकीविछितभई ताहीसमैंएकचंद्रगुप्तराजाउज्जैनीनगरीकाहुवा तानैंसोला
सुपनादेष्याताकौंफेरिभद्रवाहुस्वांमीनैंपूछ्या तववांजुदाजुदास्वप्नाकाफलवताया तासुप्नाकौ
फलकहियेहैं कल्पवृक्षकीडालीटूटीदेषी ताकरिछत्रीदिष्याभारछांडिसी १ सूर्यअस्तिहो
तादेषिवाकरि द्वादशांगकापाठीकोअनावहोसी १ चंद्रमांछिद्रसहितदेषिवाकरि जिनधर्मवि
षैंअनेकमतहोसी भगवांनकीआग्यासंविमुषहोयघरघरमनमांन्यामतस्थापिसी १ वारहफ
णकासर्पदेषिवाकरि वारहवरसकाकालपडिसी यतीक्रियाआचार्यविष्टहोसी १ देवविमां
नअपूठाजातादेषिवाकरि चारणमुनिकल्पवासीदेवविद्याधरपांचमांकालविषैंनआवसी
१ कमलकनौडाविषैंऊग्यौदेषिवाकरिसंजमसहितजिनधर्मवैश्यधरिरहसी क्षत्रीविप्रवि ६९

मुषहोसी १ नाचताभूतदेषिवाकरि नीचदेवकीजातिहोसीजैनधर्मसंअनुरागमंदहोसी विम
कतीआगिदेषिवाकरि जैनधर्मकौकठैअल्पहोसी कोईसमैंघणौघरिसी कोईसमैंअल्प
वधिजासी मिथ्यातमतनैंघणांसेयसी १ सूकेसरोवरविषैदक्षणदिशाकीतरफतुछजलका
देषिवाकरि धर्मदक्षिणकीतरफरहसी १ जहांजहांपंचकल्यांणकभये तहांतहांअभा
वहोसी सोनांकेपात्रमैंस्वांनक्षीरषातादेषिवाकरि उत्तमजनकीलक्ष्मीनीचजनभोगसी
१ हस्तीऊपरिकपिचढ्यौदेषिवाकरि नीचकुलकेराजाहोसी क्षत्रीकुलकेवाकीसेवाक
रिसी १ मर्यादालोपतौसमुद्रदेषिवाकरि राजानीतिछांडिप्रजानैंलूटिषासी १ वृषभतरु
णरथकेजुप्यादेषिवाकरि तरुणअवस्थामैंधर्मसंयमआदरसी वृद्धपणैंसिथलहोसी १
कुंवरऊपरिराजपुत्रचढ्यौदेषिवाकरि राजाजिनधर्मछांडिहिंसकमिथ्यातीहोसी १ रतनांकी
रासिधूलिस्यूंढकीदेषिवाकरि जतीपरस्परदोषीहोसी १ कालाहस्तीकासमूहलडतादेषिवा
करि समयसमयवर्षाथोडीहोसी मनमांन्यांमेघनवरसिसी १ सोलासुपनांकाअर्थअशुभ

नैंसूचनाभद्रबाहुस्वांमीनिमतज्ञांनकावलसैंराजाचंद्रगुप्तनैंयाकाअर्थयथार्थकह्या।ता
करिराजाभयभीतभया।असासुपनांकाफलसारामुन्यांप्रसिद्धिजांन्यौं।एहीसोलास्वप्नां
चतुर्थकालकेआदिहीभरथचक्रवर्त्तिनैंआयेथेसोवांभीयांकाफलश्रीआदिनाथजी
कौंपूछ्यातबतबश्रीभगवांनजीकीदिव्यध्वनिबिषैंअसाउपदेसभया।आगैंपंचमकाल
आवसीताबिषैंहुंडासर्पनीकादोषकरिअनेकतरहकाविपर्यैहोसी।ताकरियाभौ
बिषैंवापरभौविषैंजीवांनैंमहादुषकेकारणहोसी।सोलास्वप्नांपंचमकालमैंराजाचंद्र
गुप्तनैंआये।अरराजाचंद्रगुप्तदिष्याधरी।ताबिषैंबाराफणकौसर्पदेषिवाथकी।बाराव
रसकौकालपड़िवौजांन्यौं।तबचौईसहजारमुन्यांकौसिंघाडौछौत्यांनैंबुलायकही।इंदे
शबिषैंबारावरसकौकालपड़ैलो।अठैरहसीसोभ्रष्टहोसी।दक्षिणमैंजासीजाकौमुनि
पदरहसी।ऊंठीनैंकालकौअभावहोसी।पीछैंअसोऊपदेससुंनिभद्रबाहुस्वांमीस
हितबाराहजारमुंनितौदक्षिणदिशानैंविहारकीयो।अवशेषबाराहजारमुंनिउहां ७०

हीरह्या।सोअनुक्रमसौंभ्रष्टहुवा।पात्राझोलीपछेवडीराषताहुवा।असैंबारावरसपूर्णभ
ये।पीछैंसुरभिक्षकालभया।तबभद्रबाहुविनांभद्रबाहुस्वांमीतौपरलोकपधारे।और
दक्षिणकेसर्वमुंनिआये।वाकीभ्रष्टअवस्थादेषि।निंद्या।तबकेताइकतौप्रायश्चितले
उल्लैंछेदोपस्थांपनकरिशुद्धहुवा।अरकेताइकप्रमादकेबसीभूतहुवा।विषयकषाय
केअनुरागी।धर्मसैंसिथलहुवाकायरपणांनैंधारताहुवा।अरमनमैंअसाचितवनक
रताहुवा।सोयहजिनधर्मकाआचरणतौअतिकठिन।तातैंम्हेअसेकठिनआचरणआ
चरिवैकूंअसमर्थ।तासैंअबैंसुगमफेरियामाफिकप्रवर्त्तस्यां।अरकालपूर्णकरस्यां।पी
छैंअसाहीउपायकरताहुवा।जिनप्रणीतशास्त्रकालोपकरि।जामैंआपनांमतलबसधैबि
षयकषायपोष्याजाय।तींअनुसारनैंलीयां।एतालघुशास्त्रपिंडतांहीकावलकरिमनोक्तक
ल्पितग्रंथ।अरताकानांमद्वादशांगधस्या।ताबिषैंदेवगुरुधर्मकास्वरूपअन्यथालिख्या।देव
गुरुकेपरिग्रहठहराय।धर्मसम्यक्तदर्शनज्ञानचारित्रबिनां।वासादिकबिषैंकलेसवीतराग

भावविनांस्थापितकीजे। संकीयातबत्तौतीनपछेवडी। औघामंपटीपात्राआदिराषेथे। इत्यादि
काअभावथे। पीछैं ज्यौं ज्यौं कालहीणआवतागया। त्यौं त्यौं बुद्धिविशेषरागभावतें अनुसरतीग
ई। तौ हीमां फिकइव्यअसवारीआदिविशेषपरिग्रहराषतेभये। मंत्रजंत्रज्योतिसवैद्यककरि।
गृहस्तलोकानैंवसिकरतेभये। आपणांविषयकषायनैंपोषतेभये। ताविषैंभीकषाययांकैतीव्र
वसीभत्तहुवे। तपांल्योंकाविजामतीषरत्तराआदिचौरासीमत्तथापे। पीछैंविशेषकालदोषकरिताकाम
तविषैंही। मारिवाडिदेशविषैंएकचेलालडिकरिढूंढाविषैंजायबेश्या। पाछैंवोढूंढामत्तचलायो। अर
पैतालीससास्त्रमांहिंसंबत्तीसशास्त्रराषे। ताविषैंप्रतिमांजीकात्तौस्थापदै। पूजनकाफलविशेष
लिष्याहै। अकृत्तिमचैत्यालैवाप्रतिमांजीतीनलोकविषैंअसंख्यात्तहै। ताकाविशेषमहिमांबर्ने
नलिष्याहै। परंतुहिंदुवांमुसलमांनउत्तदिगंवरस्वापूर्वस्वेतांवरसंदोषपालनैंकेअर्थिप्रतिमां
जीकावाजिनमंदिरकावाजिनविंवपूजनकाउथापनकिया। सोकालदोषकरियोटामत्तकी
वृद्धिप्रचुरफैलेगई। सुद्धधर्मकीप्रवर्तनवरजोरीभीचालसकैनांही। सोईप्रतिक्ष दे(षि)येहै। असैं ७१

स्वेतांबरमत्तकीउत्पत्तिभई। याकूंविशेषजाण्यांचाहैतौभद्रबाहुस्वांमीचरित्रविषैंदेषिलीज्यौ
वहुरिपीछैंअवशेषसुद्धदिगंबरगुरुरहेथे। तेकेतेककालपर्यंत्ततौवांकीभीपरपाटीसुद्धचली
आई। पीछैंकालदोषकेबसकरिकोईकोईभ्रष्टहोनैंलागे। सोवनादिकनैंछोडिरात्रिसमैंभैके
मारेनगरसमीपआयरहत्तेभये। पीछैंवाविषैंसुद्धमुंराजथेतेनिंद्याकरतेहुवे। हायहायदेषोका
लकादोषमुनिकीसिंघवृत्तिछी। सोस्यालवृत्तिआदरी। सिंघनैंबनकेविषैंकांहेकाभय। त्यौंमुन्यां
नैंकांहेकाभय। स्यालरात्रिसमैंनगरकैआसरैंआयविश्रामलै। त्यौंहीस्यालवत्तभ्रष्टमुनिनग
रकाआश्रालैहैं। प्रभात्तसमैंएतौसामायककरनैंकौंवैठिसी। अरनगरकीलुगांयांगोवरपांनी
केअर्थिनगरकेवारैंआवसी। सोयांकीवैराग्यसंपदानैंलूटिलेजासी। तवनिर्धनह्वोयनीचग
त्तिविषैंजायप्राप्तहोसी। औरयाभौकेविषैंमहानिंद्यानैंपावसी। सोनगरकेनिकटिरहनैंकरिही
भ्रष्टतानैंप्राप्तहुवा। तौऔरपरग्रहीधारककुगुरुकीकहाबात। सोवेगुरुभीऐसैंहीभ्रष्टहोतैंहो
तैंसर्वभ्रिष्टहुवे। अरअनुक्रमत्तैंअधिकभ्रिष्टहोत्तेआये। सोवप्रत्तक्षिअबैदेषियेहीहैं। बहुरिऐ

सैंहीकालदोषकरिराजानीसर्बभ्रिष्टहुवे॥ अरजिनधर्मकाशेहीहोइगये॥ सोऐसैंसर्बप्रकारधर्म
कीनास्तिहोतीजांनि॥ जेधर्मात्माग्रहस्तीरहेथेतेमनकेविषेंबिचारकरतेहुवे॥ अबेंकांईकरनौं॥
केवलीश्रुतकेवलीकातौअभावहीहुवा॥ अरग्रहस्ताआचार्यपूर्वेंहीभ्रिष्टभयेथे॥ अबेंराजाअ
रमुंनिसर्वभ्रिष्टभये॥ सोअवधर्मकिसकेआसैरहे॥ तौसंआपनैंधर्मराषनौं॥ सोअबेंश्रीजीका
डीलांहीपूजनकरौ॥ अरडीलांहीशास्त्रबांचौ॥ आगेंस्वेतांवरदिगंवरधर्मसेंविरुद्ध चौरासीअ
छेरामांनेंहें तिनकानिरदेशवास्वरूपबर्ननकरियेहैं॥ केवलीकैकवलाआहार॥ ऐसाबिचार
करैनांही॥ संसारविषैंषुध्याउपरांतिऔरतीव्ररोगनांही॥ अरतीव्रदुषनांही॥ अरजाकेंतीव्रदुष
पाइयेतौ॥ वेपरमेस्वरकाहेका॥ संसारीसादृस्पहीहुवे॥ तौअनंतसुषयावनांकेसैंसंभवै॥ अरछी
यालीसदोषबत्तीसअंतरायरहितनिरदोषआहारकेसैंमिलै॥ केवलीतौसर्वज्ञहैं॥ सोकेवलीनें
तौदोषीकनिर्दोषीकबस्तसर्वदीषै॥ अरत्रिलोकहिंस्यादिसर्बदोषमईभरिरहेहैं॥ तौऐसेदोषकौं
जांनतासुंनताकेवलीहोइदोषीकआहारकेसैंकरै॥ मुंनिमहाराजसर्वदोषआहारनैंनकरै॥ ७२

तौसर्वमुंन्यांकरिसेवनीकत्रिलोकनाथइछाविनांसदोषआहारकैसैंलेहै॥ अरकआहारलिये
पीछें॥ षुध्या१ त्रिषा१ रोग१ जनम१ जरा१ मरण१ सोग१ भय१ विस्मय१ निद्रा१ षेद१ स्वेद१
मद१ मोह१ अरति१ चिंता१ अरएअठारादोषउपजैंतौऐसैंअठारादोषकेधारकपरमेस्वरआ
नमतीकेपरमेस्वरसादृस्पहोयगये॥ औरयहांकोईप्रश्नकरै॥ तेरहांगुणस्थांनपर्यंत आहार
अनाहारदोन्यौंकह्याहैं॥ सोकैसेंहैं॥ ताकाउत्तरयहु॥ जोअहारछहप्रकारकेहैं॥ कमल१ कर्मव
र्गणा१ मांनसीक१ ऊष्ले१ नौकर्म१ द्रव्यकर्म१ ताकेअर्थलिषेहैं॥ सोकमलनांममुषमेंग्रास
लेनेंकाहैं॥ सोवेंद्री तेंद्री चौद्री असनीपंचेंद्रीएतौतिर्यंच॥ औरमनुष्यकैपाइये॥ कर्मवर्गणानुकौआ
हारनारकीयाकैपाइये॥ मांनसीकआहारकीमनमैंइछाभयें॥ कंठमांसूंअम्रतश्रवैताकरितृप्तिहोइ
ताकौंकहिये॥ सोच्यारिप्रकारकेदेवदेवांगनांताकैपाइयेहैं॥ सोपंषीगभैमैंसंवाहिरअंडाधरैंहैं॥ वें
कैकेंतदिनिषुज्यतकमलआहारबिनांहीविधिनैंप्राप्तहोयहै॥ सोवाविषैंवीर्यरज्यधातपाइएत्ता
केनिमतिकरिसरीरपुष्टहोयहैं॥ कोईकैहस्तादिकलगांयावीर्यगलिइंडागलिजायहैं॥ वहुरिले

आ० चा० पत्रअहारसरवांगसरीरबिषैंव्याप्तिहोय ताकौंकहियेहै सोएकेंद्रीपांचौंथावरांकैपाइयेहै जैसैंवृ
७३ षमृतिकाजलकौं जडसेंतीषैंचिसरवांगअपनेंसरीरसंप्रणमांवेहै सोयहच्यारिप्रकारकेआहा
रतौषुध्याकीनिवृत्तकरनेंकाकारनहैं बहुरिनोकर्मआहारछैप्रजापत्तपूर्णकरनैंकेकारनहै
सोसमेंसमैंसर्वजीवआकासमैंसौंनोकर्मजातिवर्गनाकाग्रहणकरैछै प्रजापितिरूपप्रणमावैहैः
सोकारमांणकातीनसमैंअंतरालांकाछोडिवाकेसमुदघात्तविषैं प्रतरकालंजुगलकादोस
मये पूर्णकाएकसमय याविनाआयकाएकसमैंपर्यंत त्रिलोककेसर्वजीवसिद्धअरजोगचौद
हांगुणस्थांनवरतीकेवलीयांविनांलेहै ताकीअपेक्षातेरहांगुणस्थांनपर्यंत्तआहारककं
ह्याहै सोतौहमजीमांनैंहै परंतुकमलाआहारछठागुणस्थांनपर्यंतहीहै ताहीतैंआहारसं
ज्ञाछठैगुणस्थांनबिषैंहीहै वहुरिकारमांनआहारआठोकरमनकेग्रहनकरनेंकाहै सोएस
र्बजीवसिद्धअयोगकेवलीबिनांप्रथमगुणस्थांनतैंलगाय तेरहांगुणस्थांनकेअंतसमयप
र्यंत आयसहतआठवाआयविनांसातवांयोगबिनांछै सातावेदनीएककरमकाग्रहणकरैहैः ७३

ऐसैंषटप्रकारकेआहारकास्वरूपजांननां तातैंकेवलीकैकमलअहारसंभवैनांही अरजेपू
र्वापरविचारकरिरहितहैंतेमांनहै औरस्वेतांबरमतविषैं आहारसंज्ञाछठागुणस्थांनहीप
र्यंतकहीहै मोहकामास्याअहंकारमतिकापक्षिनेंलीयें वाकाबिचारहीकरैनांही एआहा
रकैसाहै अरतेरहांगुणस्थांनपर्यंतजीकह्यासोआहारकैसाहै सोऐसाबिचारउपजैहीनांहै
सोयहन्यायहीहै अपनेंऔगुनढांकनेंहोइतबआपसंगुणांकरिअधिकहोइ ताकेऔगुण
पहलीथापे जैसैंसर्बअन्यमत्यांआपनेंविषैंभोगसेवनांआया तबपरमेस्वरकेंभीबिषैंभोग
लगायदीया त्यौंहीस्वेतांबरआपनेंएकदिनबिषैंबहुबेरआहारकरनाआया तातैंकेवली
कैभीआहारस्थाप्या सोधिक्कारहोऊया जीवाकूं नाईअपनैंमतकेवास्तैं ऐसैंनिर्दोषपरम
केवलीभगवांनताकौंदोषलगावैहै ताकेपापकीबातकौंहमनांहीजांनें केसापापउपजैसो
ग्यांनगम्यहीहै १ बहुरिकेवलीकौंरोग २ केवलीकौंनिरहार ३ केवलीकौंकेवलीनमस्कारक
रै ४ केवलीकौंउपसर्ग ५ प्रतिमांकेभूषन ६ अरतीर्थंकरस्मालिपढैं ७ तीर्थंकरनीपहली

DR. BHAU DAJI MEMORIAL

आ० बा० देवानंदाकूं अहलीजाय ८ महावीरतीर्थंकरदेवानंदीब्राह्मणकेघरिऔतारलीयेपाछैं इंद्रजीवा
७४ कागर्भमैंसूंकाढित्रिसलांदेराणीकागर्भविषैंजायमेल्होपाछैवाकेगर्भथकीजनमलीयो ९ आ
दिनाथभाइसुनंदावहनजुगलिया १० सुनंदावहणिकैंआदिनाथपरनी ११ केवलीकौंछींक
आवैं १२ सुनंदकरब्राह्मणमिथ्यादृष्टीकोंगोतमजीसाम्हांगया १३ स्त्रीकौंमहाव्रतपलै १४ स्त्री
कौंमुक्ति १५ तीर्थंकरनैंदिक्षासमैंइंद्रदेवस्वेतवस्त्रआणिदेसोमुंनिऔस्थामैंपहरेंरहैं १६
प्रतिमांजीकैंलंगोटकंदोराकोचिन्ह १७ श्रीमल्लिनाथजीकौंतीर्थंकरस्त्रीपर्यायमांनें १८ जुग
ल्यांकेछोटीकायकरिदेवभरथषेत्रमैंल्यायेचौथाकालकेआदित्तासुंफेरिजुगल्योधर्मचालसी॥
१९ जुगल्यांसौंहरिवंसहोवाऔ २० जैनीकैचोदाउपकरण २१ मुनसुव्रततीर्थंकरकैघोडागणधर
हुवा २२ मुनिश्रावकांकासूंआपविहारलाविअरउपासिरामैंकवाडजुडियावे २३ परिहरणौंअहार
करैताकाअर्थपङ्जोकोईसाधआहारविहरिल्यायेहोआहारकीयेंपाछैंअवशेषबाकीरह्यौं तो
वाआहारकेंतेलाआदियणांवासकेधारीऔरकोईसाधहोइताकापेटमैंनाषिदीजिएतौदोषनांहीं ७४

साधकोउदरछैसोरोडीसमांनछै॥ भावार्थ॥ तेलाआदियणांवासबिषैंऔरसाधकोबच्यौभोजनलैनौंउचित
छैंयामैंअवासकाभंगनांहीयहनिर्दोषआहारछै २४ उंनौंपानीआहारकरै॥ ताकाअर्थ॥ यङ्जोजल
कीबिधिनांहींमिलैतौ मतपीअरत्रषावुझावै साधांकूंकसास्वाद अरनौजातिकाविधका भेदसूं घृ
त १ दुग्ध २ दही ३ तेल ४ मीठा ५ मद ६ मांस ७ सहित ८ एकऔर ९ अथवाकोईश्रावकांनौंपानी
आहारपचायोहोइ सोभीसाधकौंलैनांउचितहैं २५ निंदिकमास्यांकौपापनांहीं २६ जुगल्यामरिन
र्कभीजाय २७ भरथजीब्राह्मीभगनीकौंपरणिवाकेअर्थअपनैंघरमैंराषी २८ भरथजीग्रहस्तअ
वस्थाविषैंमहलांमैंआभूषणपहरयांभावनांभावतैंकेवलग्यांनउपज्यौ २९ महावीरजन्मकल्यां
णसमैंबालकअवस्थाबिषैंपगकेअंगुष्टासूंसुमेरकंपायमांनकीयो ३० पंचपांडवाकीएकद्रोपदी
स्त्रीपंचभरतारीसीलवंतीमहासतीहुई ३१ कुवारेचेलाकेकांधेगुरुचढ्या अरगुरऔघाकादंडकी
चेलाकामाथामैंदेतेजाय तवचेलाषिमांषाई तवषिमांकेप्रभावकरिचेलाकौंकेवलग्यांनउपज्यौ॥
तबचेलासुधागमनकरनैंलागा॥ तवगुरांफुरमाईकांईचेलासुधांगमनकरनैंलागा॥ सोतुनैंकेवल

ग्यांनउपज्या तबचेलाकही गुरांकाप्रसाद ३२ अरजैमालीजात्तितौमालीसोमहाबीरतीर्थंकरकै
वेटीपरणी ३३ कपलिनारायणनैंकेवलग्यांनउपज्यौ तबकपलिनारायणनाच्यौ धात्तकीषंडकौं
ईहैंआयोछैं ३४ वस्वदेवकैवहत्तरिहजारस्त्रीकुई ३५ मुनीस्वरस्पर्द्धसूद्रकेघरआहारलेइ अर
कोईमांसादिकवहरायाहोयतौसाधअैसाबिचारकरै सोसाधकीवृतिनोयेहैं वहरावैसोहीलैनां
अरलीयांपीछैं पृथ्वीऊपरिषेपियैंतौवऊजीवांकीहिंसाहोइ तातैंभषणहीकरणांउचितहैं यी
छैंगुरुनषैयाकादंडप्रायश्चित्तलेलेगे ३६ देवतामनुष्यनीसौंभोगकरै सोसुलसाश्रावगणीकैदेव
सूंबेटोहुवौ ३७ चक्रवर्तिकैछहहजारस्त्रीकुई ३८ त्रिपिस्टनारायणछीयाकाकुलबिषैंऊपज्यौ ३९
वाकुलकौसवापांचसैधनुषसरीरउतंगनहीमांनैंधादिमांनैं ४० अनार्यदेशबिषैंबर्द्धमांनस्वामी
बिहारकर्मकीया ४१ चौथेवारैअसंजमीकौंजतीपूजै ४२ देवांकोएककोसमनिष्यांकाच्यारकोस
वराबरिछैं समोसरणमांहींतीर्थंकरकेवलीनगननांहींदीसै कपडापहरयांदीसै ४३ जतीहाथ
मैंडांडोराषै ४५ मोरादेवीमातानैंहस्तीऊपरचढ्यांकेवलग्यांनउपज्यौ ४६ भावार्थ स्त्र्याचास्त्रिबि ७५

नांकेवलग्यांनउपजै ४७ चंडालादिनीचकुलीदिक्षाधरै ४८ वामोक्षजाय ४९ चंद्रमांसूर्यमूलविनां
सहितमहावीरस्वामीकौंबंदिबाआये ५० पहलास्वर्गकोइंद्रदूजास्वर्गकोजायस्वामीहोइ ५१ अ
रदूजास्वर्गकाइंद्रपहलास्वर्गकोस्वांमी ५२ जुगल्यांकौसरीरमुवापाछैंपडोरहे ५३ जिनेस्वरकामल
सरीरकैदागहै ५४ श्रावगजतीकौंस्त्रीआणिमनथिरताकरावैतौस्त्रीकौदोसनांही पुन्यहीउपजः
जतीश्रावककाबिचारकीबाधामिटी ५७ अठारादोषसहिततीर्थंकरकौंमांनैं ५८ तीर्थंकरकासरीर
सौंपंचथावरकीहिंसाहोइ ५९ तीर्थंकरमात्ताचौदहस्वपनांदेषैं ६० स्वर्गबार ६१ गंगादेवीसौं भोग
भूमियांपचासहजारबरसपर्यंत्तभोगभोग्या ६२ अरबहुतरजुगलपूलैकालसमैंदेवउडायलेजाय
वधतानांहीलेजाय ६३ चामडाकोपानीनिर्दोष ६४ घृतपकवांनवासषरीरसोईवासीनिर्दोषछै ६५
महावीरभगवांनकामात्तापित्ताभगवांनदिक्षालीयांपहलीपर्यायपूरीकरिदेवगत्तिगये ६६ वाहैं
वलमुगलकौरूप ६७ सारफलषायांदोषनांही ६८ जुगल्यापरस्परलैंकषायकरै ६९ तरेसठपुरुषांकौ
निहारमांनै ७० इंद्रचौसठजातिकेमांनैंसोजातिकेनांहीमांनैं ७१ जादवांमांसभक्षतो ७२ मांनुषोत्र

आगैंमनुष्यजाय ७३ कामदेवचौवीसनांहींमांनैं ७४ देवतातीर्थंकरकाप्रतिकसरीरकामुषमांहैंकी
दाढउपाडिस्वर्गलेजायपूजै ७५ नाभिराजामोरादेवीजुगलिया ७६ नौग्रीवाकावासीदेवअनुदिस
नौंपर्यंतजाय ७७ चेल्लौआहारल्यायौ सर्वगुरांवाकापात्रांमैंथूंक्यौ चेल्लैगुरांकीओंठिजांनिषायगयौ
तातैंकेवलग्यांनउपज्यौ ७८ अरशास्त्रकौंवांचिवैत्रपनैंचौकापाटाताकैनीचैंधरैदै चासास्त्रकौं
सिराणांदेसोवे अरयाकहैएतौजडहैं याकूंपूजैंवानमस्कारकरियेकहाफलहैं ८० अरकुदेवादि
ककेपूजिमैंअटकावनांहीं एतौग्रहस्तपनैंकाधर्महैं ८१ अरऔरांनैंतौकहैं धर्मकेअर्थमात्रभी
हिंसाकीजैनांहीं सैंकडांस्त्रीपुरुषचत्रमासादिकतीर्थौंरित्याबिषैंगाराखुंदताखूंदताअसंख्यातअ
नंतत्रसथावरजीवकीहिंसाकरायअपनैंनिकरबुलांवैं वाआपकौंनमस्कारकरावैं वावाच्च
तापूठजाय आवत्तांपाचसातकोससांमांजाय इत्यादिधर्मअर्थिनांनांप्रकारकीहिंसाकरैताकौ
दोषगेणैनांहीं ८२ अरमूंढेपाटीराषै कहैपवनकायकीहिंसाहोयहैं सोमुषकाछिद्रतौसासता
मुझतहीरहैहैं अववोलैंभीमुषकीआडासासोसासनिकसतानांहीं सासतानांककीआडि ७६

निकसैहैं ताकौंतौपाटीदेनांहीं अरमौंढाकीरालसूंअसंख्यातजीवउपजै ताकादोषगिनैंहींनां
हीं जैसैंएकस्त्रीअपनैंलघुपुत्रकौं अपनैंसरीरकौंआडापटदेपुत्रकौंअंचुलचुषावैं मुषसौं
याकहैं एहलडकापुरुषहैं तातैंयाकास्पर्शकीयेंकुसीलकादोषलागैहैं अरमैंपरमसीलव
तीहौं तातैंपुरुषनांममात्रभीकौंस्पर्शकरनांमनैंउचितनांहीं पीछैंअपनांषांवदकौंनिशबि
षैंसतौमेल्हिवाषांवदकीआंषिचुरायदावघातकरिआधीरात्रिकेसमैंवादिनबिषैंमध्यानस
मैंचाहैजव अपनैंघोडाकेचरवादारनीचकुलकंवडामहाकुरूपनिरदईतीव्रकषाई ऐसेनि
दपुरुषसौंजायभोगकरैं अरवैहैस्त्रीजारषनैंमोडीवेगीजाय तववैजारऊंनैंलाठीमूष्टीआदि
सौंमारै तौभीजारसुंबिनयवांनहोयप्रीतिहीकरैं कामदेवसेनिजभरतारकौंइछैनांहीं तैसैं
स्वेतांवरकोईप्रकारमुषस्यौंवोलनेंकरित्रसथावरकेरक्षकपरमदिगंवरजोगीस्वरबनोवासीसं
सारदेहभोगसूंउदासीननिजदेहकेत्यागीपरमवीतरागीसुरूपयोगीतारणतरणज्ञांनिमूर्त्ति
इंद्रादिकदेवनिकरिपुज्य मोक्षगामीताकादर्शनकीयेंहीग्यांनबेराग्यकीप्राप्तिहोय आपा

परका जानपना होइ॥ ऐसैं निर्विकार निर्ग्रंथ गुरुकी भी षुलेमुष उपदेसका है कौ है तौ सो तौ वा
केमुषके कोई प्रकार हस्ता दिक करि भी आछादित देषिये नांही॥ सो जा वातमैं कोई प्रकार हिंसा
नांही॥ ताका तौ ऐसा जतन करै॥ अर सीली दोय च्यारि दिन की वासी केघर की॥ अन छांण्यां
पांनी षालके स्पर्शजल मदिरा मांसके संजोग सहित ऐसे गारिके भोजनता विषैं रात्रिसमैं प
चाई रसोई दीन पुरुषकी नांई जाचि सूद्र के घरकी लें आवैं॥ वह जैन धर्मके है ही सो जैन धर्मकी
आग्याकरि रहित भषिक उत अएण आदरसूं आहार दे॥ सो ऐसे भोजनके रागी ताका जतन
करतें अंसमात्र भी देरेक मांनैं नांही॥ कैसे है भोजन॥ त्रसजीवांकी रासि है॥ बहुरि ऐसे ही त्रस
जीवांकी रासि है॥ बहुरि ऐसे ही त्रसजीवांकी रासि नई कंदोई की बस्त अथाणां संधाणां भो
जीकांजी आदि महा अभक्ष्यका आचरन करै है॥ ताकी हिंस्यामैं दोष गनैं ही नांही॥ अर वाकूं
प्रासुक कहै है॥ सो यह प्रासुक कैसा॥ जो प्रासुक है तातौ ग्रहस्ती याका त्याग काहे कूं करते॥ सो
रागी पुरुषांकी बिटंबना कहां तक कहिए॥ ८३॥ बहुरि चित्राम की पुतली नषैं रहनैं का तौ दो ७७

षगनैं॥ अर सैंकडा स्त्री ताकौं सिषावै पढावैं उपदेस देवांके संसर्ग रहै॥ वाका लालपाल करै॥ अर
वाकी नाडी देषै॥ नाडी देषनैं का मिस ही वाका स्पर्श करै॥ वा औषधि ज्योतिक बैद्यक करि मनो
र्थ सिद्ध करै॥ बहुरि द्रव्यका सग्रह करै ताकरि मनमान्यां बिषय पोषै॥ स्त्रीयांका सेवन करै॥ वाकौं ग
र्भ रह्या होय तौ वाकौं औषधि देवाका निपात करै॥ अर कहै म्हे जती छां॥ म्हे साधु छां॥ म्हांनैं पू
जौ॥ सो ऐसे साधु तारबा समर्थ कैसें होय॥ पथरकी नाव समुद्र विषैं आप डूबै तौ॥ औरांनैं कैसैं तारै॥ ब
हुरि स्त्रीका भ्रमनावाके वास्तै वाकौं कपडासहित ही ग्रहस्थापनामैं ही मोक्ष बतावै॥ अर या भी क
है॥ बज्ररिषभनाराचसंघनन बिनां मोक्ष नांही॥ अर कर्मभूमि स्त्रीकै अंतका निसेध ए है॥ तौ स्त्री मो
क्ष कैसैं जाय॥ ताके शास्त्र मैं पूर्वापर दोष तौ ऐसा शास्त्र प्रमांनीक कैसैं॥ अर प्रमांनीक बिनां सर्वज्ञ
का बचन कैसैं॥ तातैं नेम करि उन मांन प्रमांन करि भी यह जांण्यां गया॥ ये सास्त्र कल्पित है॥ क
षाई पुरुषां अपनें मतलब पोषनें के अर्थि रच्या है॥ बहुरि वे कहै है॥ स्त्रीकौं मोक्ष नांही तौ नव गु
णस्थांन पर्यंत तीनौं वेदका उदै कैसैं कह्या॥ ताका उत्तर यह॥ जो एक कथन भावां अपेक्षा है॥ सो भा

वत्तौमोहकर्मकाउदैसंहोयहै॥ अरद्रव्यांपुरुषस्त्रीनपुंसककाचिन्हनांमकर्मकेउदयतैंहोय
हैं॥ सो भावतीनौंबेदवारैनैंतौमोत्तहम भीमांनैंहैं॥ द्रव्यांस्त्रीनपुंसककौंमोत्तनांहीं॥ वाकीसा
मर्थतौपंचमांगुणस्थानपर्यंतचढनेंकाहैं॥ आगैंनांही॥ यहनैंमहैं॥ आगैंएकद्रव्यांपुरुषकूंही
मोत्तहैं॥ सोएकेंद्रीआदिअसनीपचेंद्रीपर्यंत॥ अरवासनमूर्छन॥ वादेवनारकीजुगल्यायांकैतौ
जैसौद्रव्यांचिन्हहैतैसाईभावबेदपाइयेहैं॥ अरसैंनीगर्भज॥ पचेंद्रीमनुष्यवातिर्यंचयांकेद्र
व्यांमाफिकभाववेदहोय॥ वाअन्यबेदकाभीउदेयहै॥ गोमटसारजीबिषेंकह्याहैं॥ जैसैंउदा
हरणकहियेहै॥ द्रव्यातौपुरुषहैं॥ अरवाकैपुरुषसंभोगकरिवाकीअभिलाषाबर्त्तैहैं॥ ता
कौत्तौभावांस्त्रीबेदीद्रव्यांपुरुषबेदीकहिये॥ अरएकेकालपुरुषस्त्रीदोन्यांहीसंभोगक
रनैंकीअभिलाषाहोय॥ ताकौंभावनपुंसकबेदीद्रव्यांपुरुषबेदीकहिये॥ अरद्रव्यांपुरुष
स्त्रीभोगनैंकीअभिलाषाबर्त्तै ताकौंभावांपुरुषबेदीअरद्रव्यांपुरुषबेदीकहिये॥ असैं
द्रव्यांपुरुषभावांतीनबेदवारजीवकौंमोत्तहोयहै॥ असैंहीतीनौंबेदकाउदेद्रव्यांस्त्रीवा ७८

नपुंसककेजांननैं॥ ताकौंपंचमांगुणस्थांनपर्यंतआगैंहोयनांहीं॥ ताकौंएमोत्तमांनौंहौताकाविरुद्धपणाहैं॥ बकु
रिदिगंबरधर्मबिषैंवास्वेतांबरधर्मविषैअसाकह्याहैं॥ आठसमांमैंउत्कृष्टएकसौंआठजीवमोत्तजाय॥ अडता
लीसपुरुषबेदी॥ ४८ वतीसस्त्रीबेदी॥ ३२ अठाईसनपुसकबेदी॥ २८ मोत्तजायसोयहअसेबेदकेधारीकीअपेत्ता
तौविधिमिलैहैं॥ अरद्रव्यांकीअपेत्ताविधिमिलतीनांहीं॥ पुरुषस्त्रीतौआधूंवाधिदेषनेंमैंआवैहैं॥ द्रव्यांनपुं
सकांपुरुषांस्त्रीमैंएकभीदेषिवामैंआवैनांहीं॥ तातैंभीतुमारासास्त्रकीबातझूठीभई॥ ८४ बकुरिबाकुबलिमु
निकेवर्ष असैंकहैहैं॥ वरसदिनतांईकेवलग्यांनहोत्यौंहोत्यूंफिरिवोकस्यौ॥ परंतुबाकुबलजीकैप्रणांमबिषैंअसी
कषायरहिबोकस्या॥ सोयहभूमिकाभरतकीहैं॥ ताऊपरिहमतिष्टैहैं॥ सोयहउचितनांहीं॥ असामांनकषाय
करिकेवलग्यांनउपज्यौनांहीं॥ इत्यादिवांवावल्लापुरुषकीसीनांईअसंभवांताकामतबिषैंकहि
येहैं॥ तौवेअन्यमततैंकहाघटेहैं॥ जिनधर्मकीवातअसीविपर्येहोयनांहीं॥ असीबाततौलडकाभी
कहानीमात्रभीकहैनांहीं॥ ज्यांपुरुषांकहेसंघदेष्यानांहीं॥ ताकैभावैंविल्लावहीस्यंघहैं॥ त्यौंहीज्यां
पुरुषांवीतरागीपुरुषांकामुषथकीसांचाजिनधर्मकहेसुन्यांनांहीं॥ ताकैभावैंमिथ्याधर्महीसतिहै॥

MEMORIAL

श्रा०वा० तातैंश्रीआचार्यकहैहैं अहोभ्लोकौधर्मनैंप्रीक्षाकरिग्रहणकरौ संसारबिषैंषोटेधर्मबहुतहैं षोटे
७९ धर्मकेकहनहारेलोभी आचार्यबहुतहैं सांचाजिनधर्मकेकहनहारेवीतरागीपुरुषबिरलेहैं सो
यहन्यायहीहै आछीवस्तजगतबिषैंदुर्लभहै सोसर्वोत्कृष्टशुद्धजिनधर्महै सोदुर्लभहोइही
होइ तातैंप्रीक्षाकीयांविनांषोटाधर्मकाधारणाहोइ ताकेसरधानकरिअनंतसंसारबिषैंभ्रमणक
रणांपरै यहजीवसंसारविषैंहैसोएकमिथ्यातधर्मकेसरधानकरिहीरुलेहैं ताकेरुलनैंकाकारण
एकहीहै औरनांही औरकोईकारणमांनैंहैसोभ्रमहै तातैंधर्मअधर्मकेनिरधारकरनेंकीअवश्य
स्यबुद्धिचाहियेघणीकहाकहिये ऐसैंस्वेतांवरांकीउत्पतिकही अरताकास्वरूपकह्या आगैं
स्त्रीकेबिसिषायेकुवेसहजहीयेस्वभावहोयहैं ताकास्वरूपबिषकरिकहियेहैं॥ मोहकीमूरति१ काम
बिकारकरिआभूषितहै१ सोककामंदिरहै१ धीरजताकरिरहितहै१ कायरताकरिसहितहै१ सांह
सकरिनिर्दत्तहैं१ भयकरिभयभीतहैं१ मायाकरिहृदयमैंभ्राहैं१ मिथ्यातअरअग्यानताकाघर
हैं१ अदया१ झूठा१ असुचिअंग१ चपलअंग१ वाचपलनेत्र१ अविवेक१ कलह१ निसासस्हन॥ ७९

१क्रोध१मांन१माया१लोभ१ कृपणता१हास्य१ अगलांननामत्व१ वाढल१ सनमर्द्दनभिनष१ आदि
त्रसथावरजीवनिकीउत्पतिकीकोथलीजोनिस्थांनकहै१ कोईकीआछीवाबुरीबातसुंणपाछैंकहैबि
षैंराषिवानैंअसमर्थहैं साल्हीमोल्हीवातकरिवानैंप्रवीणहै विकथाकेसुनावनेंअतिआसक्तहै भांड
विकथाबोलवानैंअतिआपताहै घरकेघरकार्यकरनैंविषैंअतिचतुरहै पूर्वापरिविचारकरिरहितहै
पराधीनहै१ गाल्हीगीतगावनेंकूंवडीवक्ताहैं१ कुदेवादिककेरातिजगावनेंकौंसीतकालादिकबि
षैंपरीस्यासहिवानैंअतिसूरवीरहै१ आरंभप्रारंभकेकार्यकरणेंकीसल्हादेवानैंवडीचतुरहैं धन
एकठौकरिवानैंमक्षिकावाकीडीसादृस्यहै गरवाकरिसारोघरसाराग्रहवारेकेभारतैंधास्याहैं॥
वाभारवहवानैंसमर्थहै पुत्रपुत्रीसौंममत्वकरनेंकौंबांदरीसादृस्यहै धर्मरत्नकेषोसवानैंवडी
लुंटेरीहैं वाधर्मरतनकेचोरबानैंप्रवीनचोरटीहै नरकादिनीकुगतिलेजानैंकौंसहकारीबोल
ईछै मोक्षस्वर्गकीआगलहै हावभावकटाक्षकरिपुरुषकेमनअरनेत्रबांधनेंकौंपासिहै॥
अरअन्यलाबिष्णुमहेसइंद्रधरनेंद्रचक्रवर्ति सिंघहस्तीआदिबडाजोधातिनिकौंक्रीडामात्र

वसकरनैंकोंमोहनिधूलिकेधरियासाहृश्यहैं॥ बहुरिमनमैंक्योंहीबचनमैंक्योंहीकायकरिक्यों
हीं॥कोईकोंवुलावें॥काहूकोंसैंनदे॥कोईसौंप्रीतिजोरें॥कोईसौंप्रीतितोरें॥छिंनमैंमिष्टबोलैं॥छिंनमैं
गारिदेय॥छिंनमैंलुभायकरिनिकटआवे॥षिनमैंउदासहोयजातीरहै॥ इत्यादिमायाचारसुभा
वकामकेतीव्रताकेवसिकरिस्वयमेवएसीघ्रपाईयहै॥ स्त्रीकैकारीसाकीअग्निसाहृश्यकामदाह
कीज्वालाजांननी॥पुरुषकेतिणांकीअग्नि॥नपुंसककेयजावाकीअग्निसाहृश्यकामअग्निजां
ननी॥बहुरिदानदेनैंकूंकृपलादासीसमांनरूपनहैं॥ सप्तस्थानकामोंनकरिरहित्तहैं॥ विडीव
तचकारिकीयेंबिनांउचित्तबहुतहैं॥ इंद्रायणकेफलसादृश्यरूपकोंधरयांहैं॥ वाह्यिमनोहरभी
तरविससघन्यकदुवादेषनैंकोंमनोहरषायेंप्राणजाय॥ त्योंहीस्त्रीदीसतीवाह्यिमनोहरअंत
रकडुईप्राणहरैहै॥ दृष्टबिषसर्पिणीकासदृश्यहै॥ सद्यसुनाथविचक्षणसूरबीरपुरुषनिकों॥बि
ह्वलकरनैंकों॥वाकमजुरउपजावनैंकोकारनहै॥रजुसल्लासमैंवाप्रसूतिहोनैंसमैंचंडालीसाहृ
श्यहै॥ ऐसेऔगुणहोतेंसंतें॥भीमानकेपहाडऊपरैंचढी॥औरनिकौंतृणसादृश्यमांनैहैं॥सो

आचार्यकहैहैं॥धिक्कारहोऊमोहकैतांई॥सोवस्तकास्वरूपयथार्थभासेनांहीं॥विपर्ययरूपही
भासैहै॥ताहीतैंअनंतसंसारबिषैंभ्रमैंहै॥ मोहकेउदैतैंहीजिनेंद्रदेवनैंछोडिकुदेवादिकनैंपू
जैहै॥सोमोहीजीवकांईकांईअकल्यांणकीवात्तनहींकरैं॥ अरआपनैंसंसारबिषैंनहींवोवे॥
आगैंस्त्रीनकासरमकावावेसरमकास्वरूपकहियेहै॥ पाघकीसरमहोयसोतौस्वयमेवहीनां
हीं॥अरमूंछकीसरमहोयहैंसोमूंछनांहीं॥ आंष्यांकीसरमहोयसोकाजीकरिनांषी॥नांककी
सरमहोइ॥सोनांकनैंबीधकाढ्यो॥ अरछातीकागढासहोय॥सोआडीकांचलीपहरिलीनी॥अर
भुजाप्राक्रमहोयहै॥सोहाथविषैंचूडीपहरिलीन्हीं॥अरलषणांन्हजांरैंकाभयहोयहै॥ सोमें
धीकरिलालकरिदीन्हीं॥ काछकीसरमहोयहैंसोकाछषोलिनांषी॥ अरमनकागढासहोयहै:
सोमनमोहअरकामकरिविफलहोयगया॥ अरमुषकीसरमहोयहै॥ सोमुषवस्त्रकरिआछा
दित्तकीन्हांमांनूंयहमुषनहीं॥ आछादितहै॥ ऐसाभावजनावैहै॥सोकांमीपुरषम्हांकामुषनैं
देषिनर्कमतिजावो॥ अरजांघांकीसरमहोयहै॥ सोघाघरापहरिलीनां॥ इसाअविवेसरमके

कारणघणांहीहैं सोकहांलगकहिये तातैंएस्त्रीनिःसंकनिलज्जस्वभावनैंधरयांहैं वाघतैंतोभै
सीसरमदिषावै सोआपनांसर्वअंगकडकरिआछादितकरै अरपुत्रभ्राताभ्रातापितादेवरजे
ठआदिकुटंबकालोगदेषतांगावै ताविषैमनमांन्यांबिषयपोषै अंतरंगकीवासनांकारणपाय
बाह्यफलकैबिनांरहैनांहीं बहुरिकैसीहैंस्त्रीकांमकरिपीडितहैंमनअरइंद्रीजाका अर
नषसौंलेअरसिषापर्यंत्त सप्तकुधातमईमुर्त्तिबनीहैं भीतरतौहाडकौसमूहहैं ताकैऊपरमां
सअररुधिरभरयाहैं ऊपरिनसांकरिबेढीहैं चामकरिलपेटीहैं ताऊपरिकेसनकेझूंडहैं मुष
बिषैंलउसाहृत्रपहडकेदांतहैं बहुरिअंतरवायपितकफमलमूत्रवीर्यकरिपूरितहैं उदाग्नि
वाअनेंकऔररोगांकरिग्रसतिहैं जराअरकालकरिभयभीतहैं अनेंकप्रकारकेपराधीनता
कोंधरयाहैं येतीजायगांसन्मूर्छनमनुष्यउपजैहैं कांषबिषै १ कुचांनीचैं १ नाभितलें १ जोंनिस्थां
नकबिषैं १ वामलमूत्रबिषैंअसंख्यातमनुष्यउपजैहैं बहुरिनोउंदुवारांबिषैंवासर्वसरीरबिषैंत्रस
वानिगोदसदैवउपजिवोहीकरैहैं वा वाह्यतनकेमैलबिषैं १ ढीषवाजुवांअनेकउपजैहैं सोनि ८१

त्तिकाढितेहींदेषियेहैं अरकेईनिर्दईपापमूर्त्तिवांकौंमारेभीहैं दयाकरिरहितहैंहृदयजाका
सोदेषोसरागप्रणांमांकोंमहात्म ऐसीनिंद्यस्त्रीकौंवडेबडेमहंतपुरुषउत्कष्टनिधिजांनिसेवैहैं
अरअपनैंकृतार्थमांनैंहैं वाकाआलिंगनकरिजन्मसफलमानैंहैं सोआचार्यकहैहैं धिक्कारहो
कुमोहकर्मकेतांई वावेदकर्मकेतांई अरधिक्कारहोऊ ऐसीस्त्रीकौंमोक्षमांनैंहैंताकौं अर
सदामांनअत्यतकायर स्थिरसंकासहितस्वभावजाका ऐसीस्त्रीकौंमोक्षकसैंहोय सोल्ह
मांस्वर्गछठानर्कआगैंजायनांही अंत्तकातीनहीसंघणउपरांतिसिंघेणहोयनांहीं आदिका
संघणनविनांमोक्षनांही सोकर्मभूमियाकीस्त्रीकैंआदिकातीनसंघननहीं अनतीनहोयहैं
अरभोगभूमियुगलीयांकेपुरुषवास्त्रीतिर्यंचवामनुष्यांकैएकआदिकाहीसंघननहोय तातैंपुरु
षार्थकरिरहितहैं तौहीतातेंवाकौंसुक्लध्यांनकीसिद्धिनांहीं अरसुक्लध्यांनविनांमोक्षनांहीं
सोयहनियपणांकह्या सोसरधानरहितवासीलरहितवस्त्रीहैं ताकौंकह्याहैं अरसम्यग्वांनहैंसील
वांनहैंस्त्रीहैं सोनिंदाकरिरहितहैं वाकागुणइंद्रादिकदेवगावैहैं अरमुनिमहाराजिवाकेवलीभगवांनकीभी

शास्त्रविषैंवडाईकरैंहैं। अरस्वर्गमोक्षकीपात्रहैं। तौऔरांकककहावातहैं। ऐसीनिंद्यस्त्रीभीतिनकासोजिन
धर्मकेअनुग्रहकरिऐसीमहिमांपावैहैं। तौपुरुषधर्मसाधैताकीकहापुछनी। बहुगुणआगैंलघुऔगुणकाजोरचलै
नांहीं। एहसर्वत्तरहन्यायहैं। ऐसीस्त्रीकास्वरूपवर्ननकीया। आगैंइसप्रकारविद्यासीषनैंकाकारणक
हिएहैं। ताविषैंपांचवाह्यजकेकारणहैं। सिषावनेंवारेआचार्य१ पुस्तक१ पठनेंकास्थानक१ भोजनकीथिर
ता१ उपरलीटहलकरनैंवालिटहलुवा१ अभ्यंतरकेपांच५ निरोगसरीर१ बुधिकाक्षयोपसम१ बिनयवांन
१ वातसल्यत्वअंग१ उदिमएवंदस१०। आगैंशास्त्रवचावाकौउत्कष्टगुंणकहियेहैं। कुलकरिऊंचाहोइ१ सुंदर
सरीरहोय१ पुंन्यवांनहोय१ पंडितहोय१ अनेंकमतीकाशास्त्रकेपारगांमीहोइ१ श्रोताकाप्रश्नपहली
हीअभिप्रायजांनिवानैंसमर्थहोइ१ सभाचतुरहोइ१ प्रश्नसहिवानैंसमर्थहोइ१ आपनेंजिनमतकेशास्त्र
परगांकेवेताहोइ१ उक्तियुक्तिमिलावनेंकौंप्रवीणहोइ१ लोभकरिरहितहोइ१ क्रोधमांनमायावर्जि
तहोइ१ उदारचितहोइ१ सम्यकदृष्टीहोइ१ धर्मानुरागीहोइ१ आनमतकाषंडवानैंसमर्थहोइ१ ग्यांनवै
राग्यकौलोभीहोइ१ परदोषकाढांकनेंवाल्लाहोइ१ अरधर्मात्मांकेगुंणकाप्रकासिकहोइ१ अध्यात्म ८२

मरसकाभोगीहोइ१ विनैंवांनहोइ वाछिल्लत्वअंगसहितहोइ१ दयालहोइदातारहोइ१ शास्त्रवाचिसुनका
फलनैंनहीचाहै१ लोकीकबडाईनांहीचाहै१ एकमोक्षहीचाहै१ मोक्षकेअर्थहीस्वपरनैंउपदेसदेनैंकी
वुधिहोइ१ जिनधर्मकीप्रभावनांकरनैंविषैंआसक्तचितहोइ१ सौजनयनौहोइ१ हृदयकोमलहोइ१ दयाज
लकरिभीनांहोइ१ वचनमिष्टहोइ१ हितमितनैंलीयांवचनहोइ१ शब्दललितहोइ१ उस्वंगपुरहो
इ१ औरवक्तापुरुषशास्त्रकेवाचनेंसमैंआंगुलीचटकावैंनहीं१ आलसमोडैनांहीं१ मंदसब्दबो
लैनांहीं। सास्त्रसुंऊंचावैठैनांहीं। पावऊपरिपांवराषैनांहीं। उकडूंवैठैनांहीं। गोढादावरवैठैनांहीं।
घनांदीर्घशब्दऊचारैनांहीं। अरघनांमंदशब्दभीबोलैनांहीं। अरमायलशब्दबोलैनांहीं। श्रोताकानि
जमुतलबकेअर्थिषुसामदीकरैनांहीं। जिनवांनीकेअलिषेअर्थकौंछिपावैनांहीं। जोएकअक्षरकौं
छिपावतौमहापापीहोइ१ अनंतसंसारीहोइ जिनवांनीकेअनुस्वारविनांअपनेंमतलबपोषनें
केअर्थि अधिकहीनअर्थप्रकासैनांहीं। जाशब्दकाअर्थआपसौंनांहीउपजै। ताकेअर्थमांनवडाईनैं
लीयांअनर्थकहैनांहीं। जिनदेवनैंभुलायदेयमुषसौंसभाविषैंऐसैंकहै। याशब्दकाअर्थकछुह

मारैतांई भास्यानांही हमारीबुद्धिकैं भनताहै विशेषग्यांनी मिलैगातौवासौंपूछैंगे नांही मिलैगातौ
जिनदेवदेष्यासोप्रमांनहैं ऐसाअभिप्रायहोय हमारीबुद्धितुछहैं ताकेदोषकरितत्वकास्वरूप औरसौं
औरहोंनेमैंवासाधनेंमैंआवैतौजिनदेवमोपरिक्षमांकरौ मेराअभिप्रायतौऐसाहीहैं अर्थअरग्यानकी
भनताकरिसूक्षमअर्थऔरसेंऔर भासेनांहैं तौमैंकहाकरूं ताहीतैंमोआदिगणधरदेवांपर्यंतग्यां
नकीभनतापाइएहैं ताहीतैंअतिवाउभैमनाजोगवावचनजोगबारवांगुणठानपर्यंतकह्याहैं सत्यवच
नजोगकेवलीहीकैहै तातैंमनैंभीदोसनांही सोग्यांनतौएककेवलीग्यांनसूर्यप्रकासकहैं सोहीसर्वप्रका
रसत्यहैं ताकामहिमांबचनअगोचरहैं एककेवलग्यांनहीगम्यहैं केवलीभगवांनबिनांऔरकाज्ञांनि
वाकीसामर्थनांही तातैंऐसेकेवलीभगवांनकेअर्थिबारंबारमेरानमस्कारहोऊ वेभगवांनमोनैंबाल
कजांनिमोपरिछिमांकरौ अरमेरैशीघ्रहीकेवलग्यांनकीप्राप्तिकरौ सोमेरैभीनि संदेहसर्वतत्वकी
जाननेंकीसिद्धिहोय ताहीमाफिकसुषकीप्राप्तिहोय ग्यांनकाअरसुषकाजोडाहैं जेताग्यांनतेतासुष
सोमैंसर्वप्रकारनिराकुलतासुषकाअर्थीहूं सुषबिनांसर्वऔरअसारहैं तातैंवेजिनेंद्रदेवमोनैंअणिहोइः ८३

जामनमरणकेदुषसेंरहितकरौऊ संसारसमुद्रसेंपारकरऊं आपसमांनकरऊ मेरीतौदयासीघ्रहीकरऊ
मैंसंसारकेदुषसुंअत्यंत भैभीतभयाऊं तातैंसंपूर्णमोक्षकासुषदेऊ घणीकहाकहियै इतिवक्ता
कास्वरूपवर्ननं॥ आगैंश्रोताकालक्षनकहियेहैं॥ सोश्रोताअनेकप्रकारकेहैं तिनकेदृष्टांतकरिकहि
एहैं मांटी१ चालणी१ छाली१ बिलाव१ सवा१ वक१ पाषाण१ सर्प१ हंस१ भैंसा१ फूटाघडा१
डंसमंसादिक१ जोंक१ गाय१ ऐसैंएचोदादिष्टांतकरि यसाहत्रयश्रोताकालक्षणकहियहै विनयवां
नहोइ१ धर्मानुरागीहोय१ संसारकादुषसुंभयभीतहोइ१ श्रद्धानीहोइ१ बुधवांनहोइ१ उद्यमीहोइ१
मोक्षाभिलाषीहोइ१ तत्वज्ञांनचाहकहोइ१ भेदविग्यांनीहोइ१ परीक्षाप्रधांनीहोइ१ हेयउपा
देकरनेंकीबुद्धिहोइ१ ग्यांनवैरागकेलोभीहोइ१ दयावांनहोइ१ षिमांवांनहोइ१ मायाचाररहि
तहोइ१ निरबांछिकहोइ१ कृपणतारहितउदारहोइ१ प्रश्नवांनहोइ१ प्रफुल्लितमुषहोइ१ सौ
जन्यगुंणसहितहोइ१ सीलवांनहोइ१ स्वपरविचार बिषैंप्रबीनहोइ१ लज्जागरबकरिरहित
होइ१ थीरबुद्धिहोइ१ विचक्षणहोइ१ कोमलपरणांमीहोइ१ प्रमादकरिरहितहोइ१ सप्तबिस

DR. BHAU DAJI MEMORIAL

नकोत्यागीहोइ १ सप्तनयकरिरहितहोइ १ वातल्यअंगकरिसंयुक्तहोइ १ आठमदकरिरहितहो
इ १ आठगुणसमकितकावाआठअंगकरिसहितहोइ १ अठमलदोषकरिरहितहोइ १ षटुअना
यतनतीनमूढतादोषकरिरहितहोय १ ग्यांनधर्मकाअरोचिकहोइ १ सत्यबादीहोइ १ जिनध
र्मकाप्रभावनाअंगविषैंततपुरहोइ गुरांदिककामुषसौंजिनप्रणीतवचनसुंनिएकांतस्थांन
कबिषैबैठिहेयउपादेयकरिवाकासुभावहोइ ईगुणग्राहीहोइ १ निजऔगुणकेहेरोहोइ १ बीज
बुधिरधिसाहइरपवुधिहोइ १ ग्यानकाषयोपसमबिशेषहोइ १ आत्मीकरसकाआस्वादीहोइ १
अध्यातमवारताबिषैंबिशेषप्रियलागै निरोगीहोइ इंद्रीप्रबलहोइ आयुब्रधिहोय वैतरुणहोइ
ऊंचकुलहोइ १ अरकीयाउपगारनैंभूलैनांही कियाउपगारनैंभूलैहैंसोमहापापीहोइ याउपरां
तिपापऔरनांही लोकीककार्यकेउपगारकौंसतपुरुषनभूलै त्यौंहीपरमार्थकार्यकाउपगारकूं
सत्तपुरुषकैसैंभूलै एकअक्षरकाउपगारनैंभूलैसोमहापापीहोइ बिसवासघातीकृतघनीकहि
ये कियाउपगारभूलैसोसंसारबिषैंतीनैंएमहापापीहैं स्वामद्रोही अरगुरादिकआपसौंगुणकरिअधि ८४

कहोइ त्यांछतांसिष्यादिष्याधर्मोपदेसदेनांही देयतौवेशिष्यदंडदैनेजोगहैं वहुरिगुणआदिआ
पसौंबडेपुरुषगुंणांकरिअधिकहोइतेउपदेशदेय अरवेगुणआपसनमुषहोंहि तिनकेबचनांकौं
पोषनेरूपबचनकहैं अरकदाचिगुरांकाउपदेसकथामैंकोईतरहकासंदेहउपजताकौंपोषनेरूप
बचनकहैं अरबिनयसहितप्रश्नकरिताकेउत्तरसुंनिनिःसल्यहोइचुपकाहोयरहै वारबारगुरांका
अगाऊबचनांलापकरैनांही गुरांकेअभिप्रायकेअनुस्वारगुरुसनमुषअवलोकनकरै तबप्रश्न
करनेंरूपबचनबोलै ऐसानांहीजोगुरुपहलैंही औरांनैंउपदेसदेनैंलागजाय सोगुरुपहलैंही
उपदेशकाअधिकारीहोंनां एतीव्रकषायांलक्षणहैं यामैंमानकषायकीमुष्यताहै अंतरंगबिषैं
ऐसाअभिप्रायबर्तेहै सोमैंभी बिशेषग्यांनवांनहौं तातैं उत्तमशिष्यहोय तेपहलीआपनांऔ
गनकाढैं आपकौंबारबारनिंदै बिशेषदरेगकरै हायमेराकांईहोसी मैंतीव्रपापसौंकबछुटिस्यौं
कबनिर्वृत्तिहोस्यौं तातैंआपनें सदैवनूननताहीमांनैं पाछैंकोईमोसरपाइ आंभिजिनधर्मकारो
चिकहोइतिनकाहितनिमतनैंलीयाउपदेसदेयतौदोसनांही बहुरिसुंदरतनहोइ १ पुन्यवां

नहोइ कंठसपुष्टवचनमिष्टहोइ आजीवकाकी आकुलताकरिरहितहोइ गुरांकाचरणकम
लविषैं भ्रमरसमानतदालीनहोय १ साधर्मीकोसंगतहोइ साधर्मीहीहैं कुटंबजाकै बहुरिनेत्र
तीकडाकसौटीकापाषाणदर्पिण अग्निसारिसेसरोतासिद्धांतरूपरतनकेपरीक्षाकरनेंकाअ
धिकारीहै बहुरिसुननेंकीइछा १ श्रवण १ ग्रहण १ धारण १ समान १ प्रश्न १ उतर १ निहचे १
ए आठश्रोतानकेऔरगुणचाहिये ऐसेश्रोताशास्त्रविषैंसराहिवाजोग्यकह्याहै सोहीमोक्ष
केपात्रहैं ताकीमहिमांइंद्रादिकदेवभीकरैहैं अरमहिमांकरनवारेपुरुषकेंपुंन्यकासंचय
होयहैं अरवाकाभीमोक्षगलै गुणवांनकी अनुमोदनांकीयैंवाकेगुणकालाभहोयहैं औ
गुनवांनकी अनमोदनांकीयांवाकौंऔगुणकालाभहोइहै तातैं औगुंणवांनकी अनमोद
नांनकरनी गुणवांनकी अनमोदनांकरणी इतिवक्ताश्रोतावर्ननसंपूर्णं आगैंकृतकारि
तअनुमोदन ॥ ३ ॥ मनबचनकाय १ यांतीनकरणां अरतीनजोगांकेपरस्परपलटनिकरिगुण
चासभंगउपजैहैं सो जिसा भंगाकरिसावधियोगकात्यागकरनांहोइ अरश्रावडी आदिबरत ८५

काग्रहणकरणांहोइ सोयां गुंणचासभंगाकरिकरियेहैं ताकौव्योरौ कृत १ कारित १ अनमोदन १ एतौ
तीनभंगप्रतेकइकसंयोगीजांननां कृति कारित कृतिअनुमोदनां कारितअनुमोदनां १ एतीनदुसं
जोगीभंगहैं कृतिकारितअनुमोदनां १ एत्रियसंजोगीभंगएकहैं ऐसैंसातभंगएतौतीनकरणके
भए बहुरि ऐसैंहीसातभंगतीनजोगांकाजांननां मन १ बचन २ काय ३ एतीनप्रत्यकइकसंजो
गीभंगहैं मनबचन १ मनकाय २ बचनकाय ३ एतीनदुसंयोगीभंगहैं मनबचनकाय एकत्रिय
संयोगीभंगहैं ऐसैंएसाततीनयोगांकाभंगहुवासोसात्तकरनांकाभंगपूर्वेकह्यासोएक एक
रूपरिसातसातयोगकाभंगलगायें गुणचासभंगहोइ सोयांकाबिशेषकहियेहैं कृतकारितमन
करि १ कृतकृतबचनकरि १ कृतकरिकायकरि १ कृतिकरिमनकरिबचनकरि कृतमनकायक
रि १ कृतबचनकायकरि १ एसाततौकृततौकृततैंभंगभयेहैं ४ एऐसैंहीऔरभीजाननें कारित
मनकायकरि कारितबचनकायकरि कारितमनबचनकायकरि १ अनुमोदनांमनकरि १ अ
नुमोदनांबचनकरि १ अनुमोदनांकायकरि १ अनुमोदनांमनबचनकरि १ अनुमोदनांमन

कायकरि १ अनुमोदनांबचनकायकरि ॥ अनुमोदनांमनबचनकायकरि १ कृतिकारितमनकरि
१ कृतिकारितबचनकरि १ कृतिकारितकायकरि १ कृतिकारितमनबचनकरि ॥ कृतकारितमनका
यकरि ॥ कृतकारितबचनकायकरि ॥ कृतकारितमनबचनकायकरि ॥ कृतअनुमोदनांमनकरिः
१ कृतिअनुमोदनांवचनकरि १ कृतअनुमोदनांकायकरि १ कृतअनुमोदनांमनकरिबच
नकरि १ कृतअनुमोदनांमनकरिकायकरि १ कृतअनुमोदनांवचनकायकरि १ कृतअनु
मोदनांमनबचनकायकरि १ कारितअनुमोदनांमनकरि १ कारितअनुमोदनांबचनकरि १
कारितअनुमोदनांकायकरि १ कारित्त अनुमोदनामनवचनकायकरि १ कारतअनुमोदनाम
नकायकरि १ कारितअनुमोदनांमनबचनकायकरि १ कृतकारितअनुमोदनांमनवचनका
यकरि १ ऐसैंएगुंणचासभंगजांननें ॥ सोइकभेएणींइकभेएणींकेभंग ९ इकभेएणींदुभेएणींकेभंग
९ इकभेएणींकत्रभेएणींकेभंग ३ दुभेएणींएकभेएणींकेभंगदुभेएणींदुभेएणींकेभंग ३ तिभेएणींएकभे
एणींकेभंग ३ दुभेएणींदुभेएणींकेभंग ३ तिभेएणींतिभेएणींत्तिभेएणींकेभंगतीन ३ ऐसैंगुणचासभंगा

कीसंज्ञाजाननीहोइ ॥ एवंगुणचासतीनकालसेंतीगुणपांसोएकसौसैंतालीस १४७ ॥ भंगसपूर्ण ॥ आ
गैंषोडसभावनांकास्वरूपलिषियेहैं ॥ दर्शनबिशुद्धिकहिये ॥ दर्शननंामसर्धानकाहैं ॥ सोसरधांनकी
निश्चैविवहारबिषैपचीसमलदोषरहितसमक्तिकीनिर्मलताहोय ॥ ताकौनांमदर्शनबिशुद्धिकहि
ये १ देवगुरुधर्मकावाआपणांगुंणांकरिअधिकजेधर्मात्मांपुरुषताकीबिनयकरिये ॥ ताकानांमबिन
यसंपनताकहिये ॥ शीलअरुव्रतताबिषैअतीचारभीलगावेनांहीं ॥ ताकौंशीलव्रतेषूनतिचारक
रिरहितकहिये ॥ मुंन्यांकेतौपांचमहाव्रतहैं ॥ अवसेषमूलगुंणांतेईसीलहैं ॥ अरश्रावककेवाराव्रतां
मैंपांचअणुव्रतहैं ॥ अरपंचअणुव्रततौव्रतहैं ॥ अरअवसेषसात्तसीलहैं ॥ ऐसाअर्थजांननां ॥ निरंत
रग्यांनाभ्यासहोय ॥ ताकौंअभीषणग्यांनोपयोगकहिये ॥ धर्मानुरागहोय ॥ ताकौंसंबेगकहिये ॥ अ
रअपनीशक्तिअनुस्वारत्यागकरै ॥ ताकोनामशक्तित्यागकहिये ॥ निःकषायामरणकहिये ताकौं
साधिसमाधिकहिये १ दशप्रकारकेसंगकावैयावृतकहिये ॥ चाकरीकरियेंवाआपसौंगुणकरि
धर्मात्मापुरुषहोयताकीभीपकचंपीआदिचाकरीकरिये ॥ ताकौंवैयावृतकहिये १ अर्हंतदेवकी

भगति कहिये ताकौं अर्हंत भक्ति कहिये १ आचार्य की भक्ति करिये ताकौं आचार्य भक्ति कहिये १ उपा
ध्याय अरु बहुश्रुत कहिये घणां शास्त्रां कौ ग्यांन होइ जामैं ताकौं बहुश्रुत भक्ति कहिये १ जिनबांनी
समस्त सिद्धांत ग्रंथ त्ताकी भक्ति अंतराय न पाडिये ताकौं आवसिक अप्रहाणि कहिये २ ज्यां ज्यां धर्म अंग
करि जिनधर्म की प्रभावनां होइ ताकौं प्रभावनां कहिये जिनवांनी सौं विशेष कहियेप्रीति होये ताकौं प्र
वचनवात्सल्यत्व कहिय एसोला कारण भावनां तीर्थंकर प्रकृति बंधनैं कौं चौथा गुणस्थांन सूं लगाय आ
ठवां गुणस्थां पर्यंत बंधनें का कारण है तातैं ऐसा सोला प्रकार के भाव निरंतर राषिये याका विशेष विन
य करिये यासौं विशेष प्रीति राषिये याकी बडे उछव सूं पूजा करिये बाकराइये अरघ उतारिये याका फल
तीर्थंकर पद है॥ एवं षोडस भावनां सामान्य अर्थ संपूर्णं॥ आगैं दशलक्षणीक धर्म का स्वरूप कहिये है॥ भक्रोध क
हिये क्रोध का अभाव ताकौं उतम क्षमा कहिये मांन के अभाव हूवे विनाये गुन प्रगटे तब कोमलपणां
म होइ ताकौं आर्जव कहिये रूं ऋज्यौं अरि तमन वचन काय की प्रवर्ति रहित होय ताकौं सत्य कहिये १
चौवीस भांति के परिग्रह अभ्यंतर बाह्य के ताका त्याग त्ताकौं त्याग कहिये किंचित कहिये तिलका तुस

मात्र परिग्रह सौं रहित नगन स्वरूप ताकौं आकिंच कहिये शील पालणां ताकौं ब्रह्मचर्य कहिये ऐसा
सामान्य दशलक्षणीक धर्म का स्वरूप जांननां॥ एवं दशलक्षणीक धर्म संपूर्णं॥ आगैं रतनत्रय धर्म का स्वरूप
कहिए हैं॥ सम्यक दर्शन ग्यांन चारित्रांणी मोक्षमार्ग ऐसा दशसूत्र बिषैं कह्या है॥ दर्शन नांम सरधांन का है
दर्शनौपयोग का नांम इहां दर्शन नांहीं है॥ दर्शन ग्यांन का अनेक अर्थ है॥ जहां जैसा प्रयोजन होय तहां ते
सा प्रयोजन होय तहां तैसा अर्थ जांनैं लैनां सो दर्शन के इहां अनेक नांम हैं सो भावैं दर्श कहौ वा प्रती
ति कहौ वा सरधांन कहौं वा रुचि कहौं इत्यादि जाननां स्वयमेव ऐसैं ही है यौं ही है अन्यथा नांही और
प्रकार नांही ऐसा श्रधांन होय ताकौं तौ सामान्य दर्शन का स्वरूप कहिये वहुरि सरा हिवा जोग पकहै भा
वै भला प्रकार कहौ भावै कार्यकारी कहौ भावैं सम्यक प्रकार कहौ भावै सत्य कहौ वा जथार्थ कहौ
एसब एकार्थ है वहुरियासौं उलटा जाका स्वभाव होय ताकौं विसरावा जोग कहिये भावै प्रकार कहौ
भावै अकार्यकारी कहौ भावै मिथ्या प्रकार कहौ भावै असत्य कहौ भावै अन्यथा कहौ एसब एका
र्थ है तातैं सप्त तत्व का जथार्थ सर्द्धान होय ताकौं निश्चय सम्यक दर्शन कहिये अर सप्त तत्वां का ज

यार्थश्रद्धांननहोइ। ताकौं मिथ्यदर्शनकहिये याही तैं जथार्थतत्वार्थसर्द्धानसम्यकदर्शनकह्या है॥
अरतत्वका अजथार्थसरधांनकीयें मिथ्यादर्शनकह्या है। तत्वनांमबस्तुके भावका है। अरअर्थ
नामपदार्थका है। सोपदार्थतौ आधार है। अरतत्व आधेय है। सोह्यांमोक्षहोनेका प्रयोजन है सोमोक्ष
नैंकाकारण है मोक्षमार्गज्यौं रत्नत्रयधर्म है। प्रथमधर्मसम्यकदर्शनांनैंकारणतत्वार्थसर्द्धान
है। सोतत्वसप्तप्रकार है। जीव १ अजीव १ आश्रव १ संवर १ बंध १ निर्जरा १ मोक्ष १ यामैंपापपु
न्यमिलाइये याहीका नामनवपदार्थ है। सोतत्वकहौ भावैपदार्थकहौ। सोसामान्यभेद है। ताकौं तौ
सप्ततत्वकह्या। अरबिशेषभेदकहे ताकौंनवपदार्थकहे। याकामूल आधारजीवअजीवदोयप
दार्थ है। अस्तिततौ एकही प्रकार है। अजीवपंचप्रकार है। पुद्गल १ धर्म १ अधर्म १ आकास १
काल १ याहीकौं षट्द्रव्यकहिये। कालबिनांपंचास्तिकायकहिये। याहीतैं सप्ततत्वनवपदार्थ
षट्द्रव्यपंचास्तिकाययाकास्वरूपबिशेषजांन्यपह्चाएपांचाहिय। सोयाकाबिशेषभेदाभेदक
हिये अरयाकागुंनताकौं विगुंनकहियेदोन्यांकासमदायभेदकौं भेदविज्ञांनकहिये याहीतैं ८८

सम्यकदर्शहोनेंकाभेदविज्ञानजिनबचनबिषैंकारणकह्या है। तातैंगुंनकीवृद्धिसर्बभव्यजी
वांनैंकरणीउचित है। तीनैंमूलकारणजिनवांनीकरिकह्या है। जैंनसिद्धांतग्रंथताकामुष्यप
ह्लीअवलोकनकरना जेतासम्यकचारित्रआदिऔरउतरौत्तरधर्मी है। ताकीसिद्धांतग्रंथके
अवलोकनकरतैंही है। तातैंवाचनां १ प्रछनां १ अनुप्रेक्षा १ आमनाय १ धर्मोपदेश १ एपांच
प्रकारकेस्वाध्यायनिरंतरकरणां याकाअर्थवांचनांनांमशास्त्रकेवाचनेंका है। प्रेछनांनांमप्र
श्नकरनेंका है। अनुप्रेक्षानांमवारवारघोषनेंका है। आमनायनांम कालकेकालपढनेंका है।
भाकालजोपाठपढनेंकाहोयसोपढैं। धर्मोपदेशनांम परमार्थधर्मउपदेशदेंनेंका है। आगैंसप्तत
त्वएआदिकास्वरूपकहियेहै॥ सोचेतनालक्षणजीवजामैंचेतनपनोंहोइ। ताकौंजीवकहिये। जा
मैंचेतनांपणैंनांही। ताकौंअजीवकहिये। द्रव्यकर्मआवनेंकौंकारणचाहिये। ताकौंआश्रवक
हिये। द्रव्यभावकरिदोयप्रकार है। सोद्रव्यआश्रवैंतोकर्मकीवर्गणा तिनकौंकहिय। अरभावा
श्रवकर्मकीशक्तिजोअनुभावताकौंकहिये। तथाभावाश्रवमिथ्यात ५ अविरत १२ कषाय २५

DR. BHAU DAJI MEMORIAL
डाक्टर भाऊदाजी स्मारक

जोग२५ एसत्तावनआस्रवभावाकौंकहिये॥सोइहांच्यारिजातिकेजीवकाभावजांनलेनां॥बहु
रिद्रव्यआस्रवभावास्रवकाअभावहोनांताकौंकहिये॥पूर्वद्रव्यकर्मबंसत्ताबिषैबंधथेतिनका
संवरपूर्वकएकोदेशनिर्जराकाहोनांताकौंनिर्जराकहिए॥बहुरिजीवकेरागादिकभावनके
निमतकरिकर्मकीबर्गणाआत्माकेप्रदेसबिषैंबंधैताकौंबंधकहिये॥बहुरिद्रव्यकर्मकेउदै॰
काअभावहोनां॥अरसत्ताकाभीअभावहै॥आपकाअनंतचतुष्टयभावप्रगटहोना॥ताकौंमो
क्षकहिये॥मोक्षनांमद्रव्यकर्मवाकर्मसंमुक्तिहोनेंकावानिरबंधहोनेंकावानिर्वृत्यहोनेंका
है॥सिद्धषेत्रकैबिषैजायतिष्टनेंकानांममोक्षहोनांनांहीहै॥वहांतौजीवकर्मसौंरहितहुवा॥पी
छैंउर्द्धगमननिजस्वभावकरिजायतिष्टैहै॥आगैंवाऊपरधर्मद्रव्यकाअभावहै॥तातैंधर्मद्रव्यके
सहकारीबिनां॥आगैंगमनकरनेकीसामर्थनांही॥तातैंवाहीस्थितिभये॥उसषेत्रमैंभेदऔ
रक्षेत्रमैंनांही॥वहक्षेत्रहीसुषकास्थांनकहोय॥तौउसक्षेत्रबिषैंसर्वसिद्धनकीअवगाहनां
बिषैंपांचजातिकेथावरसूक्षमवावादरअनंतानंततिष्टैहैं॥तेतौमहादुषीमहाअज्ञांनी॥एकअक्षर ८९

कैअनंतवैंभागज्ञांनकेधारक॥तीव्रप्रचुरकर्मकेउदैसहितसदैवतीनकालपर्यंतसासतेतिष्टैहै॥
तातैंयहनिहचैकरणां॥सोसुषज्ञांनबीर्यआत्माकानिजस्वभावहै॥सोसर्बकर्मउदैघटैतैं॥आत्मा
बिषैंसकत्तिउत्पन्निहोयहै॥सोयेस्वभावभीजीवकाहै॥यांभावांरूपजीवहीप्रणवैहै॥अरद्रव्य
प्रणवतानांही॥औरद्रव्यतौजीवकौंनिमत्तमात्रहै॥तातैंजोपरद्रव्यकेनिमतपाइजीवपायजीव
केसक्तिउत्पन्निताकौंउपादिकवाविभावअशुद्धविकल्पवादुषरूपभावकहिये॥भावार्थ॥जीव
काज्ञांनानंदतौअसलिभावहै॥अज्ञांनतादुषआदिअशुद्धभावहैं॥परद्रव्यकेसंयोगतैंहै॥तातैंका
र्यकैबिषैंकारणकाउपचारकरिअभावहीकहिये॥ऐसैंसप्ततत्त्वकास्वरूपजांननां॥याबिषैंपापपुं
न्यमिलाइयेताकौंनवपदार्थकहिये॥समांन्यकरिकर्मएकप्रकारहै॥बिशेषकरिपुन्यपापरूपदोय
प्रकारहै॥सोआस्रवभीपुन्यपापकरिदोयप्रकारहै॥ऐसैंहीसंवरनिर्जराबंधमोक्षविषैंभीदोभेद
जांननें॥ऐसैंनवपदार्थकास्वरूपबिशेषजांननां॥मूलभूतयाकाषट्द्रव्यहैं॥कायबिनांपंचास्ति
कायहैं॥ताकाद्रव्यगुणपर्यायवाद्रव्यक्षेत्रकालभाववाप्रणामनयनिक्षेपअनुजोगगुणस्थान

मार्गणाविषैंबंधउदीर्णासत्तानानाजीवउपेक्षा वाएकजीवउपेक्षावानानाकालउपेक्षलगाइ
ये वात्तरेपनभावगुणस्थांनकेचढनेंकेउतरनेंकेगैलाइत्यादिकनांनाप्रकारकेउत्तरोत्तरतत्वांका
विशेषरूपज्यौंज्यौंघणांघणांभेदनिमत्तनांमत्तथा आधारआधेयनिश्चैविवहारहेयउपादेय
इत्यादिग्यांनविषैविशेषअवलोकनहोय त्यौंत्यौंसरधांननिर्मलहोय याहीतैंक्षायकसम्यक्त
काघातकानांसतैंसात्तवांगुणस्थांनपर्यंतहीऊवा सोबारह्मांगुणस्थांनपर्यंततौक्षायकसमक्त
हीनांमपाया अरकेवलीसिद्धांकैपरमक्षायकसम्यक्तनांमपाया तातैंसम्यक्तकीनिर्मलताहो
नैकौंग्यांनकारणहैं तातैंग्यांनहीबधावनांतीसौंसर्बकार्यबिषैंग्यांनगुणहीप्रधांनहैं इहांकोई
ऐसाप्रश्नकरै सप्ततत्वहीकासरधांनकरनेंकौंमोक्षमार्गकह्या औरप्रकारक्यौंनकह्या ताका
उत्तरकहियेहैं जैसैंकोईदीर्घरोगीवापुरुषकौंरोगकीनिर्वृत्तकेअर्थिकोईस्यांनांबेदवाकाचि
न्हदेषैं सोप्रथमतौवारोगीपुरुषकीवयदेषैं पाछैंरोगकानिश्चयकरै पीछैंयहरोगकौंनकारन
तैंभयासोजांनै अरकौंनकारणसौंरोगमिटैं ताकाउपायविचारै अरयहरोगअनुक्रमसौंकैसैं ९०

मिटैं ताकाउपायजांनैं अरइसारोगसौंकैसैंदुषीहैं रोगगयांपाछैंकैसैंसुषहोयगा जैसैंपूर्वैनिजस्वभा
वजाका थातैसाहीमोकौंरोगसौंरहितकरिदेंनां ऐसासांचावाकाजांननहारावैदहोय ताहीसौंरोगजा
य अजांनबेदसौंरोगकदापिजायनांहीं अजांनबेदजमसमांनहैं तैसैंहीअअधादिसप्ततत्वकाजांनप
नांसंभवैहै सोहीकहियेहैं सोसर्बजीवसंपूर्णसुषीऊवाचाहैहै सोसंपूर्णसुषकास्थनमोक्षहै तातैंमो
क्षकाग्यांनबिनांकैसैंबनैं बहुरिमोक्षतौबंधकाअभावहोनेंकानांमहैं पूर्वैबंधहोयतौमोक्षहोय
तातैंबंधकास्वरूपअवस्यजांननां बहुरिबंधनेंकाकार्णआश्रवहैं आश्रवबिनांबंधहोतानांही तातैंआ
श्रवजांन्यांविनांकैसैंबनैं बहुरिआश्रवकाअभावनेंकारणसंबरहैं संवरबिनांआश्रवकानिरोधहो
यनांहीं तातैंसंवरकौंअवस्यजांननांयोग्यहै बहुरिबंधकाअभावनिर्जराबिनांहोइनांहीं तातैंनि
र्जराकोस्वरूपजांननां बहुरियांपांचांका आधारभूतजीवपुद्गलद्रव्यहैं तातैंजीवअजीवकास्वरूप
यौभीअवस्यजांननां ऐसैंसप्ततत्वजांन्यांबिनांनेमकरिमोक्षमार्गकीसिद्धिकैसैंहोय याहीतैंसूत्र
जीबिषैंतत्वार्थसर्द्धानसम्यक्दर्शनकह्याहैं सोयहसर्बत्रहीन्यायहैं जाकारनकरिउरऊरापडआ

होय। तिनसौंबिपर्जैउष्णताकेनिमत्ततैं वायाकीनिर्वृत्तिहोइ। ऐसानांहींकैसीतकेनिमत्तकरिउ
तपन्नभयावायकौरोग सोफेरिसीतकेनिमत्तकरिवायमिटै सोमिटैनांहीं। अतितीव्रवधिजाय॥
त्यौंहीपरद्रव्यसौंरागद्वेसकरिजीवनांनापदार्थ कर्मासौंउलझ्या बीतरागभावकीयेंबिनांसुलझै
नांहीं। अरबीतरागभावहोइ सोसप्ततत्वकेयथार्थस्वरूपजांननैंतैंहोइ। तातैंसप्ततत्वांकाजांन
पणांही निश्चैसम्यक्तहोनेकौं। असाधारणअप्रवृत्तीयएकहीकारणकह्या। ऐसैंसम्यक्दर्शनका
स्वरूपजांनना। तातैंश्रीआचार्यदयाबुद्धिकरिकहैहैं। वाछितकरिकहैहैं। सर्बजीवहीसम्यक्दर्शन
कौंधारौ। सम्यक्दर्शनबिनांत्रिकालमैंमोक्षमिलैनांहीं। चाहौजेतातपःश्चरणकरि। जीकार्यकाजो
कारणहोइ। ताहीकारणतैंवाकार्यकीसिद्धिहोइ। एसर्बत्रनेमहैं। इतिसम्यक्दर्शनस्वरूपबर्ननसं
पूर्णं॥ आगैंसम्यक्ग्यांनकौस्वरूपकहियेहैं॥ सोग्यांनगेयकेजांननेंकानांमहैं। सोज्ञानावरणीदर्शना
वरणीकाक्षयोपसमतैंजांनियेहैं। समक्तिसहितजांनपणांकौंसम्यक्ग्यांनकहियेहैं। मिथ्यातकेउ
दैसहितजांनपनेंकौं मिथ्याग्यांनकहिये। इहांग्यांनबिषैंदर्शनकौंगर्भितजांनना। समांनकरिहानै। ९१

कासहायकैंग्यांनहीकहिये। सोसप्ततत्वांकाजांनपनांबिषैंसंसयबिमोहभ्रमनांहींहोइ। ताकौंसम्यक्ग्यांनक
हिये। औरउत्तरोत्तरपदार्थकौजथार्थवाअयथार्थनैंतौवाकेजांनपनैंतैं सम्यक्नांमवामिथ्यात्वनांमपावैनांहीं॥
तातैंसप्ततत्वमूलपदार्थकाजांनपणां संसयविमोहभ्रमकरिरहितहुवेसम्यक्ग्यांननांमपावैहै। अरनिश्चैवि
चारोतौमूलसप्ततत्वांकास्वरूपजान्यांबिनां उत्तरोत्तरतत्वांकास्वरूपजांन्यांजायनांहीं। कारणबिपर्जै भेदबि
पर्जै सरूपविपर्जैकरिकसररहिजाय जैसैंकोईपुरुषसौंनांनैंसौंनांकहै रूपानैंरूपाकहै। खोटाखरारूपयाकीप्री
क्षाकरैहै। इत्यादिलोकीकबिषैंघणांहीपदार्थांकायथार्थस्वरूपजांनैहैं। परंतुकारणविपर्जैहैं। मूलकरत्तायाऽ
कापुद्गलकीप्रमांणवांहैं ताकौंजांनतानांहीं। कोईपरमेश्वरकौंकरत्तावतावैहै। कोईनास्तिबतावैहै। कोईपांचत
त्वपृथ्वीअपतेजवायआकासमिलिजीवनामांपदार्थकीउत्पतिकहैहैं। यकाप्रमाणवभिंन्नभिंन्नजुदाजुदाजा
तिकाबतावैहै। तातैंकारणविपर्जैजांनना। बहुरिजीवपुद्गलमिलिमनुष्यादिकअनेकप्रकारअसमांनजातिकीप
र्ययावनीहैं। ताकौंएकहीबस्तुमांनैहैं। सोभेदविपर्जैहैं। बहुरिरूरिथकीआकासधरतीसंलग्नांदीसैं। डूगरछोटा
दीसै ज्यौंतिषीदेवांकाविमांनछोटादीसै वाबसमांकै रूखीणपदार्थांकास्वरूपछोटाकाबडादीसैं। इत्यादिस्व

अरसम्यकग्यांनकूंवा वस्तुकास्वरूपजैसैंजिनदेवदेख्याहै तैसैंहीसरधांनकर
ंउत्तरयदार्थांकास्वरूपजांनपणां भीसम्यकग्यांनीकौसंसैविमोहबिभ्रमरहितहैं॥
बिभ्रमकास्वरूपकाहीजैसैंच्यारिपुरुषांकीसीपकेषंडकाअवलोकनकीया सोएक
ंलगा नजांनैंसीपहैंनजानैंरूपाहैं ताकौंसंसैकहिये वकुरिएकपुरुषऐसैंकहता
ैं ताकौंबिमोहकहिये वकुरिएकपुरुषऐसैंकहता भया कौंछे ताकौंबिभ्रमकहि
कऐसैंकता भया एतौसीपकाषंडहैं॥ ताकौपूर्वत्रिदोषरहितसुवस्तुकास्वरूपजेसाथा
धारीकहिये त्यौंहीसप्ततत्वांकाजांनपनांबिषैवाआपापरज्ञांनबिषैंलगायलैनां सो
ांकौंनहैं वापुद्गलकौंनहैं ताकौंसंसैकहिये बकुरिमैंतौसरीरहीहौं ताकौं बिमोहक
छूं ताकौंविभ्रमकहिये बकुरिमैंचिद्रूपआत्मांरूं ताकौंसम्यकग्यांनकहिये मुषसें
मनकेबिषै धारणांजैसाजैसाजैसाहोय तैसातैसाहीग्यांनवाकैकहिये ऐसासम्य
जांननां सम्यकग्यांनसम्यकदर्शनकासहचारीहै सोसहचारीकहा साधहीविचरै ९२

नांवैनांहीहोइ वाकाउदैहोतांवाकाभीउदारहोइ वाकानासहोइ तौवाकाभीना
हचारीकहिये सोसम्यकदर्शनहोतैंसम्यकग्यांन भीहोइ सम्यकदर्शनकेनांसहो
भीनासहोइ सम्यकदर्शन बिनांसम्यकग्यांनहोइनांहीं सम्यकग्यांनबिनांसम्य
हीं यहैंउतरफांनेमहै और भेदबिग्यांनतौसम्यकदर्शनकौकारणहैं सम्यक
नकौकारणहैं॥ आगैंसम्यकग्यांनकास्वरूपयथार्थजांननां॥ इतिसम्यकग्यांनसंपूर्णः॥
त्रकास्वरूपकहियेहैं॥ चारित्रनांमसावद्दिजोगकात्यागकाहै सोसम्यकग्यांनसहि
यकचारित्रनांमपावैहैं मिथ्यात्वसहितसावद्दिजोगकात्यागकीयां मिथ्याचारित्रनां
कदृष्टीकेसर्धांनमैंवीतरागभावहैं प्रवर्त्तिमैंकिंचिदरागभीहैं ताकौंचारित्रमोहका
किरागभावांकोदर्शनमोहकारणहैं सोसम्यकदृष्टीकेदर्शनमोहगयाहैं तातैंस
नउपेक्षावीतरागभावकहिये सर्धांनकाकषायमंदहै तातैंसम्यकदृष्टीकौं
ांहीगनिये वीतरागकहिये तातैंसम्यकदृष्टीकौंनिरबंधनिराश्रवकहितौदोस

नांही॥ विचित्रताजांनिलेनी॥ यहकथायोगजायस्यत्र॥ स्त्रविषैंकह्याहै॥ मिथ्यादृष्टीकेसर्द्धानमैंबीतरा
गभावनांही॥ बीतरागभावविनांजांन्यां निरबंधनिराश्रवनांही॥ निरबंधनिराश्रवविनां॥ सावद्दिजो
गकात्यागकारिजकारीनांही॥ सुर्गादिकनैंतौकारनहैं॥ परंतुमोक्षनैंकारणनांही॥ तातैंसंसारका
हीकारणकहिये॥ जेजेभावसंसारकेकारणहैं॥ तेतेआश्रवहैं॥ येहेयकार्यकारीहै॥ सम्यकबिनांसा
वद्दिजोगांकात्यागकरैहैं॥ सोनर्कादिककेभयथकीकरैहैं॥ परंतुअंतरंगबिषैं॥ केईद्रव्यइष्टलागैहै
केईद्रव्यअन्यष्टलागैहै॥ तातैंसर्द्धानबिषैंरागद्वेषप्रचुरजीवहैं॥ सम्यकदृष्टीपरद्रव्यनैंअसारजां
नतजैहैं॥ यहपरद्रव्यकोईसुखदुखनैंकारणनांही॥ निमतमतहै॥ दुखनैंकारणतौ॥ अपनैंअगांना
दिकभावहैं॥ सुखनैंकारणअपनैंगांनादिकभावहैं॥ असाजांनसर्द्धानकेबिषैंपरद्रव्यकात्यागहु
वाहै॥ तातैंयाकेपरद्रव्यसौंसमनांही॥ जैसैंफिटकडीलोदकरिकसायलात्यौंबस्त्रताकैरंगचढैहै॥
विनांकसायलाकीयांबस्त्रदीर्घकालपर्यंतरंगकेसमुद्रबिषैं भी गिरहैंतौवाकेतौरंगलागैनां
ही॥ उपरूपरूहीरंगदीस्याकरै॥ बस्त्रकौंपांनीमैंधोइयेतौरंगतुरत्तउतरिजाइ॥ कसायलाकीयावस्त्र

रंगहुवा॥ ताकारंगकोईप्रकारउतरैनांही॥ त्यौंहीसम्यकदृष्टीकेकषायकरिरहितजीवकाप्रणांमहैं॥
ताकैदीर्घकालपर्यंतपरग्रहकीभीरमैंरहै॥ तौ भी कर्ममललागैनांही॥ अरमिथ्यादृष्टीकेकषा
यांकरिप्रणांमकसायलाहै॥ तातैंकर्मांसंसदैवलिप्तहोयहै॥ बहुरिसाहगुमास्तातथामाताधा
यबालककौंएकसाषिलावै॥ एकसाल्लालपालकरै॥ परंतुअंतरंगविषैंरागभावांकाबिशेषबहुत
है॥ त्यौंहीसम्यकदृष्टीमिथ्यादृष्टीकेरागभावांकाअल्पबहुत्तबिशेषजांनानां॥ तातैंबीतरागभा
वसहित॥ सावद्दिजोगकात्यागकौंहीसम्यकचारित्रकह्याहैं॥ बीतरागभावांसहितभावद्दिजो
गकात्यागकैहीसम्यकचारित्रकास्वरूपजांननां॥ इतिचारित्रकथनसंपूर्ण॥ आगैंवाराअनुप्रेक्षा८
कास्वरूपकहियहैं॥ वारानामबाराकाहैं॥ अनुप्रेक्षानांमवारंवारचितवनकरनेंकाहैं॥ सोयहांवा
राप्रकारवस्तुस्वरूपनिरंतरविचारणां॥ असानांहीकिएकहीवारयाकास्वरूपजांनिस्थितिहोयर
हनां॥ भावार्थ॥ यहजीवभ्रमबुध्दिकरिअनादिकालकेवारास्थांनकबिषैंआसक्तिहुवाहै॥ तातैंयाकी
आसक्तिताछुडावनेंकेअर्थि॥ परमवीतरागगुरुयहवाराप्रकारकेभावनायाकेशक्तितासुभावसुंविरु

DR BHAU DAJI MEMORIAL

आ॰ चा॰ हृदेषिछुडायाहै॥ जैसैंमदुवानहस्तीसुछंदहुवाहांजहांस्थांनकबिषैंअटकै॥ अपनांवाविरांनांहिं
९४ मारबहुतकरै॥ ताकौंचरषीभाल्गावारैसारमार॥ महावतहस्तीकौंबहुतमारदेइछुडावैहै॥ त्यौंहीश्री
गुरुग्यांनभाल्गाकीमारदेइसंसारीजीवमदवाहस्तीताकूंविपर्जैकारिजसूंछुडावैहै॥ सोहीकहिये
है॥ प्रथमतौयोजीवसंसारकास्वरूपनैंथिरमानिरह्याहै॥ ताकौंअध्रुवभावनांकरिसंसारकास्वरूप
अथिरदिषाया॥ संसारसौंउदासकीया॥ १ बहुरिजीवमातापिताकुटंबराजादेवइंद्रआदिबहुतसुभ
टांकीसरनिबांछतासंता॥ निर्भैअमरसुषीहुवाचाहैहै॥ कालवाकर्मसौंडरिपियांकीसरनिवांछैहै॥
ताकौंअसरनिभावनांकरिसर्वत्रिलोककेपदार्थताकौंअसरनिदिषाय॥ अबैसरणिएकनिश्चै
चिद्रूपनिजआत्माहीदिषाय॥ २ बहुरिएजीवजगतजोसंसारवाचउरगतिताकेदुःषकीषबरिनांहीः
संसारविषैंकैसाकैसादुषहै॥ ताकौंजगतभावनांकरिनरकादिकसंसारकेभयकरितीव्रदुःषकी
वेदनांकास्वरूपदिषाय॥ संसारकेदुषांसौंभयभीतकीयाअरउदासकीया॥ अरसंसारकौंदुषकानि
व्रितिहोनेंकौंकारणपरधर्मतासेवनकराया॥ ३ बहुरियहकुटंबसेवाकर॥ पुत्रकलित्रधनधान्य ९४

सरीरादिआदिअपनेंमांनैहै॥ ताकौंएकत्वभावनांकरियेहै॥ कोईजीवकानांही॥ जीवअनादिका
लकाएकल्याहीहै॥ नर्कगतिगयातौएकल्ला॥ तिर्यंचगतिमैंगयातौएकल्ला॥ देवगतिमैंगयातौएकल्लाः
मनुष्यगतिमैंआयातौएकल्ला॥ पुंन्यपापयाकासाथहै॥ औरकोईयाकीसाथिआवैजाय नांही॥ तातैं
जीवसदाएकल्याहै॥ ऐसाजानिकुटंबपरिवारादिककाममत्वछुडाया॥ ४ बहुरियहजीवसरीर
नैंअरआपनैंएकहीमांनिरह्याहै॥ ताकौंअन्यत्वभावनांकरिजीवसरीरतैंन्यारादिषायाजीव
काद्रव्यगुणपर्याय न्यारोवताया॥ पुद्गलकाद्रव्यगुण न्यारावताया॥ इत्यादिअनेकतरैंसौंभिन्नदिषाया॥ नि
जस्वरूपकीप्रतीतअनाई॥ ५ बहुरिएजीवसरीरकौंबहुतपवित्रमांनैहै॥ पवित्रमांनियासौंबहुतआसक्तिहो
यहै॥ ताकीआसक्तहोयहै॥ ताकीआसक्तिताछुडावनेंकेअर्थअसुचिभावनांकरिसरीरविषैंहाडचांमरुधिर
चामनसाजाल॥ वायपितकफमलमूत्रआदिसप्तधातवासप्तउपधातमईसरीरकापिंडदिषया॥ सरीरसूंउदा
सकीया॥ अरआपनांचिद्रूपसरूपमहापवित्रसुचिनिर्मलपरमग्यांनसुषकापुंजअनंतमहमांभंडारअवि
नासीअषंडकेवलकल्लोलदैदीपमांननिकषायशांतिमूर्त्ति॥ सवकौंप्यारासिरूस्वरूपदेवाधिदेव॥ ऐसाअ

हृतीयत्रिलोककरिपूज्यनिजस्वरूपदिषाय वाबिषैंममत्वभावकराया ॥१॥ बहुरियहजीवसतावनसंबरके
कारणकिसा सोकहियहैं दशलक्षणीकधर्म १० बारातप १२ बाईसपरीसह २२ तेराप्रकारचारित्र १३ ता
करिसत्तावनआश्रवकेमूंदनेकाउपायबताया ॥१॥ बहुरियहजीवपूर्वैंकर्मबंधेताकेनिर्जराहोनेंकाउपायजां
नतासंता ताकेनिर्जराभावनांकास्वरूपदिषाया चिद्रूपआत्मांकाध्यांनसोही भयापरमतपताकाउपा
यसंसारविषैंबताया ॥१॥ बहुरिसंसारबिषैंमोहकर्मकैउदैकरि संसारीजीवांकोयहमिथ्याभ्रमलागिरह्याहैं ॥
कैयकतौलोककाकर्त्ताईस्वरमांनैहैं केईनास्तिमांनैहैं केईसुन्निमांनैहैं केईबासिकराजाकेआधारमांनैहैं ॥
इत्यादिनांनाप्रकारकेभ्रमसोईहुवामोहअंधकारताकरिजीवभ्रमरह्याहै तकैभ्रमदूरिकरनेंकौं लोकांनि
भावनांकास्वरूपदिषाया मोहभ्रमजिनवांणीकिरणांकरिदूरिकीया तीनलोककाकर्त्ता षट्द्रव्यहै षट्द्रव्य
कोसमुदायकानांमलोकहैं जहांषट्द्रव्यनांहीं एकआकासहीहैं ताकानांमअलोकहै इसलोककाए
कपदार्थकर्त्तानांहीं यलोकअनादिनिधनअकृतिमअविनासीसासतास्वयंसिद्धहैं ॥१॥ बहुरियहजीव
अधर्मबिषैंलगिरह्याहैं अधर्मकर्त्ताकरतात्तप्तिनांहींहोयहैं अधर्मक्रियाकाबहुतबुराहोइहैं महाक ९५

लेसपावैहैं ऐसैंहीअनादिकालवितीत्या परंतुयाकेधर्मरुचिकबहु न भई तातैंअधर्मकेछुडावनेंकेअ
र्थि धर्मभावनांकास्वरूपदिषाया धर्ममैंलगायेअरधर्मकौसारदिषाया अरसर्वअसारदिषाया धर्मबि
नांयाजीवकाकबहुं भलाहोयनांहीं तातैंहीसर्बजीवधर्मचाहैहैं परंतुमोहकाउदैकरिधर्मकास्वरूपजां
नैंनांहीं धर्मकालक्षनतनकग्यांनबैरागहीहैं अरयहजीवअग्यांनीहुवासरागभाव बिषैंधर्मचा
हैहैं अरपरमसुषकीबांछाकरैहैं सोयहबांछाकैसीहैं जेसैंवावन्त्राअग्निविषैंकमलकाबीजबोय
वाकीछायाविषैंविश्रामलियाचाहैहैं अथवावांझस्त्रीकेपुत्रकाविभावकेबिषैंआकासकेपुष्पकौं
सेहरागूंथमुवांपाछैंवाकीसोभादेष्याचाहैहैं तौवाकामनोर्थकैसैंसिद्धिहोइ अथवासूर्यपछिमबिषैंउ
दैहोइ चंद्रमांउष्णहोइ सुमेरचलाचलीहोय समुद्रमर्यादलोपिसकिजाय वासिलाऊपरिकमलउगै
अग्निसीतलहोइ पांनीउष्णहोइ वांझकैपुत्रहोइ आकासकपुष्पलागै सर्पनिर्विषहोइ इंमृतविसरू
पहोइ इत्यादिइनिबस्तुकासुभावबिपर्जैरूपहुवानहैनहोसी परंतुकदाचिएतौ बिपर्यैरूपहोयतौ
होइ परंतुसरागभावमैंधर्मकदाचिनहोइ यहजिनराजकीआग्याहैं तातैंसर्वजीवसरागभावनैंछो

ड़ि वीतरागभावनैं भजौं वीतरागभावहै सोधर्महै औरधर्मनांही यहनेमहै सरागभावसोही हिंसा
जांननी अरजेताधर्मकाअंगहै सोवीतरागनैंअनुसमसाहै वावीतरागभावनैंकारनहै ताहीतैं
धर्मनांमपावैहै अरजेतापापकाअंगहै सोसरागभावनैंपोषताहै वासरागभावनैंपोषैहै वासराग
भावांनैंकारणहै तातैंअधर्मनांमपावैहै औरअन्यजीवकीदयाआदिवाह्यकारणविषैंधर्महोयवा
ह्यक्रियाविषैंवीतरागभावमिलैतौताविषैंधर्महोय औरवीतरागभावनमिलैतौधर्मनांहींहोइ अर
हिंसाआदिवाह्यक्रियाविषैंकषायअंसमिलैतौपापउपजै कषायनहोइतौपापउपजैनांही तातैंय
हनेंमठहरया वीतरागभावहीधर्महै वीतरागभावांनैंकारणरत्नत्रयधर्महै रत्नत्रयधर्मनैंअनेकका
रणहै तातैंवीतरागभावकेमुख्यकैकारणकाकारणउत्तरोत्तरसर्वकारणांकोंधर्मकहियेतौदोसनां
हीं सम्यक्दर्शनसम्यकग्यांनवीतरागभावयहतौजीवकानिजस्वभावहै सोमोक्षपर्यंतसास्वतार
हैहै यासौंउलटातीनभावजीवकाविभावहै सोहीसंसारमार्गहै मोक्षरूपनांही तातैंसिद्धांकेनांही
कह्याहै औरसंजोगअजोगकेवलीकैचारित्रकह्याहै सो भीउपचारमात्रकह्याहै चारित्रनांमसावदि ९६

जोगकेत्यागकाहै वीतरागभावनैंकारनैहै वीतरागभावकारणहै कार्यहुवांपाछैंकारणहैंनांही ता
तैंग्यांनीकीक्षयोपसमैअवस्थावारवांगुणस्थानपर्यंतहीताहीत्यौंहेयउपादेयकाविचारहै तवहीहेय
उपादेयकाविचारसंभवैहै केवलीहूतै रहुवावाकारिजकरणौंछौसोकरिचुक्यौ सर्वज्ञवीतरागभ
ये अनंतचतुष्टकौंप्राप्तभया ताकौंहेयउपादेयकाविचारकाहेतैंहोय तीसौंवाकेसावद्दिजोगकात्या
गनिविवेकरिसंभवैनांही ऐसामोक्षमार्गधर्मताहीकेप्रसादकरिजीवपरमसुखीहोयहै ऐसैंअध
र्मकौंछुडाया धर्मविषैसनमुखकीया १ वकुरियहजीवसम्यकग्यांनकौंसुल्यभमांनैहै ताकंदुर्ल्लभ
भावनाकारूपदिषाया सम्यकग्यांनविषैसनमुखकीया सोईकहिएहै प्रथमतौसर्वजीवांकाघरअना
दितैंनित्यनिगोदहै तिनमांहिसैंनिकसिनांमहादुर्ल्लभहै उहांसैंनिकसनेंकाकोईप्रकारउपायही
नांही जीवकीसक्तहीनभयाहैआत्माजाका सोशक्तिहीनजीवसुंकैसैंनिसरनेंकाउपायवनैं अर
एकअक्षरकेअनंतवैंभागभीग्यानक्षयोपसमरह्याहै औरअनेकपापप्रकृतिसमूहकाउदैपावैहै
वहांसोछहमहीनांआठसमयाविषैंछसैआठजीवनेमकरिनिकसैहै ताउपरांतिअधिकहीननी

आ०चा० सरैनहीं। अनादिकालके असैंनीसरै बीहाररासिविषैं आवैहैं। एताही विवहारसमैंमोक्षजायहैं।
९१ सोयहकाललब्धिकेमहात्मजांणौं। पूर्वैं अनादिकालके जेतेसिद्धहुवे वा नितनिगोदमैंसौंनिकसे
बिन तैं अनंतगुनैं। एकएकसमयेविषैं अनादिकालसौंलगायसासते नितनिगोदमैंसौंनीसरबौक
रै तौ भी एकनिगोदकेसरीरकीमाहिलाजीवरासिका अनंतवैं भागएक अंसमैंषालीहोइनांही।
तौकहैराजमारगवरवारामाफिक निगोदमैं संजीवनिकसनांकैसैहोइ। अरकोईभागउदैवहो
सूंनिकसितातैं आगैं भी अनेकघाटाउलिंघिमनुष्यगौविषैं उच्चकुलसुषेत्रवा निरोगसरीर पांचौ
इंद्रीग्यांननिर्मलदीर्घायुसतसंगति जिनधर्मकीप्राप्ति इत्यादिपरमउत्कृष्टपनेंकीमहिमांकहा
कहिय असीसामग्रीपाय सम्यक्ग्यांनरत्नकीप्राप्तिकौं नांहीवांछैहैं। तौवाकेउबूद्धिकीकहा
सुठनी। अरवाके अपसकीकहासुठनी। तासौं एकेंद्रीपर्यायसौं बेंद्रीपर्यायपावनांमहादुर्लभ
है। बेंद्रीपर्यायसूं तेंद्रीपर्यायहोनांमहादुर्लभहै। अरतेंद्रीपर्यायसूं चौइंद्रीपर्यायपावनां अतिक
ठिनहैं। चौइंद्रीपर्यायसूं असैनीपंचेंद्रीपावनांमहादुर्लभहैं। सोए पर्यायमे अनुक्रमसौंमहादुर्लभज: ९१

सो भी अनंतवारपायौ। परंतुसम्यक्ग्यांनपायाहोतातौसंसारविषैक्यांनरहतौ। अनादिकालतैंलेइ अबतलकएक
बारभीनांहीपाया। जैसैंसम्यक्ग्यांनपायाहोतातौसंसारविषैंक्यांनेरहता। मोक्षकासुषकौंहीजायप्राप्तहोता। तासैं
भव्यजीवसीघ्रहीसम्यक्ग्यांनपरमचिंतामणिरतनमहा अमोलकपरममंगलकारणमंगलरूपसुषकीआकृति
पंचपरमगुरुकरिसेवनीकत्रिलोक्यकेपूज्यमोक्षसुषकेपात्र असासर्वोत्कृष्टसम्यक्ग्यांनमहादुर्लभपरमउत्कृष्ट
परमपवित्रउच्चजांनियाकौं भजो। घणीकहाकहियै। कदाचित्असामौसरपायकरिइहांसोच्युतभयातौवहुरि असामौ
सरमिलनैंकानांही। अबारऔरसामग्रीपाइएहैं। एकरुचिकरनीहीरहीहैं। सोतुछउपायकियाविनां असीसामग्रीपा
ईहुई अहलीजायतौयाकाहेरंगसतपुरुषकैसैंनकरै। अरकैसैंसम्यक्ग्यांनहोनेंकै अर्थउद्यमनकरै। परंतुकैय
हजीवफेरिएकेंद्रीपर्यायविषैंजायपडै तौ असंख्यातपुद्गलप्रावर्तनपर्यंतउत्कृष्टरहै। एकपुद्गलप्रावर्तनकेवरस
कीसंख्या अनंतहैं। अनंतेसागर अनंतेसर्पिणीउत्सर्पिणीवाकालचक्र अनंतानंतप्रमाण। एकपुद्गलप्रावर्तन
के अनंतवैं भागएक अंसभीपूर्णहोयनांही। अरएकेंद्रीपर्यायविषुषकासमूह अप्रमतिहैं। नर्कतैंभी अधिकदुष
पाइयेहैं। सोअसा अपरंपारदुषअसादीर्घकालपर्यंतसासताभोगाजाय। परंतुकर्मकीप्रवर्तपड्यां जीवकहाउपाय

करै इहांअनेकरोगकरिकोईकालविषैंएकरोगकीबेदनांउदैहोइ । ताकेदुषकरिजीवकस्याआकुलव्याकुलहो
यप्रणवैहै अपघातकरिमूवाचाहैसोअवस्थाइहीप्रजायविषैंसर्वहीप्रवर्तैहै । वासर्वतिर्यंचपुंन्यहीनमनुष्य
दुषमईप्रतिन्हदेषनैमैंआवैहै तिनकेएकएकदुषकाअनुभवनकरिएतौभोजनरुचैनांही । परंतुयहजीवअ
ग्यांनबुद्धिकरिमोहमदिरापांनकरिरमिरह्याहै सोकबहूंएकंतबैठिबिचारकरैनांही । जेजेपर्यायवर्तमांनबि
षैंपावै तिनपर्यायसौंतनमयहोइ एकत्वबुद्धिकरिप्रणवैहै । पूर्वापरकछूबिचारनांही । ऐसाजानैनांहीकय
हअजीवनकीवस्थामैं वासर्वपूर्वैअनंतवारभोगीहै । अरधर्मबिनांबहुतभोगैंगा । यहपर्यायछूटैपाछैंधर्मबि
नांनीचप्रजायहीपावनीहोइगी । तातैंगाफिलनरहनां । गाफिलहीपुरुषदगापायहै दुषपावैहै । औरबैरीब
सिपरैहै इत्यादिविशेषबिचारकरि सम्यकज्ञांनसम्यकदर्शनसम्यकचारित्रयहरत्नत्रयधर्मपरमनिधान
सर्वोत्कृष्टउपाधेयजांनिमहादुर्लभताकीप्राप्तिजांनि । जिंहितिंहिप्रकाररत्नत्रयधर्मकासेवनकरणां । ऐसैंदु
र्लभानुभावनांकास्वरूपजांननां । वाकौंमहादुर्लभदिषायवाविषैंरुचिकराई । इतिदुर्लभभावनांसंपूर्णं । इति
श्रीबारानुप्रेक्षास्वरूपबर्ननसंपूर्णं ॥ आगैंबाराप्रकारकेतपकास्वरूपकहियहै ॥ १२ तप । अनसन १ कहियेइनकेअ ९८

र्थच्यारप्रकारअहार । असन १ पांन २ षादिम ३ स्वादिम ४ अनसननांमपेटभरषानेकाहै पांननांमजलदु
ग्धादिपीवनैंकाहै षादिनांमबीडीका स्वादिनांममुषसुद्धिकाहै एच्यास्यौंभीभाइंद्रीकाहीबिषैजांन
नां । औरइंद्रीकानांही । औरइंद्रीकाबिषैऔरहै बहुरि आमोदर्यकहिये २ षुद्यानिवृत्तविषैंएकगास
घाटिदोयगासघाटिआदिघरताघरताएकगासपर्यंतभोजनकीपूर्णताविषैंउनोभोजनकरै ताकौंउ
णोदरतपकहिए । आजिईविधिसौंभोजनमिलैतौल्यां नांहीमिलैतौमहारैअहारपांनीकात्यागछै । ऐ
सीअटपटीप्रतिग्याकरै मनवोल्लौंकोअर्थआदिछहौंरपर्यंतकात्यागकरै ताकौंरसपरत्यागतपक
हिए ४ बहुरिआरेभःप्रारंभछोडिएकथांनकविषैंजायबैठै ताकौंविवक्तसज्यासनकहिये बहुरिसी
तकालविषैं नदीतलावचौपट । आदिसीतविशेषपरनैकास्थांनविषैंतिष्टै बरषाकालविषैंवृक्षतलैंति
ष्टैं ग्रीषमकालबिषैंपर्बतकेसिषररेतकीथलवाचौपटमारगताविषैंतिष्टैं इत्यादिती नौंरतिकेउपा
यकरिपरीसहसहै अरसरीरकसनकरिमनभीकस्याजायहै ६ परंतुकिंचितकस्याजायहै तातैंबा
हिरतपबीचिअभ्यंतरकेतपकाफलविशेषकह्याहै ऐसाअर्थजांननां । आगैंछप्रकारअभ्यंतरतप

DR. BHAU DAJI MEMORIAL

श्रा०चा० कास्वरूपकहियेहै॥ तिनविषैंअपनेसौंसअखडीवत्तसंजमविषैजोल्हैवाजानिकरि॥ अल्पबहुतदोष
९९ लगाहोइ॥ ताकौंज्योंकात्यौंगुरांनैंकहै॥ अंसमात्रभीदोषछिपावैनांही॥ पीछैंगुरूजोदंडदेताकौंअंगीका
रकरि॥ फेरिसौंअखडीव्रतसंजमादिककाछेदहुयेकास्थापनकरै॥ ताकौंप्राश्चित्ततपकहिए॥१॥ बहुरि
श्रीअर्हंतदेवआदिपंचमगुरु॥ वाजिनवांणीजिनधर्मजिनमंदिरजिनबिंबतिनकापरमउत्कृष्टविन
यकरै॥ वामुन्यअर्जिकाश्रावकश्राविकाचतुर्प्रकारसंघरताकाबिनयकरै॥ वादसप्रकारकासंगताका
बिनयकरै॥ वाआपसौंगुणांकरिअधिकअव्रतीसम्यक्दृष्टीआदिधर्मात्मापुरुषहोइ॥ ताकाबिनयक
रिये॥ ताकौंवैयावृत्यकरिविनयपगचंपीआदिचाकरीकरिये॥ वाआहारदीजिये॥ याजाकाउनकैषेदहो
य॥ जाकौंजीत्तीप्रकारनिवृत्तिकरिये॥ रोगहोयेतौउषददीजिये॥ इत्यादिविशेषचाकरीकरिये॥ ताकौंबै
यावृत्ततपकहिये॥ बहुरिवांचनां॥१॥ पूछनां॥१॥ अनुप्रेक्षा॥१॥ आमनाय॥१॥ धर्मोपदेश॥१॥ एपांचप्रकारकी
स्वाध्यायकेभेदहैं॥ सोबांचनांकहियेशास्त्रकौंवांचैंहीजांनां॥ पूछनांकहियेजीकाल्जोग्यजोस्वाध्या
यहोइ॥ वाजोशास्त्रपाठपढनेंजोग्यहोइ॥ तिन्हांकातीनकालविषैंअध्येनकरै॥ औरधर्मोपदेशाकहिए ९९

धर्मकाउपदेशादेनां॥ ऐसैंपंचप्रकारस्वाध्यायकाकरणां॥ ताकौंस्वाध्यायतपकहिये॥ बहुरिजावोजीवृवा
प्रमांणसहितसरीरकात्यागकरनां॥ त्यागकहियेसरीरकाममत्वछोडनां॥ वाहुबलिमुनिकीसीनांईस
रीरका॥ कोईप्रकारसोसकरनांहीकरनां॥ अंगउपंगकौंचलाचलअपनीइछाकरनेंकाकारणताकौं
वित्वस्वर्गवाउत्तसर्गतपकहिये॥ बहुरिएकाग्रचितनिरोधोध्यांनः॥ याकाअर्थयहु॥ आर्तिरूद्रध्यांन
काछोडनांधर्मध्यांनसुकलध्यांनकरणां॥ ताकौंध्यांनतपकहिये॥ ऐसावाराप्रकारस्वरूपजांननां॥ अगैंबा
राप्रकारकेतपकाफलकहियेहै॥ आगैंअनसनादिच्यारितपकरियहजीवस्वर्गस्थानविषैं॥ कल्पवासी
देवपुनीतपावैहै॥ थोडीसीसामग्रीमनुष्यपर्यायविषैंछोडीछी॥ ताकाफलअनंतगुणांपाया॥ सोअसंख्या
तकालपर्यंतनिर्विघनपणैंरहिसी॥ अरमहासुंदरसरीर॥ अमृतकेभोगकरिनष्टअसंख्यातकालपर्यंत
निरोगएकसागुलाबकेफूलसाइरूपमहामनोज्ञ॥ इहवातकरितआयुपर्यंतनिर्भयरहसी॥ ताकीमहि
मांबचनांगोचरहैं॥ सोकहांलौंकहिये॥ आगैंस्वर्गनकेसुषकाविशेषवर्ननकरैंगेतहांतैंजांनिलैनां॥ ब
हुरिविवक्तसयासनकायकलेसतपकरि॥ अत्यंतअत्यतअतिसैवंतमहादीपतितेजप्रतापसंयुक्त

आ०चा० इंद्रचक्रवर्तिकामदेवआदिमहंतपुरुषकासरीरपावैहै। येहैतौवाह्यषट्प्रकारतपकाफलकह्या॥ या
१०० सौंअनंतगुणांफलअभ्यंतरकेषट्प्रकारतपतिनविषैंप्रायश्चितकाफलहैं। वाह्यिजकेतपकरितें
सरीरदम्याजायहै। अरसरीरदंबिवाकरिकिंचितमनदम्याजायहैं। ताहीतैंएभीतपनांमपावैहैं। मन
नांहीदम्याजायतौकेशरीरकादम्यातपनांमपावैहैनांहीं। धर्मात्मापुरुषएकमनकीसुद्धताहीकेअ
र्थिवाह्यिरंगतपकरैहैं। अरअज्ञानमतीसरीरनैंघनौंहीकसैहैं। परंतुमनअंसमात्रभीदम्याजायनांहीं॥
तातैंवाकौंअंसमात्रभीतपनहीं। अरअभ्यंतरकेतपकरिमनदम्यांजायहैं। मनकादमिवाकरिकषा
यरूपीपर्वत्तगलैहैं। ज्यौंज्यौंकषायांकीमंदता। सोहीप्रणांमांकीविसुद्धता। ताहीकानामधर्महै। वही
मोक्षमार्गहैं। वैहीकर्मकाबालिवानैंध्यांनाग्निहै। संपूर्णसर्वज्ञानकारहस्यकरिमोहकर्मकेमंदपा
डनैंकेवास्तैनासकरनेंकाहै। अरजेताततपसंयमध्यांनाध्ययेनग्यानवैरागआदिअनेककारनवता
येहैं। सोएकारणरागादिकभावसौंबंधैहै। अरकर्मनिसौंषुलैहैं। सोएकवीतरागभावसुंषुलैहैं। तातैंस
र्वप्रकारतीनकालतीनलोकविषैंएकबीतरागभावहीहै। सोहीमोक्षमार्गहैं। सम्यकदर्शनचारित्रा १००

णिमोक्षमार्गकह्याहै। सोवीतरागभावनैंकारणहैं। तातैंकारणविषैंकार्यकाउपकारकह्याहैं। कारण
बिनांकार्यकीसिद्धिहोयनांहीं। तातैंकारणप्रधांनहैं। सोप्रतिक्षयहवातअनुभवनमैंआवैहै। अर
आगममैंठौरठौरसर्बसिद्धांतविषैंएकवीतरागभावहोइहै। कर्मवर्गनासैंतीनलोकघीकाभर्याउत्त
मघडाहै। सोकर्मवर्गणांसौंहीवंधहोइ। तौसिद्धमहाराजकैहोइ। अरहिंसासौंहीवंधहोइ। तौमुं
निमहाराजकैहोइ। अरबिषैंभोगपरिग्रहकेसमूहसौंहीवंधहोयतौ। अरहंतसम्यकदृष्टीचक्रव
र्त्तितीर्थंकरआदितकैहोइ। भरथचक्रवर्तिक्षायकसम्यकदृष्टीथा। तातैंसम्यक्तकेमहातपकरि
षटषंडकीविभूतिछिनवेंहजारस्त्रीभोगनैंकरिभीनिर्बंधनिरास्रवहीरह्या। ताहीतैंदिक्षाधरिपाछैंअंतर्मुहूर्त
कालमांनैंकेवलग्यांनउपार्ज्यौ। सोसम्यक्तकामहात्म्यअद्भुतहै। इहांप्रश्नतुमकहैतेहो। मुंनिमहाराजअव्रती
सम्यकदृष्टीकैबंधनांहीं। तौचौथागुणस्थानपर्यंतअनुक्रमतैंघटताघटनाबंधकैसैंकह्यौहै। ताकाउतर। यहकथ
नहैसौतारतम्यकीअपेक्षाहै। सोबंधनैंमूलकारणएकदर्शनमोहहै। जैसादर्शनमोहतैंबंधहै। ताकैअनं
तवेंभागबंधचारित्रमोहतैंहोयहै। तातैंअव्रतसम्यकदृष्टीतैंलगायदशवांगुणस्थांनपर्यंतअल्पबंधहै। तातैं

श्रा०चा०
१०१

नांही गनानिश्चै विचारतां गुणस्थान पर्यंत रागादिक स्वभेद पाईये हैं यह भी सास्त्र विषैं कह्या हैं सो यह
न्याय ही हैं जा जा स्थानक जेता जेता राग भाव है तेता तेता ही बंध होय यह बात सिद्धि भई एक असाधारण का
रण अष्ट कर्म बंधनें कौं मोह कर्म हैं ता सौं एक मोह का ही नास करणां सो प्रायश्चित तप विषैं धर्म बुधि विशेष
होय है अर जाकै धर्म बुधि विशेष होइ संसार के दुष का भय होय सोई गुरु नपैं प्रायश्चित दंड लेय याके मन
की बात कौं न जांन वा याकी आषडी भंग हुई है परंतु यह धर्मात्मा परलोक के भयथकी प्रायश्चित तप अं
गीकार करै है याते अनंतगुणां फल विनय तप का है या विषैं मांन विशेष गलै है अर पांचौं इंद्रीय सहाये हैं चि
त्त की एकाग्रता होय है सो ही ध्यांन है ग्यांन मोक्ष समैं विशेष होय है सम्यकदर्शन ग्यांन चारित्र निर्मल होय
है अर पुन्य के संचय अति समय सहित होय है जेता धर्म का अंग है सर्व ज्ञाना भ्यास तैं जांन्यां जाय है तातैं स
र्व धर्म का मूल एक शास्त्राभ्यास है याका फल केवलग्यांन है वहुरि स्वाध्याय तैं वितस्वर्ग अर ध्यांन ता का भी अ
नंत अनंत गुणां अधिक है याका फल मुष्य पणैं एक मोक्ष ही है वहुरि बाह्य तप तप कहे हैं सो भी कषाय घटा
वनें कै अर्थ कह्या है कषाय सहित बाह्य तप करै तौ वह तप संसार का बीज है मोक्ष का बीज नांही ताही १०१

के अग्यान तप कह्या है बाल तप कह्या है सो ही अन्य मतमैं है जिन मत मैं है नांही ऐसैं बारा प्रकार का त
प ता का फल जांनना ॥ आगैं तप का फल विशेष कहिये हैं ॥ सो देषौ आन मत वारे वा तिर्यंच मंद कषायां के महातम
करि सोल्हा स्वर्ग पर्यंत जाय है तौ जिन धर्म का सर्धांनी कर्म काटि मोक्ष क्यौं न जाय तातैं तप करि कर्मों की निर्ज
रा विशेष होय है सो ई शास्त्र विषैं कह्या है तप सा निर्जरा नहां ऐसा निर्जरा तातैं अवस्य अभ्यंतर वा बा
ह्य बारा प्रकार के तप तिन का अंगीकार करनां तप बिनां कर्म कदाचि कटै नांही ॥ ऐसा तातैं तप यै जांनना ॥ एवं
संपूर्ण ॥ आगैं बारा प्रकार संजम का स्वरूप कहिये है ॥ संयम दोय प्रकार है इंद्रीया संयम एक प्राणां संयम सो इं
द्रिया संयम छह प्रकार है अर प्राणां संयम भी छह प्रकार है पांच इंद्री छठा मन का निरोध करै षट काय की
हिंस्या त्यागै ता कौं इंद्रिया संयम वा प्राणां संयम कहिये सो संजम निःकषायन का है निकषाय है सो ही
मोक्ष मार्ग है संयम बिनां निकषाय कदाचित होइ नांही निकषाई बिनां बंध उदै सत्ता का अभाव होय
नांही तातैं संयम ग्रहण करनां जोग्य है एवं संपूर्ण ॥ आगैं जिन बिंब कौ दर्शन कौं न प्रकार करिये ॥ कहा
नै हधरिए ॥ कैसैं स्तुति विनय करिये ता का स्वरूप विशेष कहिये है ॥ दोहा ॥ मैं वंदौं जिन बिंब कौं कर अति

निर्मलभाव कर्मबंधछेदनइहां औरनकोरउपाव ॥१॥ यानांतिसमायककीयेंपाछैंलघुदीर्घबाधा
मेटिजलसौंसुचिकरिपवित्रबस्त्रपहरिऔरमनोगपवित्रएकहोयआदिअष्टद्रव्यपर्यंतरकेबी
बिषेंधरितंदुलधोइरकेबीमेंलेइ वापउवाहणांपगांचामकाऊनकास्पर्शविनां महाहर्षसंयुक्तमं
दिरआवैं अरजिनमंदिरमैंप्रवेशतांतीनवार ऐसैंउचारै जयनिसी जयनिसी जयनिसीजय ॥ ता
काअर्थ ॥ यहजोदेवादिककोईगुदातिष्टतेहोयतौतेदूरिहूज्यौ बहुरिपीछैंतीनवारऐसैंकहैः ॥
जयजय पीछैंश्रीजीकेसन्मुषपेषिये पीछैंरकेबीकौंदूरिमेल्हिदोऊहस्तजोडिन्यारेलेउपलेहाथ
राषितीनआवर्त्तकरि एकशिरोनतिकीजे पीछैंअष्टांगअष्टांगनमस्कार ॥ ताकाअर्थ ॥ तीनमनवचनका
यसुद्धहोयहाथहोयपगयाकूंअष्टांगनमस्कारकहिये नमस्कारकीजे अरतीनप्रदक्षणांपहलीदी
ज्यै ॥ भावार्थ ॥ आठअंगकेंनिहींनुवाइये आठअंगकौंनताकेनाम हाथ२ पग२ मस्तग१ मनवचनका
य३ ऐसैंआठअंगत्ताकेउत्तर अधय अरवय मुष आषि नाक कांन अंगुल्यां आदिउपंमजांननें ॥
भगवानसर्वोत्कृष्टविनैंसधैहैं बहुरिजिनवांनी वानिग्रंथगुरुतिनकूंपंचांगनमस्कारकरिये दोनों १०२

गोडाधरतीसंलगायदोन्योंहस्तजोडिमस्तगकेलगाय हस्तसहितमस्तग भूमिसौंलगाइये यामैंछा
तीपीठनितंवछिपायपंचहीअंगनये नातैंपांचांगकहिए बहुरिपीछैंषडाहोय तीनप्रदक्षणादीजि
य एकएकप्रदक्षिणाप्रतिएकएकदिसकीतरफतीनआवरत्तिसहितएकएकशिरोनतिकीजिये ॥
पीछैंसन्मुषषडोहोयस्तुत्यादिपाठपढिये ॥ पीछैंअष्टांगडंडौतकरि पीछैंपीछैंपगांहोय आपनेंघर
कौंउठिआइये अरनिरग्रंथगुरुबिराजेहोयतौ वाकौंनमोस्तुकीजेवाकामुषथकीशास्त्रश्रवणाकी
येबिनांनैंआईये ॥ भावार्थ ॥ जिनदर्शनकाकरिवाबिषैंयतौअष्टांगनमस्कार ८ वाराशिरोणित १२ छत्ती
सआवरतनकरिये अवैंस्तुतिकरनेंकाविधानकहियेहै ॥ जैसैंराजादिकवडेमहंतपुरुषनिकट ॥
कोईदीनपुरुषअपनेंदुषनकीनिवृत्तिअर्थजायसनमुषषडाहोयमुषआगैंभेटधरि ऐसेवचनांला
पकरै पहलीतौराजाकीबडाईकरै पीछैंवाकीनिर्वृत्तिकौंवांछतासंताऐसैंकहै यहमेरादुषनिवृ
त्तिकरौ पीछैंवेमहिरवानहोय याकादुषनिर्वृत्तिकरैं त्यौंयेसंसारीपरमदुषतआत्मादीनमोहकर्म
करिपीड्याहुवा श्रीजीकेनिकटजायषडाहोय भेटआगैंधरिपहलीतौ श्रीजीकीमहिमांबर्ननकरै

आ० चा० गुणांनुवादश्रीजीकागावै पीछैंआपकौंअनादिकालका मोहकर्ममहाघोरांनघोरनिगोदनकौंदि
१०३ ककेदुषदीयताकानिर्णयकरै पीछैंवाकेनिर्वृत्तिकेअर्थएप्रार्थनाकरै सोहे भगवांनएअष्टक
र्ममेरीलारलगेहैं मोकौंमहातीव्रवेदनांउपजावैहैं मेरास्वभावकौंघातिमेल्हीहै ताकेदुषकीवा
तमैंकोलंककहौं सोअबैंइनदुष्टनिकानिपातकरियै अरमोकौंनिरंणस्थानमोस्तताकौंदीजिये बा
सोमैंचिरकालपर्यंतसुषीहोऊं पीछैंभगवांनकाप्रतापकरियहजीवसहजहीसुषीहोयहै अ
रमोहकर्मसहजहीगलैहै अबैंयाकाविशेषवर्नेनकरियेहैं जयजयजयत्वंच जयत्वंचजयज
य भगवांनजयप्रभु जयनाथ जयकरुणांनिधि जयत्रिलोकनाथ जयसंसारसमुद्रतारक जय
भोगनसौंपरांनमुष जयबीतराग जयदेवाधिदेव जयसांचादेव जयसत्यवादी जयअनोपम्य जयबाधा
रहित जयसर्वतत्त्वप्रकासककेवलग्यांनचारित्र जयत्रिलोकत्रांतिमूर्त्ति जयअविनासी जयनिरंजन
जयनिराकार जयनिरलेप जयअतुलमहिमांभंडार जयअनंतदर्शन जयअनंतग्यांन अनंतसु
षकरिमंडित संसारसिरोमनिगणधरदेवांकरि वासौजात्तिकेइंद्रांकरिपूज्य तुमजयवंतेप्रवर्त्तौ तुम्हा १०३

रीजयहोय तुमबडावधाहोऊ जयपरमेश्वरजयसिद्ध जयआनंदपुंज जयआनंदमूर्त्ति जयकल्यां
णपुंज जयसंसारसमुद्रकेपारगामी जयभवजलदजिहाज जयमुक्तिकामिनीकंतः जयकेवलग्यां
नकेवलदर्शनलोचन परमपुरुषपरमात्मा जयअविनासी जयटंकोत्कीर्ण जयविस्वरूप जयवि
श्वत्यागीविश्वज्ञायक जयग्यांनकरिलोकालोकप्रमांणवातीनकालप्रमांणअनंतगुणभंडार अनं
तगुणषांनि जयचौसठिरिद्धिकेईस्वर जयसुषसरोवरमन जयसंपूर्णसुषकरितृप्ति सर्वरोगदुष्टक
रिरहित्त जयअग्यांनतिमरकेविध्वंसक जयमिथ्यावज्रकेफोडनेंकौंचकचूरकरणेंकौंपरमवज्र ज
यत्वंगसमि जयत्वंगग्यांनानंदवरसषीनें अमोधातायकारुरिकरिवानें वाभव्यजीवांकौंषेतीपोष
नेंनैं वाभव्यजीवांकेषेतीग्यांनदर्शनसुषवीर्यअंगोपांगतीनलोककेअग्रभागतिष्ठैहै यसंतुतीनलो
कनेंएकप्रमांणकेभागमात्रषेदनांहीउपजावैहैं भगवांनकेउपकारनेंनांहीभूलैहैं तातैंदया
बुद्धिकरि अल्पनिष्टैहै नवमैंभगवांनकेअनंतबीर्य ज्यांकाभारमस्तगऊपरकैसैंधारौंगा याकाभारमे
रेबत्तैकैसैंसह्याजायगा भगवांनअनंतवलीमैंअसंख्यातवलीसोअसंख्यातवलीऊपरि अनंतबलीका

MEMORIAL

भारकैसैंछहै। तातैं अगाऊ जाय भगवानकी सेवा करिये तौ भगवांन परमदयालु है। सो मोनैं षेद नांही उपजावै
है। सो अबैं प्रत्यक्ष देषिये है। भगवांन बिरधि होनेकौं मेघसा हत्रपहैं। अहो भगवानजी आकास बिषैं एसूर्य
तिष्टै हैं सो कहा हैं। मांनूं तिहारी ध्यानरूपी अग्निका कणिका ही है। अथवा तिहारे नषकी लल्लाईका आ
कासरूपी आरसी विषैं एक प्रतिबिंब ही नांही है। अरहो भगवांनजी तुहारे मस्तग ऊपरि तीन छत्र सो
हैं। सो मांनूं छत्रका मिस करि तीन लोक ही सेवनेंकौं नांही आया है। अरहो भगवांनजी तुम्हारे ऊपरि चौ
सठि चवर दुरै है। सो मांनौं चवरके मिस करि इंद्रके गोप्य ही नमस्कार करै है। अहो भगवांनजी एतिहारे सिं
हासनके ससो भै है। यह सिंघासन नांही। एतीन लोकका समुदाय एकठा होतिहारे चरनकमल सेवनें
कौं आये है। सो कैसा संता सेवै है। ए भगवांन अनंतचतुष्टेकौं प्राप्ति भये है। सो सिद्धअवस्था बिषैं मेरे म
स्तग ऊपरि याकं धाऊपरि तिष्टैगे। अहो भगवांनजी एतेते असोक वृक्ष ऊपरि तिष्टै है। सो त्रिलोकका
जीवांनै शोकरहित करि है। बहुरि हे भगवांनजी आपके शरीरकी कांति जैसा शरीर होय तैसा ही भामं
डलकी जोति दसौं दिशा उद्योत कीया है। ताविषैं वसमांदेषनें हारेका प्रतिभासै है। बहुरि हे भगवांन २०४

जी आपके आभिंतरके आत्मीक गुण तौ अनंतानंत है। ताकी महिमां तौ कौंनपैं कही जाय है। परंतु आत्माके
अतिसय करि। सरीर भी असा अतिसयरूप प्रणमां है। ताका दर्शनकी षेघातिया कर्म स्थिल होय। पाय
प्रकृति प्रलय मैं प्राप्ति होइ। सम्यकदर्शन मोक्षका बीज उतपन्न होइ। इत्यादि सर्व अभिंतर बाह्य विघ्न
बिलै जाय। सो हे भगवांनें असे सरीरकी सहस्रजीभ करि इंद्रादिक देवनास्तुति कहिनही करै। अर हजा
रनेत्र करि तिहारे रूपका अवलोकन क्यौं नांही करै। अर इंद्र शंका समूह अनेक सरीर बनाय भक्ति आ
नंदरस भीनां क्यौं न हीं नृत्य करै। बहुरि कैसा है तिहारा सरीर ताबिषैं एक हजार आठ लक्षण पाइए है।
तिनका प्रतिबिंब आकासरूपी आरसा बिषैं मांनूं नांही पस्या है। सो तिहारे गुणांका प्रतिबिंब तारेनिके स
मूह प्रतिभासै है। बहुरि हे जिनेंद्रदेव तुम्हारे चरणारबिंदनकी ललाई कैसी है। मांनूं केवलग्यांन दिवसके
उदै करबानैं सूर्य ही तहां ऊग्या है। वा भव्यजीवांके कर्म काष्ट बालिबानैं। तुम्हारे ध्यांनाग्निके तिणगा होइ
आ नि नांही प्रगति भया है। वा अल्पवृक्षताके कूपल ही नांही है। वा तपरूपी गजके मस्तगका तिलक ही
नांही है। अथवा चिंतामणिरत्न कल्पवृक्ष चित्राबेलि कामधेनरसरूपका पारस वा इंद्र धरणेंद्र नरेंद्रना

रायणबलभद्र तीर्थंकरचतुरप्रकारकेदेव एजनःसमूह अहसमस्तउत्कष्टवत्तपदार्थ अरमोक्षदैनें
कारणकभाजनपरमउत्कष्टनिधिहीहै। भावार्थ सर्वोत्कष्टवस्तकीप्राप्तितुम्हारेचरणांकौंआराध्यांमि
लैहैं। तातेंतेरेचरणहीसर्वोत्कष्टनिधिहैं बहुरिहेभगवांनजी तिहाराह्रदयविस्तीर्णहैं। मांनूंगुलाब
काफूलहीबिकसायमांनहै। अरतिहारेनेत्रनिबिषैंअसाआनंदबसेहैं। ताकेएकअंसमात्रआनंदका
निरमापकरिघ्यारिजातिकादेवताकासरीरउत्पन्नभयाहैं। इत्यादितिहारेसरीरकीमहिमांकहनेंसमर्थः
त्रिलोकमेंकौनहै। परंतुलाडलेपुत्रहोइसो मातापितानैंवाछै ज्यौंबोलै पीछैंमात्तपितावाकौंबालकजांनि
वासौंप्रीतिहीकरै। अरमनमांनतीमिष्टबस्तुषानेंकौंमगायदेइ तासौंहेभगवांनजीतुममेरेउद्दीतमातापि
ताहो मैंतेरालघुपुत्रहूं सोलघुबालकजांनिमोपरित्तमांकरियो अरहेभगवांनजीहेप्रभुजीतुमसमां
नमेरेऔरवहत्र भनांहीं अरहेभगवांनजीमोक्षलक्ष्मीकेकंतथेईछौ। अरजगत्तकाउद्धारकथेईछौ।
अरभव्यजीवांकेउधारकरनेंकौंथेईसमर्थहौ। तुम्हारेचरणवृंदकौंसेयसेयअनेकजीवतिरे अबैंतिरैहैं
आगेंतिरैगे हेभगवांनउधारकरिबामैंथेईसामर्थछौ। अरहेभगवांनहेप्रभुहेजिनेंद्रतिहारीम १०५

हिमांअगम्यहै। अरहेभगवांनजीसमोसरणलक्ष्मीसूंविरक्तथेईछौ। कामबांणकेबिध्वंसकथेईछौ मो
हमल्लकेपछाडिवानैंतुमहीअद्भुतियमहत्रहो। अरजरादिकालकौंत्रिलोककाजीवांकौंनिगलतौचल्यौ
आवैहैं याकेनिषेदनकोईकोसमर्थनांही समस्तलोककेजीवकालकीडाढबिषैंबसैहैं तिनकोनिर्भ
हुवौकालताडाढतकरिबिगदलिगलैहै। औजोंभीतृप्तिनांहहोइहै। ताकीदुष्टताअरप्रबलतानैंकौं
नसमर्थहैं। ताकौंतुमषिणमात्रमैंहीक्रीडामात्रहीजीत्या सोहेभगवांनजीतुमकौंहमारानमस्कारहोउ
बहुरिहेभगवांनजीतिहारेचरणकमलकीसनमुषआवतांमेरापगपवित्रहुवा अरतिहारेचर
णानम्रीभूतहोतांमस्तगपवित्रहुवा अरतुमआगेंहस्तजोडतांहाथपवित्रहुवा हेजिनेंद्रदेवधन्यआ
जिकीघडी धन्यआजिकादिन धन्यएमांसवासंवतछर सोयाकालबिषैंदर्शनकरनैंकूंसनमुषभया
अरहेभगवांनजीमेरेआपकौदर्शनकरतांअसोआनंदहुवो मानुंनवनिधिपाई वाचिंतामणिरत्नपा
यो वाकामधेनुवाचित्रावेलिघरमांहिआई मानूंकल्पतरूमेरेवारणैंऊग्यो वापारसकीप्राप्तिभई वा
जिनराजनिरंतरायमेरेकरसौंआहारलीयो वातीनलोककाराजआजिहीमैंपायो अथवाकेवल

ग्यांनकीमेरैंआजिहीप्राप्तिभई सम्यकरत्ननौमेरैसहजहीउत्पन्नभयौ सोऐसेसुषकीमहिमांहूं
क्यौंनकहौं अरहोभगवांनजीतुम्हारेगुणनकीमहिमांकरतांजिभ्यातृपितनांहींहोयहै अरतुम्हा
रेरूपकाअवलोकनकरिनेत्रतृपितनांहीहोयहै हेभगवांनजीअबामेरैकैसाउत्कष्टपुन्यउदैआया
है अरकैसेकालब्धिआयप्राप्तिभई ताकेनिमितकरिसर्वोत्कष्टत्रैलोकपूजिमैंदेवपाया सोधन्यमेरा
यहमानुषभवसोआपकेदर्शनकरतांसुफलभया पूर्वैअनंतपर्यायतिहारेदर्शनबिनांनिर्फलगयेः
अरहोभगवांनजीतुमपूर्वैतीनलोककीसंपदावोदेषणतृणवत्छाडिसंसारदेहसौंविरक्तहोइ संसा
रअसारजांनिमोक्षउपादेयजांणिस्वयमेवअर्हंतीदिक्षाधरीतत्कालहीमनपर्यग्यांनसूर्यउदैहूवा
पीछैंसीघ्रहीकेवलग्यांनसूर्यनिरावर्णउदैभयालोकालोककेअनंततत्वपदार्थद्रव्यगुणपर्यायसं
युक्तद्रव्यषेत्रकालभावनैंलियांतीनकालमधचराचरपदार्थएकसमैंबिषैंतिहारेग्यांनरूपीआरसा
बिषैंस्वयमेवहीविनांऐठीआणझलक्यातांकीमहिमांकहिवासमर्थसहस्रजिभ्यासौंइंद्रभीनांहि
वाबचनरिद्धिकेधारीगणधरादिमहाजोगीस्वरतेभीनांहीं बहुरिभव्यजीवांकापुन्यकाउदैतुम्हारीदिव १०६

ध्वनिऐसैंउछलीसोएकअंतरमहूर्त्तकेबिषैंऐसातत्वउपदेसकरै ताकीरचनांसास्त्रबिषैलिषियेतौउन
शास्त्रसौंअनंतलोकपूर्ण सोहेभगवांनतिहारेगुणकीमहिमांकैसैंकरिये बहुरिहेभगवांनतिहारीवा
णीकाअतिसयऐसैं सोवांणीषिरतीतौअनक्षररूपअनभैभाषाषिरै पीछैंभव्यजीवांकेकांनकैनिक
टऐसैंपुद्गलकीवर्गानांशब्दरूपप्रणवे असंख्यातचतुर्जातिकेदेवदेवांगनां एसंख्यातवर्सपर्यंतप्रछन
बिचारैथेअरसंख्यातेमनुष्यवातिर्यंच घणाकालपर्यंतबिचारैथे तिनकोआपनीआपनीभाषामयप्र
श्नकेउत्तरहूवा अरजिनउपरांतअनेकवाक्यांकाउपदेशहोताभया तिनउपरांतअनंतानंतत
त्वकेनिरूपणअहलागया ज्यौंमेघतौअपरंपारएकजातिकेजलरूपवर्षाकरै पीछैंआइनारेलआ
दिजातिकेवृक्षअपनीसामर्थ्यमाफिकजलकाग्रहणकरैअपनैंअपनैंस्वभावरूपप्रणमावै बहुरि
दरियावतलावकूवावावडीआदिनिवांनअपनेभाजनमाफिकजलकाधारणकरै अवशेषमेघका
जलअहलाजाय त्यौंहीजिनवांनीकाउपदेशजांननां बहुरिताविषैंभगवांनजीतुमऐसेउपदेशदेतेभ
ये जेषटद्रव्यअनादिनिधनहै ताबिषैंपांचद्रव्यअचेतनहै ताविषैंपांचद्रव्यअचेतनजडहै जीवनामां

आ॰चा॰ १०७ पदार्थचेतनद्रव्यहै। ताविषैंपुद्गलमूरतीकहै। अविशेषपांचअमूर्तीकहै। यांहीछहौंद्रव्यकेसमु
दायकौंलोककहिये। जहांएकआकासद्रव्यहीपाइये पांचद्रव्यनपाईये। ताकौंअलोकआकास
कहिये। लोकअलोककासमुदाय। आकासएकअनंतप्रदेशीतीनलोकप्रमांणअसंख्यातप्रदेसी
एकएकधर्मअधर्मद्रव्यहै। अरकालकीकालाणूअसंख्यातएकप्रदेशमात्रहै। जीवद्रव्यएकतीनलो
ककेप्रमाणअसंख्याप्रदेशकेसमूह। अरतिनसौंअनंतगुणेंप्रदेशआकारकौंधरैंपुद्गलद्रव्यअनंतेहै। अ
सोच्यारिद्रव्यतौअनादिकेस्वथ्रवतिष्टेहै। जीवपुद्गलद्रव्यगमनागमनभीकरैहै। सोवहतीनलोकआ
कासद्रव्यकेवीचतिष्टैहै। याकेकर्ताऔरकोऊनांही। एछहूंद्रव्यअनंतकालपर्यंतस्वयंसिद्धवनिर
हैहै। अरजीवनिकेरागादिकभावकरिपुद्गलपिंडरूपप्रकृतिप्रदेशस्थिति अनुभागच्यारप्रकारकेवंधतासंजी
ववंधहै। वाकेउदैमैंजीवकीदसाएकविभावभावांरूपहोइहै। निजस्वभावग्यांनानंदमयथास्यौजायहै। जीव
अनंतसुषकापुंजहै। कर्मकेउदैकरिमहाआकुलतादिकप्रणमैहै। ताकेदुषकीवार्ताकहनेंसमर्थनांही
याकीदुषकीनिवृत्तिकेअर्थि सम्यक्दर्शनग्यांनचारित्रहै। ताकेउपदेशहेभगवांनतुमदेतभयेहौ। तुमही १०७

संसारसमुद्रविषैंडूबतेप्रांनीकौंहस्तालंबनहौ। तुम्हाराउपदेशनहौतौतौएसर्वप्रांणी संसारविषैंडूवेही
रहतेतौवडागजवहौता। परंतुधन्यतुम्हाराउपदेश। धन्यतुम्हाराजिनसासन। धन्यतिहाराबतायोमो
क्षमार्ग। धन्यतिहारेअनुसारीमुन्यादिकसतपुरुषताकीमहिमांकरनेंसमर्थहमनांही। कहांतौनर्क
वानिगोदादिककेदुषवाग्यांनवीर्यकीन्यूनता। अरकहांमोक्षकासुष। अरग्यांनवीर्यकीअधिकतासो
हेभगवांनतिहारेप्रसादकरियहजीवचतुर्गतिकेदुषकौंछोडिमोक्षकेसुषनैंपावैहै। ऐसेपरमउपगारीतुमही
हो। तातैंहमतिहारेअर्थनमस्कारकरैहैं। बहुरिभगवांनजीतुमऐसेतत्वोपदेशकाव्याख्यांनकीया। अ
धोलोकहै। यहमधिलोकहै। यहउर्धलोकहै। तीनबातवलयकरिवेष्टितहै। वातीनलोककेमानएकस
कंदहै। ताविषैंअष्टप्रथ्वी। वास्वर्गलोककेबिमांनवाज्योतिषीकेबिमांनडिगरहेहै। बहुरिएकेंद्रीजीवएवें
द्रीजीवएतेंद्रीचौंद्रीपंचेंद्रीएतेनारकीएतेतिर्यंच एतेअप्रजाप्त एतेदेव एतेप्रजाप्ति एतेमनुष्य सूक्ष्मवा
वादरएतेवानिगोदकेजीव एतेअतीतकालकेसमयअनंतेतासौंअनंतबर्ग बर्गएंगस्थानगुणजीवरासि
काप्रमांणहै। अरतासौंअनंतबर्गनांस्थांनगुणे आकासद्रव्यकाप्रदेशनकाप्रमांनहै। तातैंअनंतबर्ग

आ०चा० णांस्थांनगुणेधर्मद्रव्यअधर्मद्रव्यकाअगुरुलघुनामागुणताकाअविभागप्रतिछेदहैं तातैंअनंतवर्ग
१०८ णास्थांनगुंनें सूक्षमनिगोदयाअलब्धि अपर्जाप्तिके सर्बजीवांसूं घाटिएकहोइ अक्षरकेअनंतवें
भागकोईज्ञानऐसापाईयेहै ताकानामपर्यायग्यांनहै वासूंकोईकैग्यांनत्रिलोकत्रिकालबिषैंघाटि
होयनांही वैग्यांननिरावर्णरहैहैं वाऊपरिग्यांनावरणीकाआवरनआवैनांही जेआवर्णआवैतौ
सर्बग्यांनघात्याजाय सर्बग्यांनकाघातवाकरिजडहोइजायसोहोयनांही सोवहैप्रजायग्यांन बिषै
अबिभागप्रतिछेदपाईयेहै तातैंअनंतवर्गणास्थांनगनें जघन्यक्षायकसम्यक्केअबिभागप्रतिछे
दपाइयेहै तातैंअनंतवर्गणांस्थानगुणेकेवलग्यांनवाकेवलदर्शनका अविभागप्रतिछेदपाईयेहैं सो
ऐसाभीउपदेशतुमदेतभये बकुरिएकसूईकीअनूंकीडागलाऊपरि असंख्यातलोकप्रमांनसबंध
पाइयेहै एकएकसबंधबिषैंअसंख्यातलोकप्रमांनअंडरपाईयेहै एकअंडरबिषैंअसंख्यातलोकप्र
मांणआवासपाईयेहै एकएकआवासबिषैंअसंख्यातलोकप्रमांनपलवीपाइयेहै एकएकपलवी
बिषैं असंख्यातलोकप्रमांनसरीरपाईयेहै एकएकसरीरबिषैं अनंतकालकासमया सोअनंतानंत १०८

वर्गस्थांनगुणजीवनांमांपदार्थपाइयेहै एकएकजीवकेअनंतानंतकर्मवर्गनालागीहैं एकएकव
र्गनाबिषैंअनंतानंतप्रमांणपाइयेहै एकएकप्रमांणकेसाथिअनुक्रमरूपबिसरसोपचयेसोजीवरासि
सौंअनंतानंतप्रमानपाइयेहै एकएकप्रमांणबिषैंअनंतानंतगुणवापर्यायपाइयेहैं एकएकगुणवा
पर्यायकेअनंतानंतविभागछेदहैं ऐसीबिचित्रताएकसूई अनूंकीडागलाऊपरिनिगोदरासिकेजी
वांबिषैंपाइयेहै सोऐसेजीवऐसीप्रमांणुवांकरिवेढतावावर्गनाकरिआछादितजीवांसूं तीनलोक
घृतकाघडावत्अतिसयकरिभऱ्याहै त्यौंएकनिगोदसरीरमांहिलाजीवताकैअनंतवेंभागभीनिरंत
रमोक्षजिनकरितीनलोककलमैंघटैनांही ऐसाउपदेशभीतुमहीदेतेभये बकुरिवेईसूईकीडागलाऊ
परिपूर्ववाद्यसर्बजीवतीनलोककेताकैलाग्याकर्मवाअकर्मरूपअनंतासूंअनंतगुणीप्रमांण वाएक
सूईकीअनूंकीडागलाउपरिआकासतैंपाईयेहैं ताबिषैंअनंतानंतप्रमांणवापुद्गलतिष्टैहैं अनंतस
कंधदोदोप्रमांणवांकातिष्टैहै ऐसैंहैएकएकप्रमांणअधिकअधिकसकंधतीनप्रमांणवाकासबंध
सौंलगाय अनंतप्रमांणवाकासकंधपर्यंत अनंतजातिकेसकंधसोभी अनंतानंतसूईकेअग्रभाग

MEMORIAL

बिषैंभी अनंतगुणअनंतपर्याय अनंतबिभागप्रतिच्छेदतीनकालसंबंधीउत्पादव्ययध्रुवकीअवस्था
सहित एकसमैंबिषैंहेजिनेंद्रदेवतुमहीदेषे अरतुमहीजांनौं अरतुमहीकहतेभये अरयाप्रमांण
वाकेपरस्पररूषसचिक्कणगुणकारिवातीनांही दोदोअंसकीअधिकताएसंगकरि संयुक्तबंधबिषैं
मजातिबंध ऐसेप्रमांणवाकापरस्परबंधबांनैंकारण रूषासचिक्कणअंसांकासमूहताकीपरस्परतौ
मेलियां बंधनेंनबंधनेंकाकारणवाअकारणकास्वरूप भीतुम्हारेहीग्यांनबिषैंझलकै अरदिव्यध्व
निकरिकहतेभये सोहेजिनेंद्रदेवतेरोग्यांनरूपीआरसोकसोकैंबडोहै जाकीमहिमांकौंलौंकहिये
वहुरिहेभगवांनहेकल्यानिधिहेदयामूर्तिहमकहाकरें प्रथमतौहमारास्वरूपहमकौंदीसैनांही
अरहमकौंदुषदैनवारेदीसैनांही अरवाकीहूकहाकहैं अपराधपूर्वैंकीये ताकरिहमारैंताईकर्म
तीव्रदुषदेहै अरएकर्मकिसीवातकरिउपज्योतिहांयसोभीहमकौंदीसैनांही अरहमारानिजस्व
रूपकहाहै कैसाहमाराग्यांनहै कैसाहमारादर्शनहै कैसाहमारासुषवीर्यगुणहै हमकौंनहै
हमाराद्रव्यगुणपर्यायकहाहै पूर्वैंहमकिसषेत्रबिषैंकिसपर्यायकौंधरेंतिष्टेथे अबइसषेत्रइस १०९

पर्यायबिषैं कौंनसकसनैंइहांआनिप्राप्तिकीये अरअवहमकहाकर्तव्यकरैहै कौंनभवारूप
प्रणवैहै सोयाकाफलआभलागैगाकैबुरालगैगा कैफेरिहमकहांजायगे कैसीकैसीपर्यायधरैंगे
सोहमकछूजानतेनांही तौहमारेसुषीहोनेंकाउपायएकग्यांनबिनांकैसैंबनै तौहमारेहीएताग्यांन
काक्षयोपसमहैतैं परमसुषीहोनेंकाउपायभासैनांही तौएकेंद्रीआदिअग्यांनीतिर्यंचजीव वा
नारकीमहाकलेसकरिपीडितजाकैंआंषिफरकनेंमात्रनिराकुलताकाकारननांही तौवाकाजी
वनेंकाकहाहूसन परंतुधन्यहैआपकीदयालताअरधन्यहैआपकासर्वज्ञग्यांनधन्यहैआप
काअतिसय धन्यहैआपकीपरमतीव्रबुधि धन्यहैआपकीपरबीनता अरबिचक्षणता अरसो
आपदयाबुधिकरिसर्वहितह्यावस्तुकौमूलरूपभिन्नभिन्नबतायो आत्मांकौंनिजस्वरूपअनंतदर्श
नअनंतग्यांनअनंतसुष अनंतबीर्यकौधनी आपसाहीरूपबतायो अरपरद्रव्यसौंरागादिकभावां
कौंउलझाडबतायौ रागद्वेषमोहभावनिकरि कर्मनिसूंजीवबंधतेबताये पीछैंवाकेउदयकाल
बिषैंजीवमहादुषीहोतेदिषाये वीतरागभावांकरिकर्मसूंनिर्बंधनिराश्रवहोनांदिषाया बीतराग

भावांसंहीपूर्वसंचित्तदीर्घकालकेकर्म । ताकीनिर्जराहोनीवताई । निर्जराकेकारणकरिनिज
आत्माजथाजातिकेवलग्यांनकेवलसुषहैनांप्रगटदिषाया । ताहीकानाममोक्षकहैं । वाहितकहैं
वाभिन्नकहैं । वानरकविषैंजायतिऐहैं । सोवाषेत्रविषैंमोक्षकीसिद्धिहोतीतौवासर्वसिद्धांकीअ
वगाहनाविषैं । अनंतेपांचौथावर सूक्ष्मबादरपाईयेतौमहादुषीक्यांनैंहोते । तातैंनिर्नयकरिआपनां
ग्यानानंदसुभावघात्यागयाछै । वाहीकानांमबंधथा । सोग्यानावर्णादिकर्मकेनामबंधथा । सोग्यांना
वर्णादिकर्मकेप्रभावहोतैंसंतेसफुरायमांनकुंवा । जैसैंसूर्यप्रकासबादलांकरिरुकिरह्याछा । बाद
लांकेअभावहोतैंसंतेंपूर्णप्रकासविगसायमांनकुंवा । अरउर्द्धजायतिष्ट्या । सोजीवकाउर्द्धगमनस्व
भावहै । तातैंउर्द्धगमनकीया । अरआगैंधर्मद्रव्यनांही । तातैंधर्मद्रव्यकेकारणबिनां । आगैंनांहीगम
नकीयाउहांहीतिष्टे । सोअनंतकालपर्यंतसासतापरमसुषरूपीतीनलोककेनेत्रवातीनकाल
लोकालोककेदेषनेंरूपग्यांनदर्शननेत्र । अनंतसुषकेधारकमहाराजतीनलोककरितीनका
लपर्यंतपूजितिष्टिसी । सोहेभगवांनऐसेउपदेसभीतुमहीदेतभये । सोतेरेउपगारकीमहिमांहम

कहांलगकहैं । अरकहांत्तिहारीभक्तिपूजावंदनांस्तुतिकरैं । तातैंहमसर्वप्रकारकरणैंकौंअस
मर्थहैं । अरतुमहोपरमदयालपुरुषहौं । तातैंमोपरिक्षमांकरौ । येमेरेतांईबडीअसंभवषिकरहैं
अरहमत्तिहारीस्तुतिमहिमांकरतेमहालज्यायमांनहोतेहैं । परणिहमकहाकरैं तुम्हारीभक्ति
माहिकपणैंबरजोरीवाचालकरावैहै । अरतुम्हारेचरणांविषैंनम्रीभूतकरैहै । तातैंतुम्हारेचर
णांमैंवारंवारनमस्कारहोऊ । एहीचरणायुगलमोनैंसंसारसमुद्रविषैंडूबतानैंराषौ । बहुरिअग्नि
कायकेजीवअसंष्यात्तलोकप्रदेसप्रमांनहैं । तातैंअसंष्यात्तलोकबर्गस्थांनगयेनिगोदकेसरीरकी
प्रमांणहैं । तातैंअसंष्यातलोकबर्गस्थानगयेंजोगांकेअबिभागप्रतिछेदहैं । सोभीअसंष्यातकाही
भेदहैं । सोहेभगवांनजीऐसाउपदेसभीतुमहीदेतेभये । बहुरिएअसंष्यातद्वीपसमुद्रहैं एअढाई
द्वीपप्रमांनमनुष्यक्षेत्रहै । ताकेभीनिरूपणतुमहीकीये । जोजोतिषीमंडलहैं । ताकेप्रमांणजुदेद्वीपसमु
द्रविषैंतुमहीकहे । बहुरिषुल्लाप्रमांणुकाप्रमांण । बाद्रणकादिस्कंधप्रमांणमहास्कंधपर्यंततुम
हीकहे । इत्यादिअनंतद्रव्यकेतीनकालसंबंधीद्रव्यगुणपर्यायवाद्रव्यषेत्रकालभावसहित । और

स्यानलियांअनंतविषैंविचित्रताएकसमयविषैंलोकालोककीतुमहीदेषी ॥ सोतुम्हारागणांनकीअ
द्भुतमहिमांतुम्हारेइगणांनगम्यहैं ॥ तातैंतुम्हारागणांनकौंफेरिभीहमारानमस्कारहोऊ ॥ अहोभग
वांनजीतुम्हारीमहिमांअगाधगतीहै ॥ तुम्हारेगुणकीमहिमांदेषिदेषिआश्चर्यउपजैहै ॥ आनंद
केसमूहउपजैहै ॥ ताकरिहमअत्यंततृप्तिहै ॥ बहुरिहेभगवांनजी ॥ दयाअमृतकरिभव्यजीवन
कौंतुमहीपोषोहो ॥ तुमहीतृप्तिकरोहौ ॥ तुम्हारेबचनरूपकरिसर्वलोकालोकसुन्यभयेहैं ॥ ताबिषेय
हसमस्तजीवभीसुन्यहोयगयेहैं ॥ सोतुम्हारेबचनकरुणाकरिअनादिकालमोहतिमरमेराबिलैगया ॥
अबमोनैतिहारेप्रसादकरितत्वअतत्वकास्वरूपप्रतिभास्या ॥ गणांनलोचनमेरेउघरेताकेसुषकीमहिमांनक
हीजाय ॥ भीसोहेभगवांनजीसंसारसंघट्टकारिवानैंबिनांकारणपरमबैद्यथेई ॥ एकसौनएकअद्वितीयदीसैहो
तातैंतिहारेचरणारबिंदसौंबहुतअनुरागबर्तैहैं ॥ सोभवभवपर्यायकेबिषैंएकतिहारेचरणांकीसेवाहीपांवो ॥ जे
पुरुषधन्यहैं ॥ सोतिहारेचरणांनैंसेवैहैं ॥ तुम्हारेगुणांकीअनुमोदनांकरैहैं ॥ अरतुम्हारेरूपनैंदेषैहैं ॥ तुम्हारेगुणांन
बादगावैहैं ॥ तुम्हारेबचनकानांबिषैंसुनैहैं ॥ मनबिषैंनिश्चकरिधारैहैं ॥ तुम्हारीआगपासिरऊपरराषैहैं ॥ तुम्हारे १११

चरणांबिनांऔरतैंनांहीनवैहैं ॥ तुम्हाराध्यांनकरिअन्यनांहीकरैहैं ॥ तुम्हारेचर्णपूजैहैं ॥ तुम्हारेचरणांनअर्घदेय
हैं ॥ तुम्हारीचरणांतैलीरजवागंधोदिकमस्तगआदिनानिऊपरिउत्तमअंगताबिषैंलगावैहै ॥ तुम्हारेसनमुष
षडेहोइहस्तअंगुलीजोडिनमस्कारकरैहैं ॥ अरतुमऊपरिचवरढोलैहैं ॥ अरछत्रचढोडैहैं ॥ तेईपुरुषसुधन्यहैं
वाकीमहिमांइंद्रादिकदेवगावैहैं ॥ वेहीकृतकृत्यहैं ॥ वहीपबित्रहैं ॥ उहीमनुत्तभवकालाहाल्लीया ॥ जन्मसफ
लकीया ॥ भवांजलदीया ॥ बहुरिहेजिनेंद्रदेवहेकल्याणपुंजहेत्रिलोकतिलुकअनंतमहिमाज्ञायक ॥ परम
भट्टारककेवलग्यांनकेवलदर्शन ॥ जुगलनेत्रकेधारकसर्बज्ञवीतरागात्वंजयवंताप्रबर्तो ॥ तुम्हारीमहिमां
जयवंतीप्रबर्तो ॥ तुम्हाराजयसासनजयवंताप्रवर्तौ ॥ धन्ययेहमेरीपर्याय ॥ सोइसपरजायबिषैंतुमसाखेअ
द्भियपदार्थपाये ॥ ताकीअद्भुतमहिमांकौनकौंकहिये ॥ अरतुमहीमातातुमहीपिता ॥ तुमहीबांधव तुमही
मित्र तुमहीपरमउपगारी ॥ तुमहीछहकायकेपीहर ॥ तुमहीभवसमुद्रबिषैंपडतेप्रांणीकौंआधारहौ ॥ औ
रकोईत्रिकालमैंनांही ॥ आवागमनसौंरहितकरिवानैंतुमहीसमर्थहो ॥ मोहपर्बतकाफोडिवानैं ॥ तु
महीवज्रयुधहो ॥ घातियाकर्मकाचूरिवानैं ॥ तुमहीअनंतबलीहो ॥ अहोभगवानतुमहोऊहा

थलांवानांहीपसास्यादैं भव्यजीवांनैंसंसारसमुद्रमांहीसोंकाढिवानैं हस्तालंबनदीयांहैं बहु
रिद्धिपरमेस्वरहेपरमजोतिहेचिद्रूपमूर्तिआनंदमय अनंतचतुष्टयकरिमंडित अनंतगुणांकरि
अहल्लादितमहामनोज्ञ अद्भुतअकृतमअनादिनिधनत्रिलोकपूज्यकैसेसे भैदैं ताकाअव
लोकनकरिमनअरनेत्रतृप्तिनांहीहोयहैं बहुरिहेकेवलग्यांनसूर्य षट्द्रव्यनवपदार्थपंचास्ति
कायसप्ततत्वचौदहैगुणस्थांनचौदहैमार्गनां वीसपररूपणाचौवीसठांणा ग्यारापृतिमांकेभेद बा
राव्रतकाभेद दशलाक्षणीकधर्म षोडशभावनां बारातपसातसंयमबाराअनुप्रेक्षाबाराभाव
नां अठाईसमूलगुण चौरासीलाषउतरगुणातीनसैछतीसमतिग्यांनकेभेद अठाराहजारसील्ल
काभेद साढैसैंतीसहजारपरमादकेभेद अरहंतकेछियालीसगुण सिद्धकेआठगुण सम्यक्त
केआठअंगआठगुण पचीसदोष मुंनिकेआहारकेछियालीसदोष बावीसपरीस्या अंतराय द
समलदोष नौधाभक्ति दातारसगुण च्यारप्रकारआहार च्यारिप्रकारदांन तीनप्रकारपात्र एकसौ
अठतालीसकर्मप्रकृति बंधउदैसताउदीरणा आश्रवसतावन ५७ भावतेरेपन ५३ इनकीषटूत्रि ११२

भंगी सोपापप्रकृति अठसठिपुन्यप्रकृति ६८ सैंतालीसघातियाप्रकृति ४७ षेत्रविपाकी च्यारि ४
भवविपाकी ४ जिवविपाकी ७८ पुद्गलविपाकीप्रकृति ६२ दसकर्मचूलिका नवप्रश्नचूलिका
पांचप्रकारभागहार प्रकृति प्रदेश स्थित अनुभागबंध इत्यादि इनकाभिन्नभिन्नस्वरूप
निरूपणकरतेभये अरउपदेसदेतेभये बहुरिप्रथमांनजोग करणांनुजोग चरणांनुजोग द्र
व्यानुजोग च्यारिसुकथा च्यारिविकथा तीनसैत्रेसठिकुवादवाकुबादकेधारक जोतिषवैद्य
क मंत्र यंत्र तंत्र पंचआठप्रकारनिमितग्यांन न्यायनीति छंद व्याकरण गणति छंदअलंकार आ
गम अध्यातम शास्त्रकानिरूपण भीतुमहीकरतेभये चौदाधारा तेईसबर्गनां ज्योतिष व्यंतर भ
वनवासी कल्पवासी सप्तनारकी तिनकाआयुरबलप्राकर्म सुषदुषकाविशेषनिरूपनतुमहीकि
या अढाईद्वीपषेत्रकुलाचल द्रहकुंडनदी पर्वत बनउपबन क्षेत्रकीमर्जादा आर्य अनार्य कर्म
भूमिभोगभूमिकीरचनां ताकेआवरण सर्पिणीउतसर्पिणीकालकीफिरणि पल्लसागरआ
२ दिआठ अंसंष्यात असंष्यात अनंतईकईसभेद पंचप्रकारप्राबर्तन इनकास्वरूपभीतुम

हीकहते भये सो हे भगवांन हे जिनेंद्रदेव हो अर्हंतदेव हो त्रिलोकगुरु हो तुम्हारा गुणांनकै सा हैं॥
एते गुणांन तुम्हारे एकसमैं बिषैं कैसें उत्पन्न भया मेरै या बातका बडा आश्चर्य हैं तुम्हारे गुणांनके अ
तिसदिकी महिमां हजार जिह्या करि न कही जाये एमतो एकज्ञेयनैं एकैकाल स्थूलपणैं नीठि जा
निसकै तातें हे दयालमूर्त्ति तुमसारिषा हमकौ भी कीजिय मेरै गुणांनकी बहुत चाहहैं तुमप
रमदयाल हो मनबंछित्तवस्तुके देनहारा हो तातैं मेरा मनोर्थ सिद्धि कीजिये यावात की ढील न
करौगे हे संसारसमुद्रतारक मोहमल्ल हरिकै बिजय घातिया कर्मके बिध्वंसक कामसत्रुके
नासक लक्ष्मीसौं बिरक्त बीतरागदेव अपनैं सर्व प्रकार सामर्थवांन जांनि तारणबिरदके कु आ
पका चरणांकी सरनि आयो हूं सो हे जगतबंधव हे मात्तपिता हे दयाभंडार मोनैं चरणांकी स
रण आयो रक्षा रक्षा मोहकर्मतैं छुडाय छुडायकै साछै एमोहकर्म त्रैलोकसमस्तजीवांनैं आपनां
पौरुष करि गुणांनानंदप्राकर्म आदि समस्त जीवांकी स्वभाविक निधलक्ष्मीकौं जानि सक्तिहीन
करि जेरमैं नांषि दिये केईकतौ एकेंद्रीपर्याय भाषासुनें परे छै घोरान घोर दुषपावैहैं ताके दुषके ११३

अर्थ केतागणी पुरुषांनैं हीभ्या सैहैं बचनकरि न कह्या जाय अर केई जीवांनैं बेइंद्रीपर्यायबिषैं महादुष
दीया है सोताका दुष प्रत्यक्ष इंद्रीगोचर आवैहै अर तुमही सिद्धांतबिषैं महादुषका निरूपण कीया
तातैं तेरा बचन मांन्य प्रमांन करि सत्य जांन्यां बहुरि कोई जीव नर्कबिषैं पडे पडे बहुत बिललावैहैं रो
वैहैं हाय हाय शब्द तंग करैहैं आप तौ अंन्यकौ मारैहैं और करि आप हणें जायहैं ताछिंछेद
नभेदन मारन ताडन सूलारोपन ए पंचप्रकारके दुष करि अत्यंत पीडित भूमिकी दुसह बे
दनां करि परम आकुलता ई हैं कोडि रोग करि दग्ध होय गया है ऐसा दुष सहवानैं नारकी समर्थ है काय स्है
दीर्घ आयुर्बल सागरांपर्यंत दीर्घ आय भोगैहै वे मोह दुष्टके बसी भत कुवा फेरि फेरि मोहनैं सेवैहैं मोहनैं भलो
मांनैं हैं मोहहीकी सरन रह्या चाहैहैं अर परमसुषनैं बांछैहैं सो वह भलकैसी यह भलतुम्हारे उपदेस बिनां
वा तुम्हारे गुणमांनैं बिनां तुम्हारी आग्या सिर ऊपरि धारें बिनां त्रिकाल त्रिलोकबिषैं दुषके कारन मोह जानै
जीतिसकै नांही अर मोहनें जीत्यां बिनां दुषकी निर्वृत्य नांही निराकुलता सुषकी प्राप्ति नांही अर मो औ
रगुण दिसी का कहा देषनां मैं तो औगणका पुंज ही अनादिका बन्यां हूं सो मेरा औगुणां दिसी देषौ तौ परमक

Dr BHAU DAJI MEMORIAL
डाक्टर भाऊदाजी स्मारक

आ०वा० ल्याणकारणकी सिद्धि होती नांही औगुनरूप है गुणतुम सारखे ही सतपुरुषकै रहे हैं कुदेवादिक नीचपुरु
११५ ष हैं ते हगुनरूप रहि औगुन ही कीया मैं तौ वानें घनां ही आछ्या जानि जानि सेया छा बंद्या छा स्तुति करी छी:
तौ नी मोनैं अनंतसंसार बिषैं रुलाया महात्रास हुवा ताकी बेदनां की वार्त्ता बचन करि न कही जाय सो
कैसे है सतपुरुष अर नीचपुरुष ताका दिष्टांत दीजिये हैं अर पारसनैं लोहका घनफोडै अर वानैं साव
नें मई करै चंदननैं ज्यों ज्यों घसै ज्यों ज्यों सुवास ही देय सांठानैं ज्यों ज्यौं पेलै त्यौं त्यौं अमृतरस ही देइ जल आ
पु जलै अर दुग्धकूं बचाइ देइ सो असाया का जाति ही स्वभाव है ही कारु का मेट्या मिटै नांही सर्पनैं दुग्ध
पाईये परंतु वह प्राण ही कौ नास करै सण आपनां चांम उधरावै आन्य कौं बांधै मत्त का अपनें प्राण तजै
पणि अन्य पुरुषकूं बाधा उपजावै सो या प्रकार कुदेवादिक वे दुर्जनपुरुष ताका स्वभाव जांननां याका
स्वभाव मेट्या मिटै नांही स्वभाव नैं कोई औषधि नांही मंत्र यंत्र तंत्र नांही तातैं स्वभाव तर्क नां सतीसौं
असे जिनेंद्रदेव तुम्हारे प्रसाद करि कुदेवादिक का रूप भली भांति जान्या सो अब मैं विषरूरवत् दूरि ही तैं
छोडा हौ धिकार होऊ निष्टपुर्षांनैं अर वाका आचरननैं अर वाके सेयवानैं अर म्हारी मूलपूर्व अवस्था ११७

नैं धिकार होऊ अर अब मैं जिनेंद्रदेव पाया ताकी सरधा आई सो मेरी बुद्धि धन्य है अर धन्य है मेरा जन्म सफ
ल भया मैं कृतकृत्य भया मैं का रज करण छा सो कीया अबै कार्य कछू करनां रह्या नांही संसार के दुषनैं
तीन चुलापांनी का दीया असा तीन लोक तीन काल बिषैं पापकौं ल्है है सो श्रीजी का दर्शनतैं पूजातैं ध्यां
नतैं समरणतैं स्तुतितैं नमस्कारतैं आग्यातैं जिनसासन का सेवनतैं जाय नांही ज्यौं कोई अग्यांनी मूर्ष मो
हकरि ठगी गई है बुद्धि जाकी सो असैं अर्हंतदेवकौं छोडि कुदेवादिकनैं सेवै है वा पूजै है अर मनैं बंछित
फलनैं चाहै है सो मनुत्त नांही विरान्तस है यालोक बिषैं वा परलोक बिषैं वाका बुरा ही होना है जैसा को
ई आपांन अमृतनैं छोडि बिषय बिषन पीवै है चिंतामणि छांडि काचखंड पलै बांधै कल्पवृक्ष काटि धतूरा बो
वै त्यौं ही मिथ्यादृष्टी श्रीजिनदेव छांडि कुदेवादिक का सेवन करै घनी कहा कहिये बहुरि हे भगवां
न असी करि जे गर्भ जन्म मरण का दुष ता तैं निवृत्ति करो अबै मेरै बत्तै दुष नांही सह्या जाय वाका
सुमरण कीया ही दुष उपजै तौ सह्या कैसैं जाय तातैं छोडिवा त कीए कबात है मेरा आवागवन निवा
रिये अष्टकर्मतैं मोक्ष करिये केवलग्यांन केवलदर्शन केवलसुष अनंतबीर्य यह मेरा चतुष्टै स्वरूप

घात्याजायहै॥ सोईघातियाकानासतैंप्राप्तिहोऊ॥ मेरैस्वर्गादिककीचाहनांही॥ मेरैतोपरमांनंदपर्यंतकात्या
गीहौं॥ मैंत्रिलोकविषैंस्वर्गचक्रपदकामदेवतीर्थंकरपदपर्यंतचाहनांही॥ मेरैतोमेरस्वभावकीवां
छाहै॥ भावैजैसेसुभावकीप्राप्तिहोऊ॥ सुषछैसोआत्माकास्वरूपभावहै॥ अरमैंएकसुषहीकाअर्थी
हूं॥ तातैंनिजस्वरूपकीप्राप्तिनैंअवस्यचाहूंहूं॥ तुम्हारेअनुग्रहविनां॥ वासहकारीविनांयेकार्यसिद्धि
होनांनांही॥ औरत्रिलोकत्रिकालविषैंतुमबिनांसहकारीनांही॥ तातैंऔरसर्बकुदेवादिकनैंछां
डि॥ तुम्हारेहीसरनिनैंप्राप्तिहुवाहूं॥ मेराकर्तव्यथासोतौमैंकरिचुक्या॥ अबकर्तव्यएकतुम्हाराही
रह्याहै॥ तुमतरनतारनबिरदकौधरयांहो॥ सोआपनांविरदराष्याचाहै॥ सोतौमोनैंअवस्यतारैंगैंहीतार
णां॥ नेहरितिहारीकीर्तित्रिलोकमैंफैलीहैं॥ आगैंअनंतकालपर्यंतरहैगी॥ सोहेभगवांनआपअर्हंत
वृतधरयांहो॥ आपअनंतजीवांनैंमोक्षदीन्ही॥ अंजनाचोरसारिषाअधमपुरुषतानैंतोसीघ्रहीका
लमैंमोक्षनैंप्राप्तिकीया॥ औरभरथचक्रवर्तिसारिषाबहुतपरिग्रहीतानैंएकअंतर्मुहूर्त्तमैंकेव
लग्यांनदीया॥ श्रेणिकमहाराजजिनधर्मकाअविनई॥ बोधमत्तीमुन्यांकागलामैंसर्पडारयौ॥ ताकेपा २२५

पकरिसातवांनर्ककाआयुबांध्या॥ ताकौंतोमहरिवांनगीकरि॥ तुमसारिषेएकाभोतारीकरिदीये
हैं॥ इत्यादिघनांईअनंतजीवांनैंतारया॥ सोअबैंप्रभूजीमेरीबेरक्यौंढीलकरिराषीहै॥ सोयहकारण
कह्याहमनजांनैं॥ तुमतौबीतरागपरमदयालुकहावोहो॥ तौमेरीदयाक्यौंनहीआवैहै॥ मेरीबेरऐसा
कठोरप्रणांमक्यौंकीयाहै॥ सोआपनैंयहउचितनांही॥ अरमैंघणांपापीथातो॥ भीतुमपासिपूर्वैंहीषि
मांकराई॥ तातैंअबमेराअपराधभीक्यौंरह्यानांही॥ तासूंअबैंमोनमुकरांऐसीजांनूंहूं॥ मेरैथोडेभ
वबाकीरहेहैं॥ सोयहप्रतापएकतुम्हाराहै॥ सोतुम्हारेजसगावनेंकरिकैसैंतृप्तिहूजियै॥ सोधन्यतु
मतिहारेकेवलग्यांन॥ धन्यतुम्हाराकेवलसुष॥ धन्यतुम्हाराअनंतबीर्य॥ धन्यतुम्हारापरमबीतरागता रा
धन्यतिहारीउत्कृष्टदयालुता॥ धन्यतुम्हाराउपदेश॥ धन्यतुम्हाराजिनसासन॥ धन्यतुम्हारारत्नत्रयधर्म
धन्यतुम्हारागणधरादिमुनिश्रावकइंद्रआदिअव्रतसम्यक्दृष्टीदेवमनुष्य॥ सोतिहारीआगपासिरप
रिधारैहैं॥ तुम्हारीमहिमांगावैहै॥ धन्यतुम्हारीमहिमांकहांलौकहिये॥ तुमजयवंतेप्रवर्तौ॥ अरहम
भीतिहाराचरणांनिकरसेवेवसम्यक्दिष्टीमौनैंभीजयवंतीप्रवर्तौ॥ इतिजिनदर्शनसंपूर्णं॥ बहुरिमा

आ०च्या० गबिषैंजेतीवारजिनमंदिरआगैंहोइनिकलिये। तेतीबारश्रीजीकादर्शनकीयांबिनांआगैंनांही
११६ जाईये। अथवाबहुरिजिनमंदिरकैनिकटि आत्मासमागमकरनांपडै तबतेतीवारदर्शनकासा
धनसधैनांही तौबाह्यसौंनमस्कारहीकरिआगैंजांना। नमस्कारकस्यांबिनांनजांनां अरमंदिरकै
विषैंजेतीवारप्रतिमांजीआमुहींसामुहीगमनकरतांदिष्टिपरै तेतीबारदोन्योंहस्तमस्तगकैलगा
इनमस्कारहीकरिये बहुरिअसवारीकरिचढिआयेहोयतौ जिनमंदिरदिष्टिपरैअसवारीतैंउत
रिपाछैंगमनकरिनां। ऐसीनांहीकअसवारीउपरिचढ्याही जिनमंदिरपर्यंतचल्याजांनां यामैंअवि
नयवहोतहोइहै अविनयसोईमहापापहै अरबिनैंसोईधर्महै देवधर्मगुरुकाअविनयउपरांत
अरकुदेवादिककाबिनयउपरांततीनलोकतीनकालबिषैंपापहुवानहोसी त्यौंयासौंउलटादेव
गुरुधर्मउपरांत अरकुदेवादिककीअवहेवलुनां अवगांनउपरांतधर्मतीनलोकबिषैंहुवान
होसी तीसौंदेवगुरुधर्मकाअविनयकाबिशेषभयनराषनां जाजाचूक्यानैंउठैहीठिकानांनां
ही घणीकहासिष्यालषिये कोडिवासकीयेकासाफलउएकदिनजिनदर्शनकीयेकाहोइहै ११६

अरकोडिबारजिनदर्शनकीयेबराबरएकदिनजिनपूजनकीयेंकाफलहोयहै तातैंनिकरभव्यजी
वहैंजेतेश्रीजीकादर्शनपूजनकरौ दर्शनकीयेंबिनांकदाचिभोजनकरनांउचितनांही अरदर्शन
कीयांबिनांकोईमूढधीसठअगपांनीरोटीषायहै तौवाकामुषसेतषांनांबराबरिहै अथवासर्पकाबि
लावराबरिहै जिन्याहैसोईसर्पणीहै मुषहैसोईबिलहै अरकुभेषीकुलिंगीजिनमंदिरबिषैंर
हतेहोइ तौवामिंदरविषैंभूलकदाचिभीजाइयेनांही वहांगयांसर्दानरूपीरत्नजातौरहै तहांबि
शेषअबिनैंहोइ सोअबिनयदेषनेंकरिमहापापउपजै जहांजहांकुभेषीरहै तहांश्रीजीकाबि
नैंकाअभावहै फलहैसोतौएकश्रीजीकेबिनैंहीकाहै बिनैंसहिततौएकवारहीश्रीजीकादर्श
नकीएकामहापुन्यबंधनहोइहै अरअबिनयसहिततौघनीवारदर्शनकरै त्यौंत्यौंघणांघणांपापउप
जैहै आपणांमातापिताकोईइष्टपुरुषअविनयकरताहोइ अरमोकरिआपनीसामर्थ्यहोइ तौवाकानिग्र
हकरिआपनांमातापितानैंछुडायल्यावै वाकीबिशेषबिनयकीयां अरआपनीसामर्थनहोइतौवामार्गनजा
ईये वाकावहोतनेंहरगकरिये तैसैंहीश्रीबीतरागदेवकाजिनबिंबकाकोईअबिनयकरैतौवाकानिग्रहकरिजि

नबिंबका बिशेष बिनय करिये अर आपनी सामर्थ न होइ तौ वा अबिनय के सथानक कदाचि न जाइये जहां कु
भेषी रहै है तहां घोरांनघोर अनेक तरह का पाप होइ है वहां जानैवारे कुभेष्यांके सिष्य ग्रहस्थ जीवा का उप
देसी पापी वासारिषे ही है अगयांनी मूढ तीव्र कषाइ बज्र मिथ्याती होइ है तातैं वाका संसर्ग दुरही तैं तजनां उचि
त है जे पूर्वे हलका मिथ्यात कषाय होइ तौ वहां गयें अरहा तीव्र होय जाय तौ धर्म कहां का होइ धर्म का लुटेरा पा
पि धर्म कोई चाहै है सो वह बावला होइ गया है जैसैं सर्प नैं दुग्ध पाय वाका मुष सौं अमृत चाहै है तौ अमृत की
प्राप्ति कैसैं होइ बिस ही प्राप्ति होय त्यौं ही कुभेष्या का संग सौं अधर्म ही की प्राप्ति होई वै धर्म का निंदक है
परम बैरी है अधर्म के पोषनेंवारे है मिथ्यात कौं सहायक है एक अंसमात्र प्रतिमांजी का अबिनय होई तौ नि
मकरि नर्क ही का बंध परै है अर जाके घोरांनघोर अनेक तरह का अबिनय पाइये तौ वाका कहा होनहार है
सो हम न जांनैं सर्बज्ञ ही जानै है प्रतिमांजी के केसरि चंदन लगावनां अयोग्य है वाका नाव विलेपन है अने
क आस्त्रां मैं कह्या है अर भवांनी भेरु आदि कुदेवादिक की मूर्ति आगैं स्थापि वाका पूजन करैः अर नमस्कार करै॥
अर प्रतिमांजी की गिणती नही अर ये सिंघासन ऊपरि बैठि जगत न पैं पुजावै सो कहिए है॥ अर माली न पैं अनछां ११७

एणंपाणी मगाइ भैरुजी रडा सौं प्रतिमांजी पषालकरै जेता पुरुष स्त्री आवै तेता सर्व बिषै कषाय की वारता करै
धर्म का लवलेस भी नांही इत्यादि अबिनय का बर्नन कहां तक कहिये सो पूर्वैं बिशेष बर्नन कीया है ही
अर प्रतक्ष देषने मैं आवै है ताका कहा लिषिये स्वर्गभूमि चक्रवर्त अरहनंमांनजी की माता अंजनी श्रे
णिक महाराज यां नव कार प्रतिमांजी वा निर्ग्रंथ गुरु ताका तनक सा अबिनय कीया था सो वाकै केसा पा
प उपज्या अर मिंडक वा माली सुइ की लडकी श्रीजी कै आगैं फूल चढाय वा अजोग पद हैं या फूल चढायेका
तनक सा अनुराग कीया था सो स्वर्ग पद पाया तासौं जिनधर्म का महाचरन अवलोकन को है तातैं प्र
तिमांजी वा सास्त्रजी वा निर्ग्रंथ गुरां के अबिनय का विशेष भय राषनां बहुरि कोई इहां प्रश्न करै कि प्र
तिमांजी तौ अचेतन है ताकौं पूजें कहा फल निपजै ताका समाधांन मंत्र यंत्र तंत्र औषधि चिंतामणि
रत्न कामधेनु चित्राबेलि पारस कल्पवृक्ष ए अचेतन मनबांछित फल नैं दे है अर चित्राम की स्त्री बि
कार भाव उपजनें कौं कारन है पीछैं वाके फल नरकादि लगै है त्यौं ही प्रतिमांजी निराकार शांतिमुद्रा
ध्यांन दशा कौं धरै है तिनका दर्शन कीयें वा पूजन कीयें मोहकर्म गलै है रागद्वेष भाव विलै जाय है अर

ध्यांनकास्वरूपजांन्याजायहै। तीर्थंकरमहाराज्य वासामांनिकेवलीकीछबि यादिश्रावैहै। याकेअव
लोकनकियें ग्यांनवैरागकीविशेषवृद्धिहोहै। ग्यांनवैरागहैसोईनिश्चैमोक्षमार्गहै। अरसास्त्रहैं सो भी
अचेतनहै। याकेअवलोकनकीयेंप्रतिक्षग्यांनवैरागकीवृद्धिहोतीदेषियेहै। जेतेधर्मकेअंगहै। तेते
सर्बअंगशास्त्रसौंजांनेंजायहै। पीछें जांनिकरहेयबस्तुजनसहजहीहोयहै। उपादेयबस्तुकाग्रह
णसहजहीरहिजायहै। पीछेंयाहीग्रणांमांसेती मोक्षमार्गसधैहै। मोक्षमार्गसेती निर्वाणकीप्राप्ति
होयहै। तातैंयहवात्तसिद्धभई। इष्टअनिष्टफलनेंकाकारणएकअसुद्धप्रणांमहीहै। सुद्धअसुद्धप
रणांमनेंकारणअनेकज्ञेयपदार्थहै। कारण बिनांकारिजकीसिद्धत्रिकालमैंहोयनांही। जैसा मिले
तैसाहीनिपजै। तातैंप्रतिमांजीकापूजनसुमरणध्यांनअभिषेकआदिपरमउत्तसबविशेषमहिमांक
रनांउचितहै। जेकोईमूर्षअग्यांनीअवज्ञाकरैहै। तेअनंतसंसारबिषैं भ्रमैहै। चतुरगतिकेदुखनिकै
तौमुक्तधर्मश्रीजीकीप्रतिमांजीकेपुजनकाहीहै। तातैंसर्बप्रकारम्हाराबारंबारत्रिलोककेजिनबिंब
कौंनमस्कारहोऊ। भवभवकेबिषैंमोनैंयाहीकीसरणहोऊ। याहीकीसेवाहोऊ। याकीसेवा बिनांएक ११८

समैभीमतिजावौ। मैंतौअनादिकालकासंसारबिषैंभ्रमणकरतांमहाभाग्यकेउदै कालब्धिकेयोगतैंय
हनिधिपाई सोजैसैंदीर्घकालकौदरिद्रीचिंतामणिरत्ननेपायसुषीहोऊ त्यौंमैंश्रीजिनधर्मपायसुषीहु
वा सोअबैमोक्षहोनैंपर्यंतयहजिनधर्ममेराहृदामैं एकसमैमात्रअंतररहितसदैवसासतौतिष्टौ।
यहमेरीप्रार्थनाश्रीजिनबिंबपूर्णकरौ घणीकहाअरजीकरैं दयालपुरुषथोडीहीअरजकीयेंबहु
तमांनैंहैं। इतिदर्शनसंपूर्णः समाप्तं॥ आगैंअपनेंइष्टदेवकौंविनयपूर्बकनमस्कारकरिसामायकस्वरूप
कानिरूपणकरियेहैं॥ सोहेभव्यमुंनि॥ दोहा॥ त्रिभावयुतवंदिकैं तत्वप्रकासनसार वेगुरुममहिरदै
यवसै भवदधितारनहार॥१॥ सोसामायकनामस्वाम्यभावकाहैं सामायककहो भावे स्वांम्यभाव
कहो भावैसुधोपयोगकहो भावे बीतराग भावैकहो भावैनिःकषायकहो भावेएसबएककार्य
है। सोयहतौकार्य याकार्यकीसिद्धिहोनेंकेअर्थिवाह्यकीक्रियासाधनकारणभूतहै। कारण
बिनांकार्यकीसिद्धिहोयनांही। तातैंबाह्यकारणसंजोगअवस्यकरनांयोगहै। सोद्रव्यषेत्रकालभा
वच्यारप्रकारहैं द्रव्यकरिसस्वगएकलंगोटतथाएकओछापहनांकीतीनवासाडीतीनहाथकी

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL
डाक्टर भाऊ दाजी इत्यास्मृतिसंग्रह

धोवती अर एक मोरपछका राषैं अर बहुरि सीतकालादि बिषैं सीतकी परीसा उघाडा सरीरसौं न सह्या
जायतौ एक स्वेतबस्त्र इकेवडा मोटा सूतका संईल्ठ कै जेता निकर राषै उपरांत परिग्रह राषै नांही तथा
चौकी पाटा वा सुद्ध भूमिका ऊपरि तिष्टै अर सामायक करै एता परिग्रह उपरांत और राषै नांही बहुरि षेत्र
जा षेत्र बिषैं कोलाहल शब्द न होइ बहुरि पुरुष स्त्री तिर्यंच वाका गमन नांही होय अगल बगल नी मनुष्या
का सब्द न होइ ऐसैं एकांत निरवस्थान अपना द्रव्यलिंगी बिषैं वा जिनमंदिर बिषैं वा सामान्यका न
मि बन गुफा पर्वतके सिषर ऐसे सुद्ध षेत्र बिषैं सामायक करै अर षेत्रका प्रमाण ऐसैं करि लेइ सो जी
सेत्रादिमैं तिष्ठा होइ सो सेत्र उठतां बैठतां नमस्कार करतां दसौं दिसि सपर्सनैमैं आवै सो तौ षेत्र मो
कला है उपरांति षेत्र मोकलो नांही उपरांति षेत्रका सामायिक त्याग है बहुरि काल जघन्य दोय घरी
मध्य च्यारि घडी उतकृष्ट छह घडीका प्रमांन करैं प्रभाति तौ एक घडीका तडका संलगाय करि एक घडी
दिन चढ्यां पर्यंत वा दोय घडीका तडका संलगाय दोय घडी दिन चढ्यां पर्यंत वा तीन घडीका तडका संल
गाय तीन घडी दिन चढ्यां पर्यंत जघन्य मध्यम उत्कृष्ट सामायक काल है ऐसैं ही मध्यांन समैं एक घ ११९

डी घाटि तैं लगाय एक घडी अधिक पर्यंत दोय घडी घाटि तैं लगाय दोय घडी अधिक पर्यंत तीन घडी घा
टि तैं लगाय तीन घडी अधिक पर्यंत मध्यांन सामायक है बहुरि सांझ समै बिषैं एक घडी दिन रहे तैं
लगाय एक घडी राति गये पर्यंत दोय घडी दिन बाकी रहै तातैं लगाय तीन घडी राति गयें पर्यंत ए सांझ
समैं काल है यां तीनौ कालां बिषैं सामायक करणां कालकी जेती प्रतिज्ञा कीनी होय तासौं सिवाय थो
डा अधिक काल बीतें होय तहां अपनैं मन बिषैं निश्चै होय तब सामायक सौं उठै बहुरि भावां बिषैं आ
र्त्त रुद्र ध्यांनकौं छाडि धर्मध्यांनकौं ध्यावै वा सुक्ल ध्यांनकौं ध्यावै ऐसैं द्रव्य षेत्र काल भावकी सुद्ध
ता जांननी बहुरि आसन पद्मासन वा कायोत्सर्ग आसन राषै आगनैं चलाचलीन करै इत उत
देषै नांही अंग मोडै नांही अंग चलै नांही घं मैं नांही निशलै नांही उतावला वोलै नांही ऐसा स
ब्द का धीरैं धीरैं उचारण करै सो आपका सब्द आप ही सुनैं अन्य नांही सुनैं और का सब्द आप राग भा
व सहित नांही सुनैं और कौं राग भाव सहित देषैं नांही आंगुली कर कावे नांही इत्यादि सरीरकी
कृपा प्रमाद छोडै बहुरि सामायक बिषैं मौंन राषैं जिनबांनी बिनां और पढै नांही बहुरि बिशेष बिनय

सहितसामायककरै सामायककरनेंकाअगाउउत्सवरहैं कीयापाछैंपछितावोकरै दोयच्यारि
घड़ीनिर्थककालगयायामैंकोईदोच्यारिग्रहस्तापनांकाकार्यऔरकरतेतातैंअर्थकीसिद्धिहोती
सोअैसाभावनांहीकरै वहुरिअैसेभावांसौंनरहैं सोमैंअबारयोंहीउठ्या मेराप्रणांमघणांचोषा
था सोअैसाहीरहतातौविशेषकर्मांकीनिर्जराहोती वहुरिसामायकविषैंदोयवारपंचांगनमस्का
रपरमगुरुकौंकरै वाराआवरतसहित च्यारिशिरोनितकरै नौववारनवकारमंत्रपढै एताकालप
र्यंतएकवारषडाहोयकायोत्सर्गकरै सोनमस्कारतौसामायककाआदिअंतकेविषैंकरै भावार्थ
अरच्यारशिरोनितबाराआवृतसहित अरएककायोतसर्गएतीनूंकीयासामायिककामध्यकालवि
षैजोश्रावककरै ताकौव्यौरो सामायककापाठकीचोईससंस्कृतवाप्राकृतपाठहै ताविषैंजाकावि
धानहैं ताविषैंदेषिलेनां वहुरिसामायककरतीवरियां प्रभातकासामायिकविषैंवैठतीवारपूर्वैरा
त्रिसमैंनिद्राकूंसीलादिकक्रियाकरतां उतपन्नभयाजोपापताकीनिर्वृत्तिकैअर्थिश्रीअर्हंतदेवतासौंषि
माकरावै अपनींनिंदाकरै मैंमहापापीछूं मोसौंयोपापछूटैनांहीहैं वासमैंकबअवैगीतबमैंयाकाज १२०

तनकरूंगा याकाफलअनंतउदैकडुवाहैं सोहेजीवतूंकैसैंभोगैगा याहीतौतनकसीवेदनांसहनें
कौंअसमर्थहैं तोपरभौविषैंनरकादिककेघोरांनघोरतीव्रवेदनांऊअदीर्घकालपर्यंतकेसैंसहैगो
जीवांकायाप्रजायछोडतैंनासतौनांहीहोहै जीवतौअनादिनिधनविषैंअविनासीहै तातैंपरलो
ककाउषअवस्यआपनैंहीभोगनांपरैगा परलोकवागमनकेसाहैं जैसैंगांवसौंगावांतरषेत्रसौंषे
त्रांतरदेससौंदेशांत्तर कोईप्रयोजनकैअर्थिगमनकरिये सोजीवषेत्रनैंछोड्या तहांतांउउसपुरषका
अस्कतिनांहीरह्या अरुजीवषेत्रविषैंजायप्राप्तभया तहांउसपुरषकाअस्कतिज्योंहैं तौवापुरुषका
षेत्रछोडतैंनेमनांहींहैं अरकोईषेत्रविषैंजायप्राप्तिभयातौउहांउसकाउतपातनांहीकहिये औरपर्या
यकीपलटनहीहैं पूर्वैषेत्रविषैंतौवालकथाउत्तरषेत्रविषैंब्रिधिभया अथवापूर्वैंदुषीथाअबैंसुषीहूवा
अथवापूर्वैसुषीछापीछैंदुषीहूवा असैंहीपरभवकापर्यायकास्वरूपजांनना पूर्वैमनुत्तषेत्रविषैंथा
पीछैंनर्कादिषेत्रविषैंजायप्राप्तिभये पूर्वैमनुत्तसुषमईपर्यायकूंधरैथा पीछैंनर्ककीदुषमईपर्यायहोय
गई वामपूर्वैमनुत्तभवविषैंदुषीथा पीछैंदेवपर्यायविषैंसुषीहूवा असैंभवभवकेविषैंअनेकपर्याय

आ॰ चा॰ कीफिरणिजांननंनी जीवपदार्थसासत्ताहैं तातैंहेजीवयेपापकार्यछोडैतौभलाहै असादेगकरतासंता
१२१ दोउहाथजोडिमस्तगकैलगाय श्रीजीनैंप्रोत्तनमस्कारकरिअैसैंप्रार्थनाकरै हेभगवांनयेमेरापापनिर्व
त्तिकरौ तुमपरमदयालहो सोमेराअैगुनदिशिभदेषोगे मेरीदयाहील्योगे मोनैंदीनअनाथजांनिमोऊ
परिक्षमांहीकरो वाकाजिहितिहिप्रकारभलाकरै सोहेजिनेंद्रदेवमोपरिअनुग्रहकरउ अरपापम
लताकौंहरउ तुम्हारेअनुग्रहबिनांपापपर्वतगलैनांही तातैंमोऊपरिबिशेषप्रीतिकरिसर्बपापका
क्षयकरिये असैंपूर्वलेपापकौंहलकापाडिजीरनकरिपीछैंद्रव्यषेत्रकालभावकाप्रमांणवांधिवास्त्र
रूपपूर्वैइहांहीकहिआयेताकेअनुस्वारभागापूर्बैत्यागकरिपूर्वैदिशानैंवाउतरदिशानैंमुषकरियीछैं
संभमिकासोधिपंचपरमगुरुकौंनमवकारकरिपद्मासनमाडि अथवापालगथीमाडिवैथिजाय पीछैंत
त्वकाचितवनकरै आपापरकाभेदविज्ञांनकरै निजस्वरूपकाभेदरूपवाअभेदरूपअनुभवकरै
वासंसारकास्वरूपदुषमईविचारै संसारसैंभयभीतिहोइ बहुरिवैरागदशाआदरै अरमोक्षका
उपायचिंतवै संसारकादुषकीन्दवतनावांछतासंतापंचपरमगुरुगुरुनैंसुमरै तकेगुनकीबारंबार १२१

अनुमोदनांकरगुणांनुबादगावै वाकास्तोत्रपढै वाआत्माकाध्यांनकरै वाबिशेषवैरागबिचारै म्हारोकाई
होसी इंयाघोरांनघोरसंसारकेमहाभयांनकदुःखतासौंकबछूटिस्यां वासमैं म्हारैकदिआपकीकरिदि
ग्बरदसाधारिपरिग्रहपोरउतारिवनौवासीहोयकरि परघरआहारलेस्यौं बाईसपरीस्यासहिस्यौं दुध
रदुधरतपश्चरनकरस्यां मोहबज्रफोडिपंचाचारयेआचरस्यौं अरअपनेंनिजशुद्धस्वरूपकाअनुभ
वनकरिस्यौं ताकाअतिसयकरिवीतरागभावांकीरद्धिहोसी तबवेमोहकर्मगलसी घातियाकर्म
स्थिलक्षयनैंप्राप्तिहोसी अनंतदर्शनअनंतग्यांनअनंतसुषअनंतवीर्यअनंतचतुष्टयप्रगरहो
सी सोमैंसिद्धसाहरूपलोकालोककेदेषनेंजांननेंहाराहोस्यौं अनंतसुषअनंतवीर्यकेपंजकर्मकलं
कसौंरहितनिराकुलताआनंदमयसर्बदुषसौंरहितकदैहोवो कहांतोमेरीईहदसा अरकहांनर्क
निगोदआदिमहापापकीमूर्त्तिमहादुषमई आकुलताकेपुंजनानाप्रकारकेपर्यायकेधरनहारेमैं सो
जिनधर्मकेअनुग्रहबिनां अनादिकालसौंलेइसिंघसर्पकागलाकूकराचिडीकबूतरकीडीमकोडी
आदिमहानिंद्यपर्यायसर्बधारी एकपर्यायअनंतबेरधारी तौभीजिनधर्मबिनांसंसारकेदुषकावोर

आ॰चा॰ १२२ अवं[ते]कैआयानहीं। अबैंकोईमहाभागकैउदैयहश्रीजिनधर्मसर्वोत्कृष्टपरमरसायणअद्भुतप्र
र्बपाया। ताकीमहिमांकौंनकौंनकहिये। केतौमैंहीजांणूं केसर्बज्ञजांनैहैं। सोयहबीतरागप्रणीतजि
नधर्मजैवंताप्रवर्त्तौ। नंदौवर्द्धौहोऊ। मौंनैंसंसारसमुद्रसौंकाढौ। घणीकहाअर्जकरौं। असाचिंतवनक
रिमहावैराग्यभावांसहित्तसामायककालपूर्णकरैं। कोईप्रकाररागद्वेषराषैनांहीं। आर्त्तरौद्रध्यांन
राषैनांहीं। अरआपापरकीसंभालिकरियहसाष्यातचिन्मूर्त्ति। सबकेदेषनजांननहाराज्ञातादिष्टा
अमूर्त्तिआनंदमयसुषकेपुंजअसंष्यातप्रदेसीतीनलोकप्रमांनपरद्रव्यसौंभिंन्यमैंअपनेंनिजस्वभा
वकाकरत्ताभोगत्तापरद्रव्यकाअकर्त्ताऐसामेरास्वसंबेदनरूप। ताकीमहिमांकौंनकौंनकहिये। य
हअजीवपुद्गलद्रव्यपिंडत्रिलोकबिषैंकर्त्ताभोगत्तानांहीं। मोहकेउदैभ्रमबुद्धिकरि झूठैंहीअपनौंमां
न्याथाताहीकरिजैजैकैबिषैंनकौदिकपरमकलेसकौंप्राप्तिभये। सोमैंअबैंसर्बप्रकारसरीरादिकप
रवस्तुताकासंबद्धछांडूंहूं। यहपुद्गलद्रव्यचाहैजैप्रणवौ। मेरायासौंरागद्वेषनांहीं। सोअबैयहअजी
वपुद्गलद्रव्यकायसाराहै। सोभावैजीजौभावौ। भीजौभावैप्रलयनैंप्राप्तहौऊ। भावैएकठाआनिहोऊः १२२

याकामैंमुदीनांहीं। याकेयोगत्तैंमेरैग्यांनानंदकीवृद्धिनांहीं। ग्यानानंदतौमेरानिजस्वभावछैं। सोअप्रठाप्रद्रव्यके
निमत्ततैंघात्यागयाहैं। ज्यौंज्यौंपरद्रव्यकानिमत्तनिर्वित्तिहोयहैं। त्यौंत्यौंग्यांनांनंदरूपकीवृद्धिहोयहै। सोप्रत्यक्ष
अनुभौमैंआवैहै। तात्तैंमोहारमात्रतौमेरापरमबैरीघातियाकर्मचतुष्टयहैं। निश्चयबिचारतौमेराअग्यांनभा
वपरमबैरीहै। मेरामैंहीबैरी। मेरामैंहीमित्र। सोमैंअग्यांनभावांकरिमैंकार्यकरनांथासोकीया। ताकैवैसाही
पर्मआकुलतामयफलनिपज्या। ताकरिमैंपरमैंदुषीहुवा। सोवादुषकीबातकौंनसौंकहूं। सर्बजगतकेजीवनौ
मोहभ्रमरूपप्रनवैहै। भ्रमकरिअत्यंतप्रचुरअनादिकालकापरमदुषपावैहैं। मैंभीवाहीकैसाथिअनादि
कालकाऐसाहीदुषपावैया। अबकोईमहापर्मभागकेयोगतैंश्रीअर्हंतदेवकेअनुग्रहकरिश्रीजिनवांनी
काप्रतापतैंमुनिमहाराजआदिदेपरमधर्मात्मादयालपुरुषताकामिलापभया। अरवाकेबचनरूपीअमृ
तकापांनकीया। ताकेअतिसयकरिमोहज्वरमेटाकषायकीआतापमिटीप्रणांमत्रांतिभये। कामपिसाचभा
जिगया। इंद्रीसफरीग्यांनजालकरिपकरीगई। पापअव्रतकाविध्वंसभया। संयमभावकरिमेराआत्माथंभ्
याहुवासम्यक्दर्शनलोचनकरिमोक्षमार्गसाक्षातअवलोकनैंमैंआया। अवयहमर्थरिंवाश्रीघ्रमोक्षमार्गमैं

चालैहैं मोहकीसेन्यालुटत्तीजायहैं घातियाकर्मकाजोरमिट्याजायहै मेरीग्यांनजोतिप्रगटहोतीजायहैं
मेराअमूर्त्तीकनिर्मलअसंख्याप्रदेस्तताऊपरिसैंकर्मरजउडत्तीषिरतीगलत्तीजायहैं ताकरिमेरास्वभा
वहंसअंसउजलहोताजयहैं सोअबैंचारित्रपदलैसीघ्रहीमोहकानिपातकरौंगा षंडषंडकरुंगा नबब
ज्रदंडकरिमोहपर्बत्तकौंचूरनकरुंगा अरमोहकाअंसअंसघातियाकर्मनिकेपरिवारसहित्त ध्यांनम
यअग्नितांबिषैंभस्मकरुंगा ऐसामेरापरमउछवबर्त्तेहैं केवलग्यांनलक्ष्मीताकेदेषिबेकीअत्यंत
अभिलाषाचाहवाकावर्त्तैहैं सोकबमेरामनोर्थसिद्धिहोयगा मैंइसरीरसंबंदीषानासैंछूटिनिवृत्तिहो
य अनंतचतुष्टयसंयुक्तत्तीनलोककाअग्रभागबिषैंमेरासिद्धभगवांनकुटंबजाबिषैजायतिष्टैंगा अर
लोकालोककेत्तीनकालसंबंधी द्रव्यगुणपर्यायसहित्तसमस्तषट्द्रव्यपदार्थताकाएकसमैंबिषैंअव
लोकनकरौंगा ऐसीमेरीदशाकबहोइगी सोऐसामैंपरमजोत्तिमयआपद्रव्यताकौंदेषिऔरकौंन
कौंदेषौं औरतोसमस्तज्ञेयपदार्थजडकेपिंडहैं तासौंकसीयारी तासौंकहाप्रयोजन मैंसेकीसंगत्ति
करैतैसाफललागै सोजडसौंयारीकीईथी सोमोनैंभीजडकरिनाष्या कहांतोमैंएकेवलग्यानस्वभावक १२३

हांएकअक्षरकैअनंत्तसंपूर्णसासत्तासुष अरकहानर्कपर्यायकेसागरांपर्यंत्तआकुलतामयदुष अरक
हांबीर्यांत्तरायकेनासभयैतैं केवलग्यांनदसाबिषैंअनंतबीर्यकापराक्रमअनंत्तानंत्तलोककनैंउठायलेवा
सारिषासामर्थत्ताकहांएकेंद्रीपर्यायकाबीर्य सोईरूईकेत्तारकाअग्रभागताकेअसंष्यात्तवैंभागसूक्ष्म
एकेंद्रीकासरीरहैं इंद्रीयांगोचरनांही बज्रादिकपदार्थमैंअटकैनांही अग्निकरिजलैनांही पांनीक
रिगलैनांही इंद्रमहाराजकेबज्रदंडकरिहणबेजोगपनांही ऐसासूक्ष्मसरीरत्ताकौंभीलेबानैंसारिषीसाम
र्थताकरिएकेंद्रीकोंनांहीयाहीकारणांनकरियानामथावरसंज्ञाहैं अरबेंद्रीआदिपंचेंद्रीपर्यंतज्यौंज्यौंबीर्य
अंतरायकाक्षयोपसमभया त्यौंत्यौंवीर्यप्रगटभया सोवेंद्रीआपनांसरीरकौंलेचालै अरकिंचितमात्रषा
नेंकीवस्तुमुषमैंलेचालै ऐसैंहीसर्वार्थसिद्धिकादेववातीर्थंकरमहाराज्यवारिद्धिधारीमुनिकेवीर्यकी
अधिकताजानननी ॥ सोईकेवलीभगवांनकेसंपूर्णवीर्यकापराक्रमजांननां जेताआकासद्रव्यकाप्रमां
नहैं एत्तेरोमनकालोकहोइ तौअसेबडेअनंत्तलोकालोकउठावनेंकीसामर्थत्तासिद्धमहाराजकी
हैं एतीहीसामर्थतासकलकेवलीकीहैं सोदोन्यांहीकेवीर्यअंतरायकेनासहोनेंतैंसंपूर्णसुषऊवा

MEMORIAL

आ०च्वा० हैं सोमेरेस्वरूपकीमहिमांऐसीहीहैं सोमेरैंप्रगटहोहु इहांतौमेरीअपांनताकरिकहाअनर्थकीया कैसीकै
१२४ सीपर्यायधारिपरमदुषीदुषीहूवा सोधिक्कारहोहुमेरीचलकौं अरमिथ्यातीलोगांकीसंगतिकौं अरधन्यहैं
इहजिनधर्म अरयंत्वपरमगुरु अरसंर्द्धानीपुरुषताकेअनुग्रहकरिमैंअपूर्बमोक्षमार्गपाया कैसाहैमोक्षमा
र्गस्वाधीनहैं तातैंअत्यंतसुगमहैं मैंतौमहाकठिनजांन्याथा परंतुश्रीपरमगुरुसुगमहीबताया सोअबैंमो
नैंमोक्षमार्गचलतांषेदनांहीं भ्रमकरिहीषेदमांनैंथा अहोपरमगुरुथारीमहिमांअनुमोदनांकहां
लौंकरौं मेरीमहिमांसिद्धसाहश्यपतुम्हारानिमतकरिजांनी॥ आगैंअपनेंइष्टदेवकेविधिपूर्वकनमस्कारक
रि वागुणस्तवनकरिमानिपणैंस्वर्गनकीमहिमांबर्ननकरियेहैं॥ सोहेभव्यतूसावधानहोइकैंसुंणि॥१॥
दोहा॥ जिनचौबीसौंबंदिकैं बंदौंसारदमाय गुरुनिग्रंथहिवंदिफुंनि तासौंबेस्यौजाय २ फुनिकर्मबिपाक
तैं भयदेवसुरराय आनंदमयक्रीडाकरैं बहुबिधिभेषबनाय ३ स्वर्गसंपदालछिकी कौंकबिकहतुवना
य गणधरभीजांनैंनहीं जानैंसिवजिनराय ४ श्रीगुरांपासिसिष्यप्रश्नकरैंहै कहिबिनवांनहोयकरिसोही
कहियहै हेस्वामिनुहेनाथ हेकृपानिधि परमउपगारी संसारसमुद्रतारक दयामूर्त्ति कल्याणपुंज आ १२४

नंदस्वरूपक तत्वज्ञायकमोक्षलक्ष्मीकिअभिलाषी संसारसमुद्रपरानमुष परमबीतरागजगतबंधव छ
हकायकेपीहर मोहबिजई असरणकौंसरणस्वर्गनकेसुषकास्वरूपकहो बहुरिकैसेहैंशिष्यपरमबिनै ५
वांनहै आत्मांकल्याणकेअर्थीहैं संसारकेदुषसौंभयभीतहैं मोपरिअनुग्रहरषासोकाहेकाहैं अरमेरा
देवसारिषासुंदराकारहोयगयसोकाहेतैं अरजेंठीतैंठीसुंदराकारमनोज्ञमनकौं अत्यंतप्यारादेवनिसा
रीषादीसैंहै सोएकोंनहैं बिनांबुलायेंमेरीआयस्तुतिकरैंहै नम्रीभूतहोयनमस्कारकरैंहैं अरमीठे
मीठेबिनयपूर्बकबचनबोलैहै सोएकौंनहैं याकासंदेहकैसेंमिटै ऐसीसामग्रीकदाचिभीहोय
अरकैसेहैंएपुरुषस्त्री गुल्लाबकेफूलसारिषाहैमुषजिनका अरचंद्रमासाहश्यहैसोममूर्त्तिजाकी
अरसूर्यसाहश्यहैंप्रतापजाका रूपलावणिकरिअद्भुतकरैहैं सारांहीकीदृष्टिएकाग्रमोक्षरफहैं॥
मोनषैंबंदसाहश्यमांनिहायजोडिषडेहैं अरअमृतमईमीठामीठाकोमलविनयसहितदासपणांनैं
लीयांबचनबोलैहैं ताकीमहिमांकोंनसौंकहिये धन्यहैएस्थानक अरधन्यहैएवासारिखेपुरुषस्त्री
धन्यहैजाकारूप धन्यहैंज्यांकाबिनयगुण वासोजन्यता वावात्सल्यगुण बहुरिकैसेहैंपुरुषस्त्री

पुरुषतौसबकांमदेवसा॒हरूपहैं। अरस्त्रीइंद्राणीसा॒हरूपहैं। ताकेसरीरकीसुगंधताकरिसुगंधफै
लिरहीहैं। जाकेसरीरकेप्रकासकरिसर्बत्तरफप्रकासफैलरहीहैं। जिहांतिहांरत्नमाणिकपनांही
राचिंतामणिरत्नपारसकामधेनुचित्रावेलिकल्पवृक्षइत्यादिअमोलिकअपूर्वनिधिकेसमूह
हीदीसैहैं। अनेकप्रकारकेमंगलीकवादित्रवाजैहैं। कोईगांनकरैहैं। केईतालम्रदंगवजावैहैं॥
केईनृत्यकरैहैं। केईअद्भुतकौतूहलकरैहैं। केईरत्ननकेचूरणकरिमंगलीकदेवांगनासाथ्यापरैहैं। के
ईउत्सववतीहैं। केईजसगावैहैं। केईधर्मकीमहिमांगावैहैं। केईधर्मकाउत्सवकरैहैं। सोएवडाआ
श्चिर्यहैं। एकहाहैंमैंनजांणं। असीअद्भुत्तचेष्टाआनंदकारीपूर्बैकदेषनेंमैंनआई। मांनूंएपरमेस्व
रपुरीहैं। वापरमेस्वरकानिवासहीहैं। अथवाएस्वपनांहैं। अथवामेरैत्तांईभ्रमउपजाहैं। केइंद्रजाल
हैं। असैंबिचारकरतसंतैं। वेपुन्याधिकारीदेवताकेसर्वआत्मांप्रदेशनिविषैंसीघ्रहीअवधिग्यांन
फुरायमांनहैहैं। तातैंवहोतपूर्बलाभवकौंनिश्चैंकरिअर्थीदेषैहैं। ताकेदेषनेंकरिसर्वभ्रमबिलै
जायहैं। तबफेरिअैसाबिचारकरैहैं। मैंपूर्वैजिनधर्मसेवनकीयाथाताकायफलहैं। सुफलतौनांहीं १२५

अरभ्रमभीनांही। इंद्रजालभीनांही। प्रतत्तमेराकलेवरकूंलेजायकुटंपरवारकेमसाणंभूमिकाविषैंदग्धकरैहैं।
असानिःसंदेहहै। यामैंसंदेहनांही। बहुरिकैसेहैंवेदेवदेवांगनां। अरकैसीविनति। अरकसेहैंमेगलाचरण। कै
सेहैंजन्मकौंजांनि। सीघ्रहीउछवसंयुक्तआवताहुवा। कैसावचनप्रकासताहुवा। जयजयजयस्वामिनजयना
थजयप्रभूयेजयवंताप्रवर्त्तो। नंदावृधाहोय। आजिकीघडीधन्य। सोतुम्हाराअौतारभया। मैंएते दिनअनाथथा।
सोअबैंसनाथहुवा। अरअबैंम्हेतुम्हारादर्शननैंपायकृतकृत्तरूवापबित्ररूवा। सोहेप्रभुएसंपदातुम्हारी।
अरएराजतुम्हाराहैं। एसस्त्रएरत्नांकेस्तूपकतुम्हारहैं। अरएसात्तजातिकीसेन्यांवागुणचासजातिकीसेन्या
तुम्हारीहैं। एरत्नमईमंदिरतुम्हाराहैं। एदसजातिकेदेवतुम्हाराहैं। एगिलममईविछायततिहारीहैं। रत्नकेभंडा
रतुम्हारेहैं। अरहेप्रभुहेनाथमैंतुम्हारादासहैं। सोम्हांऊपरिआग्याकीजिसोईम्हानैंप्रमाणछै। हेप्रभुहेनाथ
हेस्वामिनहेदयामूर्त्तिहेकल्यांणपुंजतुमनैंपूर्वैकौंनपुन्यकीयाथा। कौंनसील्लपाल्याथा। कौंनसुपात्रनैंदांन
दीयाथा। अरकौंनजिनपूजाकरीथी। अरकौंनसामायककौंनप्रबंधउपवासकीयाथा। कौंनषटकायकीदयापा
लीथी। औरकौंनसर्द्धानठीककीयाथा। अरकौंनअनुवृत्तवामहाव्रतपाल्याथा। कैसासास्त्रकाअभ्यासकी

आ०चा० याथा कैएकाबिहारीहोइध्यांनधर्‍याथा कैतीर्थयात्राविषैंगमनकीयाथा कैबनोबासीह्वैतपश्चरणकीयाथा
१२६ वावाइसहसघ्याथा वाजिनगुणविषैंअनुक्रमकुवाथा कैजिनवांणीमाथाऊपरिधारीथी इत्यादिजिनप्रणी
तजिनधर्मत्ताकेबहुतअंगकेआचरणकीयेथे ताकेप्रसादकरितुमम्हांकेनाथअवतरे सोहेप्रभुएस्वर्ग
स्थांनहै सोपुन्यकाफलहै अरम्हेदेवरवांगनाहै अरम्हेदेवदेवांगहैं अरतुमभीवैमनुत्तलोकसं जिनधर्म
५ रूपभावकरिदेवपर्यायपाईहै यामैंसंदेहमतिबिचारो सोम्हेकांईअर्जकरां आपभीअवधिकरिसा
रौविरतांतजांनौहीहौ धन्यआपकीपूर्वबुद्धि धन्यआपकोमनुत्तभव सोसंसारअसारजांणिनिजआ
त्मकल्याणकेअर्थिश्रीजिनधर्मआराध्यौ ताकोफलअबअैसोपायो धन्यहैयहजिनधर्मतेकेप्रसादकरि
सर्वोत्कष्टवस्तुमपाइयेहै जिनधर्मउपरांत्तिसंसारविषैंऔरसारपदार्थनांही जेतोकसंसारविषैंसु
षहै सोएकजिनधर्महीतैंपाईहै तातैंपर्मकल्याणरूपएकजिनधर्महीहै ताकीमहिमांबचनअगो
चरहै सहस्रजिह्याकरिसुरेंद्रभीपारनैंनहीपावैहै सोकांईआश्चर्यहै जिनधर्मकाफलतौसर्वोत्क
ष्टमोक्षहै तहांअनंतकालपर्यंत अविनासीअतेंद्रीअनौपम्यबाधारहित निराकुलत्तस्वाधीनसंपू १२६

र्णसुषपावजेहै अरलोकालोकप्रकासग्यांनपावजेहै अैसेअनंतचतुष्टयसंयुक्तआनंदपुंजअर्ह
तसिद्धअैसेमोक्षसुषकौंअंतररहितभोगवेहै ताकरिअत्यंततृप्तिहै जगतपूज्यहै त्रिलोकपूज्येहै
वाकेपूजनेंवारेवासारिषेहूहै सोहेप्रभु जिनधर्मकीमहिमांम्हावतैंनकहीजाय अरधन्यआपसौ
असेजिनधर्मकोंमनुत्तभवमैंआराधेथेताकेमहातमतैंइहांआयऔतारलीयोहै सोआपकीपूर्वकु
माईताकाफलजांनौं ताकौंनिर्भयचितकरिअंगीकारकरौ अरमनवंछितदेवपुनीतसुषनैंभोगवौ
अरमनकीसंकानैंदूरिहीतैंतजौ हेप्रभुहेनाथहेदयाल जिनधर्मवात्सल्यसबकौंप्यारा म्हासारिषे
देवांनकरिपूज्य असंष्यातदेवदेवांगनांकास्वामीअबतुमरूंअपनेंकीयेंकावांकाफलअवधारो हेप्रभो
हेसुंदराकारदेवनिकेप्यारे म्हापरिआग्यकरौसोहीम्हेसिरऊपरिधारैंगे अवएअसंष्यातदेवदेवांगनांआप
केदासहै ताकौंअपनेंजांनिअंगीकारकरिअनुग्रहकरौ अैसेजिनधर्मबिनांअैसेपदार्थकौंपावेनांही तासूं
हेप्रभुअबैंसीघ्रहीअमृतकेकुंडविषिस्नानकरि अरमनोज्ञबस्त्रसहितआभूषणपहरि अन्यअमृत
केकुंडतैंरत्नमईझारीभरि अरऔरउत्कष्टदेवपुनीतअष्टद्रव्यकौंहस्तजुगलविषैंधारि मनवचनकाय

आ०चा० कीसुहृताकरिमहानुरागसंयुक्तमहाआडंवरसं जिनपूजनकौंपहलीचालौपाछेऔरकारिजकरौ ज्यां
१२७ सौंपहली जिनपूजनकरि पाछैंअपनीसंपदाकौंसंभालिआपनैंआधीनकरौसोआपनैंआधीनकरौ
सोअपनैंनिजकुटंबकेउपदेससुनि वास्वयइछातादीसोंपूर्वलीधर्मवासनांतैंसीघ्रहीबिनांप्रेरयांमहा
उछवसौंजिनपूजनकौंजिनमंदिरकौंजाताहुवा सोकैसाहै जिनमंदिरअरजिनबिंब सोकहि
येहैं सोजोजनलांवा पचासजोजनचौडा अरपिचहत्तरजोजनऊंचाऐसामाहिलामंदिर
ताकेअभ्यंतरपूर्वसनमुषद्वारकौंधारताऐसाजिनमंदिरउत्तंगअद्भुतसोभैहैं ताकेअभ्यं
तरएकसौआठगर्भग्रहहैं एकएकगर्भग्रहबिषैंतीनकटनीऊपरिगंधकुटीनिर्मापित्तहैं ता
बिषैंजुदेजुदेएकएकश्रीजीपांचसैधनुषउत्तंगपरमप्रमांणआसनसिंघासनऊपरिविराज
मानहैं वहुरिवेदीऊपरिध्वजाअष्टमंगलद्रव्यधर्मचक्रआदिअनेकआश्चरिजकारीवस्तु
केसमूहपाइयेहैं वहुरिकैसीहैं गंधकुटीताबिषैं श्रीजीअद्भुतसोभासहित्तविराजैहैं एकए
कपूर्वग्रहबिषैंएकएक सासतेअनादिनिधनअकृतमजिनबिंबस्थित्तिहैं सोकैसेहैं जिन १२७

बिंबसमचतुरसंस्थानहैं अरकोरिकसूर्यकीजोतिनमैंमलिनकरतातिष्टैहैं गुलाबकेफूलसामहामनो
ज्ञहैं सांतिमूर्तिध्यानअवस्थाकौंधारैं नासाग्रहदिष्टिकौंधारैंपरमबीतरागमुद्राआनंदमयअतिसो
भैहैं बहुरिकैसेहैं जिनबिंबतायासोनासारिषीरक्त जिह्वावाहोठहथेलीवापगथलीहैं फटिकम
णिसारिषेदांतांकीपंगति वाहस्तपगकेनषअत्यंतस्वेदउजलनिर्मलहैं अरस्यांममणिमईमह
नरममहासुगंधऐसेमस्तकबिषैकेसांकीआकृतहीमुरलावत्तीमूंछांकीरेषतीर्थंकरकेकेशहैंसोय
थावत्सोभैहैं बहुरिकैसेहैं जिनबिंब केईतौस्वर्णमईहैं केईरक्तमांणिककेहैं के नीलवर्नप
न्नांकेहैं केईस्यामवर्नमणिकेनिर्मापेहैं मस्तकऊपरितीनछत्रविराजैहैं सोमांनूंछत्रकेमिसकरि
तीनलोकहीसेवाकरनैंकौंआयाहैं चौसठिपदजातिकेदेवतांकारत्नमईआकारहैं ताकेहस्तांबि
षैचौसठिचमरहैं सोश्रीजीऊपरवत्तीसदाहिणीतरफबत्तीसवांईतरफलियेंषडेहैं अनेकहजार
धूपकाघडावाहजारांघंटालाषांकोड्यांरत्नमईपुष्पकाघंटालाषांकोड्यांरत्नकेदंडरत्नमईकोमल
वस्त्रसहितउत्तंगध्वजालहकिरहीहैं हजारांरत्नांकेस्तूपनाजकीरासिवत्तरत्नांकेढेरपर्बतसारिषे

उत्तंगसोभैहैं अन्येचंद्रकांतिसिलावावडीवासरोवरकुंडनंदीपर्वतमहिल्यांकीपंकतिसासहितव
नवाफूलबाडीसहितजिनमंदिरवाह्यसोभैहैं बहुरिकैसेहैंजिनमंदिरएकबडादरवाजापूर्वदिसा
सन्मुषचौघत्ताहैं दोयदरवाजादिषणउत्तरदिसाचौघेहैं बहुरिसनमुषरचनांकेसैंकडांहजारां
योजनपर्यंतआगनैंचलीगईहैं तैसैंहीदक्षणउत्तरकाबिस्तारसभामंडपआदिरचनांचलीगईहैः
बिशेषइतनांपूर्वकेद्वारआदिरचनांकालांबाचौडाउत्तंगप्रमांनहैं तातैंआधाउत्तरदक्षणकेद्वा
रआदिकाप्रमांनहैं ताहीतैंउतरद्वारकौंसल्पकद्वारकहैहैं बहुरिसर्बरचनांकरिवाह्यच्यारिच्या
रिद्वारसहित तीनउत्तंगमहाकोटहैं बहुरिजिनमंदिरकेलाषांकोटांअनेकरत्नांकरिनिर्मापि
तमहाउत्तंगस्थंबलागेहैं बहुरितीनौंतरफांअनेकप्रकारकेसैंकडाहजारांयोजनपर्यंतरच
नांचलीगईहैं कठैहीसभामंडपहैं कठैहीध्यांनमंडपहैं कठैहीजिनगुणगुणगावनेंवारचा
करनेकेस्थांनकहैं कठैहीछतीहीकठैहीमहलांकीपंक्तिहैं कठैहीरत्नमईचौंतराहैं दरवाजां
दरवाजांतोरणद्वारहैं कठैहीदरवाजाकाअग्रभागबिषैंमांनस्थंभहैं ज्यांमांनस्थंभदेषनेंतैंमहा १२८

मांनीकाभीमानदूरिहोइहैं तातैअत्यंतऊचेहैं आकासकौंपरसैहै जायगाजायगाअसंष्यातमोत्यांकावा
सोनाकीवारत्नांकीमालाऊंमिरहीहैं संष्यातालाषांकोडाधूपकाघडातिनबिषैंधूपषेईयहैं जायगांजायगां
संष्यातध्वजाहैं तिनकीपंकतिवामहिल्याकीपंकतिउत्तंगसोभैहैं कैसीहैं ध्वजाकैसीहैंमहलस्वर्गलोक
केइंद्रादिकदेवनिकौंबस्त्रकेहालनेंकरिमांनूंसैनकरिबुलावैहै कहाकरिबुलावैहैं कहैहैइहांआवो
श्रीजीकादर्शनकरौपूजनकरौ तासौंमहापुन्यउपाजौ पूर्वलाकर्मकलंकनेंधोवो बहुरिकठैहीर
त्नाकापूंजडूंगरसाद्रूपजगमगाटकरैहैं कठैहीरंगकीभूमिकाहैं कठैहीमांनिककीभूमिकाहैं क
मि ठैहीसोनारूपाकीभूमिकाहै कठैहीपांचसातवर्नकेरत्नांकीभूमिकाहै कोईमंडपकस्थंभहीराकेहैं
कोईकपन्नांकेहैं कोईकअनेकरतनांकेहैं केईमंडपसोनारूपाकेहैं कोईभूमिस्थांनविषैंकल्प
पवृक्षकावनहैं कठैहीसामांन्यवृक्षांकोवनहैं कठैहीआगानैंपुष्पबाडीहै तिनबिषैंभीरत्नांकापर्वत
सिलाफूलपर्वतवावडीसरोवरनदीसोभादेरहीहैं च्यारिच्यारिअंगुलसर्बत्रहरियालीरूषपन्नांसाद्रूप
महासुगंधकोमलमीठीसोभादेरहीहैं मांनूंसावणभादवाकीहरियालीसाद्रूपहीसोभैहैं अथवाआनं
दकेअंकूराहीहैं कठैहीजिनगुणगावैहैं कठैहीनृत्यकरैहैं कठैहीरागअलापवेमैंजिनस्तुतिकरैहैं

MEMORIAL

कौंहीदेवह्व्यांकीचर्चाकरैहैं कौंहीध्यांनकरैहैं कौंहीसम्यकलोचकेधर्मात्मांपुरुषस्त्रीतिनकेगुणां
कीबडाईहोइहै ऐसैंजिनमंदिरबिषैंसंख्यातवाअसंख्यातदेवदेवांगनांदर्शनकरनेकौंआवैहैं अरजा
यहैं अरताकीमहिमांवचनअगोचरहैं देषैंहीबनिआवै तातैंऐसेजिनदेवकौंहमारावारंबारन
मस्कारहैं घणीकहिवाकरिपूर्णताहो बहुरिकेसेहैं जिनबिंब मांनौंबोलैहै किमांनौबोलैहै कि
मांनूंएमुलकहैकिमांनूंएहसैहैं किवासुभावबिषैतिष्टैहै मांनूंएसाक्षात्तीर्थंकरहीहै भावार्थः
नषसिषपर्यंतजिनबिंबकापुद्गलस्कंधतीर्थंकरकेशरीरवत अंगउपंगसरीरकीअवयवहैं हा
थपगमस्तगआदिसर्वांगवर्णगुणलक्षणमयस्वयमेवअनादिनिधनपरणयेहैं तातैंतीर्थंकरसादृश्य
हैं बिशेषएतीर्थंकरमहाराज्यकेशरीरबिषैकेवलग्यांनमयआत्मद्रव्यलोकालोककेज्ञायकअनं
तचतुष्टयमंडित्तबिराजैहै जिनबिंबबिषैंआत्मद्रव्यनांही ताकेदर्शनकरतहीमिथ्यातकानासहो न
यहै जिनस्वरूपकीप्राप्तिहोयहै सोऐसेजिनबिंबकौंवेदेवपूजैहैं अरमैंभीपूजहूं औरभीभव्यजीवपू
जनकरो एकनयकरितीर्थंकरकीपूजनेंबीबप्रतिबिंबांजीकेपूजनकरिफलबहुतहै कैसाहै सोईक
हियेहैं जैसैंकोईपुरुषतौराजाकीबिद्यमांनसेवाकरैहै अरकोईपुरुषराजाकीछबिकौंपूजैहैं तबवह १२९

राजादेशांतरसौंआवै तबवांपुरुषासौंबहोरागीहोइ अरयावीचारै योम्हांकीछबिहीकीसेवाकरैहै
तौहमारीकरैहीकरै तातैंआसीभक्तिजांनिबहुप्रसन्नहोइहै त्योंहीप्रतिमांजीकीपूजनबिषैं अनुरा
गवहोतसूंवेदै फलहैसोएप्रणांमांकीविशुद्धताहीकाहैं अरपरणांमहोइहै सोकारणकेनिमत्त
तैंहोइहै जैसाकारमिलैतैसाहीकार्यउत्पन्नहोइहै निकषाईपुरुषकेनिमत्ततैंपूर्वकषायभीगलि
जायहै जैसैंअग्निकेनिमत्ततैं दुग्धउजलभाजनबाह्यनिकसैं अरजलकेनिमत्ततैंभाजनबिषैंनि
मग्नरूपरणवैं त्योंहीप्रतिमांजीकेशांतिदसादेषै नियमकरिप्रणांमनिर्विकारशांतिरूपहोइहै सो
ईपरमलाभज्ञांननां ऐसाहीअनादिनिधननितनैमितकनैंलीयां बस्तुकास्वभावस्वयमेवबनैहै
याकैनिवारनैंसमर्थकोईनांही बऔरभीउदाहरणकहीहै जैसैंवेईजलकीबूंदतातीतवाऊपरिपडै
तौनांसनैंप्राप्तिहोई अरसर्पकामुषमैंपडैतौ बिषहोईजाय कवलकापत्रऊपरिपडैतौमोतीसादृश्य
सोभै सीपमैंपडैतौमोतीहीहोयजाय अमृतकेकुंडमैंपडैतौ अमृतहीहोइजाये इत्यादिअनेकनि
मत्तकरिअनेकप्रकारजलकीबूंदप्रणवतीदेषियहै औरभीपदार्थनानाप्रकारकेकारनकेकार

आ०चा० नकरिनानाप्रकारसौंऔरप्रणवंतेदेषियेहैं ॥ ताकीअद्भुतविचित्रताकेवलीभगवांनहीजांनैंहैं ॥
१३० देशमात्रसम्यकदृष्टीपुरुषजांनैंहैं ॥ बहुरिइहांकोईप्रश्नकरै ॥ प्रतिमांजीतोजडअचेतन्यहै ॥ स्वर्गमो
क्षकैसैंदेसी ॥ ताकौंकहियेहैरेभाईप्रतक्षहीसंसारविषैं अचेतनपदार्थफलदाईदेषियेहै ॥ चिंता
मणिकल्पवृक्षपारसकामधेनुचित्राबेलिनवनिधिआदिवस्तुदेखिअनेंकदेषियेहै ॥ बहुरिभोज
नकीयेंषुध्यामिटैहै ॥ जलपीयेंत्रषामिटैहै ॥ अन्येकऔषधिकेनिमत्तकरिअनेकजातिकेरोगउप
शांतिहोयहै ॥ सर्पवाऔरविषकेनिमत्ततैंप्रांणांतहोइहै ॥ सांचीस्त्रीकासरीरकापापफललागैहै ॥ त्यौंही
प्रतिमांजीकादर्शनकीयेंमोहकर्मगलैहै ॥ सोवीतरागभावहोनांताहीकानामधर्महै ॥ ताहीधर्मक
रिस्वर्गमोक्षपावैहै ॥ तातैंप्रतिमांजीस्वर्गमोक्षनेंकाकारणहै ॥ प्रतिमांजीकादर्शनकरिअनंतजीव
तीरेआगैंऔरतिरैंगे ॥ बहुरिप्रतिमांजीकीपुजास्तुतिकरणांहै ॥ सोतीर्थंकरमहाराजकेगुणकीअ
नमोदनांहै ॥ सोपुरुषगुणकीअनुमोदनांकरैतौवाकेगुणकाअंसउत्पन्नहोइ ॥ अरस्त्रीगुणवान
पुरुषकीअनुमोदनांकीयेंसाद्रूपऔगुणफललागें ॥ त्यौंहीधर्मात्मापुरुषकीअनुमोदनांकीयें ॥ १३०

धर्मकाफलस्वर्गमोक्षलागै ॥ तातैंप्रतिमांजीसाक्षाततीर्थंकरमहाराजकीछविहै ॥ ताकीपूजाभक्तिकीयें
महाफलनिपजैहै ॥ बहुरिइहांकोईफेरिप्रश्नकरै ॥ अनुमोदनांबनीथीतौ ॥ वाकासुमरणकरिहीअनुमो
दनांकीनीहोती ॥ आकारकाहेकूंबनाया ॥ ताकौंकहियेहै ॥ सुमरनकीयेंतौवाकापरोक्षदर्शणहोयहै ॥
साद्रूपआकारबनायेंप्रतिदर्शनहोयहै ॥ सोपरोक्षबीचप्रतिक्षविषैंअनुरागविशेषउपजैहै ॥ अरआ
त्माद्रव्यहै ॥ सोडील्लांकाभीदीसैनांही ॥ डील्लांकाभीवीतरागमुद्रास्वरूपसरीरहीदीसैहै ॥ तातैंभक्तिपुरुषांनैं
तौमुष्यपनौंवीतरागसरीरहीकाउपगारहै ॥ भावैंजंगमप्रतिमांहोकु ॥ भावैंथावरप्रतिमांहोदोन्याकेउप
गारसाद्रूपहै ॥ जंगमनामतीर्थंकरकाहै ॥ थावरनामप्रतिमांकाहै ॥ जैसानारदरावणसीतांकेस्वरूपकीवा
रताकही ॥ तबतौरावणथोडाआशक्तहुवा ॥ पीछैंवाकापटदिषाया ॥ तबविशेषआसक्तहुवा ॥ ऐसैंप्रत्य
क्षपरोक्षकातातपर्यजांननां ॥ सोवेतौचित्रपटपत्ररूपहीथा ॥ अरप्रतिमांजीविंहनरूपआकारहै ॥ तातैंप्र
तिमांजीकादर्शनकीयेंतीर्थंकरकास्वरूपयादआवैहै ॥ ऐसापरमेस्वरकीपूजाकरि ॥ अवैंवेदेवकांईक
रैहै ॥ अरकेसासोभैहै ॥ सोकहियेहै ॥ जैसैंवाराबरसकाराजहंसपुत्रसोभायमांनदीसैहै ॥ तासौंभी२ ॥

असंख्यातअनंतगुणांतेजप्रतापकूंलियांसो नैहैं बहुरिकैसाहैं शरीरजाका हाडमांसमलमुत्रकेस
मल्हकरिरहितहैं कोटिकसूर्यकीजो तिनैंलियांमहासुंदरसरीरहै अररसमगिलमसूंअनंतगुणांकोमल
स्पर्शहैं अरअमृतसारिषामीठाहैं अरबावनांचंदनवाकिस्तूरीवाकोप्रांरूपयांतोलाकाअत्तरतासूंभी
अनंतगुणांसुगंधमईसरीरहैं अरऐसाहीसुगंधसासउसासआवैहै बहुरिस्वर्णमईवातायासोनांस
मांनलाल वाऊगतासूर्यसमांनलाल वाफटिकमणिमईस्वेतऐसाहैवर्णजाका बहुरिअनेकप्रकार
केआभूषणरत्नमईपहिरैहैं अरमस्तककूपरिमुकटसोभैहै अरहजारांवर्षपीछैमानसीकअमृत
मईअहारलेहैं अरकेकमांसपाछैसासोस्वासलेहै अरकोइप्रात्यक्कवत्तिसारिषोवलहै अरअवधिग्यांनक
रिआगिलापाछिलाभवकीवादूरिवर्तिपदार्थकावासूढपदार्थकी वासूक्ष्मपदांकौनिर्मलपृष्टजानैहैं
अरआठरिद्धिवाअनेकविद्यावाविक्रियाकरिसंयुक्तहैं जैसीइछाहोइ तैसैंहीकौतूहलकरै बहुरिरस
मसौंअसंख्यातगुंनीविमांणकीकोमलभूमिकाहैं अरअनेकप्रकाररत्नांकाचूर्णसाहूरूपकोमलधूलिहैं
अरगुलाबअवरकेवडाकेतकीचमेलीजायसेवतीनरगसरायबेलसोनजुहीमोगरासुगंधरायचंपा आदिदेय १३१

रूपनकाचूर्णसमांनमईरजहैं अरकहीअनेकप्रकारकेफूलनकीवाडीसुगंधसोभैहैं अरकोटिकसूर्य
सारिषोतपतरहितरंगतमईप्रकासहै अरमंदसुगंधबाजैहैं अरअनेकप्रकारकेरत्नमईचित्रामहैं
अरअनेकप्रकारकेरत्ननिकीसोभानानैंधस्यानगरांहोल्हूंकूंडसोभैहैं अरनिर्मलजलसूंभरीबाईसो
भैहैं अरअनेकजातिकेकल्पवृक्षआदिसंयुक्तबनसोभैहैं तैठैवनमैंअनेकवावडीनिर्वांण
पर्वतसिलासोभैहैं तैठैदेवजायक्रीडाकरैहैं बहुरिदेवांकामंदिरकैअनेकप्रकाररत्नलगपाहैं वा
रत्नमईहैं ताकैध्वजांदंडसोभैहैं वाऐसैंध्वजाहालिहै मांनूधर्मात्मापुरुषनिकूंमनकरिबुला
वैहैं कहैंआउआउइहांऐसासुषहै सोत्रैलोकमैंओरठोरइस्वैनहैं ज्यांसूंअबैसुषआयभोग
वो आपनांक्रियाकरतव्यकाफलल्योहे बहुरिकोइप्रांजातिकावाजित्रबाजैहैं अरनृत्यहोइहैं
अरनाटिकहोइहै अरअनेककलाचतुराईवाहावभावकटाक्षकरिदेवांगनांकोमलहैसरीर
जिनकेनिर्मलहैसुगंधमई अरचंद्रमांकीकिरणांसूंअसंख्यातगुणांनिर्मलप्रकासमईमुषहै
बहुरिकैसीहैंदेवांगनां तीषातीषाकोकिलासारिषाकंठहै अरमीठामधुरमधुरवचनवोलैहैं अरतीषाम

गसारिषावडानेत्रहैं॥ अरस्वीनासारिषीकरिहैं॥ अरफरिकसमांनदांतेहै॥ अरउगत्तासूर्यसीहथेलीहैं॥
वापगथलीहैं॥ वकुरिकैसीहैंदेवांगनां॥ जैसैवाराबरसकीराजपुत्रीसो भैतासैंअसंख्यातगुणांअतुलि
तसोभानैंलीयां॥ आर्वलुपर्यंतएकरुसारूपरहैहैं॥ भावार्थ॥ वातरुणवाहरूपणांनैंप्राप्तिहोइ॥ ऐसादे
वकीवालरुसासासतीरहैहै॥ बकुरिकैसीहैंदेवांगनां॥ मांनूंसर्वेषसवोयकापिंडहैं॥ मानूंसर्वगुनान
कासमूहहीहैं॥ सर्वविद्याकेईस्वरहैं॥ सर्वकलाचतुराईकाअधिपतिहैं॥ सर्वलक्ष्मीकास्वांमीहै॥ अने
कसूर्यकीकांतिकौंजीतैहै॥ अनेककामदेवकरिसरीरनिपजायाहैं॥ बकुरिकैसहैंदेवदेवी॥ सोदेवतौदेवां
गनांनकेमनकौंहरैहैं॥ अरदेवीदेवांकामनकौंहरैहै॥ अरहंसकीचालकौंजीतैहै॥ अन्येकवैक्रिय
करिशरीरबनावैहैं॥ अनेकतरहसूंनृत्यकरैहैं॥ ऐसीदेवांगनांसौंअनेकशरीरबनांइ देवयुगपत्
एकैंकालसर्बदेवांगनांनैंभोगवैहैं॥ सोवेदेवअनेकशरीरवनायजुदेजुदेमहलविषैंसुगंधमईमहाकौ
मलकोटेकचंद्रमांसूर्यकेप्रकाससाहशरूपशांतिमईमनकूंरंजायमांनकरनैंवालेप्रकासकरिदैदीपमां
नअनेकप्रकारकेकल्पवृत्तनकेफूलनिकरिभाभूषितऐसीसज्याऊपरिदेवतिष्टैहैं॥ पीछैंदेवां १३२

गनांअनेकप्रकारकेभूषनपहरें॥ जुदेजुदेमहलविषैंजायहैं॥ पीछैंहरिहादेवकूंहस्तजोडितीनसलां
मकरैहैं॥ पीछैदेवकीआग्यापायसेज्याउपरजायतिष्टैहैं॥ पीछैंदेवकभीकअपनीगोदमैंधारैहैं॥ वाहस्ता
दिकरिसपर्शकरैहैं॥ वानृत्यकरनेंकीआग्याकरैहै॥ ताबिषैंऐसाभावल्यावेहैं॥ हेप्रभूहेनाथम्हेका
मअग्निकरिदग्धछां॥ ताकौंभोगदांनकरिशांतिकरो॥ आपम्हारैकामदाहमेटिवानैंमेसाहशरूपहो॥ ब
कुरिकबकुकदेवकागुनानवादगावैहैं॥ कबकुककरात्तकरिजात्तीरहैहैं॥ कबकुकआंनिइकठीहो
यहैं॥ कबकुकपगांमैंलोटिजायहै॥ कबकुकबुलायेसूंभीनआवैहैं॥ सोएस्त्रांकामायाचारस्वभाव
हीहैं॥ मनमैंतौअत्यंतचाहै॥ बकुरिवाह्यअचारहदिषावै॥ बकुरिकबरूकनृत्यकरतीधरतीसूंऊकिजा
यहैं॥ आकासमैंउडिजायहै॥ वाचकफेरीदेहैं॥ वाभूमिउपरिपगांकूंअतिसीघ्रचलावैहैं॥ कबकुकदेव
दिसीम्हालिमुलकहैहैं॥ वावस्त्रकरिआछादितकरिदेहैं॥ वाबस्त्रदूरिकरिउघाडिदेहैं॥ जैसैंचंद्रमांक
बकुक बादलांकरिआछादितहोयहैं॥ कबकुकबादलांकरिरहितहोयदिषाईदेहैं॥ कबकुकदेव
देवांगनांऊपरिफूलनिकीमूठीफैकैहैं॥ वासुगंधअरगजासूंदेवांगनानिकासरीरकूंसींचैहैं॥ अथवा

आ॰चा॰ देवांगनांदेवउपरिफूलउछालिनयकरिनाजिजायहैं पीछैंअनुरागकरिदेवकेसरीरसूंआनिलिप
१३३ टेहैं पीछैंहरिजायदिषालीदेहैं कबहूकइंद्रसहितबहुदेवांगनामिलिचकफेरीदेहैं कबहूकता
लमृदंगबीनबजायदेवनैंरिझावैहैं कबहूकसेजऊपरिलोटिजायहैं कबहूकउठिनागैहैं पीछैं।
आकासमैंतिष्टिनृत्यकरैहैं मांनूंआकासबिषैबीजलीसीचिमकैहैं अथवाआकासबिषैंचंद्रमांदो
लूंतारांकीपंक्तिसोभैहैं तैसैंदेवदोलूंदेवांगनांसोभैहैं अथवाचंद्रमांकीसाथिचंद्रीकागमनकरती
सोभैहैं तैसैंदेवकीसाथिदेवांगनांगमनकरतीसोभैहैं इत्यादिअनेकप्रकारकेआनंदक्रीडाकरि
देवदेवांगनांमिलिकौतूहलकरैहैं बहुरिदेवांगनांनृत्यकरतीथकीपांवनकूंभूमिऊपरिवाआका
सबिषैंनेवरआदिपगांकेगहनेंताकेझूनकारसहितचलावैहैं सोईकहियेहैं झिमझिमझिणझि
णषिणषिणतिणतिण आदिसब्दकेसमूहअनेकनगमैंजीयांपगांकेगहनांनकेसब्दहोयरहेहैं
मांनूंदेवकीस्तुतिहीकरैहैं पीछैंकोमलसिज्यापरिदेवकाआलिंगकरैहैं सोपरस्परपुरुषकासंयो
गकरिऐसासुषऊपजैहैं मांनूंनेत्रमूंदिकरिसुषनैंआस्वादैहैं ऐसासोभैहैं अरतिर्यंचमनुष्यकी १३३

सीनाईभोगकीयांपाछैंसिथलनांहीहोइहैं अत्यंततृप्तिहोइहैं मांनूंपंचामृतहीपीये बहुरिदेवमैं
ऐसीसक्तिपाइयेहैं कबहूकतौसरीरनैंसूक्ष्मकरिलेहैं कोईसमैंसरीरकोवारिदेहैं कबहूकसरीर
कौंभारीकरिलेहैं कबहूकआंषिफरूकैतामात्रकालमैंअसंष्यातजोजनचलैहैं कबहूकबिदेहषेत्रमैं
जायश्रीतीर्थंकरदेवकूंजायबंदेहैं अरस्तुतिकरैहैं जयजयजयजयभगवांनजी जयप्रभूजीजयत्रिलो
कनाथ जयकरुणांनिधि जयसंसारसमुद्रतारक जयपरमैंबीतराग जयग्यांनानंद जयग्यांनस्वरूप
जयमोक्षलक्ष्मीकेकंत जयआनंदस्वरूप जयपरमैंउपगारी जयलोकालोकप्रकासक जयस्व
भावमयमोदित जयस्वपरप्रकासक जयग्यांनस्वरूप जयआनंदस्वभाव जयचैतन्यधात जयअ
षंडसुधारसपूर्ण जयज्वलितमुचलतपोत जयनिरंजन जयनिराकार जयअमूर्तीक जयपरमांनंद
जयपरमांनंदकेकारण जयसहजस्वभाव जयसहजस्वरूप जयसर्वबिघ्नबिनासक जयसर्वदोषर
हित जयनिःकलंक जयपरस्वभावभिन्न जयजयभव्यजीवतारक जयअष्टकर्मरहित जयध्यां
नारूढ जयचैतन्यमूर्ति जयसुधारसमई जयअतुल जयअबिनासी जयअनोपम जयस्वछपिंड

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL

जयसर्वतत्वज्ञायक जय अनंतगुणभंडार जयनिजप्रणतकेरमणहार जयभवसमुद्रकेतिरन
हार जयसर्वदोषकेहरनहार जयधर्मचक्रकेधरनहार होदेवजीपूरादेवथेईहो अरहेप्रभूजी
देवांकादेवथेईहो अरहोप्रभूजीआनमतकेषंडनहारथेईहो अरहेप्रभूजीमोक्षमार्गकेचला
वनहारेथेईहो भव्यजीवांनेंप्रफुल्लितथेईकरो अरहेप्रभुजीजगतकाउधारकथेईहो जगत
कानाथथेईहो भव्यजीवांनेंकल्यांणकेकरताथेईहो दयाभंडारथेईहो अरहोभगवांनजीस
मोसरणसारिषीलक्ष्मीसोंबिरक्तथेईहो हेप्रभूजीजगतकामोहिवानेंसमर्थथेईहो अरउद्धा
रकरबानथेईसमर्थहो हेप्रभूजीथांकारूपदेषिकरिनेत्रतृप्तिनांहीहोयछै अरहेभगवांन
जीआजिकीघडीधन्यछै आजिकादिनधन्यछै सोमैथांकोदर्शनपायो सोदर्शनकरवाथ
कीकृत्यकृत्यहुवो अरपवित्रहुवो कार्यकरणोहोसोआजिमैंकीधो अबेंकार्यकौंकरणोर
ह्योनांही अरहेभगवांनजी थांकीस्तुतिकरिजिभ्यापवित्रभई अरबांणीसुनिश्रवणपवित्र
हुवा अरदर्शनकरिनेत्रपवित्रहुवा अरध्यांनकरिहृदयपवित्रहुवो अष्टांगनमस्कारकरि १३४

सर्वांगपवित्रहुवौ अरहेभगवांनजीमोनेंएताप्रश्नकाउत्तरकहो आपकेमुषारबिंदसोंसुन्यां
चाहूंहूं सोईकहियेछै हेप्रभूदेवसप्ततत्वकास्वरूपछै अरचौदहगुणस्थानवाचौदहमार्गनाका
स्वरूपकहो अरमूलअष्टकर्मकास्वरूपकहो वाउत्तरकर्मकास्वरूपकहो हेस्वांमीप्रथमा
नुयोगकरुणांनुयोगद्रव्यानुयोगताकास्वरूपकहो अरहेस्वांमीतीनकालवलोकालोक
कास्वरूपकहो अरश्रावकमुनिकेआचारकास्वरूपकहो अरमोक्षमार्गकास्वरूपकहो अर
हेस्वांमीपुंन्यपापकास्वरूपकास्वरूपकहो अरहेस्वांमीच्यारुंगत्यांकास्वरूपकहो जीवांकीद
याअदयाकास्वरूपकहो देवधर्मगुरुकास्वरूपकहो अरहेस्वांमीहेनाथसम्यकदर्शनसम्यक
ज्ञांनचारित्रकास्वरूपकहो अरध्यांनकास्वरूपकहो अरआर्तिध्यांनरुद्रध्यांनकास्वरूपकहो
अरहेभगवांनहेप्रभूजी ज्योतिसवावैद्यकवामंत्रवाजंत्रकास्वरूपकहो वाचौसठिरिधांकास्वरूपक
हो अरतीनसैतरेसठिकुवादवाकुवादकाधारककास्वरूपकहो अरवारेहअनुप्रेक्षाकास्वरूपकहो अ
रदसलक्षणीकधर्मअरषोडसभावनांकास्वरूपकहो अरनौंनयवासप्तभंगीवांनीताकाअरद्रव्यांकासामा

न्यगुंणवा विशेषगुंणताकास्वरूपकहै॥ वाअधोलोकवामध्यलोकताकीरचनांकासरूपकहै॥ वाद्वादशांगका

स्वरूपकहै॥ वाकेवलग्यांनकास्वरूपकहै॥ यांनैंआदिदेसर्वतत्वके स्वरूपकौंजांण्यांचाहूंहूं॥ अरहे भगवांन
नर्ककिसापापकरिजाय॥ तिर्यंचकिसापापकरिहोइ॥ मनुष्यकिसापरणांमांसौंहोइ॥ देवपर्यायकिसापुंन्यकरि
पावैसोकहै॥ निगोदक्याकरिजाय॥ एकेंद्रीविकलत्रयक्यांकरिहोइ॥ असैंनीकिसापापकरिहोइ॥ सैनी कि
सापापकरिहोउ॥ सन्मूर्छनअलुब्धिपर्याप्तस्थावरकिसाषोटापरिनांमांकरिहोइ॥ आंधौबहरोगुंगोल्ल
लोकिसापापकरिहोय॥ बावनौंकुवडौविकलंगीअधिकअंगी किसापापकरिहोय॥ कोडीदीर्घरोगीद
रिद्रीकुरूपसरीरकिसापापकरिहोय॥ मिथ्यातीकुविसनीअग्यांनीअभागीचोरकषायज्वारीनिरदईअ
क्रियावांनधर्मसूंपरांनमुषपापकार्यविषैंआशक्तअधोगांमी किसापापकरिहोइ॥ बहुरिसीलवांनसं
तोषीदयावांनसंयमी॥ त्यागीबैरागीकुलवांनपुंन्यवांनरूपवांन किसापुनिवांनकिसापुन्यकरिहोइ॥
निरोगीविचक्षनबुद्धिवांनपंडित अनेकशास्त्रनिकेपारगांमी॥ धीरवीरसाहसीसज्जनपुरुषांकेमनमो
हनसबकौंप्यारौदांनेस्वरी॥ अर्हंतदेवकाभक्तसुगतिगांमी किसापुन्यकरिहोइ॥ इत्यादिइनप्रश्नांका १३५

दिव्यध्वनिकरियाकास्वरूपसुन्यांचाहूंहूं॥ सोमोपरिअनुग्रहकरिमोपरिदयाकरिमैरेतांईकहै॥ अहोभ
गवांनजीम्हारापूर्वला भवनौंअनागतभवकहै॥ अरहे भगवांनजीम्हारैसंसारकेतौवाकीहै॥ अरक
दिदिक्षाधरिअरकदिथांसारिषोहोस्यौं॥ सोमनैंयथार्थस्वरूपकहै॥ म्हारैयांकाजाणिवाकीघणीअभि
लाषाछै॥ असाप्रश्नपायश्रीभगवांनजीकीवांणीषिरतीहुई॥ अरसर्वप्रश्नांकाउत्तरएकैसाथिग्यांनमैंभास
ताहुवा ताकेसुषकरिअत्यंततृप्तिहुवा॥ पाछैंआपनैंस्वर्गस्थांनकनैंजाताहुवा॥ पाछैंफेरिकबहुकएनंदी
स्वरद्वीपमैंजाय॥ वामैंकाचैत्यालांजायप्रतिमांजीकूंपूजे॥ कबहूकअनेकप्रकारका भोगांनैंभोगवैहै॥ कब
हूकसभाविषैसिंघासनऊपरिबैठिराजकार्यकरैहैं॥ कवहुकधर्मचरचाकरैहै॥ कबहूकच्यारिजातिवा
सात्तजातिकीसेन्यासजिभगवांनकापंचकल्यांणकविषैंजायहै॥ वावनांदिकविषैंवामधिलोकविषैंक्री
डाकरिवानैंजायहै॥ बहुरिवहांअसानारिकहोयहै॥ कबहुकदेवांगनांदेवकाअंगुष्टाऊपरिनृत्यकरै
है॥ अरकबहुकहथेलीऊपरिनृत्यकरैहै॥ कवहुकभुजांऊपरिनृत्यकरैहै॥ कबहुकदेवांगनांआकास
मैंउडिजायहै॥ कबहुकधरतीमांहिडूबिजायहै॥ कबहुकअनेकसरीरबनायलेयहै॥ कबहूकबाल

आ॰चा॰ होयजायछै॥ कबहूकदेवकीस्तुतिकरैछै॥ कांईस्तुतिकरैछै॥ हेदेवथांनैंदेषिवाकरिनेत्रतृप्तिनहोयछै॥ अरहे
१३६ देवथांकागुणांकाचिंतवनकरिमनतृप्तिनांहीहोयछै॥ अरहेदेवथांकीबीनांम्हाकामनकौंप्रीतिउपजावैछै॥
हेदेवथांकादर्शनकरि॥ अत्यंततृप्तिहोयछै॥ अरहेदेवथांकासंयोगकोंअंतरकबहूमतिपडो॥ थांकीसेवाजे
वंतीप्रवर्ती॥ अरथेजयवंताप्रवर्तो॥ थेम्हांनैंकल्याणकाकरताहोऊ॥ अरथेम्हांकामनबांछितमनोर्थपूरो॥
बहुरिकैसेहैंदेवअरदेवांगनां॥ जाकैनेत्ररिमकारिबोनांही॥ अरसरीरकीछायानांही॥ अरक्षुधानांहीत्रषा
नांही॥ अररोगनांही॥ हजारांबरसपाछैंकिंचितमात्रक्षुधात्रषालागैछै॥ सोमनहीकरितृप्तिहोइछै॥ अरकेई
देवमंदसुगंधपवनचलावैछै॥ अरकेईदेववादित्रबजावैछै॥ अरकेईदेवषसबोयमईजलकाकणवरसावैछै॥
अरकेईइंद्रऊपरिचमरढोरैछै॥ कैसेहैंचवरमांनूंचवरकामिसकरिनमस्कारहीकरैछै॥ ऐसेसोभैछै॥ अरके
ईछत्रकीयांछै॥ अरकेईदेवअनेकआवधलेकरिदरवाजेतिष्टैछै॥ अरकेईदेवमांहिलीसभाबिषैंतिष्टैछै॥ अर
केईदेवमध्यकीसभाबिषैछै॥ अरकेईदेववारिलीसभाबिषैंतिष्टैछै॥ अरकेईदेवदेवीदीसीदेषो यांबिमांनां॥
कीसोभा॥ अरदेषोदेववादेवांगनांकीसोभा॥ अरदेषोरागबानृत्यवावाजित्रवासुगंधउत्कृष्टआवैछै॥ सोसो १३६

भाआनिएकठीऊईछै॥ कैसीएकठीऊईछै॥ कठैहीतोदेवमिलिगांनकरैछै॥ कठैहीदेवक्रीडाकरैछै॥ कठै
हीदेवांगनांआनिइकठीऊईछै॥ किमांनूंसूर्यचंद्रमांनक्षत्रग्रहतारांकीपंकतिएकठीहोइदसोंदिसाप्र
कासितकीनीछै॥ कोईकैदेवांगनांरत्नाकाचूर्णकरिमंगलीकसाथ्यापूरैछै॥ अरकोईदेवांगनांमीठास्वरसूं
गावैछै॥ अरकोईमंगलगावैछै॥ मांनूंमंगलकैमिसकरिमध्यलोकसूंधर्मात्मापुरुषनिकूंबुलावैछै॥ कोई
देवांगनांहाथजोडिदेवपासिऊभीछै॥ कोईदेवांगनांहाथजोडिदेवकीस्तुतिकरैछै॥ कोईदेवांगनांदेवका
तेजप्रतापनैंदेषिनयमांनहोयछै॥ कोईदेवांगनांथरथरधूजतीजायछै॥ अरहाथजोडिमधुरमधुरहलवै
बचनबोलीतीजायछै॥ अरकठैहीदेवांगनांयाकहैछै॥ हेप्रभूहेनाथहेदयालमूर्तिक्रीडाकरिबावालो॥
अरम्हांनैंतृप्तिकरो॥ बहुरिकैसेहैंस्वर्ग॥ कठैहीतोधूपकरिफैलीहैसुगंधता॥ कठैहीदेवदेवांगनांकीपंकति
करिसोभितछै॥ कठैहीमंदरबजारकरिसोभैछै॥ कठैहीपनांसाहृत्यकरिसोहरियालीकरिसोभितछै॥ कठैहीपु
ष्पबाडीकरिसोभितछै॥ कठैहीनवरकाऊंकारकरिसोभितछै॥ कठैहीचंद्रकांतिसिलाकरिसोभितछै॥ कठैहीका
चराहृत्यनिर्मलसिलाभूमिकासोभैछै॥ मांनूंजलकेदरियावहीछै॥ ताकेअवलोकनकरतैंऐसीसंकाउपजैछै

आ०चा० मनियाविषैंडूबिजाय। बहुरिकठैरत्नांसारिषाहरीसिलाभूमिसोभैहैं। कठैमाणिकसारिषीलालसोनांसा
१३७ रिषीपीतभूमिवासिलासोभैहैं। कठैहीतेलमांथोकाजलसाहरूपवाकालीबादलीकीघटासाहरूपभूमिसो।
भैहैं। मांनूंपापकेभयकरिछिपरहिवानैंअंधकारकीमात्ताहीहैं। इत्यादिनानाप्रकारकेरत्नलियांस्वर्ग
कीभूमिकादेवताकेमनकूंरंजायमांनकरैहै। अरसर्वत्ररत्नांसारिषीहैं। अरतैसामीठारसमसीकोम
ल बावंदनसारिषीसुगंधसोवरणभादवांकीहरियालीसाहरूपप्रथ्वीसोभैहैं। सदाएकसीरहैहैं। बहुरि
जायगाज्योतिषीदेवनिकेबिमांनसाहरूपउज्जलआनंदमंदिरवासिलावापर्वतकेसमूहवणिरहेहैं।
ताविषैंदेवतिष्ठैहै। कठैहीस्ववर्णरूपाकेपर्वतसोभैहै। कठैहीबैडूर्यमणिपुषराजलसनियांमोतिनके
समूहभाजनकेढेरवतपरेहै। बहुरिकठैहीआनंदमंडपहैं। कठैहीक्रीडामंडपहैं। कठैहीभवस्वामंडपहैं। क
ठैहीकेलिकरनैंकेनिवासहैं। कठैहीध्यांनधरनैंकास्थांनकहैं। कठैहीचित्राबेलिहैं। कठैहीकामधेनुहैं।
कठैहीरसकूपिकाकेकुंडभस्याहै। कठैहीअमृतकाकुंडभस्याहैं। अरकठैहीनवनिधिपरीहै। कठैहीह
रांकेढेरपरेहैं। कठैहीमाणिककेसमूहहैं। कठैहीपनांकेढेरहैं। कठैहीनीलमणिआदिमाणपककाढेरप १३७

डाहैं। यांनैंआदिदेरअनेकप्रकारकेरत्नांकरि बिमांनव्याप्तहोयरह्याहैं। बहुरिकसवोइवारागवाजंत्रकरि
बिमांनव्याप्तहैं। सोयांनैंआदिदेसुषसामग्रीस्वर्गविषैपाइयेहै। सोस्वर्गलोककासुषवर्णनकरिवानैंसामर्थ
श्रीगणधरदेवभीनांहीं। केवलग्यानगम्यहै। सोयोजीवधर्मकाप्रभावकरिसागरांपर्यंतऐसासुषनैंपावैहैं। जा
संदेहनाईतुधर्मसेवननैंनिरंतरकरि। धर्मविनांऐसाभोगकदाचित्भीपावैनांही। तासंअपनांहितकावांछीकपु
रुषहैं। ज्यांनैंधर्मपरंपरामोक्षनैंकारकाहैं। सोऐसासुषनैंभीऐसाआयुवलनैंभीपूरीकरि। उठासंभीपूरीकरि
चवैहैं। सोछमासआयुकावाकीरहैहै। तबवेदेवताअपनेंमरनकूंजांनैंहैं। सोमालामुकटवासरीरकीकां
तिताकीजोतिमंदपडिवाथकीसेदेवमरनजांनिबहुतझूरैहैं। हायहायअबहूंमरिजास्यौं। एभोगसामग्री
कौंनभोगसी। अरहूंकिसीगतिजास्यौं। मूंनैंराषिवासमर्थकोईनहीं। अबैंहूंकांईकरूं। कौंनकेसरनैंजाउं
म्हारैरक्षककोईनांहीं। म्हाराउषकीवातकौंननैंकहुं। एभोगसाराबैरीथासोसबमिलिएकठामोनैंउ
षदेवाआयाहैं। सोयांनर्कसारिषौमानसीकउषकैसेंभोगउं। कहांतोस्वर्गसारिषासुष। अरकहांए
केंद्रीआदिपर्यायकाउष। सोकोडीकैसाटैअनंताजीवबिकैहैं। अरकुहाड्यासूंछेदेहैं। अरहांडी
मेंघालिरांधैहैं। सोऐसीपर्यायकूंहूंजायप्राप्तिहोस्यौं। हायहायइहकौंनअनर्थ। ऐसीदसाकीऐ

सीदसाहोयजायाबऊरिअबैंअपनेंपरिवारकेदेवनिसूंकहैहैं हेदेवआजिमोपरिजमकेकिंकरका
लकोप्पोहें मोनषैंसूंऐसीसुरपदवीकासुषछुडावैहैं अरषोटीगतिकूंप्राप्तिकरैहैं सोथेअबमोनैंरा
षौई डुषसहिवानैंरूंसामर्थनांहीं घणीकांईकरूं म्हाराडुषकीवात्तसर्बज्ञदेवजांनैंहैं औरकोई
जांनिबासमर्थनांहीं तबपरिवारकादेवकहताऊवा ऐसादीनपनांकाबचनक्यौंकहौहो या
हसासारांहीमैंहानीहैं सोकालकोंकारूकाजोरनांहीं ईकालकैवसिसमस्तलोककाजीवहैं जी
सूंअबैंएकधर्महीसरनहैं सोधर्मकोसरणोंईगहो अरआर्तिध्यांनसूंषोटीतिर्यंचजौंनिपावैहैः
अरपरंपरायअनंतसंसारबिषैंभ्रमणकरैहैं तासूंअबतांईक्यौंहीगयौनांहीं अबैंआपोसंभालो
सावधांनहोरू अरआपनांसहजानंदकीसंभालकरो सुरसपीवोज्यांसूंजनममरणकाडुषविलेजाय
अरसासतासुषनैंपावो ईसंसारसूंश्रीतीर्थंकरदेवभीडरप्या डरपिकरिराजसंपदानैंछोडिबनैंकेवि
षैंजायबस्या तीसूंथांनैंभीयोकार्यकरनोउचितछै हेरगकरणोंउचित्तनांहीं सोअबैंवेदेवईप्रपद
नैंपायकितेकदिनतांईश्रीजीकीपूजाकरताऊवा पाछैंबारंबारश्रीजीनैंयादिकरताऊवा अरधर्म
हीबिषैंबुद्धिराषताऊवा अरबाराअनुप्रेक्षाकाचिंतवनकरताऊवा कांईचिंतवनकरताऊवा॥ १३९

देषौभाईकुटबपरिवारहैं सोबादलाकीनांहीबिलैजासी अथवादसौंदिसासौंसांझसमैंपंछीआयबृ
क्षऊपरिबिश्रामलेहैं पाछैंप्रभातउडिजायहैं अथवाहाटबिषैंवामेलाकेबिषैं अनेकव्यौपारीवात
मासगीरआंनिएकठाहोइहैं पाछैंदोयच्यारिदिनमैंजातारहैंहैं त्योंहीयऊकुटंबपरिवारहैं अरमाया
हैं सोवीजलीकाचमत्कारसमांनचंचलहैं अरजोबनहैं सोओसकीबूंदसमांनहैं अरआयुबलु
है सोअंजुलीकातोयसमांनहैं सोयांनैंआदिदेयसर्बठाठबिनासीकहैं षिनभंगुरहैं कर्मजनितहैं
पराधीनहैं परबस्तुहैं इंसामग्रीमैंम्हारोक्यौंभीनांहीं म्हारोचैतन्यस्वरूपसासतोअबिनासीहै
ऊंकुंणीकासोचकरूं औरअबैंअसरनप्रेक्षाकोचिंतवनकरैहैं देषोभाईईसंसारबिषैंदेवबिद्याध
रवाईश्वाधरनेंश्वानारायणवाप्रतिनारायणवाबलभद्रवारुद्रवाचक्रबर्तिवाकांमदेवयांनैंआदि
देकोईसरणिनांहीं येभीसाराकालकैबसहैं तोऔरकौंननैंसरणराषै ज्यांसूंवाह्यतोमूंनैंपंचपरमे
ष्टीसरणिछै अरनिश्चैम्हारोनिजस्वरूपसरणहैं औरसरणिमूंनैंत्रिकालमैंनांहीं अबैंजगतानुप्रे
क्षाकौंचिंतवनकरैहैं देषोभाईयोजीवमोहकैबसीभ्रतभ्रमिकरियोंहीसंसारकेबिषैंकिसाकिसा

MEMORIAL

उषनैंसहैहै॥ कदीतौनर्कजायहैं॥ कदीतिर्यंचमैंजायहैं॥ कदीमनुष्यदेवबिषैजायहैं॥ ईभांतिनाना
प्रकारकाच्यारांगतिबिषैंजांमणमरणांदिकाकादुषसहैहैं॥ तीसूंईसंसारसौंउदासनहोय निश्चै
व्यवहारधर्महीकौंनिरंतरसेवनकरनौं॥ अबएकत्वपरीक्षाकौंचिंतवनकरैहैं॥ देषो भाईयोजी
वतौअकेलोइकैकुटंबपरिवारहैनांहीं॥ नर्कमैंगयोतौअकेलो॥ अबैंआयोतौअकेलो॥ अठा
सूंभीअकेलोजासी॥ तीसूंम्हारैअनंतदर्शनअनंतग्यानअनंतसुषअनंतवीर्ययोपरिवार
सासतौहैं॥ सोम्हारीलारहै॥ अबैंअन्यत्वप्रेक्षाकौंचिंतवनकरैहैं॥ देषो भाईएछहूंद्रव्यअना
दिकालकाभिन्नभिन्नन्याराएकछेत्रावगाहिलेतिष्टैहैं॥ कोईद्रव्यकाहूसूंमिलैनांहीं॥ असा
अनादिवस्तुकास्वभावहैं॥ तामैंसंदेहनांहीं॥ मैंचैतन्यस्वरूपअमूर्तीक॥ अरयोसरीरजडमूर्ती
क॥ तासौंमैंकैसैंमिल्या॥ ईकौस्वभावन्यारो॥ म्हारोस्वभावन्यारो॥ ईकाप्रदेसन्यारा॥ म्हाराप्रदेसन्या
रा॥ ईकाद्रव्यगुणपर्यायन्यारा॥ अरम्हाराद्रव्यगुणपर्यायन्यारा॥ सोमैंईसांअभिन्नकैसैंत्रिकाल
भिन्नहूं॥ अबअसुचप्रेक्षाकौंचिंतवनकरैहैं॥ देषो भाईयोसरीरमहाअसुचिहैं॥ अरघिनाव १३९

नौंहैं॥ एतादिनइंसरीरनैंपोषतांकुवा॥ कामपड्यौजदिषेहदिषाय॥ ईसरीरनैंसाराद्वीपसमुद्र
कापांनीसौंपषालिये॥ अरधोइयेतौभीपवित्रनांहीं॥ योजडअचेतनकौअचेतनहीरहै॥ तीसूंबु
धजनअसाईसरीरसौंप्रीतिकरै॥ कदाचिनांहींकरै॥ अबैंआश्रवानप्रेक्षाकाचिंतवनकरैहैं॥ दे
षो भाईमिथ्यात्वअव्रतप्रमादकषायजोगकेद्वारकर्मांकाद्रव्यत्वभावत्वआश्रवकरिसंसारसमुद्र
बिषैंडूवेहै॥ कैसैंडूवैहै॥ जैसैंजिहाजछिद्रकरिसमुद्रबिषैंडूबेहै॥ तैसैंडूबेहै॥ अबैंसंसारानुप्रे
क्षाकाचिंतवनकरैहैं॥ देषो भाईतपसंयमध्यानकरिसंवरहोयहै॥ जैसैंजिहाजकाछिद्रमूंदे॥
जलआवतारहिजायहै॥ तैसैंकर्मआवतारहिजायहै॥ अबैंनिर्जरानुप्रेक्षाकाचिंतवनकरैहै
देषोभाईआत्मकोचिंतवनकरिपूर्वलाकर्मनासकूंप्राप्तिहोयजायहै॥ जैसैंजिहाजमांहीं॥ पांनीउ
छेदनकीयाकुवाजिहाजकूंपारकरैहै॥ तैसैंआत्माकौंकर्मरूपीबोझसूंहलकोकरिमुक्तिकौंप्राप्ति
करैहै॥ अबैंलोकानुप्रेक्षाकाचिंतवनकरैहैं॥ देषो भाईएत्रैलोकषटद्रव्यकाबन्याहै॥ अरकोईकर्ता
नांहीं॥ षाषटूद्रव्यामिलित्रैलोककूंनिपजायाहैं॥ अबैधर्मानुप्रेक्षाकाचिंतवनकरैहैं॥ देषो भाईधर्म

हीसंसारमैसारहैं॥ धर्महीआपनौंमित्रहै॥ धर्मआपनौंसजनहै॥ धर्मबिनांकोऊहितूनांही॥ जासौंध
र्महीसाधनकरौ॥ अरधर्महीआराधनौं॥ जेतात्रैलोकबिषैंउत्कृष्टसुखहैं॥ सोधर्महीकाप्रसादकरिपा॥
वै॥ अरधर्महीकरिमुक्तिपावजेहै॥ सोधर्महीसौंम्हारोनिजलक्षणहै॥ म्हारोनिजस्वभावहै॥ सोईमुं॥
नैंग्रहणकरनौं॥ औरांकरिकांई॥ अबैंदुर्लभभावनाअनुप्रेक्षाकौंचितवनकरैहै॥ देखोभाईसंसारबिषैंएकें
द्रीपर्यायसौंबेइंद्रीपर्यायदुर्लभहै॥ बेइंद्रीसौंतेंद्रीतेइंद्रीसौंचौइंद्रीचौइंद्रीसौंपंचेंद्री॥ तामैंभीमनुष्यपर्या
य॥ अरमनुष्यपर्यायमैंभीधर्मकीसंगति॥ धर्मकासंयोगएहैं॥ अनुक्रमसौंदुर्लभ॥ जसौंदुर्लभजांननौं॥
तामैंभीसम्यक्ग्यांनमहादुर्लभजांननौं॥ असैंवहदेवभावनांभावताहुवा॥ पाछैंआयुर्बलपूरीक
रिमनुष्यपर्यायमैंऊंचपदपावताहुवा॥ अरधर्महीसंसारमैंसारहैं॥ धर्मसमांनऔरहितूनांही॥ औ
रमित्रनांही॥ तासौंसीघ्रहीपापकार्यछोडिवामैंढीलमतिकरौ॥ आपनांहितकावांछीकपुरुषधर्मही
कीवांछाराषौ॥ धर्महीकीसरणिगहौ॥ घणीकहिवाकरिकहा॥ असैंश्रीगुरुप्रश्नकाउत्तरदिया॥ अ
रउपदेसकह्या॥ आसीर्वाददीयाएसुभभावकौंज्ञाताजांनैंहैं॥ भूलिचूकहोयतौसास्त्रमाफिकजां १४०

ननौं॥ अरबुद्धिजनकौंसुद्धकरिलेनां॥ ममदोसनांही॥ इतीस्वर्गनकासुखबर्ननंसंपूर्णं॥ ॐनमःसि
द्धेभ्यः॥ ० ॥ आगैंआपनांइष्टदेवकौंनमस्कारकरिअंतसमाधिमरनताकास्वरूपवर्ननकरि
येहैं॥ सोभव्यजनसुंनिः सोहीलक्षनअबैंबर्णनकरियेहै॥ सोसमाधिनांमनिकषायशांतिप्रणांमकाहैः
ऐसाजाकास्वरूपजांननौं॥ आगैंऔरबिशेषकहियेहै॥ सोसम्यक्ग्यांनीपुरुषहै॥ त्याहकायहसह
जस्वभावहीहै॥ सोसमाधिमरनहीकौंचाहैहैं॥ असीनिरंतरसदैवभावनांवर्तैहै॥ पाछैंमरनेंकोमौ
सरनिकरआवैहै॥ तबऐसासावधांनहोयहै॥ मांनूंसत्तासिंघकैतांईकाउपुरुषनैंललकारा॥ कि
या॥ हेस्यंघअपनांपुरुषार्थकरौ॥ थांऊपरिबैस्यांफौजआंनिकैंप्राप्तभईहै॥ सोगुफावाहरसतावीनि
कसौ॥ जबवैस्यांकाछंदकहिएसमरूकेताइकरूरिहैं॥ तेतैंनिकसिबैस्यांकीफौजनैंजीतौं॥ महंतपुरु
षांकीयाहीरीतिछैं॥ सोऊठतैंपहलीउनसंऐसाबचनवैंपुरषकासुनि॥ साईलस्यंघ ततक्षनउठबौ
हुवौ॥ अरऐसीगुंजारकरताहुवौ॥ मांनौंअसाढमांसकेबिषैंइंद्रहीधडूक्यौ॥ सोऐसासिंघकीगुंजा
रसुंणि॥ बैस्यांकीफौजबिषैंहोधाहस्तीघोडापुरुषछातीआगांनैंपैंडनधरताहुवा॥ कैसाहैसोहस्ती॥

कासमूहत्यांकाफ़ूटाबिषैंसिंघकाआकारपैठिगयाहै॥ सोहस्तीधीरजनाहिधरैहै॥ सोकैसैंनांहीध
रैहै॥ षिणषिणमैंनिहारकरैहै॥ सिंघकापराक्रमसहास्यानांहीजायहै॥ त्यौंहीसम्यक्ग्यांनीपुरुष
सोईभयासारदूलस्यंघताकैअष्टकर्मसोईभयाबैरी॥ सोमरनसमैबिषैंयाकाबिशेषपनैंजीतवाकौं
उमगकरैहै॥ सोअैसाकर्मांकाअनुस्वारिजांनिसम्यक्ग्यांनीपुरुषहै॥ तेसिंघांकीनांईसावधानहोयहै
अरकायरतानैंदूरिहीतैंछांडैहै॥ बहुरिकैसाहैसम्यक्दृष्टीपुरुषत्यांकीहृदयकैबिषैंआत्मांस्वरू
पहैदीप्यमांनपरगटप्रतिभासैहै॥ कैसाप्रतिभासैहै॥ ग्यांनजोतिनैंलीयांआनंदरसकरिझरतौ॥ अै
सासाख्यातपुरुषाकारअमूर्तीकचैतन्यधातुकौपिंडअनंतगुणांकरिपूरिपूरित॥ अैसाचैतन्यदेवआपकौं
जांनैहै॥ ताकाअतिसयकरिपरद्रव्यसौंअंसमात्रभीरंजितकहियेरागीनांहीहोयहै॥ कौंनांहीहो
यहै॥ अपनांनिजस्वरूपतौवीतरागज्ञाताद्रष्टापरद्रव्यसौंभिन्नसासैताअबिनासीजांन्याहै॥ अरप
रद्रव्यकागलनपूरणषिनभंगुरअैसासताअपनैंस्वभावसौंभिन्नभलीभांतिनीकैजांन्यां॥ तातैंस
म्यक्ग्यांनीपुरुषमरणसौंकैसैंडरै॥ सोसम्यक्ग्यांनीपुरुषमरनसमैंकालमौसरबिषैंकांईभावना॥

भावे नां भावे॥ अरकांईबिचारै॥ अैसाजांनैंहै॥ अबैंइसरीरकाआयुर्बलतुछहै॥ एचिह्नमूंनैंप्रतिभासै
है॥ तातैंमूंनैंअबैंसावधानहोनांउचितहै॥ ढीलकरनांउचितनांहीं॥ जैसैंसुभटरनतूरभेरवाज्यांपा
छैं वैरागुअसवांउपरिचढवाकीढीलछतनमात्रभीनांहीकरैहै॥ बीररसकरिचढिआवैहै॥ कह्यांजा
यबैस्यांसंभिडा॥ अरकह्यांवाबैस्यांकासमहनैंजीतां॥ अैसाजाकाअभिलाषलागिरह्याहै॥ त्यौंही
म्हारैभीअबैकालकाजीतिवाकाअभिप्रायहै॥ सोहेकुटंबबंधुपरिवारकेतुमसुनौंअहोदेषोइस
पुद्गलपर्यायकाचरित्रसोआष्यांदेषतांहीउत्पन्नभया॥ अबैंबिलैजायवालागा॥ सोमैंतौपहलीहीया
कास्वभावबिनासीकजानैंथा॥ सोईअबैंइहआनिमौसरप्राप्तिभया॥ सोअबैंईसरीरकाआयतुछरह्या
है॥ तामैंभीसमयसमयगलताजायहै॥ सोमैंज्ञाताद्रष्टाहूवादेषुंछूं॥ अरमैंयाकापरोसीहूं॥ सोअबैंदे
षुंईसरीरकीआयुर्बलकैसैंपूर्णहोय॥ अरकैसैंसरीरकानासहोये॥ सोमैंताकिरह्याछूं॥ अरतमासगी
रहूवाचरित्रदेषूंछूं॥ सोएअनंतपुद्गलकीपरमांनुवाएकठीहोयपर्यायकूंनिपजायाहै॥ वानिर्मोप्याहैं॥
अरकोईसरीरजुदाहीपदार्थनांहीं॥ अरमेरास्वरूपतौएकचैतन्यस्वभावसासत्ताअबिनासीहै॥

आ०चा० ताकीअद्भुतमहिमांहैं।सोमैंकौनकौनकूंकहूं।बहुरिदेषोइसपुद्गलपर्यायकामहात्म्य।सोअनंत
१४२ परमांनूंवाकाएकसापरनमनएतादिनरह्या।सोएबडाआश्चर्यहै।अबैंयहपुद्गलकपरमांनूंवा
भिन्नभिन्नस्वभावकूंअन्यरूपपरणवैलागीतौयहआश्चर्यनांही।जैसैंलाषांमनुष्यएकगत्तहो
यहैं।मेलानांमपर्यायकूंनिर्मापैहै।अरकेताईकदीर्घकालपर्यंतवेमेलानांमपर्यायजातारहैहै
तौयाकाआश्चर्यगनियै।एतादिनलाषांमनुष्यनकापरिणमनएकसारह्या।ऐसाबिचारदेषनै
वालापुरुषआश्चर्यमांनैहै।पाछैंवेमनुष्यजुदाजुदादशौंदिसानैंगमनकरिजायहैं।तबमेलाकाना
सहोयहै।सोएतौपुरुषांकाअन्यरूपपरणमननांसोएतौयाकास्वभावहीहै।याकाआश्चर्यकैसैं
गिनियै।त्यौंहीअबैंएशरीरअरधाकारकापरणवैहै।तौअबैंएथिरकैसैंरहिसी।अबैंईसरीरपर्याय
काराषिबानैंकोईसामर्थनांही।सोक्यौंसामर्थनांही।सोईकहिएहै।जेतेकत्रिलोकबिषैंपदार्थहैं
सोअपनांस्वभावसंपरणवैहै।कोईकिसिकौंपरणनावैनांही।कोईकिसीकाकरत्तानांही।अरको
ईकिसकाभोगतानांही।आपैंआवैंआपैंजाय।आपैंमिलै।आपैंबिछुरै।आपैंगलै।आपैंपूरै।जोमैंईस १४२

रीरकाकर्त्ताइसकाभोगत्ताकैसैं।अरमेराराष्यासरीरकैसैंरहै।अरमेराहरिकस्यासरीरकैसैंपूरिरकैसैं
हरिहोइ।मेराक्यौंकरतव्यहैहीनांही।झूठंहीकर्तामांनैहै।मैंतौअनादिकालकाषेदषिन्नव्याकु
लव्याकुलहोयमहादुषपावैथा।सोयहबातन्यायहीहै।जाकाकर्त्तव्यतौक्यौंचलैनांही।वेपरद्रव्य
काकर्त्ताहोय।परद्रव्यकूंआपकैस्वभावकैअनुस्वारपरणमावैतेदुषपावैहीपावै।तातैंमैंतौएक
ज्ञायकस्वभावहीकाकरताहौं।अरताहीकाभोक्ताहौं।अरताहीकौंबंदूं।वाताहीकौंअनुभवो
हूं।सोईसरीरकैजातैंमेराकछूभीविगारनांही।अरसरीरकेरहिबेतैंमेराकछुभीसुधारनांही।यासरीर
बिषैंयाजाएगपरणंकाचिमत्कारहै।सोतौमेरास्वभावहै।ईसरीरकासुभावनांही।सरीरतौपरतत्त्वमुर
दाहै।मैंसरीरमांहीसौंनिकस्या।अरसरीरकूंमुरदाजानिदग्धकीया।मेरैंईमुलाजईसरीरकाजग
तआदरकरैहै।जगतकैताईसौषबरिनांही।सौआत्मान्याराहै।अरसरीरन्याराहै।तातैंएजगतभर
मकरिईसरीरकौं।अपनांजांनिममत्ताकरैहै।अरयाकौंजातैंयाकौंबहुतझूरैहै।अरबिशेषसोक
करैहै।कांईसोककरैहै।हायहायहमारापुत्रतूकहांगया।अरहायहायम्हाराषांवंदतूकहांगया

श्रा॰चा॰ अरहायहायपुत्रीतूकहांगई॥ अरहायहायमातातूकहांगई॥ अरहायहायपितातूकहांगयो॥ हायइष्ट
१४३ भ्रातातूकहांगया॥ इत्यादिपुरुषपर्यायकौंसत्यअपनांजांनिअनेंकतरहकाबिलापकरिऊंरैहै॥ अर
महादुषकलेसकौंपावैहै॥ अरग्यांनीपुरुषऐसेबिचारैहै॥ अहोकुणीकापुत्रकुंणीकीपुत्री॥ कुंणीकाभा
वंदकुणीकीस्त्री॥ कूंणकीमाताकौंणकाबस्त्रअरसमस्तइत्यादिएसामग्रीझूठी॥ एसामग्रीकौंएवस्तनां
हीं॥ जैसेंस्वपनांकौराज्यवाइंद्रजालकौतमासौ॥ जैसें भूतकीमाया॥ जैसेंआकासबिषैंबादलसो भासाम
ग्रीदीसतांतौबहुतरमणीकसीलागै॥ परंतुबस्तुस्वभावबिचारतांएकैंभीनांहीं॥ जौबस्तुहोतीतौवहां
थिररहती॥ नासनैंक्यौंनप्राप्तहोती॥ तीसूंमैंऐसाजांनिसर्वत्रैलोकबिषैंपुद्गलकाजेताइकपर्यायहैं
ताकाममत्वछांडूंऊं॥ तैसैंईईसरीरकाममत्वछांडूंहूं॥ सरीरकेजातांमेरापरणांमांबिषैंअंसमात्रभीषेद
नांहीं॥ एसरीरादिसामग्रीहै॥ सोचाहैजैसेपरणवो मेराकछूभीप्रयोजननांहीं॥ भावैछीजो भावैभीजो॥
भावैप्रलयभनैंप्राप्तिहोय॥ भावैंएकठीआंनिमिलो॥ भावैजातीरहोम्हारोक्योंभीमुतलबनांहीं॥ अहो
देषोमोहकास्वभावपरतत्तयहसामग्रीपरबस्तुहै॥ अरतामैंभीबिनासीकहैं पर भवबिषैंदुषदाईहैं॥ १४३

अरइभवबिषैदुषदाईहै॥ तौभीयहसंसारीजीवअपनीजांनिजांनिरत्ताहीकरैहैं॥ सोमैंऐसाचरित्रदेषि
ज्ञातादृष्टाभयाहूं॥ मेराएकछोछागंयानसुभावहै॥ ताहीअवलोकौहौं॥ अरकालकाआगमनदेषिमैंनां
हीडरूंहूं॥ कालतौयासरीरकालागहै॥ मेरालागनांहीं॥ जैसेंमांषीदोडिदोडिमिष्टाबस्तुबिषैंहीजायजा
यबैठैहै॥ परिअग्निबिषैंकदाचिबैठैनांहीं॥ त्यौंहीएकालदौडिसरीरकौंग्रसीभूतकरैहै॥ अरमोसूंदूरा
हीभाजैहै॥ मैंतौअनादिकालकाअविनासीचैतन्यदेवत्रैलोककरिपूज्य॥ इसापदार्थनाबिषैंकालु
काजोरनांहीं॥ सोअबैंकौणमरैअरकौंणजीवै॥ अरकौंनमरणकाभयकरै॥ मोनैंतौमरणदीसतानांहीं
मरैछैसोपहलीहीमूवाछा अरजीवहै सोपहल्यांहीजीवैसोमरैनांहीं॥ मोहदृष्टिकरिअन्यथाभासैछा
अबैंमेरामोहकर्मबिलैगया॥ सोजैसावस्तुकास्वभावछातैसाहीमोनैंप्रतिभास्या॥ जाबिषैंनामरणम
रणअरसुषअरदुषदेष्यानांहीं॥ तौअबमैंकाहेकासोचकरूं॥ मैंतौएकचैतन्यधातमयमूर्त्तिसासताब
न्याहूं॥ ताकाअवलोकनकरतांमरणादिककौदुषकैसैंब्यापै॥ बहुरिकैसाहूंमैं॥ ग्यानानंदनिजरस
करिपूर्णभयाहूं॥ अरसुद्धोपयोगीहूं॥ वाग्यांनरसनैंआचरूंहूं॥ वाग्यांनअंजुलीकरिसुद्धाअमृतनैंपी

MEMORIAL

आ०वा० ऊंहूं॥एसुषअम्रतमेरासुभावथकीउत्पन्नभयाहैं॥तातैंस्वाधीनहैंपराधीननांही॥तातैंताकादेषेबि
१४४ षैंभोगनांही॥बहुरिकैसाहूंमैंअपनेंनिजस्वभावबिषैंस्थितहैं॥अडोलहूं॥अकंपहूं॥बहुरिकैसाहूंमैं
सुरसकरिनिरभयकहियअतिसयकरिभरयाहूं॥अरज्वलितकहियेंदेदीप्यमांनग्यांनज्योतिकरि
प्रगटअपनेंहीनिजस्वभावबिषैंतिष्टोंहूं॥देषोअद्भुतईचैतन्यस्वरूपकीमहिमांताकाग्यांनस्वभाव
बिषैं॥समस्तज्ञेयपदार्थस्वयमेवझलकैहैं॥पणिज्ञेयरूपनांहीपरणवैहैं॥अरताकेजांणताविकल्प
ताअंसमात्रभीनांहीहोयहै॥तातैंनिर्बिकल्पअभोगितअतेंद्रीअनोपमबाधारहितहै॥तोअषंड
सुषउपजैहैं॥सोएसुषसंसारबिषैंदुर्लभहैं॥सुषकीआभासाअग्यांनीजीवांकूंभासैहैं॥बहुरिकैसाहूं
मैंग्यांनादिगुणकरिपूर्णभरयाहूं॥ग्यानादिगुणसमयएकवस्तुवाअनंतगुणंकीषांनिहूं॥बहुरिकै
साहूं॥मेराचैतन्यस्वरूपजहांतहांचैतन्यसर्वांगबिषैव्याप्तिहै॥जैसैंलोंणकीडलीकापिंडबिषैंसर्वांग
षाररसव्यापै॥अथवाजैसैंसक्करकीडलीकापिंडबिषैंसर्वांगमीठाकहिये॥अंम्रतरसव्यापितहोयर
ह्याहै॥वेसक्करकीकणिकाछोछाअम्रतमयपिंडहैं॥तैसैंईमैंएकग्यांनमयपिंडबण्यांहूं॥सोबिषैंसर्वांग १४४

ग्यांनमयहीग्यांनपुंजहैं॥तैसैंग्यांनकासरीरहैकआकारहै॥तैसैंमांनिमांनिसरीरकानिमत्तपायसरी
का रकेआॅरमेराआकाररहीहैं॥अरवस्तुस्वभावबिचारतांतीनलोकप्रमांणमेराआकारहै॥सोअवगा
हणासक्तिकरिएतेआकारहैं॥सोअवगाहणसक्तिकरिएतेआकारबिषैंएताआकारसामांहीगया
है॥एकप्रदेशबिषैंअसंष्यातप्रदेशभिंन्नभिंन्नतिष्टेहैं॥सर्बज्ञदेवजुदाजुदाऐसैंहीदेषैहैं॥यामैंसंको
कबिस्तारसहितहै॥बहुरिकैसाहैमेरानिजस्वरूप॥अनंतआत्मीकसुषकाभोक्ताहैं॥एकसुषहीकी
मूर्तिहै॥चैतन्यपुरुषाकारहै॥जैसैंमांटीकासांचाबिषैं॥एकसुद्धरूपामयधातकापिंडबिंबनिर्मापितहै॥
तैसैंईआत्माकास्वभावईसरीरबिषैंजांननां॥मांटीकासांचाकालपायगलिगयावाबिलैगयावाफूटि
जायतबवोबिंबज्योंकात्योंरहै॥बिंबकाबिनासनांही॥बस्तुपहलीहोयथी॥एककानासहोतैंदूजाका
नांसकैसैंहोय॥एसर्बप्रकारनेभ्रमहैं॥त्योंहीकालपायएशरीरगलैहैंतौगलो॥मेरास्वभावकातौबिना
सहैनांही॥मैंकाहेकासोककरूं॥बहुरिकैसाहैंयहचैतन्यस्वरूप॥आकासवतनिर्मलसूंनिर्मलहैं॥
आकासबिषैंकोईजातिकाबिकारनांही॥एकसूक्ष्मनिर्मलताकापिंडहैं॥अरकोईआकासनैंपुद्गल

करिछेद्या भेद्या चाहै। अर अग्नि करि वाल्या चाहै। अर पांनी करि गाल्या चाहै। तौ वह आकास छेद्या भेद्या
न जाइ। अर कैसें जलै अर गलै। कदाचि भी वाका नांस नांही। बहुरि कोई आकास कै तांई पकड्या चाहै। अ
र तोड्या चाहै। तौ कैसें पकड्या तोड्या जाय। त्यौंही मैं तौ आकासवत् अमूर्त्तीक निर्मलसं निर्मल निर्विकार छौ छा
निर्मलता का एक पिंड हूं। मेरा नास किसी बात करि होय नांही। काहू प्रकार करि नांही होय। यह नेम है।
जो आकास का नांस होइ तौ मेरा नांस होइ। ऐसा जांनना। पणि आकास का स्वभाव मैं अर मेरा स्वभाव मैं ए
क विसेष है। आकास तौ जड अमूर्त्तीक पदार्थ है। अर मैं चैतन्य अमूर्त्तीक पदार्थ हूं। जैसैं चैतन्य था तौ ऐसा
विचार भया। सो यह आकास जड है। अर मैं चैतन्य हूं। मेरे विद्यमांन परज्ञांनपना दीसै है। आकास दी सत्ता
नांही। यह निःसंदेह है। बहुरि कैसा हूं मैं। जैसा सीसा एक छौछा स्वछिशक्ति का ही पिंड हूं। वाकी स्वछिश
क्ति विषै स्वछिशक्ति स्वयमेव ही है। घटपटादि पदार्थ आंनि झलकै है। सीसा पदार्थ स्वयमेव झलकै है।
ऐसी स्वछिशक्ति सु आत्म व्यापि करि स्वभाव विषैं तिष्टूं हूं। सर्वांग विषैं एक स्वछिता भरि रही है। मांनूं य
ह ज्ञेय पदार्थ स्वछता मय होय गया है। पणि स्वछिता न्यारी है। अर ज्ञेय पदार्थ न्यारे है। सो एस्वछिशक्ति २४५

का स्वभाव है। उस विषैं पदार्थ का प्रतिबिंब आंनि ही पडै है। बहुरि कैसा हूं मैं। अतिंत अतिसय करि निर्म
ल ज्ञात प्रगट ग्यांनपुंज बन्या है। अर अत्यंत शांति रस करि पूर्ण भर्या है। एक अभेद निराकुलता क
रि व्याप्ति हूं। बहुरि कैसा है मेरा चैतन्य स्वरूप। आपनी अनंत महिमा करि बिराजमांन है। कोई का सहा
य नांही वाचै है नांही। अर स्वभाव नै धर्‍यां है। स्वयंभू है। एक अखंड ग्यांनमूर्त्ती परद्रव्य सौं भिंन्न सास
ता अबिनासी परमदेव ही है। अर ई उपरांति उत्कृष्ट देव कौंन कौं मांनिये। जे त्रिलोक त्रिकाल विषै हो
होय तौ मांनिये। बहुरि कैसा है यह ग्यांनस्वरूप। आपनां स्वभाव छोडि अन्यरूप नांही परणवै है।
निजस्वभाव की मर्यादा नांही तजै है। जैसैं समुद्र जल का समूह करि पूर्ण भर्या है। परंतु स्वभाव कूं छो
डि अंतगमन नांही करै है। आपनी तरंगावली सोई भई लहरि त्यां करि आपनां स्वभाव विषैं भ्रमन
करै है। ऐसा अद्भुत महिमा करि बिराजमांन मेरा स्वरूप परमदेव ई सरीर सूं न्यारा अनादि काल का
तिष्टै है। मेरा अर ई सरीर का पाडौसी का सा संयोग है। मेरा स्वभाव अन्य प्रकार या का स्वभाव अन्य प्रकार
या का परिणमन अन्य प्रकार। सो अबै ई सरीर सौं राग द्वेष नांही। राग द्वेष है सो जगत विषैं निंद है। अर प

रलोकविषैंमहाउषदाईहैं ॥ एरागद्वेषएकमोहहीतैंउपजैहैं ॥ जीकैमोहबिलैगया ॥ ताकैरागद्वेषभीबि
लैगया ॥ मोहकरिपरद्रव्यविषैंअहंकारममकारउपजैहै ॥ सोएद्रव्यहैसोईमैंहूं ॥ असातोअहंका
रपरयद्रव्यमेराहैं ॥ असाममकारउपजैहैं ॥ पाछैंवेसामग्रीचाहैतौ ॥ आवैनांहींहैं ॥ छोडीजातीनर
हैहैं ॥ पाछैंएआत्मापेहरिवन्नहोयहैं ॥ अरजेसर्वसामग्रीपैल्हांकीजानिजेतौकाहेकावाकाआ
वाजावाकाबिकल्पउपजै ॥ तातैंमेरेमोहपल्हैंहीबिलैगयाहैं ॥ अरमैंपहल्हैंहीसरीरादिसामिग्रीबि
रानीहैतौ ॥ अबैभीमेरैयासरीरकेजातैंकाहेकाबिकल्पउपजैं ॥ बिकल्पउपार्जिवावाल्हासकाभै
भलीभांतिनासकीया ॥ तीसौंमैंनिर्बिकल्पपआदमयनिजस्वरूपनैंबारंबारसंभालतावायाद
करतास्वभावबिषैंतिष्टूंहूं ॥ ईहांकोईकहैयहसरीरतुम्हारातौनांहै ॥ परंतुईसरीरकानिमितक
रिईहीमनुष्यपर्यायबिषैंसुद्धोपयोगकासाधनभलीभांतिहोतायो ॥ ताकाउपगारजांनियाका
राषनेंकाउद्यमबनैंतौउचितहैं ॥ यामैंटोटोतौनांहीं ॥ ताकूंकहियेहै ॥ हेभाई तैंअसाकह्यासोया
वातहमभीजांनैहैं मनुष्यपर्यायबिषैंसुद्धोपयोगकोसाधनअरग्यांनाभ्यासकासाधनअरग्यांन २४६

बैरागकीबधवारी ॥ इत्यादिअनेकगुणांकीबधवारीप्राप्तिहोयहैं ॥ जैसीअन्यपर्यायबिषैंदुर्लभहैं ॥ प
रंतुआपणांसंयमादिगुणरह्यांसरीररहैहैं ॥ तौभलांईहै ॥ म्हाकैकोईसरीरसूंबैरतौहैनांहीं ॥ अरन
हीरहैछैतौआपणांसंयमादिगुणनिर्विघ्नपणैंराषणा ॥ अरसरीरकाममत्वअवस्यछोडनां ॥ सरीर
केबसतैंसंयमादिगुणकदाचिभीषोवणांनांही ॥ जैसैंकोईपुरुषरत्नांकालोभीपरदेससूंआयर
त्नद्वीपबिषैं ॥ फूसकीझूंपडीकूंनिर्मापैहैं ॥ अरउसझूंपडीमरत्नल्यायल्यायएकठाकरैहै ॥ अरजे
झूंपडीकैअग्निलागिजाय ॥ तौवहबिचक्षनपुरुषअसाबिचारकरै ॥ सोकोईबिचारकरिअ
ग्निकानिवारनकीजे ॥ अररत्नासहितइसझूंपडीकूंराषियेयाझूंपडीरहसीतौफेरिभीईकैआसि
रैधनांरत्ननभेलाकरिस्यां ॥ सोवोपुरुषअग्निबुझतीतीजांनैतौरत्नराषिकरिबुझावै ॥ अरकोईकारण
असाहैषैकैयहरत्नलगयांझूंपडीरहेहै ॥ तौकदाचिभीझूंपडीराषिवाकोजतनकरैनांहीं ॥ झूंपडीनैंतौबलि
वादे ॥ अरआपसंपूर्णरत्नलेआपनांदेसउठिआवै ॥ पाछैंएकदोयरत्नबेचिअनेंकतरहकीबिभूतिनैंभो
गवै ॥ अरअनेकप्रकारकेस्वर्णरूपामईमंदिरकराय महलबाहबेलीवावागादिकनिर्मापै ॥ पाछैंवाबिषैं

स्थित्तिकरिरंगुरागषुसबोयसंयुक्तआनंदकीडाकरैहैं॥ अरनिर्भैरूवोअत्यंतसुषसोंतिष्टै॥ सोही भेद
बिज्ञांनीपुरुषहै तेसरीरकैवास्तैसंयमादिगुणबिषैंअतीचार भी लगावैनांही॥ अरऐसाबिचारै॥ सोसंय
मादिगुणरहिसीतौरूं बिदेहक्षेत्रबिषैंजायऔतारलेस्यौं॥ अरजन्मजन्मकासंच्यापापताकाअतिसै
करिनासकरिस्यूं॥ अरअनेकप्रकारकेसंयमतिनकाग्रहणकरिस्यूं॥ अरश्रीतीर्थंकरकेवली भगवांन
ताकाचरणबिंदबिषैंक्षायकसम्यककाप्रारंभकरिनिष्टापनकरिस्यूं॥ अरअनेकप्रकारकाप्रनबांछि
तप्रश्नकरस्यौं॥ अरअनेकप्रकारकाप्रश्नांकोउतरकरि पदार्थांतत्वांकोस्वरूपमुषत्तैंजांनिस्यौ॥ अरराग
द्वेषसंसारकाकारणहैं त्यांकोसीघ्रपनैंअतिसयकरि जडामूलतैंनासकरिस्यौं॥ अरसरीरपर्मदयालुआ
नंदमयकेवललक्ष्मीकरिसंयुक्तऐसा जिनेंद्रदेवसूंनिजंजनताकास्वरूपकूंदेषिदर्शनरूपीअमृतता
काअतिसैकरिअर्दनकरिवाथुकीम्हाराकर्मकलंकरजधोयाजासी॥ तबरूंपेबित्रहोस्यौं॥ ताकाअति
सयकरिसुद्धोपयोगअत्यंतनिर्मलहोसी॥ तबस्वरूपबिषैंअत्यंतलागिसीतबक्षपकश्रेणीचढिवाकोंसन्मुषहो
स्यौं॥ पाछैंसीघ्रपणैंकर्मघणेंजेसत्रुतासूंअडिकैराडिकरिस्यौं॥ अरपटकपटकभचकभचकजडामूलसों १४७

नांसिकरिकैंकेवलग्यांनउपावस्यूं॥ पाछैंएकसमैंबिषैंसमस्तलोकालोककेत्रिकालसंबंधीचराचरपदार्थ
सोमूंनैंभीदीसिसी॥ पाछैंऐसाहीस्वभावसासतारहिसी॥ तौमैंअसिलषिमीकास्वामी॥ ताकेईसरीरसों
कैसैंममत्वउपजे॥ ऐसैंसम्यकग्यांनीपुरुषबिचारकरतातिष्टैहैं॥ म्हारैदोन्यौंहीतरहैआनंदहैं॥ जेसरी
रहोसीतौफेरिमैंभी सुद्धोपयोगनैंहीआराधस्यूं॥ अरसरीरनहीरहिसीतौतौपरलोकबिषैंजाय सुद्धोपयो
गनैंहीआराधसैं॥ सोम्हारैकोईप्रकारसुद्धोपयोगकेसेवनमैंतौबिघ्रदीसैनांही॥ तौम्हाराकहिकापरिणं
मांबिषैंक्लेशउपजे॥ अरम्हारापरिणांमसुद्धस्वरूपसैंअत्यंतआशक्तताकूंछुडावनें॥ ब्रह्माबिष्णुमहेश्वर
इंद्रधरनेंद्रआदिकोईबलावानैंसमर्थनांही॥ एकमोहकर्मसमर्थथात्यांनैंतौम्हेपहल्यांहीजीत्यासो॥
अबेंम्हारैत्रिलोकबिषैंबेरीरह्योनांही॥ अरबैरभीनांही॥ त्रिकालत्रिलोकबिषैंउषनांही॥ तौहेसाजाजन
केलोगौंमेरैईमरणकाभयकैसैंकहिये॥ तीसूंमैंआजिसर्बप्रकारकरिनर्भैयकूयारूं॥ येयाबातनीकैंक
रिजांनौं॥ अरयामैंसंदेहमत्तिबिचारौ॥ ऐसैंसुद्धोपयोगीपुरुषसरीरकीथितिपूरीजांनैंहैं॥ तबऐसाबि
चारिकरिआनंदमैंरहैहैं॥ कोईतरहकीआकुलतानाउपजावैहैं॥ आकुलताहैसोईसंसारकाबीजहैं॥

रि

आ०चा० इसहीबीजकैंसंसारकीस्थितिहै आकुलताकरिअनेककालकासंच्याहुवासंयमादिगुणअग्निविषेंरुईजस्म
१४८ होयतैसैंनस्महोय तातैंसम्यकदृष्टीपुरुषछैंत्यानैंकोईप्रकारआकुलताकरनीनांहीं निग्रैएकस्वरूप
हीकाबारंबारबिचारकरनां वाहीकूंवारंवारदेषनां वाहीकेगुननिकाचितवनकरनां वाहीकेपर्यायकी
अवस्थाकाबिचारकरनां वाहीकासमरणकरनां वाहीविषैंस्थितरहनां ईसंसारमैंक्यौंभीसारनांहीं
जैसारहोतातौतीर्थंकरदेवक्यांनैंछोडते भीस्यौंअबैंमूनैनिश्चैतोम्हारौस्वरूपहीमूंनैंसरनिहैं वाह्यिपंच
परमेष्टीअरजिनवाणीवारत्नत्रयधर्मसरणिहैं अरकदाचिस्वपनांमात्रवा भोलैबिसरैभीम्हाराअभिप्राय
करिमांनैंसरणनांहींहैं म्हारेयहनेमहैं ऐसाबिचारकरिफेरिस्वरूपयोगविषैंलगावै अरफेरिभीऊंठा
सूंउपयोगचलैउत्तरैतौ अर्हंतसिद्धताकाआत्मीकस्वरूपताकाअवलोकनकरै अरताकाद्रव्यगुणपर्या
यबिचारै पाछैंवाकाद्रव्यगुणपर्यायबिचारताबिचारताउपयोगनिर्मलहोय तबफेरिअपनेंस्वरूपवि
षैंलगाअरआपनांस्वरूपसारिषोअर्हंतसिद्धकोस्वरूपछैं अरपर्यायस्वभावविषैफेरहीहैं अरमैंसूं
सोद्रव्यत्वस्वभावकाग्राहिकहूं भीसूंअर्हंतकाध्यांनकरतांआत्माकाध्यांनभीकैसधैहैं अर्हंतका १४८

स्वरूपमैंअरआत्माकास्वरूपमैंफेरनांहीं भावेतौअर्हंतकोध्यांनकरो भावेआत्माकोध्यांनकरो ऐ
सोबिचारकरतौसम्यकदृष्टीपुरुषसावधांनहुवौस्वभावविषैंतिष्टैहैं ऐठाआगैंअबैंकोईबिचारक
रैहैं अरकैसैंकुटंबपरिवारादिकौममत्वछुडावै सोईकहियेहैं अहोईसरीरकेंमातापितातुमभीकैं
करिजांनौं यहसरीरएतादिनतुम्हाराछा अबैंतुम्हारानांहीं अबैंयाआयुबलपुरणभया कोई
काराष्यारहैनांहीं याकीएतीहीस्थितिथी सोअबैंयासौंममत्वछांडौ अबैंयासूंममत्वकरिवाकरि
कांई अबैंप्रीतिकरिवोहैं सोदुषकोकारणहै यौसरीरपर्यायहै सोइंद्रादिकदेवकौंभीबिनासीकक
हैहैं यामरणसमैंअबैंइंद्रादिकदेवभीछैंतेभीजुलकजुलकमोंढोचोघताहैं सर्बदेवांकासमूहदे
षतांकालकिंकरछैं सोउठायलेहीजाय याकिसीकीझक्तिनांहीं कालकीडाढमैंसूंछुडायवि
णमात्रतौराषै सौयोकालकिंकरएकनैंलगायलेजायतौसर्बकाभक्षणकरिसी अरअगंनकरि
कालकेबसरहसीत्यांकीयाहीगतिहोसी सोथेमोहकबसकरियराग्यासरीरसौंममत्वकरौछौ अ
रराष्योचाहौछौ सोथांनैंमोहकाबसकरिसंसारकौंचरित्रकरिऊंठाहीसैनांहीं सोपैलाकोसरीरतौ

MEMORIAL

आ०चा० राषिबौ हूरिहीरह्यो। थेथांकौतौ सरीरपह्लीराषो। पाछें औरांकाराषिवाकोउपायकीज्यौं थांकी
२४९ या भर्मबुद्धि छै सो वृथाहीदुषके अर्थि छै थानैं प्रतित्तयादीसैनांहींछैं। आजिपह्लीईसंसारवि
षैंकाल्लकोईनैनछांड्यौ अबैंकहीनैंनछोडिसी सोहायदेषो आश्चर्यकीवातथेनि भैंकुवातिष्ठौ
छौसायोथांकेकौंनअगपांनपणौंछैं। अरथांकौ कोईहोणहारछैं सोरूंनहीजांणुंछुं तीसौंरूंथा
नैंपूछूंछूं। थांनैंआपापरकीक्यौंषवरभीछैं सोम्हेकौंनछां अरम्हेकैठासंआयाछां अरम्हेपजीय
पूरीकरिकठेजास्यां। अरपुत्रादिसंम्हेप्रीतिकरांछांसोकौंणछैं। अरएतादिनम्हांकोपुत्रकठेछोः
अबैंम्हाकेपुत्रकीममताबुद्धिहुई। अरयाकाबियोगकोम्हानैंसोकउपज्यौयासूं अबैंथेसावधां
नहोइबिचारकरो। अरभ्रमरूपमतिकरो। अरथेतौथांकोकार्यबिचास्यांसुषपावोला। परकौका
र्य अकार्यपलाकेहाथिछैं। थांकौ कर्तव्य क्यौं भीनांहीं। थेवृथाहीषेदषिन्नक्यौंप्रवर्तौहो। अ
रआपणांआपानैंमोहकेबसिकरिसंसारबिषैंक्यौंडबोवोछो। संसारकेबिषैंनर्कादिककादुषथा
नैंहीसहनांपडेला। थांकेबदलैंऔरतौनहीसहेला। जिनधर्मकौऔसोउपदेशहैनांहीं सोपापक २४९

रैकोईअरभोगवैकोई। अरतौसंमूनैंअपूठीथांकीदयाआवैहैं। सोथेम्हारौउपदेसग्रहणकरो।
म्हारौउपदेसथांनैंमहासुषदाईछै। सोकैसैंसुषदाईछैं सोहीकहियेहै। म्हेतौयथार्थजिनधर्म
कौस्वरुपजांन्यौंछै। अरथेनजांन्यौंछै। तीसूंथांनैमोहदुषदेछैं। अरम्हेमोहनैंजिनधर्मकाप्रतापकरि
सुलभपणैंजांन्यौं एकजिनधर्मकौंअतिसैजान्यौ। तीसूंथांनैंभीजिनधर्मकोस्वरूपबिचारिबौकार्यकारी
है। देषोथेप्रतिच्चज्ञाताद्दृष्टाप्रतिच्चआत्मांछो। अरसरीरादिपर्यायपरवस्तुछैं। आपनांस्वभावरूपस्वयमे
वपरणवैछै कहीकाराष्यारहैनांही। भोलाजीव भर्मबुद्धि छै। तीसूंथे भर्मबुद्धि छोडो। अरएकआपाप
रकीठीकतौकरो। तीमैंआपणौंहितसधैसोहीकरो। बिचक्षणपुरुषांकीयाहीरीतिछैं। एकआपनांहित
नैंहीचाहै। बिनांप्रयोजनएकपैंडभीधरैनांही। अरथेमोसूंममत्वतजो। जेतौघणौंकरस्यौंतेतौदुषकै
अर्थिहोसी। कारिजक्यौंभीसरनौंनांही। योजीवअनंतबार अनंतपर्यायबिषैंन्याराम्हारामातापि
तापाया सोवअबैंकठैगया। अरअनंतबारईजीवकैस्त्रीपुत्रपुत्रीकासंयोगमिल्या सोअबैंवेकहां
गया। अरपर्यायपर्यायकेबिषैंभ्राताकुटंबपरिवारादिघणांहीपाया। सोअबैंवेकहांगया। सोसंसा

श्रा०चा० रीजीवछैसोतौपर्जायबुधीछैं।जैसीपर्यायधरैतैसोहीआपोमांनै।अवैपर्यायसंतनमईहोयपरिनमैं
१५० याजांणैनहींपर्यायकास्वभावछैतेबिनासीकछैं।अरम्हांकोस्वरूपछैसोनिजसारतौअविनासीछै
ऐसाबिचारउपजैनहींतीसौंथांनैंकोईदूषनछैं।योमोहकौमहात्मछै।परतत्त्वझूठीवातनैंसांची
दिषावैहै।अरजाकैमोहगलिगयोसोभेदबिग्यांनीपुरुषछैं।तेईपर्यायसौंकैसैंआपोमानैं।अरकै
सैंयाकौंसत्यजांनैं।अरकौंनकौचलायोचलै।कदाचिनचलै।तीसूंअबमैंरेग्यांनभावयथार्थभ
योहै।अरआपापरकीठीकतौभईहै।सोमोनैंठिगिवासमर्थअबकौंनछैं।अनादिकालकौपर्या
यपर्यायबिषैंघणौंहीठिगायआयो।जाहीकरिभवभवबिषैंजामनमरणकादुषसह्या।तीसूंथेअबै
नीकैंकरिजानौं।थांकैअरम्हारैएताहीदिनांकौसंयोगसंबंधछो।सोअबैपूरोहुवो।सोथानैंभीअबै
आत्मकारिजकरिबोउचितहै।मोहकरिवोउचितनांही।तीसौंनिजस्वरूपआपनौंसासतौछैत्यानैं
संम्हालो।तामैंकोईतरहकोषेदनांही।कहीपासिजाचनौंनांही।आपनांहीघरमैंमहाअमोलिकनि
धिहै।तिहिनैंसम्हाल्यांजन्मजन्मकादुषबिलैजायहै।जेताइकसंसारबिषैंदुषछै।तेताइकआपाजा १५०

त्यांबिनांहै।तीसूंएकग्यांननैंहीआराधो।ग्यांनस्वरूपभावछैसोआपनोनिजस्वरूपछै।ताकौंपाययौजी
वमहासुषीहोयछै।ताकापायांहीबिनांदुषीछै।तीसौंयोप्रतत्त्वदेषनजांननहारौज्ञायकपुरुषसरीर
सौंभिंन।ऐसोअपनौंस्वभावताकौंछोडिऔरकिसीबातबिषैंप्रीतिकरै।जैसैंसोलवास्वर्गकौकल्पवा
सीदेवप्यलकैअर्थि।मध्यलोकबिषैंआयअरएककोईरंकपुरुषताकायशरीरसैंपैठोअरवेरंककीसीक्रि
याकरिवालाग्यो।कांईक्रियाकरिवालागो।कदेतौकाष्टकौभारोमांथैधरिबाजारबिषैंवेचिबाचाल्यो।अरकदे
गारिकौसकोरीलैमातावास्त्रीनैंषैरारीजाचवालाग्यो।कदेकंकडीकूंलषिवालाग्यो।अरकदेराजादिकपैंजा
यजाचनांकरिवालाग्यो।महाराजहूंअजीवकारिघणौंदुषीहूंम्हारीप्रतिपालनांकरो।कदेटकोमजूरीकौलै
ई।दांतलोकरिकैंषडसीलैघासकाटिवाचाल्यो।अरकदेरूपयादोयरूपयाकौमालगमायरोवालाग्यो।सोकै
सैंरोवालाग्यो।अरेबहारिअबहूंकांईकरिस्यौंम्हारोधनचौरलेगयो।मैंभीठिनिठिकमायकमायएकठौर
कीयोछोसोआजहीजातोरह्यो।सोअबैहूंकैसेंकालपूरोकरिस्यौं।अरकदेनगरकैविषैंभाजडिपडीतबवेव
पुरुषलडकानैंतौकांधैचढायो।अरएकलडकाकीआंगुलीपकडिलीनी।अरस्त्रीवापुत्रीकौंआगैं

करिलीनी॥ अरतामैंछाजलौवाचालनीवाहांडीरांधिवाकीवाबुहारीआदिसामग्रीसंछाबडीभरिली
केमांथैदीनी॥ अरएकदोयगूदडाआदियोटमैंबांधिआपनेमांथैलीनो॥ पाछैंआधीरातिकानगरमैं
सौंनिकस्या॥ पाछैंमारगबिषैंकोईराहगीरबटाऊमिल्यातिपूछताहूवा रे भाईथेकठैचाल्या॥ तबयोपुरु
षसौंकहतौहुवो॥ ईनगरबिषैंबैस्यांकीफौजआईछै॥ सोम्हेंआपनौंघरलेभाग्याछां॥ तीसौंऔरनगर
बिषैंजायगुदरांनकरस्यां॥ इत्यादिनानाप्रकारकेचरित्रकरतो॥ वहकल्पवासीदेव॥ आपणांसोलवांस्व
र्गकीविभूतितीनैंषिंनमात्रभीनांहीबिसरैहै॥ वाबिभूतिकाअवलोकनकरिमहासुषीहुवाबिचरैहै
वारंकपुरुषकेपर्यायबिषैंभईजेनानाप्राकारकीअवस्थाबिषैंहीआवेहै॥ सोमैंसिद्धसमानआत्म
द्रव्यईपर्यायांबिषैंनानाप्रकारकीचेष्टाकरताथकाअपनीमोहलक्ष्मीनैंनांहींबिसरूंछूं॥ तोहालोगांको
मैंकाहेकाभयकरूं॥ यहश्रेष्ठआगैंस्त्रीनिकाममत्वछुडावैहै॥ सोईकहियेहै॥ अहोसरीरकीस्त्रीअबैंतू
ईसरीरसूंममत्वछांडि॥ तेराअरईसरीरकाएताहीसंजोगथा॥ सोअबैंपूराहुवा॥ तेरीगर्जईसरीरसूंअबैं
सरणीनांहीं॥ तीसूंतूअबैंमोहछांडि॥ बिनांप्रयोजनषेदकरैमति॥ अरयाराराष्यासरीररहैछैतोराषिमैंतो

नैंबरजूंनांहीं॥ अरजोथाराराष्यासरीररहैईनछैतोमैंकांईकरूं॥ अरजेतूंविचारकरिदेषैतोतूभीआत्माहै
मैंभीआत्माहूं॥ स्त्रीपुरुषकीपर्यायहै॥ सोपुद्गलीकहैतासौंकैसीप्रीति॥ शरीरजड॥ अरआत्माचेतन्य॥ ऊ
टबैलकासाजोडा॥ सोयहसंजोगकेसैंबनै॥ अरतेरापर्यायहैसोभीतूचंचलजांनि॥ तीसूंअपनांहेतक्यौं
नैंबिचारै॥ हेस्त्रीएतादिनभोगकीयातांकरिकांईसिद्धिहुई॥ तोअबैंसिद्धकांईहोनीछै॥ वृथाहीभो
गांकरिआत्मानैंसंसारबिषैंबोड्यो॥ यामरणसमैंजांनीनांहीं॥ आपमुवापाछैंतीनलोककीसंपदाझूंठी॥
तीसौंम्हांकीपर्यायकौंथानैंहरेककरनौंउचितनांहीं॥ जोतूम्हाकीप्यारीछैतो॥ म्हांकौधर्मकोउपदेस
क्यौंदे॥ याथांकीबिरियांछै॥ अरजेतूमतलबहीकीसगीहैतौतूथारीजांनैं॥ म्हेथाराडिगायाकिसाडि
गांछां॥ म्हेतोथारीदयाकरिहीथांनैंउपदेसदयोछैं॥ मानैंतोमांनिनांहींमांनैंतोथारोहीहोणहारछैसोहोसी॥
म्हांकौतौअबैंक्यौंमतलबनांहीं॥ तीसौंतूंअबैंम्हांनषेदमूंजा॥ अरपरणांमांनैंशांतिराषि॥ आकुलताम
तिकरै॥ आकुलताछैसोसंसारकोबीजछै॥ ऐसैंस्त्रीकूंसमझायसीषदीनी॥ आगैंनिजकुटंबपरिवारकौंबु
लायसमझावैछैं॥ अहोकुटंबपरिवारकेअबैंईसरीरकीआयुतुछरहीहै॥ अबैंम्हांकैपरलोकनजीकछै

तीसूं अबैं म्हे थांनैं कहां छां । थे म्हांसूं कोई वातकौ रागकी ज्यो मत्ति । थांकै अर म्हांकै च्यार दिनको मिला
पछैं ज्यादा नांही । जैसैं सरायकै बिषैं राहगीर होइ रात्रि बिषैं तिष्टै पाछैं बिछरतां देर करै यह कौन सयांनप
णौं । तीसूं म्हांकै थांसूं षिमां भाव छै थे म्हारा ही आनंदमय तिष्टौ । अनुक्रमसौं सारा ही की या ही रीति होणी छैं
सो अैसौ संसारकौ चरित्र जांनि अैसौ बुधिजन कौंन है सो यासूं प्रीति करै । अैसैं ई कुटंब परिवारकौं समझाय
सीष दीन्ही । अबैं पुत्रकौं बुलाय समझावै है । अहो पुत्र हो थे स्याणां हो म्हांसौं कोई तरहकौ मोहकी ज्यो मत्ति
अर एक जिनेस्वर देवकौ धर्म छै ताकौं नीकै पाल ज्यो थांनैं धर्म ही सुषकारी होयलो । मातापिता सुषकारी नां
हीं । मातापितानैं कोई सुष कर्त्ता मानैं छै सो यह मोहकौ महात्म जांनौ । कोई किसीका कर्त्ता नांही । कोई कि
सीका भोगता नांही । सर्व ही पदार्थ आपनां स्वभावका कर्ता भोगता है । तीसूं अबैं म्हे थांनैं कहां छां
जै थे बिवहारमात्र म्हांकी आग्या मांनौं छौ तो म्हे कहां सो करौ । प्रथम तौ थे देव गुरु धर्मकी अवगाढ गा
ढ प्रतीत करौ । अर साधर्म्यांसौं मित्रताई करौ । अर दांन तप सील संयम तासूं अनुराग करौ । अर स्वपर
बिषैं भेदबिज्ञांनका उपाय करौ । अर संसारी जीवांसूं ममत भाव कहियै प्रीत्ति ताकौं छोडौ । संसारी १५२

जीवांकी संगत्ति संसार बिषैं अनादिकालकौ जीव म्हा दुष पायो छै । तानैं सरागी पुरुषांकी संगत्ति अवस्य
छोडनीं । अर धर्मात्मां पुरुषांकी संगत्ति करनीं । अर धर्मात्मा पुरुषांकी संगति छै सो ई लोक बिषैं अर प
रलोक बिषैं महा सुषदाई छैं । ई लोक बिषैं तो महा निराकुलता सुषकी प्राप्ति होय है । अर जसकी प्राप्ति
होय है । अर परलोक बिषैं स्वर्गादिकका सुषनैं पाय मोक्ष बिषैं सिवरमणीकौ भरतार होय है । अर नि
राकुलत्व अतेंद्री अनोपम्य अबाधार हित सासता अबिनासी सुषनैं भोगवै है । जीसूं हे पुत्र थांनैं म्हांका
वचन सांचा दीसै छै । अर यामैं थांकौ भलो होनौं थांनैं दीसै छै तो म्हाका बचन अंगीकार करौ । अर थां
नैं म्हांका वचन झूठा दीसै अर यामैं थाकौ भलौ होवो नां ही दीसै छै तो म्हांकौ बचन अंगीकार मति क
रौ । म्हांकौ थांसूं कोई बात्तकौ प्रयोजन नांही । दयाबुधि करि थांनैं उपदेस दीयौ छै । सो मानौ मांनौं न ही
मांनौं तो थांकी थे जांनौं । अबैं वसम्यकदृष्टी पुरुष आपनी आयु नजीक तुछ जानैं है । तब दांन पुन्य
करणो होय सो आपणां हाथसूं करै है । पाछैं जेता पुरुषांसौं बतलावणौ होइ तीसूं बतलाय निसल्य
होइ है । पछैं सर्ब कर्मांके नात्ताके जा पुरुष स्त्री ताकूं सीष देय । अर धर्मके नात्ताके जे पुरुष तिनकौं बुला

यनषैराषैहैं अरआपनांआपनांआयुनियमकरिपूराऊवाजांनैहैं तौसर्वपरिग्रहकाजावजीवत्यागक
रैहैं अरच्यारप्रकारआहारस्तजावजीवत्यागकरैहैं अरसर्वपरिग्रहका भारपुत्रांनैसोंपैहै आपबि
शेषपनैंनिसल्यकहियेबीतरागहोयहैं अरआपुकाआपुकानियमनांहींजांनैहैं पूराहोयवानहो
य असासंदेहवर्तेहैं तौदोयच्यारिघडीआदिकालकीमर्यादाकरैत्यागकरै जावजीवत्यागनांहीकरैः
पाछैंषारऊपरसूंउतारै भूमिबिषैंसिंयकीनांहीनि भैतिष्टै जैसैंबैस्यांकाजीतबानैंसु भटउद्यमीहोय
रण भूमिकाबिषैतिष्टै कोईजातिकीभैसमात्रआकुलतानांहीउपजावैहैं बऊरिकैसाहैवेसुऊपयो
गीसम्यकदृष्टीजाकैमोक्षलक्ष्मीकापाणग्रहणकीबांछाबर्तेहैं असाअनुरागहै सोअबारहीमोक्ष
कौंजायबरूं ताकाहृदाबिषैमोक्षलक्ष्मीकाआकारउकीरराष्याहैं ताकीप्राप्तिकौंसीघ्रचाहैहैं अर
ताहीका भयथकीरागप्रणतिकाप्रदेश नांहीबाधैहैं अरअसाबिचारहैं कदाचिमहारस्वभावबि
षैरागपरिणतिआणिप्रबेसकीयातौमो क्षलक्ष्मीमोनैंबरबानैंसन्मुषऊईहैं सोओटीहोयजासी ता
तैमैंरागप्रणतिनैंदूरिहीतैंछोडोऊं असोबिचारकरतौकालपूर्णकरैहैं तौकायरणांमांबिषैंनिरा १५३

कुलताआनंदरसबरसैहैं तौत्रांतीकरसकरितातैंतृप्तिहैं ताकैआत्मीकसुषबिनांकोईबातकी
वांछानांहीं एकअतेंद्रीअभोगतसुषकीबांछाहैं ताहीकौंभोगवै असास्वाधीनसुषहैं सोजद्य
पिसाधर्मीकासंयोगहै तद्यपिवाकासंयोगपराधीनआकुलतासहितभासैहैं अरजोनेहैं नि
श्चयबिचारतांए जीसुषकाकारणनांहीं सोमेरामोपासिहैं तातैस्वाधीनहैं असेआनंदमई
तिष्टैतौशांतिपरिणांमांसंयुक्तसमाधिमरणकरै पाछैंसमाधिमरणकाफलथकीइंद्रादिककी
विभूतिनैंपावैहै पाछैंवहांथकीचयकरि राजाधिराजहोयहै पाछैंकेताइकुकालराजवि
भूतिनैंभोगि अर्हंतीदिक्षाधरैहैं पाछैंक्षिपकश्रेणीचढिच्यारिघातीयाकर्मांकोनासकरिकेव
लग्यांनलक्ष्मीनैंपावैहै कैसीहैंकेवलज्ञांनलक्ष्मी ताबिषैंसमस्तलोकालोककेचराचरपदार्थतिन
कासंबंधीएकसमयामैंआणिऊलकैहैं ताकेसुषकीमहिमांबचनअगोचरहै इतिसमाधिमरणबर्णन
संपूर्णं॥ आगैंमोक्षकासुषबर्णनकरियेहैं॥ श्रीगुरांपासिशिष्यप्रश्नकरैहै हेस्वामिन् हेनाथ हेकृपा
निधि हेदयानिधि हेपरमउपगारी हेसंसारसमुद्रतारक भोगनसुंपरांनमुष आत्मीकसुषबिषैंलीन तुममे

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL
डाक्टर भाऊदाजी इत्यस्य स्मारकम्

रैतांई सिद्धपरमेष्टीताकेसुषकास्वरूपकहो सोकैसाहैंसिष्य महा भक्तिवांन अरमोक्षलक्ष्मीकीप्राप्तिका
हैअभिलाषजाकै सोबिशेषश्रीगुरांकी तीनप्रदक्षिणांदेयहस्तकमलमस्तककैलगाय हाथजोडंश्रीगुरां
कामोसरनैंपायवारंवारदीनपणांका बिनय्यपूर्बकबचनप्रकासतौ अरमोक्षकासुषनैंपूछतोहुवो अ
बैश्रीगुरकहैहैं हे भव्यहेपुत्र हेआरिज्यतैंनैंबहुतआछ्याप्रश्नकीया अबैंतसावधानहोयकरिसुं
नि योजीवसुद्धोपयोगकामहात्मकरिकेवलग्यांनउपायांसिद्धषेत्रबिषैंजायतिष्टैहैं सोएकएक सिद्ध
काअवगाहनांबिषैं अनंतानंतसिद्धभगवांन न्यारेन्यारेभिन्नभिन्नतिष्टैहैं कोईकाहुसौंमिलैनां
हीं बहुरिकैसेहैंसिद्धभगवांनताकेआत्मीकविषैंलोकालोककेचराचरपदार्थतीनकालसंबंधीद्र
व्यगुणपरियायनैंलीयांएकसमयबिषैंयुगपतझलकैहैं तिनकैआत्मीकचरणयुगलकौंनमस्का
रकरूंहूं बहुरिकैसेहैंसिद्धभगवांन परमपबित्रहैं परमसुद्धहैं अरआत्मीकस्वभावबिषैंलीनहैं
अरपरमअतेंद्रीअनौपम्यबाधारहित निराकुलतसुरसरसकूंनिरंतरअषंडपीवैहैं तामैंअंतरनांही
परैहैं बहुरिसिद्धभगवांन असंष्यातप्रदेशचैतन्यधातकौपिंडनवजघनरूपकूंधस्यांहैं अमूर्तीकआका १५४

रहैं सर्बज्ञदेवनैंप्रतिक्षन्यारेन्यारेदीसैहैं बहुरिकैसेहैंसिद्धप्रभू निःकषायहैं अरआवर्णसूंरहितहैं बहुरि
कैसेहैंसिद्धमहाराज ज्यांधोयाहैंघातियाअघातियाकर्मरूपीमलज्यां बहुरिकैसेहैंसिद्धभगवांन आप
नांज्ञायकस्वभावनैंप्रगटकीयांहैं अरसमयसमयषटप्रकारहानिवृद्धिरूपपरणवैहैं अनंतानंतआ
त्मीकसुषकूंआचरैहैं आस्वादैहैं अरतृप्तिनांहींहोयहैं वाअत्यंततृप्तिहैं अबैंकछुवोहरहीनांहीं बहु
रिकैसेहैंपरमात्मादेव अषंडहैं अजरहैं अरअविनासीहैं अरनिर्मलहैं अरसुद्धहैं अरचैतन्यस्वरू
पहैं अरग्यांनमूर्तिहैं अरज्ञायकहैं अरबीतरागहैं अरसर्बज्ञहैं अरसर्बतत्वकेजांननहारेहैं अरस
हजानंदहैं सर्बकल्यांणकेपुंजहैं त्रिलोक्यकरिपूज्यहैं सर्बबिघ्नकेहरनहारेहैं श्रीतीर्थंकरदेवभी
तिनकौंनमस्कारकरैहैं सोमैंभीबारंबारहस्तकवलमस्तककैलगायनमस्कारकरूंहूं सोक्यांवास्तै
नमस्कारकरूंहूं वाहीकागुणांकीप्राप्तिकेअर्थि बहुरिकैसेहैंसिद्धभगवांनदेवाधिदेवहैं सोदेवसं
ज्ञासिद्धभगवांनबिषैंहीसोभैहैं औरच्यारिपरमेष्टीनैंगुरुसंज्ञाहै देवसंज्ञानांही बहुरिकैसेहैंसिद्धभग
वांन सर्बतत्वकौंप्रकासिज्ञेयरूपनांहींपरणवैहैं आपनांस्वभावरूपहीरहैहैं अरज्ञेयकूंजानैंहीहैं

कैसेंजानेंहैं।सोएसमस्तज्ञेयपदार्थमांनूंसुद्धग्यांनमेंडूबिगयाहैं।किमांनोंउषकरिनिगलिगयाहैं।
किमांनूंअवगाहनांशक्तिकरिसमायगयाहैं।किमांनूंआचरणकरिगयाहैं।किमांनूंस्वभावविषैं
आयबसैंहैं।किमांनूंतदात्महोयकैंपरणवैंहैं।किमांनूंप्रतिबिंबहुवाहैं।किमांनूंपाषांणकेउकीर
काढेहैं।किमांनूंचित्रांमकेचितेरेहैं।किमांनूंस्वभावविषैंआणिप्रवेसकीयाहैं।बहुरिकैसेंहैंसिद्धमहा
राजा।शांतीरसकरिअनंतप्रदेशभरेहैं।अरग्यांनरसकरिअह्लादितहैं।अरसुधामृतकरिश्रवैंहैंप्र
देसजाका।वाअषंडधाराप्रवाहवहैहैं।ताविषैंऐसेंहैं।बहुरिकैसेंहैं।जैसेंचंद्रमांकेबिमांनबिषैंअमृत
श्रवैहैं।अरऔरांकूंआनंदअह्लादउपजावैहैं।अरआतापकौंदूरिकरैहैं।अरप्रफुल्लितकरैहैं।त्यौं
हीश्रीसिद्धिमहाराजभीआपतौग्यांनामृतकौंपीवैहैंआचरैहैं।अरऔरांनैंभीआनंदकारीहैं।ताकौ
नांमलेतहीवाध्यांनकरतहीभोरूपीआतापबिलेजायहैं।अरप्रणांमशांतहोयहैं।अरआपपरकीसु
द्धताहोयहैं।अरग्यानामृतनैंपीवैहैं।अरनिजस्वरूपकीप्रतीतिआवैहैं।ऐसेसिद्धभगवांनकौंम्हा
रोवारंवारनमस्कारहोऊ।ऐसेसिद्धभगवांनजैवंताप्रवर्तो।औरमूंनैंसंसारसमुद्रमांहितेंकाढो।अर १५५

मोनैंसंसारसमुद्रमैंराषौ।अरम्हाराअष्टकर्मकौनासकरौ।औरमोनैंकल्याणकेकर्त्ताहोऊ।अरमोनैं
मोक्षलक्ष्मीकीप्राप्तिकरौ।अरम्हाराहृदाविषैंनिरंतरबसौ।अरमोनैंआपसारिषौकरौ।बहुरिकैसेहैं
सिद्धभगवांन।जाकैजामणमरणनांहीं।अरजाकशरीरनांहींहैं।अरजाकैबिनासनांहींहैं।अरजाकै
संसारविषैंगमननांहीं।अरज्ञांनवाप्रदेशअकंपहैं।बहुरिकैसेहैंसिद्धभगवांन।अस्तित्ववस्तुत्ववाप्र
मेत्ववाअप्रमेयतत्त्व।वाप्रदेशतत्व।वाअगुरुलघुत्व।वाचेतनतत्व।यांनैंआदिदें।अनंतगुणांकरिपू
र्णभरेहैं।तातेंऔरगुणआवावामेंजायगांनांहीं।ऐसेसिद्धभगवांनकौंफेरिभीहम्हारोनमस्कारहो
ऊ।ऐसेंश्रीगुरुसिद्धकौस्वरूपमैंअरमेरास्वरूपमैंफेरनांहीं।जैसासिद्धहै।तैसाहीसिष्यनैंबताया।अरऐ
साउपदेशदीया।हेसिष्यहेपुत्रतूंहीसिद्धसादृश्यहैं।संदेहमतिकरै।सिद्धनिकास्वरूपमैं।अरथारास्व
रूपमैंफेरनांहीं।जैसासिद्धहैं।तैसाहीतूंहैं।ऐबेसिद्धसमांनत।तौनैंदेषिसिद्धसमांनछैनांहीं।तातेंदेषत
हीकोईपरमैंअनुपम्यआनंदउपजैल्गासोकहिबामात्रनांहीं।भीसंतुअबैंसावधांनहोस।अरसुल्टी
परणतिकरि।अरएकाग्रचित्तकरिसास्त्रातन्मताहष्टांतपरकादेषनजाननहारानाहीकूंतदेषिदील

आ०वा० मतिकरै। ऐसा अमृतमई बचन श्रीगुरांका सुंनि अरसीघ्र ही आपणां स्वरूपकौ बिचार सिष्य करतौ हुवौ। कां
१५६ ई बिचार करतौ हुवौ। श्रीपरमदयाल ज्याही कही मूनैं योही उपदेस दीयौ सो यांकै कांई प्रयोजन छै। तौ सूंमूनैं
बारंबार कहै छै। सो देषूं हूं। सिद्धसमांन छूं कही देषो। यो जीव मरणसमैं ई सरीरमांहि सूं निकसि परगतिमां ए
हि जाय छै। जब ई सरीरका आंगोपांग हाथ पग आंषि नांक कांन आदि दे र सर्व चिह्न ज्यौंका त्यौं रहै छे अ
रचेतनपणौं रहै नांही। तौ यह जान्यां गय सो कोई जानवा वाला देषिबावाला सकस कोई और ही था। ईनैं
घनो पकडि पकडि पकडि राषे छै। अर ऊंडा ओरामैं जुडि बिशेष किवाड गाढा करै छै। पणि सर्व कुटंब देषतां
यासरीरमैं चेतनांसक्ति नीसरि गई। यह निरधार भया। ई बातमैं चेतनपणांकी प्रतीति अवस्य आई। बहु
रि देषो मरणसमैं यो जीव परगति बिषैं जाय छै। तब कुटंब परिवार देषतां भीत वा घर फोडि आत्मां निकसि
जाय छै। सो काहूनैं दीसै नांही। तातैं यह जाणपणां गया जो आत्मां अमूर्तीक है। जो मूर्तीक होतौ तौ शरीरकी
नांई पकड्यार हि जातो। तातैं आत्मां प्रत्यक्ष अमूर्तीक है। ई मैं संदेह नांई। वहुरि यह आत्मां पांच प्रकारकै
बरणकूं निर्मल देषै है। अर यह आत्मां श्रोत्र इंद्रीके द्वार तीन प्रकार वा सात प्रकार शब्दकी परख्या करै १५६

है। बहुरि इहै आत्मा नासिका इंद्रीके द्वार दोय प्रकारकी सुगंधताकौं जांनै है। बहुरि इह आत्मा रसना इंद्री
के द्वारै पांच प्रकारके रसकूं आस्वादै है। बहुरि यह आत्मा स्पर्शन इंद्रीके द्वारै आठ प्रकारके सपर्शकूं वेदै है
वा अनुभवै है। वा निराधार करै। सो ऐसा जांनपनां ज्ञायकस्वभाव बिना ई द्रीयामैं तौ नांही। इंद्री तौ जड है
अनंत पुद्गलकी प्रमांनूं मिलि आकार वन्यां है। सो इही जहां इंद्रीके द्वार दर्शन ज्ञान उपयोग आवता है
सो वह उपयोगमैं हूं और नांही। भरमकारी ही अन्य भासै है। अबैं श्रीगुरांका प्रसाद करि मेरै भरम बि
लै गया है। मैं प्रत्यक्ष शाश्वता ज्ञाता दृष्टा अमूर्तीक सिद्धसादृश्यपताकूं देषूं हूं। अर जानूं हूं। अर अनु
भवछूं। सो अनुभवनमैं कोई कै निराकुलता शांतीक अमूर्तीक आत्मीक अनौपम्य रस उपजै है। अर
आनंद श्रवै है। सो यह आनंद प्रभावमैं अषंड असंख्यात आत्मीक प्रदेस बिषैं धारा प्रवाहरूप होइ चलै है
ताकी अद्भुत महिमां मैं ही जांनूं हूं। कै सर्वज्ञदेव जांनै है। बचन अगोचर नांही। बहुरि देषूं हूं मैं कहै बं
डा तद्ध्यानां बिषैं करि विचारूं। मैरै तांई घरमई भीति फोडि करि पदार्थ दीसे भी। ऐसा बीचार होतै देषूं यह
मेरी ह्वेली प्रत्यक्ष मौनैं मन द्वार दीसै है। अर यह नगर मौनैं प्रतक्ष दीसै है। यह भर्थक्षेत्र मौनैं दीसै

हैं। अरसातपृथ्वीविषैंतिष्टतानारकीनकेजीवमोनैंदीसैहैं। अरसोलास्वर्गवानवग्रीववाअनुदिसस
र्वार्थसिद्धिवासिद्धक्षेत्रविषैंतिष्टैहैं। अनंतानंतसिद्धमहाराज्यवासमस्तत्रैलोकवारानेहीमनिअमूर्ती
कधर्मद्रव्यवाएतेहीमनिअमूर्तीकएकअधर्मद्रव्यवाएतेहीमनिएकप्रदेसविषैंएकएकअमूर्तीकका
लानंद्रव्यएकएकप्रदेसमात्रतिष्टैहैं। बहुरिअनंतानंतनिगोदनिकेजीवसंत्रैलोकभरयाहै। बहुरिन्या
र्यौंजातिकेसूक्ष्मथावरसूंत्रैलोकभरयाहैं। बहुरित्रैरजातिकेत्रसत्रसनालीविषैंतिष्टैहैं। अरनरकन
विषैंनारकीनिकेजीवमहादुषपावैहैं। अरस्वर्गनविषैंस्वर्गवासीदेवक्रीडाकरैहैं। अरइंद्रीजनितसुष
कौंभोगवैहैं। बहुरिएकसमयमैंअनंतानंतजीवमरतेउपजतेदीसैहैं। बहुरिएकदोयप्रमांनूंकाषंद
आदिदेअनंताप्रमांणूंवाकात्रैलोकप्रमांनमहास्कंदपर्यंतनानाप्रकारकेपुद्गलनिकेपर्यायमोनैंदीसै
हैं। अरसमैंयसमयअनेकस्वभावनैंलीयांप्रणवताहीसैहैं। अरहसौंद्रिगांमैंअलोकाकासमैंसर्बव्यापी
दीसैहै। अरतीनकालकेसमयनकाप्रमांणदीसैहै। अरतीनकालसंबंधीसर्बपदार्थनिकीपरनति
दीसैहै। अरकेवलग्यांनकाजांनपनांप्रतक्षमोकूंदीसैहैं। सोऐसाग्यांनकाधनीकौंनहैं। सोऐसाग्यांन १५७

किसकैभया। ऐसाज्ञायकपुरुषतौप्रतक्षसाक्षात्तबिद्यमांनमोनैंदीसैहै। अरयहजहांतूहांग्यांनका
प्रकासमोनैंदीसैहै। शरीरक्यौंदीसतानांही। सोऐसाजांनपनांकास्वामीऔरहीहै। किमैंहूं। जोऔर
हौतातौमैरेतांईऐसीषबरिकाहेकूंपरती। औरकैसैंजांनौं। तातैंयहजानपनांमेरैहीउपज्याहै।
अथवाजांनपनांहै सोहीमैंहूं। अरमैंछूंसोईजांनपनांहैं। तातैंजांनैपनांमैंअरमोमैंउजायगीनां
हीं। मैंएकग्यांनहीकास्वछनिर्मलपिंडबनांहूं। जैसैंलूणकीडलीष्यारकापिडबन्यांहै। अथवाजैसैं
सक्करकीडलीमिष्टअमृतकापिंडअषंडबन्यांहै। तैसैंहीमैंसाक्षात्तप्रगटशरीरतैंभिंन्नज्ञायकरिस्व
भावलोकालोककेप्रकासकरिचैतन्यधात्तसुषकेपिंडअषंडअमूरति। अनंतगुननिकरिपूरितबन्यां
हूं। तामैंसंदेहनांहीं। देषौमेरेग्यांनकीमहिमांसौअवारम्हारैकोईकेवलग्यांननांही। कोईमनपर्यैग्यांन
नांही। मतिश्रुतिग्यांनपायजैहैसोभीपूर्णनांही। अनंतवैभागक्षयोपसमभयाहै। ताकेहोतैंऐसाग्यांन
काप्रकासभया। अरताहीमांफिकआनंदभया। सोईग्यांनकीमहिमांरुकुणीनैंकरूं। सोयौआश्चर्यका
रीस्वरूपम्हारोहीछैकेकोईऔरकोभीछैं। तासौंऐसाअद्भुतबिचक्षणपुरुषप्रवल्यो। किकैमैंऔरकौं

नसं प्रीति करूं और मैं कौंन कौं आराधूं और मैं कौन का सेवन करूं अर कौन कया सिजाय जाय जाच
नां करूं ई स्वरूप यां बिनां मैं नैं कर नां था सो कीया सो यह मोह का स्वभाव था मेरा स्वभाव नांही मेरा स्व
भाव तौ एक टंकोत्कीर्ण ज्ञायक चैतन्य लक्षन अर सर्व तत्व के जांनन ह्वारे हैं निज पर प्रकासि के रमन ह्वा
रे हैं सिवस्थांन के वसन ह्वारे हैं संसार समुद्र के तारन ह्वारे हैं राग द्वेष के हरन ह्वारे हैं स्वरस के पीव
न ह्वारे हैं ग्यांन पांन के करन ह्वारे हैं निराबाध निगम्य निरंजन निराकार अभोगता वा ग्यानरस के भो
गता वा पर स्वभाव के अकर्ता निज स्वभाव के कर्ता सासता अबिनासी सरीर भिन्न अमूर्ती निर्मल
पिंड पुरुषाकार असा देवाधिदेव मैं ही बिषैं जांन्यां ताकी निरंतर सेवा अवलोकन करनां अर ताकी
अवलोकन करतां ही अतीक सुधामृत की छांट उछलै हैं अर आनंद धारा स्रवै है ताके रस कूं मैं
पीय करि अमर हुवा चाहूं हूं सो ए मेरा स्वरूप जैवंता प्रवर्तौ इसका अवलोकन वा ध्यान जैवंता प्र
वर्तौ अर इसका बिचार जैवंता प्रवर्तौ इसका अंतर षिण मात्र भी परो मत्ति ई स्वरूप की प्राप्त बिनां हूं
कैसैं सुषी होऊं कदाचि नहीं होऊं बहुरि कैसा छूं हूं जैसे काठ की गणगौरि कौं आकास बिषैं स्था १५८

पिये सो स्थापनां प्रमांन आकास तौ उस का प्रदेसां बिषैं प्रसिजाय छै अर काठ की गणगौरि का प्रदेस आकास बिषैं
पैठि जाय छै सो षेत्र की अपेक्षा एक होय भेला तिष्टै है अर भेला ही समै समै प्रणवै है पणि स्वभाव की अ
पेक्षा न्यारी भिन्न भिन्न स्वभावनैं लीयां तिष्टै है अर जुदा जुदा ही परणवै है सो कैसे है आकास तौ
समै समै आपणां निर्मल अमूर्तीक स्वभाव रूप परणवै है अर काठ की गणगौरि समै समै आपणां
मूर्तीक जड अचेतन स्वभाव रूप परणवै है सो काठ की गणगौरिनैं आकास के वे प्रदेसनि मैं उठा
य हूं रां स्थापिये तौ आकास प्रदेस तौ वहां का वहां ही रहै अर काठ का प्रदेस चल्या आवै आकास
के प्रदेस कै क्यौं भी लागी रहै नांही भी सूं जे भिन्न भिन्न स्वभाव रूप पावै छा तौ न्यारा का न्यारा हुवा
भी सूं मैं भी ई सरीर सूं क्षेत्र की अपेक्षा एक षेत्र अवगाही होय भेला तिष्टूं हूं पणि स्वभाव की अपेक्षा म्हा
रो रूप न्यारो छै ए तौ पर तत्त्व जड अचेतन्य मूर्तीक गलन पूर्ण स्वभावनैं लीयां समै परनमैं छै अर बा हूं छूं
अर सरीर के न्यारे होतें न्यारो भी प्रतक्ष हूं छूं सो सरीर कै अर म्हारै अभिन्नपणौं कैसे ई का द्रव्य गुण पर्या
य न्यारा अर म्हारा द्रव्य गुण पर्याय न्यारा ई का प्रदेस न्यारा अर म्हारा प्रदेस न्यारा अर ई कौ स्वभाव

डाक्टर भाऊ दाजी ... स्मारक
DR. BHAU DAJI MEMORIAL

न्यारो अरम्हारौस्वभावन्यारौ अरकोइकैजीकेईपुद्गलद्रव्यसौंबारंवारभिन्नपणौंअनन्यपणैंअ
विशेषच्यारिद्रव्यसंअथवापरजीवद्रव्यसौंतौभिन्नपणौंअनभयोनांही ताकाउत्तरयहु वहन्या
रिद्रव्यतौअनादिकालकादिकाभाववंधअडोलतिष्टैहैं अरपरजीवद्रव्यकासंयोगप्रतिक्षहीन्यारा
हैं तौसंवैसंस्कोईभिन्नकरिये एकपुद्गलद्रव्यहीकाउलरूवहैं तातैंयाहीतैंभिन्नकरणैंउचितहैं घ
णां विकल्पकेरिकांई जांनिबावालाथोडाहीमैंजांनैहैं अरनजांणिवावालाघणांहीमैंनजांनैं तातैंए
हबातसिद्धजंई यहबातकल्पकरिसाधहैं बलकरिसाधनहीं बहुरियहआत्मासरीरविषैंवसतांई
द्र्याकैंघारैअरमनकैघारकैसैंजांनैहैं सोईकहियेहैं जैसैंएकराजाकूंकारूएकपुत्रादिकनैंमहासुपेदबडा
सिषरकहियेमहलताविषैंवंदीषांनांदियाहैं सोउसमहलकैपांचतौझरोषाहैं अरएकबीचिमैंसिंघासनति
ष्टैहैं सोकैसेहैंझरोषा अरसिंघासन सोउसझरोषाकैऐसीसक्तिलीयांचसमालगाहैं अरऐसीसक्तिकूंलीयां
सिंघासनकैरत्नलगाहैं सोईकहियैहैं सोराजाअनुक्रमसौंस्यंघासनउपरिबैठाकुवाझरोषादिसीअवलोकनक
रैहैं प्रथमझरोषादिसीअवलोकनकरै तबतौस्पर्शकेआठगुणैंनैंलीयांपदार्थदीसै अवशेषपदार्थछैतौनीही १५९

सैनांही बहुरिदूजाझरोषादिसीराजासिंघासनउपरिबैठोहीअवलोकनकरै तबपांचजातिकेरसकीसक्तिनैं
लीयांपदार्थदीसैं अरविशेषपदार्थछैतौनीदीसैनांही बहुरितीजाझरोषादिसीराजासिंघासनउपरिबैठोही
अवलोकनकरै तबगंधजातिकेदोयपदार्थदीसै अवशेषपदार्थछैतौनीदीसैनांही बहुरिचौथाझरोषादिसी
राजासिंघासनऊपरिबैठोहीअवलोकनकरै तबपांचजातिकेवर्णपदार्थदीसै अवशेषपदार्थछैतौनीदीसै
नांही बहुरिपांचवांझरोषादिसीराजासिंघासनऊपरिबैठोअवलोकनकरै तबतीनजातिकेशब्दमईपदार्थ
दीसै अवशेषपदार्थछैतौनीदीसैनांही बहुरिवहराजापांचौंझरोषांकाअवलोकनछोडि अरसिंघासनऊप
रिदृष्टिपदार्थकाविचारकरै तबबीसौंजातिकेपदार्थतौयहमूर्तीकऔरआकासआदिऔरअमूर्तीकस
र्वदीसै औरझरोषांबिनां वासिंघासनबिनां औठनिंहीलीयांपदार्थनैंजांन्यौंचाहैतौजांनैंनांही अवैए
जानैंबंदीषानांसंछोडिअरमहलबारैंकाढतौवैंराजानैंदसौंदिसापदार्थ मूर्तीकवाअमूर्तीकबिनांबिचार
सर्वप्रतिभासै सोयहस्वभावदेषवाकाराजाकाहै कोईमहलकातौनांही अपणामहलाकानिमतकरि
थांनआच्छाथाजायहै अरकोईउसहीजातिकीपरमांनूंवाझरोषासिंघासनकैलागीताकौंनिमत्तकरिकें

चित्‌मात्र जाणपणां रहै है। ह्जा मह्ल का स्वभाव तो सर्वे गुंणनकूं घातवा कौ है। त्यौं ही ई सरीर रूपी मह्ल
विषैं यह आत्मा कर्मनि करि बंदीषानै दीया है। त्यौं ही औठै पांच इंद्री रूपी तो झरोषा है। अर मनरूपी सिंघास
न है। तब इह आत्मा जी तौ इंद्री कै द्वार अवलोकन करै तिहि इंद्री के विषै मांफिके माफिक पदार्थ कौं देषै है
अर मनकै द्वार अवलोकन करै है। तब अमूर्तीक सर्वपदार्थ प्रति भासै है। अर यह आत्मा सरीर रूपी बंदी
षानां सूं रहित होय है। तब मूर्तिकवा अमूर्तीक लोकालोक के त्रैकाल संबंधी चराचर पदार्थ एक समैमैं
युगपत प्रति भासै है। ये स्वभाव आत्मा का है। कोई सरीर का तौ नांही। सरीर के निमत्त करि अ पूरा गुंणन
घटता जाय है। अर इंद्री मनका निमत्त करि किंचित मात्र गुंणन षुल्या रहै है। असा ही निर्मल ज्ञात्ति की पर
मांनूं वा इंद्रिय मनकै लागी है। ताकरि किंचितमात्र दीसै है। ह्जा सरीर का स्वभाव तौ एता गुंणनकूं भी घात
वा का ही है। वाकरि जानैं निज आत्मा का स्वरूप जान्यां है। ताका यह चिह्न होय है। सो औरतौ गुण आ
त्मामैं घणां ही है। अर घणां ही नैं जानैं है। परंतु तीन गुण विशेष है। ताकौं जांणैं तौ अपणां स्वरूप जांनैं
ही जांनैं अर ताके जान्यां विन्यां विनां कदाचि त्रिकाल विषै भी स्वरूप की प्राप्ति होये नांही। अथवा तीन १६०

गुंण विनां हो ही कौं नीकां जानै तौ भी निज सहजानंद कौं पहुचांनैं। हे ये गुंणां की पिछांनि विनां स्वरूप
की प्राप्ति त्रिकाल त्रिलोक विषैं होय नांही। सोई कहियै है। प्रथम तौ आत्मा का स्वरूप ज्ञाता दृष्टा जांनौ
यह जांणपनां है सोई मैं हूं। अर मैं हूं सो ही जांनपनौ है। असा निःसंदेह अनुभवन मैं आय सो एक तौ य
है। अर दूजा यह। रागादिक भी रूप व्याकुल होय परणवै सो ई मैं हूं। कर्म का निमत्त पाय कषाय रूप परिणं
मऊ वा है। अरु कर्म का निमत्त ह्लका पडै है। तब प्रणाम सांतीक रूप प्रणवै है। जैसैं जल का स्वभाव सीत
लवा निर्मल है। सो अग्नि का निमत्त पाय वा जल उष्ण रूप प्रणवै है। अर कादा का निमत्त पाय वह जल गद
ला रूप प्रणवै है। त्यौं ही यह आत्मा ग्यानावर्णादिक निमत्त पाय तौ ग्यान घात्या जाय है। अर कषाय का नि
मत करि निराकुलत गुंण घात्या ज्याय है। ज्यौं ज्यौं जो ग्यानावर्णादिका निमत्त ह्लका पडै त्यौं त्यौं ग्यान का
उद्योत होय। अर ज्यौं ज्यौं कषाय का निमित मंद पडता जाय। त्यौं त्यौं निराकुलत प्रणांम होता जाय। सो य
ह स्वभाव जिनौं नैं प्रतीति जान्यां। अर अनुभया ही। सो सम्यक दृष्टी निज स्वरूप के भोक्ता है। अर ती जा
स्वभाव यह भी जानै है। कि मैं असंख्यात प्रदेसी अमूर्तीक आकार हौं। जैसा आकास अमूर्तीक है। तैसा ही

मैं भी अमूर्त्तीक हूं परंतु आकास जड है मैं चैतन्य हूं सो कैसा है आकास काय्या कहैं नांही तोड्या टूटै नां
ही पकड्या आवै नांही रोक्या रुकै नांही छेद्या छिदै नांही गाल्या गलै नांही वाल्या बलै नांही है यांनैं
आदि दे करि कोई प्रकार ता का नास नांही मेरा असंख्यात प्रदेसनि का नास नांही मैं असंख्यात प्रदेसी प्र
तिष्ठा वस्तु हूं अर मेरा ग्यांन गुण अर परणति गुण प्रदेसनि कै आसरै है जो प्रदेस नांही होय तो गुण कौ
न कै आसिरै रहै प्रदेस बिनां गुण की नास्ति होय तब स्वभाव की नास्ति होय जैसैं आकास के फूल की
वस्त नांही त्यौं ही जाय सो मैं छू नांही मैं साक्षात अमूर्त्तीक अखंड प्रदेस न कूं धरयां हूं अर ता बिषैं ग्यांन गु
ण अर परणवन गुण कूं लीयां हूं ऐसा तीन प्रकार संयुक्त मैं मेरा स्वभाव कौं नीका जांनूं हूं अर अनुभवौं
हौं कैसैं अनुभवौं हूं सो यां तीन गुण की मेरै प्रतीति है सो ई कहिये है कोई मेरै तांई आय ऐसा ऊं थां ही
कहै कै तूं चैतन्य रूप नांही अर परणवन गुण मैं भी नांही यह बात फलांनां ग्रंथ मैं कही है ऐसा म्हा
कूं कहै तब मैं उसकै तांई कहूं रे दुर्बुद्धी रे बुद्धि रहित मोह करि ठगा हुवा तेरै तांई कछु सुद्धि नांही ते १६१
री बुद्धि ठगी गई है बकुरिबा पुरुष या कहै है कांई करूं फलांणा ग्रंथ मैं कही है ऐसा कहै मो कूं तो मैं प्रत्य

क्ष चैतन्य वस्तु पर के देषन जांनन हारा सो कैसैं मांनूं तब यां नैं कहिये रे सो ग्रास्त्र मैं ऐसा मिथ्या कही
नांही यह नेम है जैसैं सूर्य सीतल रूप कहे हुवा नांही अर अवार है नांही अर मेरै तांई या कहै आजि
सूर्य सीतल रूप उग्या सो मैं कैसैं मांनूं परंतु कदाचि न मांनूं या तो न मांनूं तु मेरै तांई ऊंठा ई सकां नांम
लेय रु ऐसैं कहै है तूं चेतन नांही अर तेरै परणति भी नांही सो मैं एक दाचि भी नांही मांनूं सो क्यौं
नांही मांनूं सो यह द्रव्य गुणां की तो मेरै आगमा करि भी प्रतीति है अर अनुभवन करि भी प्रतीति है अर तीजा
प्रसस्त गुणां का मेरैं एक लेष तो इसका भी आगम वा अनुभवन करि प्रमांण है कैसैं सो मैं या जांनूं सर्वज्ञ
देव का वचन ऊठा नांही तातैं तो आगमा प्रमांण है अर मैं या जांनूं मेरै तांई मेरो अमूर्त्तीक आकार मो कूं
दीसता नांही सो आज्ञा प्रमांण है अर अनुभव प्रमांण कैसैं होइ परंतु मैं उन मांन करि एकसा जांनूं प्र
देसनि कै औसरै बिनां चैतन्य गुण किसकै आसरै होइ अर प्रदेस बिनां गुण कदाचि भी नांही होय यह ने
म है जैसैं भूमिका बिनां रूषां दिक कौंन कै आसरै होइ त्यौं ही प्रदेस बिनां गुण किसकै आसिरै होय
ऐसा विचार करि अनुभवन मैं भी आवै है अर ग्यांन करि प्रमांन है अर कोई मेरै तांई आंनि आ निऊं है

हीयाकहै। फल्ानांग्रंथमैंयाकहीहैं। येआगैंतीनलोकप्रमांणप्रदेशांकाश्रद्धांनकीयाथा। अबैंवडाग्रं
थांमेंऐसैंनीसस्याहैं। सोआत्माकाप्रदेसधर्मद्रव्यकाप्रदेसांसंघाटिहैं। तौमैंऐसाबिचारूं। सामांनि
शास्त्रसंबिशेषबलवांनहैं। सोऐसैंहीहोयगा। मेरेअनुभवनमैंतौकोईनिरधारहोतानांहीं। अर
बिशेषज्ञाताअवारदीसैनांहीं। तातैंमैंसर्बज्ञकाबचनजांनिप्रमांणकरूंहूं। परंतुमेरैतांईयाकहै
तुजडअचेतनवाअमूर्तीकहैंवापरणतिसौरहितहैं। तौयामैंकोईमांनूंनांहीं। इहमेरैनिसंदेहहै। यामैंकोईडि
ब्रह्माकोडिबिष्णुकोटिनारायणकोटिरुद्रआनिकरियाकहै। तौमैंयाहीजांनंकिएबावलाहोयगयाहैं।
केमूंनैंठगिवाआयाकैमेरीपारिषालैहैं। मैंऐसामांनूंसोभावार्थयहजु। ग्यांनपरणतिमैंप्रापहीहैं। आपही
केहेयहैं। सोयाकूंजानैंसोसम्यकदिष्टीहैं। याकेजान्याबिनांमिथ्यादृष्टीहोय। औरअनेकप्रकारकेगुणस्व
रूपवापर्यायकास्वरूपकूं। ज्योंज्योंग्यांनहोयत्यौंत्यौंजांनिबोकार्यकारीहोय। परंतुमुष्यपनैंयांदोइकातौजांन
पनांअवस्यचाहिये। ऐसालक्षनजांननां। बहुरिबिशेषगुणऐसैंजांननांसोएकगुणमैंअनंतगुणांहैं। अ
रअनंतगुणांमैंएकगुणांमैंएकगुणहैं। गुणसौंगुंणमिलैनांहीं। अरगुणगुंणसौंमिल्याहैं। जैसैंस्ववर्णबिषैं १६२

भारीपीलाचीकणांनैंआदिदेरअनेकगुणहैं। सोक्षेत्रकीउपेक्षासर्वगुणबिषैंतौपीलागुणपाईएहैं। अरपीला
गुणबिषैंक्षेत्रबिषैक्षेत्रकीउपेक्षासर्बगुणपाईयेहैं। अरतत्त्वहीकीअपेक्षानुगुणगुणमिलिरह्याहैं। अरस
र्बकाप्रदेसएकहीहै। अरस्वभावकीअपेक्षासौंरूपन्यारेन्यारेहैं। सोपीलाकास्वभावऔरहीहैं। सोऐसैं
हीआत्मांबिषैंजांननां। औरांद्रव्यांबिषैंभीजांननां। वाअनेकप्रकारअर्थपर्यायवाबिंजनपर्यायकास्वरूप
यथार्थशास्त्रकैअनुंस्वारजांननांउचितहैं। बहुरियाजीवकौंसुषकीवढवारीवाघटवारीदोयप्रकारहोयहै
सोईकहियेहैं। ग्यांनहैतेताहीसुषहैं। सोग्यानाबर्णादिकाउदैहोतैतौसुषदुषदोन्यांकानासहोयहैं। अर
ग्यानावर्णादिककातौक्षयेपसमहोयहैं। अरमोहकर्मकाउदैहोतैंतबईजीवकेदुषशक्तिउत्पन्नहोयहै
सोसुषशक्तितौआत्मांकानिजगुणकर्मकाउदयबिनांहैं। अरदुःषशक्तिकर्मकानिमित्तकरिहोयहैं। सो
उपादीकसक्तिहैं। कर्मकाउदयमिटैजातीरहैहै। अरसुषसक्तिकर्मकाउदयमिटैतैंप्रगटहोयहैं। तातवस्त
काद्रव्यत्वस्वभावहैं। बहुरिफेरिसिष्यप्रश्नकरैहैं। हेस्वामीहैप्रभूमेरैतांईद्रव्यकर्मवानोकर्मसौंतौमेरास्व
भावभिन्नन्याराआपकाप्रसादकरिभासह्वापअबैमेरैतांईरागद्वेषसंन्यारादिषावौसोअबैश्रीगुरुकहेहैं।

है सिष्यतसुन्य जैसैंजलकास्वभावतोसीतलहै अरअग्निकेनिमतकरिउष्णहोयहै सोउष्णकुवायका
आपणांसीतलगुणभीषोवैहै अरआपतपतायमांनहोयहैं परणवैहै अरऔरांनैंभीआतापउपजावै
हैं पाछैंकालपायअग्निकासंयोगज्यौंज्यौं मिटैहैं त्यौंत्यौंजलकास्वभावसीतलहोय अरऔरांकूंआनंदकारीहो
यहै तैसैंयहआत्मांकषायांकानिमतकरिआकुलहोयपरणवैहै सर्बनिराकुलतगुणजातारहैहै तबपर
नैंअनिष्टरूपलागैहै बहुरिज्यौंज्यौंकषायांकानिमतमिटताजायहै त्यौंत्यौं निराकुलतगुणप्रगटहोताजा
यहै अरतबपरनैंइष्टरूपलागैहै सोथोडासाकषायकेमिटतैंभीऐसाशांतीकसुषप्रगटहोयहै भजांनैं
परमात्मांदेवसंपूर्णकषायमिट्याहै अरअनुभवचतुष्टयप्रगटभयाहै सोकैसासुषहोसी पणिथोडासानि
राकुलितस्वभावकौंजांन्यां संपूर्णनिराकुलतस्वभावकीप्रतीतिआवैहै सोसुरुआत्मांकेसैंनिराकुलतस्व
भावहोसी ऐसाअनभवनमैंभीकांआवैहै बहुरिसिष्यप्रश्नकरैहै हेप्रभू व्यापत्तआत्मावाअंतरा
त्मांवापरमात्मांकाप्रगटचिह्नकहइएताकास्वरूपकहौ सोगुरुकहैहै जैसेंकोईहोताईबालककैतांई
नषांनांमैंराष्या अरकेताइकदिनपाछैंरात्रिनैंवारैकाढ्या अरऊनैंपूछै सूर्यकिसदिसानैंऊगहै अरसूर्य १६३

काप्रकासकैसाहोयहै अरसूर्यकाबिंबकेसाहोयहै तबवहयाकहैमैंतोजांनतानांहीं मैंतोजांनतानांहीं दि
न्नावाप्रकासवासूर्यकाबिंबकैसाहै फेरिऊनैंबूझैतोक्यौंसंक्यौंबतावै पाछैंभाकफाटै तबऊनैंपूछैं तब
वोयाकहै जैठीनैंप्रकासभयाहै जैठीनैंप्रकासभयाहै तैठीनैंपूर्बदिसाहै अरतैठीनैंसूर्यहैसोक्यौंसूर्य
बिनांऐसोप्रकासहोतानांहीं त्यौंत्यौंसूर्यऊंचोचढै ज्यौंज्यौंप्रकासनिर्मलहोताजायहै अरनिर्मलप
दार्थप्रतिभासताजायहै कोईआंनिंईनैकहै सूर्यदिक्षणदिसानैहै ऐठानैंसूर्यतोयाकदाचिमांनैंनांहीं
औरांकैंबावलागिनैं कैप्रतक्षणसूर्यप्रकासदीसैहै मैंयाकाकह्याकैसैंमांन्नं यहमेरैनिःसंदेहहै सूर्यका
बिंबतोमेरैतांईनिजरिआवतानांहीं पणिप्रकासकरिसूर्यकाअस्तत्वहोयहै सोनियमकरिसूर्यअठीनैं
हीहै ऐसीअवगाढअवगाढप्रतीतआवैहै बहुरिफेरिसूर्यकाबिंबसंपूर्ण महातेजप्रतापनैंलीयांहैदी
षमांनप्रगटभयातबप्रकासभीसंपूर्णप्रगटभया तबपदार्थभीजैसाथातैसाप्रतिभासबाल्कागपातबक
छूपछनांरह्यानांहीं निर्बिकल्पहोयचुक्या ऐसादृष्टांतकेअनुस्वारदृष्टांतजांननो सोईकहिएहै
मिथ्यात्तअवस्थामैंईपुरुषनैंपूछै किन्तूचैतन्यहै ग्यांनमईहै तौयौयाकहै चैतन्यग्यांनमहाकूंहीआवै

डाक्टर भाऊदाजीइत्याख्यस्यस्मारकम्
DR. BHAU DAJI
MEMORIAL

आ०चा० बाचैतन्यग्यांनमैंहैंकोईआयऐसैंकहै।सरीरसोहीतहैं।वातूसर्वज्ञकाएकअंसहैं।षिनमैंउपजैहैं।षिन
१६४ मैंबिनसैहैं।वातसुन्यहैं।तोऐसैंहींमांनैं।असाहीरूंगा।मेरेतांईकछुषबरपरतीनांहीं।वाह्यआत्माकालन्त
एहैं।बऊरिकोईपुरुषगुरुकाउपदेसकहैं।प्रश्न।आत्माकैकर्मकसैंबंधैहैं।श्रीगुरुकहैहैं।जैसैंएकसिंघ
उजाडिबिषैंतिष्टैथा।तहांहीं।आठमंत्रादिस्वयमेवआपनीसत्ताबिषैंबनमैंथा।सोसिंघउसमंत्र्यांयाऊ
परिकोपकीया।तबवांमंत्रायांएकएकधूलिकीचिमटीमंत्रसिंघकासरीरऊपरिनांषिदीनी।सोकेताइक
दिनपाछैंएकचिमठीकानिमतकरि।नाहरकोग्यांनघटिगयो।अरएकचिमठीकानिमत्तकरिदेषनेंकी
सक्तिघटिगई।अरएकचिमठीकानिमत्तकरि।नाहरदुषीऊवो।अरएकचिमठीकानिमतकरि।नाहर
केउजाडिछोडिऔरठोरगयोनांहीं।अरएकचिमठीकानिमतकरि।नाहरकोआकारऔरहीतरैंकोंह्वैगयो
अरएकचिमठीकानिमतकरि।नाहरउंचनीचरूपआपनैंमांनवालागैं।अरएकचिमठीकानिमत्तकरि
आपनेंग्यांनपर्यायघटिगयो।ऐसैंहीआठप्रकारग्यांनाबर्णादिकर्मजीवकारागद्वेषकरि।जीवकाग्यां
नादिआठगुणकोंघातैहैं।ऐसाजांननां।ऐसैंसिष्यप्रश्नकीया।अरगुरुउत्तरदीया।सोभव्यजीवनिकूं १६४

सिद्धकासरूपनैंजांनि।अपनांस्वरूपबिषैंलीनहोनांउचितहैं।सिद्धकास्वरूपमैं।अरआपणांस्वरूपमैं।
नगद्द्भुपपनांहैं।सोसिद्धकास्वरूपनैंध्याय।अरनिजस्वरूपकाध्यांनकरनां।घणीकहिबाकरिकहा।ऐ
साज्ञातास्वभावकोंजांनैंहैं।इतिसिद्धस्वरूपबर्ननं।आगैंकुदेवादिकस्वरूपबर्ननकरिएहैं।सोहेभव्यतुसुं
णि।सोदेषौजगतबिषैभीयेहन्यायहैं।कैतौआपणैंगुणकरिअधिकहोय।अरमातापितादिकउपकार
करिअधिकहोयहैं।ताहीकूंजगतपूजैहैं।अरबंदैहैं।ऐसानांहीं।किराजादिकबडेपुरुषतोंरैयतजन।
आदिकेपुरुषताकूंबंदैअरपूजे।अरमातापित्तादिपुत्रादिककूंबंदैपुजे।सोतौदेषियेनांहीं।अरकदा
चिमतिकीहीनताकेरि।राजादिकबडेपुरुषहोयकरिनीचपुरुषकोंपुजे।अरमातापिताभीबुद्धिकरिहीं
नताकरिपुत्रादिककूंपुजे।तौवहजगतबिषैंहास्यअरुनिंदाकोंपावै।कौंनदिष्टांत।जैसैंसिंघहोय।अ
रस्यालकीसरणिचाहै।सोचाहै।तौवहहास्यनैंपावै।यहसक्तिहीनहैं।तौसोधर्मबिषैंअर्हंतादिउत्क
ष्टदेवछोडि।औरकुदेवकोंपुजेसोकांईलोकबिषैंहास्यकूंनांहीपावैगा।अरपरलोकबिषैंनानां
प्रकारकेनर्कादिककेउषअरक्लेशाकूंनांहींसहैगा।तौअवस्यसहैगाही सहैगा।सोकोंसहैगा।

सो आठ कर्म विषैं मोहका नाम कर्म है। सो सर्व कर्मांकौ राजा है। ताके दोय भेद हैं। एक तौ चारित्रमोह है।
अर एक दर्शनमोह है। सो चारित्रमोह तौ ई जीव ककौं नाना प्रकारकी कषायां करि आकुलता उपजावे
है। सो कैसैं है आकुलता। अर कैसा हैं याका फल। सो कोई जीव नानां प्रकारका संयमादि गुण करि संयुक्त
है। अर वा विषैं कषाय पावजे। तौ दीर्घ कालके संयमादिक करि संचित पुन्य जैसैं अग्नि विषैं रूई भस्म हो
इ। तैसैं कषायरूपी अग्नि विषैं पुन्यरूपी ईंधन भस्म होय है। अर कषायवांन पुरुष ई जगत विषैं महानिं
दानै पावै है। बहुरि कैसी हैं कषायको ड्यां स्त्री सेवनसौं भी ताका पाप अनंतगुण है। तासूं भी अनंतगुणं
पाप मिथ्यात्वका है। और यो जीव अनादि कालकौ एक मिथ्यात्व करि ही संसार विषैं भ्रमै है। सो मिथ्यात्त
उपरांत और संसार विषैं उत्कृष्ट पाप है नांही। फुनि मोह करि ठगी गई है बुद्धि जाकी। असा जो संसारी जीव ता
कूं कषायादिक तौ पाप दीसै अर मिथ्यात्व पाप दीसै नांही। अर सास्त्र विषैं एक मिथ्यातका नांस कीया। तौ
पुरुष सब पापका नास कीया। अर संसारका नास कीया। सो असा जांनि सर्व प्रकार कुदेव कुसास्त्र कुगुरु
का त्याग करनां। सो त्याग कहा कहिए। सो देव अर्हंत गुरु निर्ग्रंथ तिलतुसमात्र परिग्रहसौं रहित असा गुरु १६५

अर धर्म जिनप्रणीत दयामय कहिये वीतराग उपरांत सबकौं हस्त जोडि नमस्कार नांही करनां। प्राण जा
वौ तौ जावौ। पणि नमस्कार करनां उचित नांही। आगैं अर्हंतादिकका स्वरूप बर्नन करिये है। सो कैसे
है अर्हंत। प्रथम तौ सर्वज्ञ है। जाका ग्यांन विषैं समस्त लोकालोकके चराचर पदार्थ तीन कालसंबं
धी एक समय विषैं झलकै है। असी तौ ग्यांनकी प्रभुत सक्ति है। अर वीतराग है। अर सर्वज्ञ होता अर
वीतराग नही होता तौ ता विषैं परमेस्वरपणांसं भवता नांही। अर वीतराग होता अर सर्वज्ञ न होता
तौ भी पदार्थकौं स्वरूप अग्यांनता करि संपूर्ण कहावनें असमर्थ होता। तौ असै दोष करि संयुक्त ताकौं
परमेस्वर कौन मानता। तीसूं जामैं ए दोय दोष एक तौ रागद्वेष अर अग्यांनपनौं नांही तेई परमेश्वर है।
अर तेई सर्वोत्कृष्ट है। सो असा दोय दोष करि रहित एक अर्हंत देव ही है। सो ई सर्व प्रकार पूज्य है। बहु
रि जे सर्वज्ञ वीतराग भी होता। अर तारिवा समर्थ न होता। तौ भी प्रभुत्वपनांमैं कसर पडती। सो तौ जामैं
तारन सक्ति ए पाय जे है। सो कोई जीव तौ भगवांनका स्मर्ण करि ही भवसंसार समुद्र नैं तिरै है। केई भ
क्ति करि ही तिरै है। केई स्तुति करि तिरै है। केई ध्यांन करि तिरै है। इत्यादि एक गुणकूं आराधि मुक्ति

कौंपोकुचैहैं॥ परंतु भगवांनजीनैं षेदनांहीउपजैहैं॥ सोमहंतपुरुषांकीअत्यंतसक्तिहैं॥ सोआपनैं
तौउपायकरनौंपडनहीं॥ अरताकाअतिसयकरिसबगतिनकास्वयमेव भलाहोयजाय॥ अ
रप्रतिकूलपुरुषांकास्वयमेवबुराहोयजाय॥ अरशक्तिहीनपुरुषहोयहै॥ तेढीलांजायअरपैल्यां
काबुरा भलाकरैतबवासूंकार्यहोइ॥ सो भीनेमनांहीं॥ होइवानहोइ॥ इत्यादिअर्हंतदेवअनं
तगुणांकरिसोभितहैं॥ बहुरिआगैंजिनबांणीकिअनुस्वार॥ ऐसाजोजैनसिद्धांतसर्बदोषकरिरहित
सर्बजीवांकाहितकारीउपदेसहै॥ अरताबिषैंसर्बतत्वांकानिरूपणहैं॥ अरताबिषैंमोक्षमार्गकाअ
रमोक्षस्वरूपकाबर्णनहैं॥ अरपूर्वापरदोषकरिरहितहैं॥ इत्यादिअनेकमहिमांनैंधरयांऐसाजिन
सासनहैं॥ आगैंनिर्ग्रंथगुरुताकेस्वरूपकहियेहैं॥ जोराजलक्ष्मीनैंछोडिमोक्षकेअर्थिदिक्षाधरी
अ हैं॥ अरवैनुमांमहिमांआदिरिद्धिजानैंफुरीहैं॥ अरमतिश्रुतिअवधिमनपर्ययग्यांनकरिसंयुक्तहैं॥
अरमहादुर्धरतपकरिसंयुक्तहैं॥ अरनिःकषायहैं॥ अरअठाईसमूलगुणताबिषैंअतीचार भीनां
हीलगावैहैं॥ अरईर्यासमतिनैंपालताथका सांढातीनहाथधरतीसोधताथकाबिहारकरैहै॥

॥भावार्थ॥ कोईजीवनैंबिरोध्यानहींचाहैहैं॥ अरभाषासुमतिकरिहितमितबचनबोलैहै॥ ताकावचनकरिको
ईजीउषभनहीपावैहैं॥ ऐसासर्बजीवांकेविषेदयालजगतबिषैंसोभैहैं॥ असासर्वोत्कृष्टदेवगुरुधर्मतानैंछो
डिबिचक्षणपुरुषहैं॥ तेकुदेवादिकनैंकसैंपूजे॥ परतक्षहीजगतकेबिषैंजाकीहीनतादेषियेहैं॥ जेजे जगत
बिषैंरागद्वेषआदिकऔगुणहैं॥ तेतेसर्बकुदेवादिकमैंपाईएहैं॥ त्यांनैंसेयांजीवकाउद्धारकैसैंहोइ॥ त्यांनैंसेयांजी
वकाउधारहोयतो॥ जीवकाबुराकुंणीकासेयांहोय॥ जैसैंहिसाझूठचोरीकुसील॥ आदिआरंभपरिग्रहआदि
जेमहापापत्यांकरिहीस्वर्गादिककासुषनैंपावैजेतौनर्कादिककादुषक्यांकरिपावजे॥ सोतौदेषियेनांहीं॥ औ
रकहियेहैं॥ तेषोईजगतबिषैंउत्कृष्टबस्तुहैंतेथोडीहैं॥ सोप्रतक्षदेषियेहैं॥ हीरामांनिकपंनांजगतबिषैंथोडा
हैं॥ कंकरपथरआदिबहुतहैं॥ बहुरिराजापातस्याहआदिमहंतपुरुषथोराहैं॥ सूद्रआदिहीनपुरुषबहुतहैं॥
बहुरिधर्मात्मांपुरुषथोरैहैं॥ पापीपुरुषबहुतहैं॥ ऐसाअनादिनिधनबस्तुकास्वभावस्वयमेवबणपाहैं॥
ताकास्वभावनैंमेटिवासमर्थकोईनांहीं॥ तीसूंतीर्थंकरदेवहीसर्वोत्कृष्टहै॥ सोएकक्षेत्रबिषैंपावजे॥ अर
कुदेवांकावृंदकहियेसमूह॥ तेबर्तमांनकालबिषैसासताअगिणनपावजेहैं॥ सोकिसाकिसाकुदेवनैपूजिजे

मो०मा० अरवेपरसपररागीद्वेषी। अरवेतौकहेमूनैंपूजौवेकहमूनैंपूजौ। बहुरिपूजिबावालकनैंषावानैंमांगैं। अ
१६७ रयाकहैहूंघणांदिनांकौभूषोहूं। सोवहीभषातौ। औरांनैउत्कृष्टबस्तुदेवासमर्थकैसैंहोसी। जैसैंकोई
रंकपूरुषषुधाकरिपीडतघरघरसैंअन्नकाकणकावारोटीकाटूकवाओ।छिआदिमागतौफिरहैं। अर
कोईअपणांनीपुरुषवेनबैंउत्कृष्टधनादिकसामग्रीमागैं। वाकैअर्थिवाकीसेवाकरै। तौवहपुरुषकोईज
गतबिषैहास्यनैंनपावै। नापावेहीपावै। तौसंश्रीगुरुकहैहै। हेभाईतूमोक्षकौंवसिकरि। आंष्यांदेषीब
स्तुनैंकूठमतिमांनैं। जीवईभर्मबुद्धिकरिहीअनादिकालकौ। संसारबिषैंथाल्हीमैंमूंगरूलैतैसैंरूलेहैं।
जैसैंकोईपूरुषआगैंतौदाहज्वरकातीव्ररोगलागिरह्याहैं। अरफेरिअजांनबैदतीव्रउष्णताहीकाउपचा
रकरैहैं। तौवहपुरुषकैसैंशांतिताकूंप्राप्तिहोय। त्यौंहीएजीवअनादितैंतौमोहकरिदग्धहोयरह्याहैं।
सोयामोहकीवासनांतौंयाजीवकैस्वयमेवबिनांउपदेसवाहीबनिरही। ताकरितौआकुलव्याकुलम
हादुषीहोहि। फेरिऊपरिऊपरिसंग्रहीतमिथ्यात्वादिकसेयये। तौयाकादुषकीकांईपूछनी। सोअग्रहीतमि
थ्यात्वबीचि ग्रहीतमिथ्यात्वकाफलअनंतगुणांषोटाहैं। सोतौग्रहीतमिथ्यातद्रव्यलिंगीमुन्यांसबैप्रका १६७

रछोड्यांहैं। अरग्रहीतमिथ्यात्वताकैभीअनंतवेभागऐसाहलकाअग्रहीतमिथ्यात्वताकैपावजेहैं। अरनांना
प्रकारकाउग्रउग्रतपश्चरणकरैहैं। अरअठाईसमूलगुंणपालैहैं। अरबाईसपरीस्यासहैहैं। अरछियालीस
दोषटालिआहारलेहैं। अरअंसमात्रकषायनांहीकरैहैं। सर्बजीवांकेरक्षपालहोयजगतबिषैप्रवर्तैहैं।
अरनानांप्रकारकेसीलसंयमादिगुंणकरिआभूषितहैं। अरनंदीपर्बतगुफामसांननिर्जनस्थानकाबन
जाबिषैजायध्यांनधरैहैं। अरमोक्षकीअभिलाषाप्रबर्तेहैं। अरसंसारकाभयसौंडरपैहैं। एकमोक्षलक्ष्मी
केअर्थिराजादिबिभूतिछोडिदिक्षाधरैहैं। ऐसाहोतसंतैंभीमोक्षनैंकदाचिनांहीपावैहैं। क्यौंनांहीपावैहैः
याकैमहासूक्ष्मकेवलग्यांनगम्यऐसामिथ्यात्वकाअंसपावैहैं। तातैंमोक्षकापात्रनांही। संसारकाहीपात्रहैं।
अरजाकैबहुतप्रकारमिथ्यातकाप्रबलपणांपावजेहैं। तौताकूंमोक्षकैसैंहोय। कुगुरांईभर्मबुद्धिकरिमांन्यांतौगर्ज
हैंनांही। कौंनदिष्टांत। जैसैंबालकअपणांनगारिकाहाथीघोडाबैलआदिबनावैहैं। अरवाकूंसत्यमांनिक
रिबहुतप्रीतिकरैहैं। अरवासामिग्रीकूंपायबहुतकुसीहोयहैं। पछिंवाकूंकोईफोडैतौडैलेजायतौबहुतहरे
गकरै। अररोवैछातीमाथाआदिकूटै। वाकैऐसागंयांननांही किएतौकूठाकल्पितहैं। त्यौंहीअपणांनीपुरुष

मो०मा०
१६८

सोहीनयावालकसोकुदेवादिकनैंतारणतरणजांनिजांनिसेवैहै। ऐसागांननांहीकियेहीतिरबानैं
असमर्थतौम्हांनैंकैसैंतारिसी। बहुरिऔरदृष्टांतकहियेहै। कोईपुरुषकाचकाषंडनपायवाबिषैंचिंता
मणिरत्नकीबुद्धिकरैहै। अरयाजांनैहैकिएहचिंतामणिरत्नहै। सोमूंनैंबहुतसुषकारीहोसी। एमूंनैंमन
बंछितफलदेसी। सोभ्रमबुद्धिकरिकाचकाषंडनैंपायवाबिषैंचिंतामणिरत्नकीबुद्धिकरैहै। अरजांनैहै
एचिंतामणिरत्नमान्यातौकांईवहचिंतामणिरत्नहूवा। अरकांईवासूंमनबंछितफलकीसिद्धिहोइ
कदाचिनहोइ। कमपडैंवाकौंआराधिसी। अरबाजारबिषैंवाकूंबेचिसीतौदायकौडीप्राप्तिहोसीनांही।
त्यौंहीकुदेवादिकनैंआछ्यांजांणिघणांहीजीवसेवैहै। पणिवासूंक्यौंहीगर्जसैरैनांही। अरपूणपरलोक
बिषैंनानाप्रकारकेनर्कादिककेदुषसहनैंपडैहै। तीसूंकुदेवादिककोसेवनतौदूरिहीरहो। परंतुवाका
एकठारहनांभीउचितनांही। जैसैंसर्पादिकक्रूरजीवतिनावरकासंसर्गउचितनांही। त्यौंहीकुदेवादि
कासंसर्गउचितनांही। सोसर्पादिकमैंअरकुदेवादिकमैंइतनांबिशेषहै। सर्पादिककासेवनतौएकहीबार
प्राणनिकानांसहोय। अरकुदेवादिककेसेवनकरिपर्यायपर्यायबिषैंअनंतवारप्राणनिकौनांसहोयहै १६८

औरनांनाप्रकारकेजीवनकौंनिगोदकौंसहैहै। ताकूंसर्पादिककोसेवनश्रेष्ट। अरकुदेवादिककासेवनश्रे
ष्टनांही। ऐसाकुदेवादिककासेवनअन्यष्टजाननां। तातैंबिचक्षणपुरुषआपनांहितनैंबांछैहै। तेसीघ्र
हीकुदेवादिककासेवनतजौ। बहुरिदेषौसंसारबिषैंतौएजीवऐसासयांणाहै। अरऐसीबुद्धिराषैहै। सोदमं
डीकीहांडीषरीदै। ताकेतीनकडकौव्याकीदेफूटीसारीदेषिषरीदै। अरधर्मसारिषाउत्कृष्टबस्तुताकासेवन
करिअनंतसंसारकादुषसौंछूटै। ताकाअंगीकारकरिवाबिषैंअंसमात्रभीपरीक्षाकरैनांही। सोलोकबिषैंगा
डरीप्रवाहकीसीनांई। औरलोकपूजेसेवैतैसैंहीएपूजेसेवै। सोकैसाहैगाडरीप्रवाह। सोगाडरकेअबिचार
हैनांही। आगैंषाईहैकिकूवाहैकिसेरहैकिव्याघ्रहै। किऐसाबिचारबिनांगाडरीकैपीछैंसर्बगाडरीचली
जायहै। जेआगिलीगाडरीषाईकूवामैंपडै। सोपाछलीगाडरीषाईकूवामैंपडै। अरआगलीगाडरीनाहरव्या
घ्रकेस्थानकमैंजायपडै। त्यौंहीएसंसारीजीवहै। जेकुलकेआगैंछोटामार्गचाल्याहोतौएहीजीवषोटामा
र्गचालै। अरवाआछ्यामार्गचाल्यातौपणियाकेऐसागांननांही। केआछ्यामार्गकैसाहै। अरषोटामार्गके
साहै। ऐसागांनहोयतौषोटाकूंछोडैआछ्याकाग्रहणकरै। जोएतेबिषैभीएकगांनहीकीबडाईहै। जीमैंगांन

MEMORIAL

नविशेषहैं॥ ताहीकूंजगतपूजैहैं॥ अरताहीकूंसेवैहैं॥ अरग्यांनहीहैं॥ सोजीवकौनिजस्वभावहैं॥ जासूंधर्म्म
नैंपरिस्ताकरिग्रहनकरौ॥ अबआगेंकूदेवादिककालक्षनकहियेहैं॥ जाबिषैरागद्वेषपावजैहैं॥ अरसर्वज्ञपणं
काअभावजाणिजे तेतेसर्वकुदेवादिकजाणिजे॥ सोकहांतांईयाकावर्नननकरिये॥ होयच्यारदसबीसतै
ताहोयतौकहनाभीआवै॥ तातैंऐसानिश्चयकरनां॥ सर्वज्ञवीतरागदेवहै॥ अरताहीकेबचनकेअ
नुस्वारशास्त्रवाप्रवर्तिसोउधर्महै॥ अरताहीकेबचनांकेअनुस्वार सर्वपरिग्रहकाआभ्यंतरवाह्यत्याग
करिनिर्ग्रंथसज्यायावालकवततिलतुसमात्रपरिग्रहसूंरहित॥ वीतरागस्वरूपकेधारकतेउगुरुहै॥
आपभवसमुद्रकूंतिरैहैं॥ औरांकूंत्यारैहैं॥ धर्मसेययहलोकविषैं जोजसबडाई नांहींचाहैहैं॥ अरप
रलोकबिषैंस्वर्गादिककूंनांहींचाहैहै॥ एकमुक्तिहीचाहैहैं॥ ऐसादेवगुरुउपरांतिअवशेषरह्या
सर्वकुदेवकुगुरुकुधर्मजांननां॥ आगेंऔरकहियेहैं॥ कोईतौषुदाईकौंसर्वसिष्टकाकर्तामांनैं॥ केई
ब्रह्माविष्णुमहेसकौंकर्तामांनैंहैं॥ इत्यादिककर्ताजांननां॥ सोयाकाभावकरियेहैं॥ जैसाराहीतीन
लोककाकर्ताहैसोकह्या॥ अरषुदायहीतीनलोककाकर्ताहैं॥ तौहिंदूनैंपदाकौंकीया॥ अरविष्णुआ

हिहीतीनलोककाकर्ताहैं॥ तौतुरकांनैंपैदाक्यौंकीया॥ हिंदूतौषुदाकीनिंदाकरै॥ अरतुरकविष्णुनिंदा
करै॥ कोईकहैपैदाकरतीवारयाकूंग्यांननहीछो॥ ताकौंकहियेहै पदाकरतीवारयांकौंग्यानननांही
थातौपरमेश्वरकाहेकाठहरया॥ जाकैएतौभीग्यांननांहीं॥ बहुरिजेतीनलोककाकर्ताहीथातौः
कोईदुषीकोईसुषीकोईनर्ककोईत्तिर्यंचकोईमनुष्यकोईदेव॥ ऐसानानाप्रकारजीवपैदाक्यौंकी
या॥ कोईकैसाकोईकैसा॥ जैसाशुभअशुभकर्मजीवांकीया॥ तैसातैमाहीसुषफलदेवाकैअनुस्वा
रपैदाकीयातौयामैंपरमेश्वरकाकर्तव्यकैसैंरह्या॥ कर्मकाहीकर्तव्यरह्या॥ सोकैतौपरमेश्वरकाही
कर्तव्यकहौ॥ कैकर्मांकाहीकर्तव्यकहौ॥ कैदोऊकाभेलाहीकर्तव्यकहौ॥ म्हारीमा॥ अरबंऊऐ
सैंतौबनैंनांहीं॥ बहुरिजेपहलीजीवनहीथातौशुभअशुभकर्मकुणैंकीयायामैंकर्त्ताकाअभा
वसंभवैहैं॥ बहुरिजगतविषैंहोयच्यारिकार्यकूंकरियेहैं॥ ताकूंआकुलताविशेषउपजैहैं॥ अरआ
कुलताहै॥ सोईपरमदुषहै॥ अरजोपरमेश्वरकौंनिरंतरतीनलोकबिषैंअनंतजीवअनंतापुद्गलआ
दिपदार्थताकाकर्ताहोनां॥ अरअनेकप्रकारजुदापरिणामभोगवनां॥ अरताकीजुदीजुदीयाहिगा

रीराषनी। अरजुदाजुदा सुषउपदेनां। ताकै वास्तै मल्हाषेद षिन्न होनां। असा कर्त्ता होय तौ ताके दुष की कां
ई पूछनी। सर्बत्क कष्ट दुषपरमेस्वर कै बांटै आया। तौ परमेस्वरपणां कहा रह्या। बहुरि एक पुरुषसौं
एता कार्य कैसें बनें। कोई कहैगा कि जैसें राजा कै अनेक प्रकार के चाकर नफर जुदा जुदा कार्य कूं करि लि
है। अर राजा षुसी रूवौ महलां मैं तिष्टै है। तैसें ही परमेस्वर कै अनेक चाकर है। तेसृष्टकौं ऊपजावै है। वा षिपा
वै है। अर परमेस्वर सुषसौं बैकुंठ बिषै तिष्टै है। ताकूं कहियै है रे भाई यह तौ संभवै नांही। जाका चाकर कर्त्ता
हुवा तौ परमेस्वर कर्त्ता काहे कौं कहिये। परमेस्वर कछमछ आदि वेस्यां का संहार ताकै अर्थि वा भक्तां की सहा
यता कै अर्थि चौवीस अवतार धर्या। औरधांनां कौ षेत आनि निपजायो। अर नरसिंघ भक्ति कौं आंनि मा
हिरौदीयो। अर द्रोपदी कौ चीर बढायो। अर टींटोडी का अंडां की सहाय कीनी। अर हाथी नें कीचमांहिं सूं उधा
र्यौ। असा बिरुद्ध वचन इहां संभवै नांही। बहुरि कोई या कहै है श्री परमेस्वर कौं या चाहिये सर्व ही भला करै। अै
सा नांही करै तौ वाकूं पैदा करै। अर वाही का नास करै। ए परमेस्वरपणां कैसा। सामांन्य पुरुष भी अैसा कार्य
विचारै नांही। बहुरि कोई सर्व जगत कूं वा सर्व पदार्थ कूं सुंन्य कहि नास्ति मांनै है तौ ताकौं कहियै है रे भाई तू

सर्व नास्ति मांनै है तौ तू नास्तिक कहन हारा तौ वस्तगत है। ऐसे ही अनंत जीव अनंत पुद्गल आंष्यां विषैं
प्रतक्ष बस्तु देषियै है। ताकौं नास्तिक कैसें कहिय। बहुरि कोई असें कहै है जीव तौ षिण षिण मैं उपजै है अर
षिण षिण मैं विनसै है। ताकूं कहियै है रे भाई जो षिंन षिंन मैं उपजै है तौ कालि की बात आजि कौंनें जांनी
अर मैं फलानां था सो मरि देव हूवौ हूं। अैसें कौंनें कह्या। बहुरि कोई असें कहै है पृथ्वी अप तेज बायु र
आकास ए पांच तत्व मिलि एक चेतन शक्ति उपजावै है। जैसें हलद सां मिलि लाल रंग उपजि आवै है।
अथवा नील हलद मिलि हर्या रंग उपजावै है। ताकूं कहिए है रे भाई पृथ्वी आदि पांचौं तत्व कह्या सो
तौ जड अचेतन द्रव्य है। सो अचेतन द्रव्य विषैं चेतन उपजै नांही। ए नियम है। सो प्रत्तिक्ष आंष्यां देषिये है।
नाना प्रकार का मंत्र जंत्र तंत्र आदि धारक जे कि सर्व पुरुष पुद्गल द्रव्य कौं नाना प्रकार का प्रणमावै है।
अैसा आजु पहली कोई देष्यौ नांही। कोई सुन्यौ नांही। फलाणां का देव विद्याधर वा फलाणां मंत्रवादी वा फला
णां पंच पुद्गल कौं चेतन स्वरूप परणमायो। सो तौ देषियै है। अर आकास अमूर्तीक अर पृथ्वी आदि च्यारौं
तत्व मूर्तिक मिलि जीव नामा अमूर्तीक पदार्थ कैसें निपजै। अैसें होय तौ आकास पुद्गल का तौ नास हो

य। अर आकास पुद्गलकी जायगा सर्व चेतनही चैतन्य द्रव्य होइ जाय। सो तौ देषिये नांही। चैतन्य पुद्गल
आदि सर्व न्यारे न्यारे पदार्थ आंष्यां देषिये है। ताकौं झूठा कैसैं मांनिये रे भाई ऐसा होय तौ बडा दोष उपजै
के इक पदार्थ चैतन्य देषिये है। केई पदार्थ अचेतन देषिये है। सो एक पदार्थ चेतन अचेतन कैसैं होइ।
अचेतन पदार्थ भी नानाप्रकारके देषिये है। अर चेतन पदार्थ भी नानाप्रकारके देषिये है। ताकूं एक कै
सैं मांनिये। बहुरि यो एक ही पदार्थ होय तौ। ऐसा क्यांनैं कहिये है। फलाणौं नर्क गयो। फलाणौं स्वर्ग गयौ।
फलाणौं मनुष्य हूवौ। फलाणौं तिर्यंच हूवौ। फलाणौं मुक्ति गयो। फलाणौं दुषी। फलाणौं सुषी। फलाणौं
चैतन्य फलाणौं अचेतन्य इत्यादि नानाप्रकारके जुदे जुदे पदार्थ जगत विषैं मांनिये है। ताकूं झूठा कै
सैं कहिये। बहुरि सर्व जीव पुद्गलकी एक सत्ता होय तौ एककै दुषी होतां सारा ही दुषी होय। अर एककै
सुषी होतां सारा ही सुषी होइ। अर चेतन्य तत्वार्थ त्यांकै भी सुषी होय सो तौ देषिये नांही। और जो सर्व
पदार्थकी एक सत्ता होय तौ अनेक पदार्थ क्यांनैं करनां पडै। अर फलाणैं षोटा कर्म कीया। अर फला
णैं आछा कर्म कीया। ऐसा क्यांनैं कहनां पडै। सर्व ही मैं व्यापक है। एक ही पदार्थ हूवा तौ। आपकूं १७१

आप दुष कैसैं दीया। ऐसा कोई त्रिलोकमैं होता ही नांही। सो आपकुं आप दुष दीया चाहै। जो आपकूं
आप दुष देबा ही मैं सिद्ध होय तौ सर्व जीव सुष क्यांनैं चाहै। तीसूं नानाप्रकारका जुदा पदार्थ स्वयमेव अना
दिनिधन बण्या है। कोई किसीका कर्त्ता नांही। सर्वब्यापी एक ब्रह्मका कहबा मैं महा नानाप्रकारकी वि
परीतता प्रतिभासै है। तासूं देष्यूं बुधी एतैरा अज्ञांन मिथ्या है। प्रतिक्ष आंष्यां देषिये तामैं संदेह कांई:
अर तामैं प्रश्न कांई। आंष्यां देषी बस्तु मैं भूलै है। वा औरसैं और मांनै है। ताका अग्यांनपणांकी कांई पूछ
णी। जैसैं कोई जीव पुरुषनैं या कहै तू तौ मरि गयो। तब वह पुरुष आपकौं मुवा ही मांनै तौ वासारिषा
बेकूफ संसारमैं कौंन। अर तू या कहसी मैं कांई करूं फलाणां सास्त्र मैं कह्या है। ए सर्बज्ञका बचन है। ता
कूं झूठा कैसैं मांनिये। ताकूं समझाईये है रे भाई प्रतक्ष प्रमांणसूं बिरुद्ध होय। ताका आगम सांचा नांही:
अर केई आगमका कर्त्ता प्रमांणीक पुरुष नांही। यह निसंदेह है। जाका उनमांन प्रमांणसूं आगम मिलै तै
ई आगम प्रमांण है। अर वा ही आगमका कर्त्ता पुरुष प्रमांण है। पुरुष प्रमांण सो वचन प्रमांण होय है
अर मन बचन प्रमांण सो पुरुष प्रमांण सो पुरुष प्रमांण होय है। तीसूं जे कोई सर्बज्ञ बीतराग है। तेई पुरु

आ॰चा॰ षप्रमांणकरबाजोग्यहैं। जीव पुद्गल धर्म अधर्म आकास कालछ्यांछरूंपदार्थमिलित्रिलोकउपजा
१७२ याहैं। अरछरूंद्रव्यअनादिनिधनहैं। इसकाकोईकर्त्तानांही। अरजेकोईइसकाकर्त्ताहोयतो। कर्त्तानैं
कौंनकीया। अरकोईकहै कर्त्तातौअनादिनिधनहै। तोए भी छहौंद्रव्यअनादिनिधनहैं। तीसूंएईने
मठाहस्वा। कोईपदार्थकिसीपदार्थकाकर्त्तानांही। साराहीपदार्थआपनांआपनांस्वभावकाकर्त्ता
अरआपनांआपनांस्वभावरूपस्वयमेवपरणमैंहैं। चेतन्यद्रव्यतौचेतनरूपपरणवैहैं। अरअचेतन
द्रव्यअचेतनरूपपरणवैहैं। मूर्त्तीकद्रव्यतौमूर्त्तीकस्वभावरूपपरणवैहै। अरअमूर्त्तीकद्रव्यअमूर्त्तीक
स्वभावरूपपरणवैहैं। अरजीवद्रव्यकातौचेतनस्वभावहै। अरपुद्गलकामूर्त्तीकस्वभावहैं। धर्मद्रव्यका
चलनसहकारीस्वभावहैं। अरअधर्मद्रव्यकातौचेतनस्वभावहै। कालकाबर्त्तानांहेतुत्वस्वभावहै।
बहुरिजीवतौअनंतपदार्थहैं। पुद्गलतासुंअनंतपदार्थहैं। अरधर्मद्रव्यअरअधर्मद्रव्यएकपदार्थहैं।
अरआकासद्रव्यएकपदार्थहै। अरकालकीकालूणुअसंष्यातपदार्थहैं। बहुरिएकजीवद्रव्यकाआ
रतीनलोकप्रमांणहैं। सुएसंकोचबिस्तीर्णशक्तिहै। तातैंकर्मोकेनिमितकरिसदेवसरीरआकार १७२

प्रमाणहैं। अवगाहनांशक्तिकरितीनलोकप्रमांणहै। आत्माकाओरसरीरकाअवगाहनांबिषैंसमाय
जायहै। पुः बहुरिपुद्गलकाआकारएकरूईकेतारकीअग्रभागकाअसंष्यातवैंभागगोलषट्कोंणनैं
धरयांहैं। अरधर्मअधर्मद्रव्यकाआकारतीनलोकप्रमांणताहीवास्तैयाकूंसर्बव्यापीकहियेहै। अर
कालअमूर्त्तीकपुद्गलसाहश्यएकप्रदेसमात्रअणूंधरयांहैं। बहुरिजीवतौचेतनद्रव्यहै। अवशेषपां
चैंअचेतनद्रव्यहै। बहुरिपुद्गलतौमूर्त्तीकद्रव्यहै। अरवाकीपांचौंअमूर्त्तीकद्रव्यहै। बहुरिआका
सलोकअलोकबिषैंसारापावजेहैं। वाकीपांचौंलोकबिषैंहीपावजेहै। बहुरिजीवपुद्गलधर्मद्रव्यका
निमतकरिक्षेत्रसूंक्षेत्रांतरगमनागमनकरैहैं। अरजीवपुद्गलबिनांअवसेषच्यारिद्रव्यअनादिनिध
नध्रुवकहिएस्थितरूपतिष्टैहै। बहुरिजीवपुद्गलस्वभावतौरूपहीपरणवैहै। अवशेषच्यारिद्रव्य
स्वभावरूपहीपरणवैहैं। बिनांबिभावतारूपनांहीपरणवैहै। बहुरिजीवतौसुषदुषरूपपरणवैहै।
अवसेषपांचौंसुषदुषरूपनांहीपरणवैहै। बहुरिजीवतौआपसहितसर्वकास्वभावताकौंभिंनभिं
नजांनैहै। अवशेषपांचौंद्रव्यनतौआपकौंजांनैंनपरकूंजांनैं। बहुरिकालद्रव्यकानिमितकरिपांचौं

आ०चा०
१७३

द्रव्यपरणवैहैं। अरकालद्रव्यआपहीकहिकरिआपपरणवैहैं। बहुरिजीवपुद्गलद्रव्यकानिमत्त
करिरागादिकअसुद्धभावरूपपरणवैहैं। अरपुद्गलपुद्गलकानिमत्तकरिवाजीवकानिमत्तक
रिरागादिकअसुद्धभावरूपपरणवैहैं। बहुरिजीवकर्मकानिमत्तकरिनानाप्रकारकेदुषकूंसहैहैं
वासंसारबिषैंनानाप्रकारकीपर्यायकूंधरैहैं। वाभ्रमणकरैहैं। अरकर्मकानिमत्तकरिआछाद्या
जायहैं। ताहीकौंउपादकभावकहिए। अरकर्मरहितहूवाजीवकेवलग्यांनसंयुक्तमहाअनंतसु
षकाभोक्ताहोयहैं। अरतीनकालसंबंधीसमस्तचराचरपदार्थएकसमयबिषैंजुगपतजांनैं। अरदेष्यै
प्रमाणुआदिस्कंधअशुद्धपुद्गलकहियेहैं। अरअकेलीप्रमांनूंशुद्धपुद्गलद्रव्यकहिये। बहुरितीन
लोकपवनकावातबलांकेआधारहै। अरधर्मद्रव्यअधर्मद्रव्यकाभीसहायकहियेनिमत्तहैं। अरती
नलोकपरमाणूंकापुद्गलकाएकमहास्कंधनानास्कंधहैताकरितीनलोकलडिरह्याहैं। वेमहास्कं
धकैतांईकैतौसूक्ष्मरूपकहै। अरकेतांइकबादररूपहै। ऐसैंतीनलोककाकारणजांननां। इहां
कोईकहसीएताकारणतौकह्या। परियेताकीनलोककाबोधकैसैंरहै। ताकौंसमझाईएहैं। रेभाई १७३

एज्योतिगीदेवांकाअसंख्यातबिमांणअधरकाहैतेंदेषियेहैं। अरबडाबडापंषेरूआकासमैंउडता
देषियेहैं। अरगुडीआदिऔरभीपवनकैआसरैअधरआकासबिषैंउडतादेषियेहै। सोएतौनीकां
बनैंहैं। अरवासिकराजाआदितीनलोककाआधारमांनियेहैं। सोएनहीसंभवैहैं। वासिककाबिनांआ
धारआकासमैंकैसैंरहै। अरवासिककूंभीऔरआधारमांनियेतौ। यामैंवासिककाकहाकरतब्यरह्या। अ
नुक्रमतैंपरंपरायआधारकअनुस्थपनांआया। तातेंएनियमकरिसंभवैनांहीं। पूर्वैंकह्यासोहीसंभवैहैं।
ऐसैंछहूंद्रव्यांकीवारत्ताजांननी। एछहूंद्रव्यांउपरांतिकोईकर्त्ताबाहियेनांहीं। अरछहूंद्रव्यांमांहीसूं
एककूंकर्त्तानमांनियेतौबनैंनांही। सोएन्यायसंभवैहै। ऐसैंहीउन्मांनप्रमांनमैंआवैहै। याहीतैंआज्ञा
प्रधांनबिचिपरस्ताप्रधांनरसिकह्याहैं। अरपरिस्ताप्रधानपुरुषकाकार्यसिद्धिहोयहैं। ऐसैंषटमतनिबिषैंजुदा
जुदापदार्थकास्वरूपकह्याहैं। परंतुबुद्धिवांनपुरुषऐसैंबिचारै। छहौंमतांबिषैंकोईएकमतसांचाहोसी। छहूंतौ
सांचानांहीं। छैवांकेपरस्परविरुद्धहैं। तातैंकौंनमतकीआज्ञामांनिये। सोयौंतौबनैनांहीं। तीसूंपरीक्षाकरनीउचि
तहैं। परीक्षाकीयेपरजाकीउनमांनमैंवातमिलनीसोहीप्रमांनहै। सोयांछहूंमतांबिषैकोईसर्वज्ञबीतरागहै।

DR. BHAU DAJI MEMORIAL
डाक्टर भाऊ दाजी स्मारक

आ०चा०
१७४

तामतविषैपदार्थकद्दांतकस्वरूपकह्याहै। सोहीउनमांनमैंमिलैहै। तातैंसर्वज्ञवीतरागहीकामैंप्रमांणहै। सो त
हीउनमानमिलैहै। तातैंसर्वज्ञवीतरागहीकामतप्रमांनहै। औरमतविषैंवस्तुकास्वरूपकह्याहै सोउनमांनमैं
तुलैनांही। तातैंअप्रमांनहै। म्हारेरागद्वेषकाअभावहै। जैसावस्तुकास्वरूपथातैसाहीउनमांनमैंप्रमांनकीया
म्हारेरागद्वेषहोतैमैंभीअन्यथाश्रद्धांनकरता रागद्वेषगयाअन्यथाश्रद्धांनहोयनांही। अरजांनैंजैसाकहिये
तौजा विषैंरागद्वेषनांही। रागद्वेषयाकूंकहियेहै। सोवस्तुकास्वरूपतौक्योंही। अररागद्वेषकौंप्रेस्योवनौंवक्यौं
ही। सोम्हारेग्यांनावरणीकर्मकाक्षयोपसमकरिग्यांनयथार्थ भयाहै। अरमैंभीसर्वज्ञहौं। केवलग्यांनीसारिसो
म्हारौनिजस्वरूपहै। अबारच्यारिदिनकर्मकाउदैकरिग्यांनकीहीनतादीसैहै। तौकांईकुवो। वस्तुकाश्रद्धानस्व
भावमैंतौफेरनांही। अरअबारभीम्हारेयत्तोग्यांनपावजैहै। सोयाकेवलग्यांनकोजीवहै। तातैंम्हारीबुद्धिठीक
है। कोईयामैंसंदेहमतिविचारो। ऐसासामान्यपणैंषटमतकास्वरूपकह्या। आगैंसंसारीजीवचंद्रमांसूर्यआदिकूंदे
वतानरणतारणमांनैंहै। ताकूंकहियेहै। चंद्रमांसूर्यजगतकूंदीसैहै। सोबिमांनहै सोअनादिनिधनहै। सामांन्य
सासताहै। याऊरिचंद्रमांसूर्य अनंतहोयगयाहै। सोचंद्रमांबिमांणसामांन्यपणैंअठारासैकोसचौडाहै। अरसूर्य १७४

कोबिमांणसोलासैकोसचौडाहै। अरग्रहनिक्षत्रताराकाविमांणपांचसैकोसबडाजघन्यसवासैकोसचौडाहै
अरअगोलाकेबिषैंपोपरानिघोटकैआकासहै। सोअणीअधोलोकमैंवेअरसमैंचौडाऊपरनैंहै। एबिमांणपां
चौंहीजोतिग्यांकेरत्नमईहै। ताऊपरिनगरहै। ताकैरत्नमईषाईहै। रत्नमईकोट रत्नमईदरवाजारत्नमईमह
ल अनेकषंडसंयुक्तभीवाबडाबिस्तारनैंलीयांबिनांबिषैंस्तितहै। तानगरमैंसंख्यातदेवदेवांगनांबसहै।
ताकास्वांमीज्योतिषीदेवहै। बाराबरसकेराजपुत्रवावाराबरसकीराजपुत्रीसो जैसैंसो जैहै। मनुष्यकासाआ
कारहै। एताविशेषमनुष्यकासरीरमहासुंदररत्नमईसुगंधमईकोमलआदिअनेकसंयुक्तहै। देवकैमा
थैमुकटहै। रत्नमईबस्त्रपहरयांहै। वाअनेकप्रकारकेरत्नमईआभूषणपहरेहै। वारत्नमईमहासुगंधपु
ष्पनिकीमालाधारैहै। ताकेसरीरकैबिषैक्षुधात्रषाआदिकोईप्रकारकेरोगनांहीहै। बालदसावत्आयुबै
लपर्यंतदेवबादेवांगनांकीएकसीदसारहैहै। भावार्थ। देवांकेजरानांहीव्यापैहै। वकुरिबिमांणकीभूमिका
बिषैनानाप्रकारपंन्नामाणकस्पहरियालीरूबहै। अरनानाप्रकारकेबनबावडीनदीतलावकूवापर्वतआ
दिअनेकप्रकारकीसोभापावजेहै। बकुरिकैठैहीपुष्पबावडीसोभैहै। कठैहीनवनिधिवा चिंतामणिरत्न

मो०प्रा० सो भैहैं कहीपंनामाणिकहीराआदिनानाप्रकारकेरत्नताकेपुंजसो भैहैं अर अठैमधिलोकबिषैंव
१७५ डेमंडलेस्वरराजाराजकरैंतैसैंही बिमांण बिषैं ज्योतिगीदेवराजकरैहैं ताकापुंन्यचक्रवर्त्तिसूं अनंतगुणां
अधिकहै ताकाबर्ननकहांतांईकरिये चयकरिनिकसितिर्यंचआणिउपजैहैं ताकूं ज्योतिगीदेवकहियेहैं
सोकोयांनैंत्यारबासमर्थनांही सोआपहीकालकेवसतैं औरांनैंकैसैंराषै अरजगतजीव भर्मबुधिकरिऐ
सैंमांनैं सोएचंद्रमांसूर्यताराकेबिमांनआकासबिषैंगमनकरैहैं ताबिमांनहीकूं याकहैहैं एचंद्रमांसूर्यहै
अरगाडाकापैडाकैमनिहैं अरताराकूंडाकैमनिहैं सोमैंसूर्यचंद्रमांनैंमांनैहैं चापूजैहैं सोमहांकीसहा
यकरिसी सोअग्यांनीजीवांकै असा बिचारनांही सोदसबीसपाठांकीगुडीआकासमैंसोहोयसैहाथउंची
उडैहैं सो जीतन कसीकांछलीकागलासाहरूपदीसैहैं सोसोलालाषकोसउंचातौसूर्यकाबिमांनहै अरस
तरालाषसाठिहजारकोसचंद्रमांकाबिमांनउंचाहै अरतारांकाबिमांनपंद्रलाषअसीहजारकोसऊंचा
हैं सोएतीदूरिसौंगाडाकापैडासी छपबस्तांको जलोकैसैंकरिसी और जीउदाहरणकहियेहैं सोदेषो
होयतीनकोसकाचोडा औरपांचच्यारकोसकाउंचापर्वतसोधरतीबिषैंचौडैतिष्टैहैं सोदसबीसकोसपर्यै १७५

ततौ निजरिआवै पछैनिजरिआवैनांही इंद्रीग्यांनकी असीहीनसक्तिहैं तासूंघणीदूरितैंवस्तुनि
र्मलदीसैनांही केवलग्यांनीवा अवधिग्यांनीनैं दूरिवर्त्तीसूक्ष्मबस्तुभीनिर्मदीसैहैं चंद्रमांसूर्यतारां
काबिमांन असाछोटाहोइतौदूरिसौंकैसैंदीसै यहनियमहैं बहुरिकोईयाकहसी एज्योतिगीदेवग्रह
जब्तुहैं अरसंसारीजीवांकूं दुषदेहैं याकूं पूज्यांयाके अर्थिदांनदीयांशांतिताकूंकहियेहैं रेभाईते
रैभर्मबुधिहैं एजोतिगीदेवांकाबिमांनअढाईद्वीपबिषैंमेरुहोल्नूंगोलक्षेत्रताबिषैंप्रदक्षणारूपभ्र
मणकरैहैं सोकोईजोतिगीदेवांकाबिमांनसीघ्रगमनकरैहैं कोईमंदगमनकरैहैं ताकीचालकूंदे
षिअौरवाकीचालबिषैंकोईकाजन्मादिकरूवादेषिबिशेषग्यांनीआगाऊहोतब्यताकौंबतावैहैं याका
उदाहरणकहियेहैं जैसैंसामुद्रकचिह्नदेषिवाकेतांईहोनव्यताकौंबतावताहैं अथवासौंणसूंदेषि
होतव्यताकौंबतावैहैं असैंहीहोतव्यताकावतावनेंकूं आठप्रकारकेनिमत्तग्यांनहैं ताबिषैंएकजोति
गजीनिमतग्यांनहैं एआठप्रकारनिमत्तग्यांनकोईउतभीतिटालिवानैंसमर्थतौनांही जैसमर्थहोयतौपू
जियेभी तहिरण महचारी कोचरी वावायस इत्यादिककासुकनआगाउहोतब्यताकाबतावनकारण

है सोयाकूं पूजिए तौ कांई ईत भीति टलै नां कदाचि न ही टलै त्यौं ही ज्योतिगी देवांनैं पूज्यां वा ताकै अर्थि
दांन दीयां ईत भीति अंसमात्र भी टलै नांही अपूठी अगयांनता करि महा कर्मबंध हो है सो जिनेस्वर देव
कूं पूज्यां सांति होय है और उपाय त्रिकाल त्रिलोक बिषैं है नांही अर जीव कै महा भर्मबुद्धि असी है जैसें को
ई पुरुष कै महा दाहज्वर है अर फेरि अग्नि आदि उष्नता का ही उपचार करै तौ वह पुरुष कैसें सांतिता नैं
प्राप्ति होय सो ही मिथ्यात करि तौ आगें जीव ग्रस्त होय रह्या है अर फेरि मिथ्यात ही कौं सेवै तौ ए जीव कैसें
सुष पावै अर कैसें याकै सांति होय वहुरि केई महादेव कौं अजोनी संभु तरण तारण मांनै है अर याकरि
सर्व श्रिष्ट का संघार मांनै है अर याकूं महाकामी मांनै है अर याका गला बिषै मनुष्यां का मस्तग की माला
मांनै है सो कैसें कामी मांनै है सो याकै है है महादेव का आधा सरीर स्त्री का है आधा पुरुष का है तीसूं
याका नांम अर्धंगी कहिये है असा स्त्री सुं रागी है ताकौं कहिये है रे भाई असो सब श्रष्टि कौं मारिबावा
लो अर महाबिडरूप असा पुरुष तारिबा समर्थ कैसें होय जाकौ नांम सुनतां ही ताप उपजै है तो दर्श
न कीयां कैसें सुष ऊपजै ए जगत बिषैं न्याय है जैसा कारण मिलै तैसा ही कार्य सिद्धि होय सो उदाहर

ण कहियै है जैसें अग्नि का संयोगतैं दाह ही उपजै अर जल का संयोग सेती सीतलता ही उपजै है अर कु
शील वांन स्त्री का संयोग करि बिकार भाव उपजै अर सील वांन पुरुष का संयोग सेती अपूर्ण बिकार
भाव बिलै जाय बिष का षावा करि प्राणकौं हरण होय अर अम्रत का पीवा करि प्राणन की रक्ष्या ही
होय सिंघ व्याघ्र हस्ती सर्प रोग आदि संयोग करि भय त्रास ही उपजै है अर दयाल साधु जन का संयोग करि
निर्भय आनंद ही उपजै है असा नांही जो अग्नि का संयोग करि तौ सीतलता होय अर जल का संयोग
करि उष्नता होय इत्यादि जांननां तीसूं हे भाई अबैं महादेव का असल निज स्वरूप ज्यौं छै त्यौं ही कहि
ये है महादेव कहिये रुद्र सो एक चौथा काल बिषैं ग्यारा उपजै है ताकी उत्पन्न कहिये है सो जैन का नि
र्ग्रंथ गुरु और अर्जिका यह दोन्यौं भ्रिष्ट होय कुशील सेवै है पाछैं मुन्य तौ तत्षण ही प्रायश्चित दंड छे
दोपस्थापना करै मुनिपद पाछैं धरि फेरि सुद्ध होय है अर अर्जिका नैं गर्भ रहै है सो गर्भ का निपतकी
या जाय नांही तातैं सुद्ध जाय गा नव मांस पर्यंत गर्भ नैं नैंव धाया पाछैं पुत्र कौं जनि बालक ही कौं कहीं
औरां स्त्री पुरुष नैं सोपि अर्जिका भी पाछैं वैसें ही दिष्या धरै है अर शुद्धि होय है पाछैं वो बालक अ

आ०चा० छदसबरसकाबडाहोयछैं तबबालककौं निमायडाकहिये अरलडकाहास्यकरै तबइहबालक
१७७ जीकेपलेतीनैंजायपूछैं म्हारामातापिताकौंएछैं औरकोंणकौवेरोछूं जबवेज्यौंकात्यौंमुंनिअर्जि
काकोवृत्तांतकहै वहबालकमातापितानैंमुनिअर्जिकानैंजांनिवाहीमुंन्यांपासिसिद्धाधरैहैं पाछैंआ
गैंतौमुंनिअर्जिकाकाबीजसूंउपज्यौतातैंमहापराक्रमीछाहा पाछैंनानाप्रकारकामुनिपदसंबंधीतपश्च
रणकरिअनेककरिद्धिफुरी बाअनेकबिद्याकीसिद्धिहोय पाछैकेवलीवाअवधिग्यांनीमुंनितांकामुषथकी
कथासुनैहै एमहास्त्रीकासंयोगकरिमुनिपदसौंभ्रष्टहोसी पाछैंएमहादेवमुंनिभ्रष्टहोवाकाभयथ
कीएकांतडूंगरऊपरिजायध्यांनकरैहै अरस्नांनआदिक्रीडाकरैहैं पाछैवेलडक्यांकासर्बबस्त्रवेमु
निलेआवैहै अरलडक्यांबस्त्रमांगैंतौभीदेनहीं अरवालडक्यांनैंयाकहैं थेमूंनैंपरणौंतौबस्त्रद्यां
तववेलडक्यांयाकहैं म्हेकांईजांनांम्हाकाबापजांनैं तववेमहादेववांलडक्यांनैंयाकहैं थांकोवा
पपरणावैतौपरणौंली तबवांलडक्यांकह्योपरणौंली तबऔसैंकौलकरिवांकावस्त्रदेइ तबवांलड
क्यांआयपणांमातापितासूंसारोमहादेवमुंनिकोवृत्तांतकह्यौ तबवांलडक्यांकामातापिताजांनी: १७७

एमहादेवमहापराक्रमीहैं जैनहींपरणावस्यांतौमहादेवदुषदेसी औसोजांनिसारीलडकीपरणा
यदीनी पाछैमहादेवसारीलडकीभोगई महादेवकाबीर्यकातेजकरिसारीलडकीमरिगई पाछैंऔ
रभीराजाकीराजपुत्रीपरणीसाभीऔसैंहीअनुक्रमसगलीमरिगई पाछैंअंतकेबिषैंअंतकेमहादेव
परबतराजाकीपुत्रीपारबतीपरणी सोयाकाभोगआगैंटिकी सोईपारबतीनैंरात्तिवादिनचाहैजेठीही
भोगवै कोईकीसंकाराषैनांही तासौंयाबिपरीततादेषिसबैंनगरकास्त्रीपुरुषदेषि बादेसकाराजांबा
रतासुंनीघणांदुषीहुवा अरईकाजीतिवानैंअसमर्थहुवा तातैंवेबहुतदुषीहुवा पाछैपारबतीका
मातापितापारबतीनैंपूछी तमहादेवनैंपूछै थांसूंबिद्याकदेरुरिरहैछै तबपारबतीनैंऔसैंहीपूछी
तबमहादेवनैंकही औरबारतौरुरिकदेहीरहैनहीं तौसूंभोगकरतांरुरिरहैछै एसमाचारपारबती
मातापितानैंकह्या तबराजापर्बतयोदावजांनि भोगकरतांमहादेवनैंमास्यौ तबईकाउछदातादेवथा
सोसारानगरमैंमहापीडाकरताहुवा अरयाकहीम्हांकाषांवंदनैंथेकौंमास्यौ तबनगरकांयाकही
मास्यौसोपाछौआवैनांही औरथेकहौसोहीकरां तबवांब्यंतरदेवांकही जगसहितमहादेवकालिं

Digitized with financial assistance from the
Government of Maharashtra
on 11 June, 2017

गकीपूजाकरी॥ तबपीडाकाभयथकीनगरकालोगांनैंश्रैसोहीश्राकारबनायो॥ पूजाकरी॥ पाछैंश्रैसैंही॥
ब्यंतरदेवांकेभयथकी॥ केताईककालतांईपूजताहुवा॥ पाछैंगाडरीप्रवाहसारिषोजगतहै॥ सोदेष्यांदेषि
सारीधरतीकापूजताहुवा॥ सोवाहीप्रवर्त्तिश्रौरूंचलीश्रावैहै॥ श्रौरजगतका॥ जीवांकैश्रैसोग्यांनहैनां
ही॥ सोहमकुंएगीनैंपूजांहां॥ श्ररयाकोफलकांईहै॥ सोमिथ्यात्तकीप्रवर्त्तिबिनांचलाईबरजोरीसूंचालै
है॥ श्ररधर्मकीप्रवर्त्तिचलानांही॥ तासूंजैत्तंश्रापनांहितनैंबांछैछैतो॥ एकसर्वज्ञबीतरागजो॥ जिनेंस्वर
देवताकाबचनश्रंगीकारकरिश्रैसैंत्ताकाबचनकेश्रनुस्वारिदेवगुरुधर्मकाश्रध्यांनकरे॥ इतिकुदेवा
दिककाबर्ननसंपूर्णं॥ ॥इतिश्रीश्रावगाचारग्रंथसंपूर्णं॥समाप्ताः॥श्लोकनकीसंख्याः॥ ॥श्री
रस्त॥कल्याणमस्त॥श्री॥ मितीचैतसुदि॥१३॥संबत॥१९॥१८॥का॥श्री॥लिखायेतंबगसुरामरामला
लपाटणीबासीस्वाईमाधोपूरकागोढितेरापंथ्याकेमिंदरका॥ लिखतंकसबाझालरापाटणिमैं॥